

क ल क चा नि धा सी
साधुचरित-श्रेष्ठिवर्य श्रीमद् डालचन्दजी सिंघी पुण्यस्मृतिनिमित्त
प्रतिष्ठापित पर्य प्रकाशित

सिंघी जैन ग्रन्थ माला

[जैन प्रागमिक, दार्शनिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, कथारत्नक-इत्यादि विविधविषयगतगुम्फित
प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, प्राचीनगूढ, -राजस्थानी आदि भाषा भाषानिबद्ध सार्वजनीन पुरातन
वाङ्मय तथा नूतन संशोधनात्मक साहित्य प्रकाशितो सर्वश्रेष्ठ जैन ग्रन्थमाला]

प्रतिष्ठाता

श्रीमद्-डालचन्दजी-सिंघीसत्पुत्र

स्व० दानशील-साहित्यरसिक-संस्कृतिप्रिय

श्रीमद् बहादुर सिंहजी सिंघी



प्रधान सम्पादक तथा संचालक

आचार्य जिन विजय मुनि

अधिष्ठाता, सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ

निवृत्त ऑनररी डॉयरेक्टर

भारतीय विद्या भवन, बम्बई

*

ऑनररी फाउंडर-डायरेक्टर

राजस्थान ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, जोधपुर (राजस्थान)

ऑनररी मेंबर जर्मन ओरिएण्टल सोसायटी, जर्मनी, भाण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना
(दक्षिण), गुजरात साहित्यसभा, अहमदाबाद (गुजरात), विश्वेश्वरानन्द वैदिक
सोप प्रतिष्ठान, होलियारपुर (पंजाब) इत्यादि ।

*

संरक्षक

श्री राजेन्द्र सिंह सिंघी तथा श्री नरेन्द्र सिंह सिंघी

व्यवस्थापक

अधिष्ठाता, सिंघी जैन शास्त्र शिक्षा पीठ

भारतीय विद्या भवन, बम्बई

प्रकाशक - व. र. दवे, ऑनररी डायरेक्टर, भारतीय विद्या भवन, बम्बई, नं. ७
मुद्रक - गुणरत्न वेङ्कण्ड, महोदय प्रिंटींग प्रेस, भावनगर.

महामाल्य - वस्तुपाल - कीर्तिकीर्तनस्वरूप
उदयप्रभाचार्यादि - अनेक - कविविरचित
सुकृतीकल्लोलिन्यादि
वस्तुपालप्रशस्तिसंग्रह

ॐ

संपादनकर्ता

अनेकग्रन्थमाण्डागारोद्धारक - विविधदुर्लभग्रन्थसंशोधक

जिनागमप्रकाशकारि - प्रतिष्ठानप्रवर्तक

आगमप्रभाकर - मुनिप्रवर - श्रीपुण्यविजय सूरि ।



प्रकाशनकर्ता

अधिष्ठाता, सिंघी जैनशास्त्रशिक्षापीठ
भारतीयविद्याभवन, बम्बई

ॐ

विद्यमान २०१६]

प्रथमावृत्ति

[दिवाब्द १९६१]

ग्रन्थांक ५]

वर्षाधिकार सुरक्षित

[मूल्य रु० ६/६०]

SINGHI JAIN SERIES

ॐ अथावधि मुद्रितग्रन्थ नामावलि ॐ

- १ मेष्टुजाचार्यरचित प्रबन्धचिन्तामणि मूल संस्कृत ग्रन्थ.
- २ पुरातनप्रबन्धसंग्रह कृत्रिण ऐतिहासिकपरिपूर्ण बनेष्ट प्राचीन निबन्ध सूचय.
- ३ राजशेखरसूरिरचित प्रबन्धकोश.
- ४ जिनप्रभसूरिकृत विविधतीर्थकल्प.
- ५ मेघविजयोपाध्यायकृत देवानन्दमहाकाव्य.
- ६ यशोविजयोपाध्यायकृत जैतवर्कमाहा.
- ७ हेमचन्द्राचार्यकृत प्रमाणगीर्वासा.
- ८ महाकलद्रुदेवकृत अक्षरङ्गमन्थप्रदी.
- ९ प्रबन्धचिन्तामणि - हिन्दी भाषांतर.
- १० प्रभाचन्द्रसूरिरचित प्रभावकचरित.
- ११ सिद्धिचन्द्रोपाध्यायरचित भातुचन्द्रगणिकरित.
- १२ यशोविजयोपाध्यायरचित ज्ञानविन्दुमकरण.
- १३ हरिपेमाचार्यकृत कृत्तकप्राकोश.
- १४ जैनपुस्तकप्रशिक्षसंग्रह, प्रथम भाग.
- १५ हरिमद्रसूरिविरचित धूर्वाख्यान. (माहृत)
- १६ दुर्गादेवकृत प्रियसमुच्चय. (प्राहृत)
- १७ मेघविजयोपाध्यायकृत दिग्विजयमहाकाव्य.
- १८ कवि बच्चल रहमानकृत सन्देसरासक. (अपभ्रंश)
- १९ मर्वुष्टीकृत शतकप्रयागि सुभाषितसंग्रह.
- २० शान्साचार्यकृत न्यायावधार्यार्थिककृत्रि.
- २१ कवि धाहिलरचित पटमसिरीचरित. (अप०)
- २२ महेश्वरसूरिकृत भाणपंचमीकहा. (प्रा०)

- २३ श्रीमद्रवाहुआचार्यकृत मद्रवाहुसंहिता.
- २४ जिनेश्वरसूरिकृत कथाकोषप्रकरण. (प्रा०)
- २५ उदयप्रभसूरिकृत धर्माभ्युदयमहाकाव्य.
- २६ जयसिंहसूरिकृत धर्मापट्टमाहा. (प्रा०)
- २७ कोऊलसूरिरचित रत्नावली कथा. (प्रा०)
- २८ विन्दसायनाचरण. (प्रा०)
२९. ३० ३१ स्वयंभूविरचित पटमचरित.
भाग १, २, ३ (अप०)
- ३२ सिद्धिचन्द्रकृत काव्यमहाशालासंग्रह.
- ३३ दामोदरपरिवृत कृत उक्तिव्यक्तिप्रकरण.
- ३४ मित्रमित्र विरचित कुमारपालधरितप्रसंग.
- ३५ जिनपालोपाध्यायरचित सरतरणकृत वृद्धयुगार्थलि
- ३६ उद्योतनसूरिकृत कुवलयनाला कथा. (प्रा०)
- ३७ गुणगाल्मुनिविरचित जंबुवारीय. (प्रा०)
- ३८ पूर्वाचार्यविरचित जयपामन - निमिसदास. (प्रा०)
- ३९ भोजनूपतिरचित द्वाहामहरी. (संस्कृत कथा)
- ४० धनसारगणीकृत - भर्तृहरिसातकप्रपटीका.
- ४१ कौटल्यकृत धर्मशास्त्र - सटीक. (कविपयसंग्र)
- ४२ विश्वसिद्धेशसंग्रह विश्वसिद्धेशलिख - विश्वसिद्धेशी
आदि अनेक विश्वसिद्धेश शसुचय.
- ४३ महेश्वरसूरिकृत नर्मदासुवर्तीकथा. (प्रा०)
- ४४ हेमचन्द्राचार्यकृत - छन्दोऽनुशासन.
- ४५ बस्तुपालसुभाषितात्मक काव्यद्वय
कीर्तिकौमुदी तथा सुकृतसंकीर्तन
- ४६ सुकृतकीर्तिकौमुदी आदि बस्तुपालसुभाषितसंग्रह.

Shri Bahadur Singh Singhi Memoirs Dr. G. H. Bühler's Life of Hemachandrāchārya. Translated from German by Dr. Manilal Patcl, Ph. D.

- 1 स. बाबू धीबहादुरसिंहजी सिंघी स्मृतिग्रन्थ [भारतीयविद्या भाग ३] सन १९४५.
- 2 Late Babu Shri Bahadur Singhji Singhi Memorial Volume
BHARATIYA VIDYA [Volume V] A. D. 1945.
- 3 Literary Circle of Mahāmātya Vastupāla and its Contribution
to Sanskrit Literature. By Dr. Bhogilal J. Sandesara,
M. A., Ph. D. (S.J.S.33.)
- 4-5 Studies in Indian Literary History. Two Volumes,
By Prof. P. K. Gode, M. A. (S. J. S. No. 37-38.)

ॐ संप्रति मुद्र्यमाणग्रन्थनामावलि ॐ

- १ विविधगण्ठीय पद्यावलि-संग्रह.
- २ जैनपुस्तकप्रशिक्षसंग्रह, भाग २.
- ३ जयसोमविरचित मंत्रीकर्माचन्द्रवंशप्रबन्ध.
- ४ दुर्गाप्रभाषांशु विनयचंद्र. (बौद्धशास्त्र)

- ५ रामचन्द्रकविरचित-महाराजमन्त्रादिनाटकसंग्रह
- ६ लक्ष्मणमाभाषांशु पद्यसंग्रहकथाज्ञानसोपकृति
- ७ मयूरसूरिकृत मूलसुदिमकरण-सटीक.
- ८ कुवलयनाला कथा, भाग २
- ९ सिद्धिचन्द्रसूरिविरचित मन्त्रांतरजहस्य.

विपयानुक्रम

किञ्चित् प्रास्ताविक

१	वस्तुपालधर्मगुरु नागेन्द्रगच्छीय श्रीउदयप्रभद्वरि विरचित मुकृतकीर्ति कल्लोलिनी, पद्य सं. १७९	पृ. १-१६
२	उदयप्रभद्वरिऋत वस्तुपालस्तुति, पद्य संख्या ३३	" १७-२०
३	मलधारगच्छीय श्रीनरेन्द्रद्वरिऋत वस्तुपालप्रशस्ति, पद्य सं. २६	" २१-२३
४	मलधारगच्छीय श्रीनरेन्द्रप्रभद्वरिऋत वस्तुपालप्रशस्ति, पद्य सं. १०४	" २४-२९
५	नरेन्द्रप्रभद्वरिऋत द्वितीय प्रशस्ति, पद्य सं. ३७	" ३०-३३
६	श्रीजयसिंहद्वरिऋत वस्तुपाल-तेजःपाल प्रशस्ति, पद्य सं. ७७	" ३४-३९
७	वस्तुपालस्तुतिकाव्य, पद्य सं. १३	" ४०
८	नरनारायणानन्दकाव्यप्रान्तलिखित वस्तुपालस्तुतिकाव्य, पद्य सं. १८	" ४१-४३
९	उपदेशतरङ्गिणीग्रन्थगत वस्तुपालस्तुतिकाव्य, पद्य १	" ४३
१०	गिरनारतीर्थस्य वस्तुपालप्रतिष्ठित नेमिनाथप्रासादप्रशस्ति क्रमांक १	" ४४-४६
११	" " क्रमांक २	" ४६-४८
१२	" " " ३	" ४८-५०
	" " " ४	" ५०-५३
१३	" " " ५	" ५३-५५
१४	" " " ६	" ५५-५८
१५	गिरनारतीर्थस्थित अन्य प्रकीर्ण लेख ४	" ५८
१६	अर्धुदाचलतीर्थस्य ल्घणवसहिकागत लेखसंग्रह	" ५९-७५
१७	तारणदुर्गस्य लेख	" ७५
१८	शशुंजयपाजस्थित लेख	" ७५-७६
१९	अणहिलपुरस्थित शिलालेख	" ७६
२०	अर्धुदाचलस्थित अन्यलेख	" ७६-१
२१	स्तंभतीर्थीय शिलालेख	" ७६-२
२२	गणेशरग्रामगत शिलालेख	" ७६-३
२३	नगरग्रामगत शिलालेख	" ७६-४
२४	वस्तुपालतीर्थयात्रा लेख	" ७७
२५	उदयप्रभाचार्यऋत उपदेशमालाकणिका वृत्तिगत वस्तुपालवर्णन	" ७८-८०
२६	सोमेश्वरकविकृत सुरयोत्सवकाव्यगत वस्तुपालवंशवर्णन	" ८१-८७
२७	वस्तुपालविरचित नरनारायणानन्द काव्यगत प्रशस्त्यात्मकवर्णन	" ८८-९०
२८	वस्तुपालविरचित आदिनाथ स्तोत्र	" ९१-९२
२९	" नेमिजिनस्तव	" ९३
३०	" अम्बिकादेवीस्तोत्र	" ९४

३१ महामात्य वस्तुपालकृत आराधना	पृ.
३२ वस्तुपाल संबन्धित ग्रन्थान्तपुष्पिकालेख	” ९१
३३ विजयसेनद्वरि रचित रेवंतगिरि रास	” ९९
३४ पाल्दणपुत्रकृत आबूसस	” १०१

परिशिष्ट

१ सुकृतकीर्तिकछोलिनी आदि प्रशस्ति पद्यानुक्रमणिका	” १११
२ सुकृतकीर्तिकछोलिनी आदि रचनागत विशेषनामानुक्रमणिका	” १२८

किञ्चित् प्रास्ताविक

*

प्राचीन महागुजरातके महामात्य वस्तुपाल तेजपाल (दोनों बन्धु) के नाम बहुविध्रुत है। इनके जीवन वृत्तान्तके विषयमें इंग्रजी, जर्मन, गुजराती एवं हिन्दीमें बहुत कुछ लिखा गया है। इन सबमें विशेष रूपसे उल्लेखयोग्य इंग्रजी ग्रन्थ डॉ. भोगीलाल सडेंसरा, एम्. ए., पीएच्. डी. (डायरेक्टर ओरि-एण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बडौदा युनिवर्सिटी) का लिखा हुआ 'लिटरेरी सर्कल ऑव महामात्य वस्तुपाल एण्ड इटस् कोन्ट्रीब्युशन टु संस्कृत लिटरेचर' (Literary circle of Mahāmātya Vastupāla and Its contribution to Sanskrit Literature) है, जिसमें इस विषय पर बहुत ही प्रमाणभूत एवं गंभीर अव्ययनपूर्ण विवेचन किया गया है। सिंधी जैन ग्रन्थमालाके ३३ वें ग्रन्थके रूपमें, कोई ९-१० वर्ष पहले हमने इसे प्रकाशित किया। इसके पूर्व ही, सन् १९४९ में, हमने इसी ग्रन्थमालाके चतुर्थ ग्रन्थके रूपमें, वस्तुपालके मुख्य धर्मगुरु आचार्य उदयप्रभ स्त्रिका बनाया हुआ संस्कृत काव्यात्मक बड़ा ग्रन्थ 'धर्मान्मुदय महाकाव्य' प्रकाशित किया, जिसका संपादन विद्द्वर्ष्य मुनिराज श्री पुण्यविजयजी महाराज और इनके दिवंगत गुरुवर्ष्य श्री चतुरविजयजी मुनिमहाराजने किया है।

इस 'धर्मान्मुदय महाकाव्य' के प्रास्ताविक वक्तव्यमें, हमने वस्तुपाल मंत्रीके जीवनवृत्त और तत्कालीन इतिहास पर विशिष्ट प्रकार डालनेवाली, तथा उस मंत्रीके समयमें विद्यमान एवम् उससे संबन्धित जिन विद्वानोंने काव्य, प्रबन्ध, प्रशस्ति, रास आदि जो रचनाएँ की हैं, उनका संक्षिप्त परिचयात्मक निर्देश किया था और साथमें यह भी सूचित किया था कि—हम भविष्यमें वस्तुपाल विषयक यह सब फुटकल ऐतिहासिक साहित्य, संकलित कर, एक या दो भागोंमें, प्रकट करना चाहते हैं। हमारे इस विचारको मुनिमहोदय श्री पुण्यविजयजी महाराजने भी बहुत पसन्द किया और इन्होंने खयं इसका संपादन कार्यभी सहर्ष स्वीकार किया। प्रस्तुत संग्रह उसी विचारके फल स्वरूप तैयार हुआ है।

इस संग्रहमें वस्तुपाल विषयक जितने भी प्रशस्त्यात्मक प्रबन्ध, शिलालेख, ग्रन्थपुष्पिकारं एवम् रास आदि कृतियाँ मिल सकीं, उन सबका एकत्र समावेश कर दिया गया है। आशा है कि ऐतिहासिक तथ्योंकी खोज करने वाले अम्यासिधोंके लिये यह बहुत उपयुक्त संकलन सिद्ध होगा।

इस संग्रहका संपादन कार्य तो प्रायः सन् १९५० में पूरा हो गया था। इसका मुद्रण कार्य भावनगरके एक प्रेसमें कराया गया था; पर बादमें इसके सब छपे फर्में बर्द्धमें भारतीय विद्या भवनम 'मगवा लिये गये थे। स्थान बगैरहकी ठीक सुविधा न होनेसे अनेक वर्षों तक ये फर्में इधर उधर घूमते-फिरते रहे और फिर हमारा भी स्थानान्तरण होता रहा। इससे, उक्त धर्मान्मुदय महाकाव्यके प्रास्ताविकमें उल्लिखित कथनानुसार हम इसे शीघ्र प्रकाशित करनेमें असमर्थ रहे। पर हर्षका विषय है कि इतने वर्षोंके बाद भी, अब यह संग्रह समुचित रूपसे प्रकाशमें आ रहा है। पूर्व पुरुषोंके गुणकीर्तनात्मक पुष्प कमी धासी नहीं होते। जब भी वे गुणप्राहकोंके हाथोंमें उपस्थित होते हैं तब शिरोधार्य ही होते हैं।

इसके संपादन कार्यके विषयमें मुनिमहोदय श्री पुण्यविजयजी महाराजके प्रति, उक्त धर्मान्मुदय काव्यके प्रास्ताविक वक्तव्यके अन्तमें, जो अपना हार्दिक कृतज्ञ भाव हमने प्रकट किया है—वही यहाँ पुनरुल्लिखित करना चाहते हैं कि—“इस संग्रहका संपादन करके इस ग्रन्थमाला के प्रति अपना जो विशिष्ट ममत्व भाव प्रदर्शित किया है और उसके द्वारा सौहार्दपूर्ण सहकार प्रदान कर मुझको जो उपहृत किया है, उससे सौजन्यमूर्ति परमब्रह्मास्पद मुनिवर श्री पुण्यविजयजी महाराजका मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।”

इस संग्रह के साथ ही इसका समानविषयक एक अन्य संग्रह प्रकट हो रहा है जिसमें सोमेश्वर विरचित कीर्ति कौमुदी तथा अरिसिंह कविकृत सुकृत संकीर्तन काव्य संकलित है। संपादन कार्य भी इन्हीं मुनिवरने किया है। पहले ये दोनों संग्रह एक ही ग्रन्थके रूपमें प्रकाशित जानेकी कल्पना रही थी, पर पीछेसे इसके साथ डॉ. ब्यूहलर आदिके लिखित उन ग्रन्थोंके संबन्धके निबन्ध भी उसमें सम्मिलित करनेकी कल्पनासे उसको अब पृथक् ग्रन्थके रूपमें प्रकट किया जा रहा है

धनेशान्तविहार, अहमदाबाद.
काल्पुनी पूर्णिमा, सं. २०१७
वा. २, मार्च, १९६१.

— मुनि जि न वि ज य

— आभार प्रदर्शन —

प्रस्तुत वस्तुपाल प्रशस्त्यात्मक संग्रह ग्रन्थके प्रकाशन ध्ययमें भारत सरकारकी ओरसे आधा हिस्सा सहायताके रूपमें मिला है, तदर्थ हम भारत सरकारके प्रति अपना साभार कृतज्ञभाव प्रदर्शित करना चाहते हैं।

प्रथमं परिशिष्टम् ।

नागेन्द्रगच्छभूपामणिभिः श्रीमद्बुदयप्रभाचार्यैर्विरचिता

—चस्तुपालान्वयप्रशस्तिरूपा—

सुकृतकीर्तिकलोलिनी ।



पञ्चनिस्तुतिरूपं मङ्गलम्

चिन्तातीतफलप्रदः स दिग्गत श्रेयो पुगादिप्रभुर्भोजुर्जन्मनि यस्य कल्पतरवः सर्वेऽप्युपादानताम् ।

नेत्रं चेत् कथमन्यथा वनुनतीमस्मिन्नलङ्घ्वति, त्रैलोक्यैकगुरौ न गोचरममी जग्गुर्जगच्चक्षुपाम् ॥ १ ॥

पापं पङ्कजयन् मुदं कुमुदयन् मोहं तमःस्तोमयन्, बुद्धिं तोयं धयन् नतिप्रणयिनां चन्द्राश्मयन् लोचनम् ।

पीयूषप्रतिमल्लनिर्मलगयीप्रक्षालितश्मातल्रस्तापव्यापदपास्तयेऽन्तु जगतः श्रीमान् मृगाङ्को जिनः ॥ २ ॥

श्रीनेमिर्नवनीलनीरजरुचिः श्रेयांसि निःश्रेयसश्रीविश्रान्ततनुस्तनेतु कृतिनां सौभाग्यमङ्गीगुरुः ।

सज्जः कञ्जलकालिमा त्रिजगतीलीलावतीनेत्रयोर्देहेद्युतिपानचिह्नवदसावद्यापि विद्योतते ॥ ३ ॥

परमपदपुराणद्वारभूतो विमूल्यै, स भवतु भवभाजां पार्श्वनाथो जिनेन्दुः ।

यदुपरि परिणामं तोरणसम्बलानां, कल्पति महद्देतुर्भोगिनेतुः फणाली ॥ ४ ॥

छन्नोत्सेकितनोरभीरभिनभोगर्भं सगर्भीकृतच्छायस्य च्छविभिः सुरस्य शिरसि स्वर्णद्युतिः शैशवे ।

वीक्ष्यैव क्षणतः प्रदक्षिणविधिपद्मेपु वैमानिकप्राम्गारेपु सुपर्वपर्वततुलां वीरः श्रयन् वः श्रिये ॥ ५ ॥

सरस्वत्याः स्तवनम्

पुण्यैकहेतुं रसिनीरजन्मप्रभापट् रूपचितप्रभावेः ।

श्रीवर्द्धमानस्य जिनेधरस्य, वाचः क्रमौ वक्त्रमपि स्मरामि ॥ ६ ॥

लीलासञ्चरणं च नूपुरणत्कारश्रियं च स्वयं, श्रोद्धुं साधु निषेव्यते खगकुलोचंसेन हंसेन या ।

किञ्चत्कमसनप्रसक्तमनसस्तस्यैव हेतोः करे, कुर्वाणा कमलं सैतां भवतु सा ब्राह्मी परब्रह्मणे ॥ ७ ॥

कविस्तुतिः

जीयामुः कवयो नवोत्तमगुणप्रामामिरामश्रियः, सर्वे शास्त्रतरङ्गिणीपरिवृढोलासैकचन्द्रोदयाः ।

येषां कीर्तिरुदारैवभवभवत्प्रौढमन्धावलीकल्लोला मुवनेपु पञ्चमपयोरशिध्रियं गाहते ॥ ८ ॥

१ मद्ं मुदिने ॥ २ 'यदयन्' मुदिने ॥ ३ 'हेतुं रं' मुदिने ॥ ४ 'सदा मं' मुदिने ॥

चापोत्कटवंशीपराजवर्णनम्

राजा श्रीवज्रराज इत्यभिधया चापोत्कटः कोऽप्यभूद्, गोत्रेण क्रियया च कश्चन वनाद् वीरः समभ्युत्थितः ।
सूर्येणापि जितेन यस्य महसा बाल्येऽपि दोलातरुच्छाया नाम न नामिता दिशि दिशि क्रोधारुणं धावता ॥९॥
सूर्या-चन्द्रमसौ कदाऽप्युदयतश्चेत् पश्चिमायां ततो, राज्यं स्यादिह सन्धयेति सुतया देशं समुद्राह्वयम् ।
येनास्यां दिशि वर्धमानमहसा राज्ञा च खरेण च, प्राप्तिनाभ्युदयं महोदयपतिः पूर्णप्रतिज्ञः कृतः ॥ १० ॥

भूपा सुवोऽणहिलपाटकनामधेया, येन व्यधायि किल गूर्जरराजधानी ।

यत्रोदयत्रवनवाद्भुतभोगभाभ्यश्रीणां नृणां बहुवृणं त्रिदशोक्तोऽपि ॥ ११ ॥

एकाऽपि प्रमदा मदालसवपुर्वत्र प्रपापालिका, विभ्राणा करकैरवेण करकं पूर्णं जलैरुज्ज्वलैः ।

रत्नस्तम्भमवलज्जमतिक्रितियान्ते कृतपाञ्जलीन्, यूनो वीक्ष्य मूढस्मितेन तनुते लज्जाविलस्यस्थितीन् ॥ १२ ॥

अस्मिन्नुन्नतवेदममौलिषु भवान् भावी सखेदः सखे !, चक्रप्रखलनाकुलीकृततरथस्तस्मादितो गम्यताम् ।

भिल्वान्तस्तमसः सुवर्णकलशाश्रैत्यालिचूलाजुपः, संज्ञां चक्रुर्धीरकेतनकरैर्यत्रेति मित्रं प्रति ॥ १३ ॥

स्फूर्जद्गूर्जरमण्डलावनिवधूवक्रोपमेऽस्मिन् पुरे, चैत्यं किञ्च निशेषकं व्यरचयत् पश्चासरारहं नृपः ।

यस्योच्चैः कलशश्वकास्ति रुचिभिः किञ्चिद्विमिनाम्बरश्यामत्वव्यपदेशकेशपदवीसीमन्तसीमामणिः ॥ १४ ॥

धात्रीधुरीणमुजनिर्जितभोगिराजः, श्रीयोगराज इति भूरमणस्ततोऽभूत् ।

यस्य प्रतापतरिणस्तरवारिमेघमूर्च्यन्तरेण नवकीर्तिजलं वर्षप ॥ १५ ॥

आसीदीशो दोष्मदादित्यरत्नादित्यो रत्नादित्य इत्यस्य पट्टे ।

तीव्रं तेजोवह्निमहाय यस्यावर्षत् खड्गः शत्रुसंवर्तकाब्दः ॥ १६ ॥

जातः करीन्द्रोसुरवैरिसिंहः, श्रीवैरिसिंहस्तदिलाविलासी ।

यत्कीर्तिकुल्या स्तुतिकैतवेन, चिकीड लोकाननकाननेषु ॥ १७ ॥

श्रीश्रेमराज इति तद् विरराज राजा, येनोद्भूतेऽपि भुवने कृश एव शेषः ।

विस्त्रय नृत्यदुरगीभरगीयमानतत्कीर्तिपानरसिको रसनं सुधायाः ॥ १८ ॥

राजा चापुण्डराजस्तद्, भूमण्डलमण्डयत् । सतर्प विधे यस्माऽऽज्ञा, नरेन्द्रैप्यलङ्घिता ॥ १९ ॥

चौलुक्यवंशीयनरपतिवर्णनम्

आहङ्गस्तद्वजनि क्षितिनेता, यस्य बाहुरिह नूतनराहुः ।

एककालगिलितौ रिपुतेजः-कीर्तिमूर्त्य-शशिनी न मुमोच ॥ २० ॥

नधारीन्दुमुखीसखेन्दुविजयस्मेरकाम्गोरुहः, श्रीभूमिभुवनैकभूषणममूर्त् तद्गर्विसुभूभटः ।

यत्कीर्तिगंगेनेऽपि पुष्पनिकरः स्वर्गेऽपि दुग्धोदधिः, क्षमात्वण्डेऽपि हरस्मितं विलसति श्रेष्ठेऽपि चन्द्रप्रभा २१

पीनश्रीर्भुजपत्रमोऽजनि यशोवार्धिर्जजृम्भे मुहुः, कम्पं खड्गलता ततान परितो जग्वाल त्रेजोऽनलः ।

यस्य धुण्णविपक्षवर्गवनितानिःश्रासवातोर्मिभिर्जेतुः केतुचलाऽप्यमृदविचला चित्रं जयश्रीरसौ ॥ २२ ॥

स्वस्तीयः शयति स्म तस्य पदवीं चौलुक्यलक्ष्मीशिरोमाणिक्यं हिमवद्विजिष्णुमहिमा श्रीमूलराजो नृपः ।

रेजे यस्य तमोरिपुस्त्रिपुरुषप्रासादकेतुच्छलादाकाशेऽपि विकाशिकाशविशदा कीर्तिलिमागो नदी ॥ २३ ॥

१ छुनया कं० ॥ २ च शरैः सुदिते ॥ ३ जेत्ये सुदिते ॥ ४ 'त्' पद्दविभु' कं० ॥

स्वक्रान्तसिन्धुपतिलक्षसमुद्भूतश्रीकोटिर्यदीयतरवारिरवारितौजाः । ।

कीर्त्याऽहसद् दिवि हरिं सुर-दैत्य-शेषशुब्धैकसिन्धुकलितैकमसिञ्चियं तम् ॥ २४ ॥

तेजःस्फूर्जितदीपदीपिनि मुधाशोभैर्यशोभिः शुभे,

विश्वच्छन्ननिवाससन्ननि वशी भूमिं मुनक्ति स्म यः ।

शत्रुस्त्रीनयनोदविन्दुजतृणस्तोमेन रोमाञ्चितां,

सेनाभिः परिकम्पिनीं परिवृद्धो योदा नवोढामिव ॥ २५ ॥

पाण्ड्यः पाखण्डिवेषं वहति नवहतित्रातसम्पातभीरुः,

कीरः कर्णाटवीरस्त्यजति रणभुवं व्याकुलो मालवेन्द्रः ।

वाच्यं किञ्चिन्न कान्तीश्वरचरितमसावालुरः कस्तुरङ्कः,

क्ष्माचक्रान्त्रान्तिभीमे प्रसरति सततं यत्प्रतापप्रभावे ॥ २६ ॥

भेजे तेजोगगनगहने यस्य पिङ्गस्फुलिङ्गभ्रान्ति बालारुणमणिरुचं प्राप कीर्यङ्गनायाम् ।

ईशो भासामपि दिवि दिवा किञ्च तद्योतपोतच्छायामायात् प्रतिनृपघटादुर्यशोदुर्दिनेषु ॥ २७ ॥

युद्धोद्भ्रामरमण्डलाग्रदलितोद्गण्डारिमुण्डोर्द्धतिक्रीडाखण्डितकाण्डमण्डपसुरप्रत्यक्षदोर्हम्बरः ।

चण्डांशुद्युतिचण्डिमा तदभवच्चामुण्डराजः क्षमाजानिर्यस्य विभात्यखण्डविभुतापाखण्डमाखण्डलः ॥ २८ ॥

रोदःक्षीरोदनीरैरेसिलदिगवलानव्यनिर्भूतचौरै-

दिग्भागस्फारहारैरैररपतिपुरक्रोडपुष्पोपहारैः ।

क्षोणीचन्द्राश्मशलैरपि भुजगजगच्चन्द्रिकाचक्रवालैः,

फुल्लकाशप्रकाशैस्त्रिभुवनमभितो भाति यत्कीर्तिहासिः ॥ २९ ॥

मेरुश्चेत् परिकम्पते जलपतेर्भ्रुञ्चन्ति चेद् धीचयो, मर्यादां द्युतिमर्यमा व्यजति चेदुर्वी दिवं याति चेत् ।

तद् भज्येत परैरसाविति सतां सन्धा मुधा यो व्यधात्, सङ्खक्षोभविधूर्णितावनिरजःकृतेऽपि तदाहरो ३०

खेलस्सङ्गपङ्कङ्गिबेह्लितमुजावह्लिर्भुयो वल्लभः, श्रीमान् बल्लभराज इत्यजनि तद् यत्वेजसा ताडितम् ।

शीतं स्फीतमभूत् तमश्च जगतः प्रत्यर्थिसार्थं गतं, नेदं चेदिह कम्प-कालिमगुणौ कस्मादकस्मादिमौ ! ॥ ३१ ॥

धम्रं सिन्धुरसुभया वसुधया भूमिं भटौचैर्दिवं, सतिक्षितरजोभरेण पिदधे सोऽयं जगज्जम्पनः ।

यः श्रीमालवभूपमालफलकप्रस्वेदविन्दुच्छलप्रत्यप्रप्रथितप्रशस्तिविकसद्दोर्विक्रमोपक्रमः ॥ ३२ ॥

तस्मान्नेत्रमुधाजनं समजनि श्रीदुर्लभो मल्लिकाफुल्लोस्फुल्लयशा विशामधिपतिर्जामृतपूतोन्नतिः ।

येनोचैस्तरवारिवारितपरक्ष्मान्प्रतापाग्निना, विश्वाश्वासकरेण सुरमहसामन्तर्दधे मण्डलम् ॥ ३३ ॥

कैराम्भोजं भेजे सततविततं यस्य कमला, प्रियारामादागादनु दनुजमेचा स्वयमसिः ।

यशःसूनुर्नूतं तदजनि तयोःप्रजकथासदर्पः कन्दर्पद्विपमपि रुपाऽधो व्यधित यः ॥ ३४ ॥

तस्माद् भस्मीकृतरिपुत्रुपः क्ष्मापतिः शौर्यसीमा, भीमः श्रीमानजनि यजनैर्यस्य नश्यत्तमोभिः ।

प्रासास्तृप्तिं दिवि दिविपदो नेन्दुमास्वादयन्ते, लोकः शङ्कामिति समतनोत् कीर्तिभिर्विप्रलब्धः ॥ ३५ ॥

१ 'स्वकीर्तसि' क० ॥ २ 'मुद्गत' मुद्रिते ॥ ३ फाञ्जीभ्य' मुद्रिते ॥ ४ 'द्रतिः' मुद्रिते ॥

५ पपमिदं उदयप्रभोयवच्छुपलसुतौ दशमपयतयाऽपि दृश्यते ॥

यत्रारिक्षत्रगोत्रक्षयकरणरणाद्वैतवैतण्डिकेऽपि,

क्षमापालः क्रुद्धकाळादिव निरगुरसेर्येवसादेन वेगात् ।

तावन्ही नम्रदेहाः करपरिमलनैर्मानयन्तो नयन्तो,

॥ मूर्ध्नोऽप्यूर्द्धं लघीयस्त्रिदशगृहगुहागर्भगुप्ताः प्रसुप्ताः ॥ ३६ ॥

सेवालन्ति पयःसमुद्रति दिशामन्तेषु मध्येनमः, सारङ्गन्ति शशाङ्कति घुंमुचने दागन्ति दन्तीन्द्रति ।

पुष्पस्तोमति षट्पदन्त्यमुलताखण्डं सुधाकुण्डति, श्वभ्रान्तर्मुजगन्ति यस्य यशसि प्रत्यर्थिदुष्कीर्तयः ॥ ३७ ॥

तत्कामश्रीरजनि जगतीकामुकः कर्णदेवः, किं वर्ण्यन्ते सुकृतसुकृता यस्य शुद्धान्तवध्वः ? ।

अस्वप्नीभिर्मनुजमुदृशो बहुमन्यन्त धन्यग्न्या ध्यानव्यसनजनितैस्वप्नयद्गोगभाजः ॥ ३८ ॥

कान्तं यं धीक्ष्य यान्तं प्रणयमयरुपा स्वप्नलब्धं प्रबुद्धा-

स्तद्बुद्ध्या न्यस्तदृस्ता लिखितरतिपतेरञ्चले चञ्चलाक्षयः ।

मूर्च्छालाक्षित्रशालामुवि भवति विमुनयमित्यसैहस्त-

स्तथा हन्ति स्य मूर्त्तः स्वपरिभवभवन्मानभूमिर्मनोभूः ॥ ३९ ॥

कान्ते कृष्णेऽभिभूते जगदवनपुपा बाहुना विग्रहेण, क्षिप्ते सूनावनग्रे पतिरि जलपती निबिंते सैन्यपूरैः ।

मन्धो दौपाकरे तु प्रथममपि मुसालोकमग्नप्रभाये, लक्ष्म्यास्तेनेह तेने हरणमुरुयशोदौत्यदत्तसृष्टाहायाः ॥ ४० ॥

मौक्तिकघृतिजलोज्ज्वलमन्तर्भूमिं कुम्भयुगलं कलयद्भिः ।

योऽत्रोपविष्टैर्मिलिनाङ्गैरिमिः करिकुलैश्च सिषेवे

॥ ४१ ॥

अर्थव्यर्थितदुरस्यदुर्विधिलिपिर्द्विदकुम्भिकुम्भच्छिदासिद्धः श्रीजयसिंहदेववृषतिः श्रीविश्व तस्मादग्रत् ।

सङ्घ्यासक्ष्यहतावनीधवनवस्वर्वासिसन्नुष्टये, चक्रे यः क्रतुचक्रवालमवनीशक्रो न शकश्चिये ॥ ४२ ॥

पञ्चा पञ्चमपास्य पङ्कजनितं यस्मारिकेतावलीरोलम्भप्रविरोलदकुलिलदलं भेजे कराम्भोरुहम् ।

शेषं चापुवधं विमुञ्च्य सचलं दोर्नागमागादसिः, कृष्णोऽपि मियमेलकाभिषममूत् तर्चीर्भेतद्भुजः ॥ ४३ ॥

न्यस्यावश्यं शिरसि विरसं क्रन्दतां पादमेपां, राज्यं ब्राह्मं द्रुतमिति रणे यः प्रतिज्ञां प्रतेने ।

पतत्पादोपरि तु परितः स्वं परिन्यस्य मौलिं, प्रीतैरन्तः प्रतिनृपतिभिः प्रत्युत् प्रापि लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥

काञ्चनजिह्वजिह्वजिह्वचरणशुष्णक्षमामण्डलप्रोसल्लोदकदम्बदम्बरपरिच्छिन्नम्बरे सङ्करे ।

यत्कीक्षेयकदण्डमण्डितरिपुक्षमापालमालावृतिव्यासक्रा न परं पुरन्दरपुरीनारयः स्वकार्यक्षमाः ॥ ४५ ॥

शोषः सैष जवाद् यशोजलनिधो शान्तिः प्रतापानले, सङ्घाणां शिरसि च्युतेऽपि हसितं नृचं कबन्धेष्वपि ।

सत्यं सङ्करसङ्करस्य महिमा सोत्साहमन्त्रश्रितेयस्योर्धः करवाल एव स कथं सिद्धो न सिद्धाधिपः ? ॥ ४६ ॥

विद्वौजमि गते भयादनिविद्वौजसि स्वर्गीरि, तदीयदिशि यः स्फुरन्निद महे-यसःक्षमारदौ ।

अरोपयद्दहो ! पयःपतिनटोऽधुनाऽप्यन्वहं, ततोऽम्युदयतो नवौ रवि-निशाधवौ पहवौ ॥ ४७ ॥

रक्ष्यां रक्षिष्यमशमे दिशमपि श्यामे सदुन्ये यमे, यद्दृष्टैरभिभूतदक्षिणककुब्भागौर्द्विष्यो भाविर्भीः ।

मास्य द्राक्षन्दि दुःसहैरिति नताः पाराय वारानिधेर्भेजुः सेतुभुवं ततः कपिमयाच्युत्तोम रक्षोमरः ॥ ४८ ॥

१ पपनिर्दं उदयप्रभाचार्यविरचिताः ॥ २ पपनिर्दं उदयप्रभाचार्यविरचिताः ॥ ३ "नितं स्य" धं ॥ ४ "स्वस्तदृस्तां" मुद्रिते ॥ ५ "धुर्मिलिताङ्गैः", मुद्रिते ॥ ६ "अधिष्ण्य" मुद्रिते ॥ ७ "विभिः" मुद्रिते ॥

विल्लसाक्षः पार्श्वं निजतनुविनाशाय वरुणः, शुचा भेजे चित्रत्यपरहरितो यत्र विभुताम् ।

किमन्यच्चन्द्रार्काविह दिशि गतौ यस्य च यत्रः-प्रतापाम्यामग्भःपतिपयसि डीनौ निवततः ॥ ४९ ॥

यस्मिन्नुत्तरदिग्गते बलचलच्चूर्णावलीभिः स्थलीभूवं मेति नदीपतिर्द्वैतमयं मेरोः परेणागमत् ।

तेने किञ्च निकेतनं घनपतिः कैलाशशैले सुखत्राह्यमन्यमना मनागपि न चामुञ्चत् तटं शूलिनः ॥ ५० ॥

तेजोबहिहुताष्टदिग्नृपसभिद्यज्जानयूपोपभैर्नेदक् क्रोऽपि पतिः क्षितेरिति दिशामूर्द्धाङ्गुलीसलिभिः ।

आलानप्रतिभैर्दिगीशकरिणां दिग्मण्डपोत्तग्भनस्तग्भस्तोमनिभैश्च यस्य विजयस्तग्भैर्दिगन्ता वसुः ॥ ५१ ॥

१ शैङ्गं शार्ङ्गधरस्य शेग्वरमणिं शूलायुधस्य द्विपं,

१ यज्जास्यस्य रदं परश्वधमृतः स्वर्लोकलीलाजये ।

उत्कर्षार्थितया विलम्पतु भेटो विधैकधामा यशो,

१ नामा[SS]यस्य हहा ! जहार तु कुतो युग्मं जरद्भक्षणः ? ॥ ५२ ॥

अस्य त्रिक्रमविक्रमस्य न मुदे श्लाघा जगज्जाह्विकी,

लक्ष्यानामपि कष्टमष्टककुभां जेताऽयमेतावती ।

१ क्षोणीकम्पिनि धूतधूलिनि बले यस्याहि विश्वेश्वरः,

१ शेषो नाम ननाम धाम युयुचे भानुर्नभोभूषणम् ॥ ५३ ॥

क्रान्तशक्रबलो भग्नभोगिलोकः क्षितिं जयन् । येन चर्चरदैत्येन्द्रः, पुरीपरिसरे हतः ॥ ५४ ॥

दृष्टोऽभून्मुशलध्वजः स्वकुशलध्यानेन जिष्णुः स्मयभ्राजिष्णुर्मुदितः समुद्रशयनो रुद्रोऽपि मुद्रामुदा ।

उरिक्षसे किल चर्चरस्य शिरसि क्रूरस्य विश्वत्रयीजेतुर्येन तदा विधुन्तुदधिया भीतस्तु शीतद्युतिः ॥ ५५ ॥

१ १ संजज्ञे नृपतिशतैः कृतांश्चिसेवः, क्षमापालस्तदनु कुमारपालदेवः ।

निर्वीराविभवमुचाऽपि येन मुष्टा, निर्वीरा रिपुवसुषा नितान्तपुष्टा ॥ ५६ ॥

सैन्यप्रकम्पितधराविधुरात्मकेषु, पोतैरलङ्घ्यसलिलेषु धुनीधवेषु ।

श्रीजैनचैत्यरचनेन शिलोच्चयेषु, यस्याजनिष्ट चरणः शरणं रिपूणाम् ॥ ५७ ॥

यस्य सन्धनि सदा हयहेतोः, लाघमुद्भवलयं दलयद्भिः ।

सिच्यते सुचिरसञ्चितशोकैर्वीरिभिर्नयनवारिभिरेव ॥ ५८ ॥

दास्यवर्तिन इवाऽऽस्यसमुत्थश्चासनाशिततृणामु विपक्षाः ।

प्रातरश्रुसलिलेन यदीयद्वारमूमिषु रजः स्यगयन्ति ॥ ५९ ॥

अग्रे हम्मीरवीरश्विरमजिरमहीपादपः पादपद्म-

क्रीडाभृङ्गः फलिङ्गः सदनवदनगो भेदपाटः कपाटः ।

अन्ध्रः कर्णाट-लाटौ कुरु-मरु-मुरला वङ्ग-गौडा-ऽङ्ग-चौडाः,

क्रोडस्तग्भाः समायामिति नृपतिकुलैराकुलैरावृतो यः ॥ ६० ॥

कथ्यन्ते न महीभृतः कति महीयांसो महीशेखराः, माहात्म्यं स्तुमहे तु हेतुनिगमादेतस्य चेतोहरम् ।

मर्यादामतिलक्ष्यन् रसलसद्यद्वाहिनीवाहितोऽर्णोराजः स जगाम जाङ्गलमहीभागेषु भग्नोन्नतिः ॥ ६१ ॥

१. पयसिदं उदयप्रभोवस्तुपालस्तुतौ सप्तमपयत्वेनापि वसंते ॥ २ 'टो निस्सीमधामा उदयप्रभोव-
स्तुपालस्तुतौ ॥ ३ कीतदा' का० ॥

दर्शं दर्शमसद्यदर्शनकचं कल्पान्तश्चिप्यान्तकप्रक्रीटद्रसनासनाभिमभितो यत्त्वद्भ्रखेलां युधि ।
वित्रस्तस्य चमूचैः सह तथा प्राग्विधलक्ष्मा मुजः, प्रस्वेदान्मु जगाल जाङ्गलमुबोऽभूवसन्पू यथा ॥६२॥

धीणत्वं दाक्षिणात्या व्यरचयदमुचन्मालवी बालवीशा-

दुःस्तादश्रूणि हृणी शुचमधित दधौ जाङ्गली नाङ्गलीलाम् ।

कुञ्जाऽऽसीत् कन्यकुञ्जा शिरसि सुतभराद् कौङ्कणी कङ्कणानां,

वृन्दं खेदाद् विभेदावनिमृति चलिते यात्रया यत्र जैत्रे

॥ ६३ ॥

कोदण्डं स्वकरे कुरुर्न कुरुते सज्जं गलञ्जङ्गलस्तो वेत्ति नितम्यतो न वसनं कीरो न वीरोचितः ।

युद्धक्षीणेषु दक्षिणः क्षितिपतिर्न क्षोददक्षोदयद्वाहुर्मृत्युसहस्रचक्षुषि मुहुर्यस्मिन् धनुर्धुन्वति ॥ ६४ ॥

जगद्दन्त्यमन्यः प्रबलजलदुर्गाऽर्जुनमही, यदीयैरुद्यद्भिर्बलपरिवृष्टैः पौरुषदृष्टैः ।

दयोत्सावक्षीणीविततरजसा सिन्धुपरिखां, स्थलीकृत्य क्रीडासमिति शमितः कौङ्कणपतिः ॥ ६५ ॥

पदं विजयसम्पद्रामजयपालदेवोऽल्लिलद्विपन्पतिमृत्युमृथ बभूव भूवल्लभः ।

राज सुरराजवज्रगति यस्तनुद्विभ्रतप्रियाचयविडोचनाम्बुजसहस्रनेत्राश्रितः ॥ ६६ ॥

यस्मिन् पदयति वेदमनोऽङ्गणसुवि भ्रान्तेऽपि मचद्विषे, नेशुर्नाऽऽशु नृपा व्यंपापरुनमः सेनामयत्रीदया ।

शोकश्यामतमानिमानपि पुनः प्रेक्ष्य द्विषो नापिषद्, दग्धक्ष्मारुहखण्डसण्डनविधौ कुर्वन्नवज्ञामिव ६७

आजन्मत्रासहेतुथमसमदहृदः कण्टकाः कण्टकदु-

द्रोणीचीत्कृत्वचोऽपि स्सरुदुपलशिलाभोगमुग्नांश्रुयोऽपि ।

अङ्गुष्ठं नर्वयित्वा मृतपदमभवन् यस्य सेनाभटानां,

निःस्वानध्वानजैत्रत्वरतुरगमृतां पश्यतामप्यदृश्याः

॥ ६८ ॥

तमहृतमहं वद्धा वप्या समं न समानये, यदि तदवनीनेता नेति प्रणीतरणो रिपुः ।

किमपि न पुनः कर्तुं मर्तुः स यस्य अज्ञाक तलियतममुच्चत् प्राज्यं राज्यं सतामचलं वचः ॥ ६९ ॥

धीरधवलवंशवर्णनम्

मूलं कीर्तिलताजतैः समजानि श्रीमूलराजा नृपस्तत्पट्टं करकैलिकन्दुककलक्ष्मांगौलको बालकः ।

यस्मै दण्डमसण्डहर्षकृतये हम्भीरभूम्रीरुहप्रस्वेदप्रभवं समर्पितवती मातेव कौतुहलात् ॥ ७० ॥

सन्तापं यत्प्रतापस्य, तुरुन्कैरसहिष्णुभिः । आपादमस्तकं चक्रे, ध्रुवं बासोऽवगुण्ठनम् ॥ ७१ ॥

रिपुर्वीनेत्राम्भोषयरयनदीमातृकयथा, विद्यामीशो भीमः समभवदुदाघस्तदनुजः ।

अलन्वार्थिस्तोमः पुरनृप विमच्छार्थिषु फलप्रदेषु प्रदेपं विरचयति दानैकरसिकः ॥ ७२ ॥

संलीनानामनुतटवनं तीरिभिधान्तरनीरसीतुस्थानां यदरिसिद्धशां दिक्षु रेजुर्मत्तानि ।

उत्कल्लोटः सह बहुविंपरेव रलाकरोऽप्यं, रात्रौ रलान्यतनुत बहिः सोमनामानि मन्ये ॥ ७३ ॥

धामां धाम कुमारपालपरणीपालप्रसादास्पदं, चौतुक्थो धवलान्नभूर्गस्मतिः श्रीमीमपल्लीपतिः ।

अर्णोरात्रनृपो व्यषत् नृपतिं मातेतदीयः पिता, मलैवं लवणप्रसादनृपतौ द्दामारनेष व्यधात् ॥७४॥

१ 'गार्जिनमयेवर्दी' मुद्रिते ॥ २ 'व्ययाय' मुद्रिते ॥ ३ 'दामपाल' मुद्रिते ॥ ४ 'पो
व्यय' मुद्रिते ॥

॥ यत्तत्रदण्डयमुनाम्भसि मेदपाट-चन्द्रावतीपुरपती त्रिदिवाय मग्नौ ।
 चक्राम चक्रमवनेरथ पूर्णमणोर्राजस्य तस्य तनयो लवणप्रसादः ॥ ७५ ॥
 घोरारण्यविलङ्घनैरतिघनै रीणाऽप्यरीणामहो !, राजिर्वाजिविजित्स्वरगतिर्विब्रस्य यस्याऽऽह्वे ।
 स्वामात्यक्रमकर्ममर्मररवानाकर्णयन्ती गता, प्राणत्राणवनावनावपि भिया मिथा न विश्राम्यति ॥ ७६ ॥
 कोपाग्निज्वलितस्तदस्थवल्बुत्कारविस्फारिता, निर्भेनाश्चरणेन काचकुतपप्राया तिकाया द्विपाम् ।
 तदुष्कीर्तिमिपद्रवन्नवमपीचक्रेण चक्रेऽम्बरं, श्यामं यस्य यशःपयोभिरभितः प्रक्षालितं निर्मलैः ॥ ७७ ॥
 किं वर्ण्यो लवणप्रसादनृपतिः ? पाणौ कृपाणच्छलं, कालं बालमहो महोभरजितादादायै मूरादपि ।
 यो मुष्टिप्रहलालितं प्रतिपदं कोपारुणः कम्पयन्, दिग्नेता रिपुमुण्डमोदकचयैरुहै रुचं नीतवान् ॥ ७८ ॥
 नताशेषद्वेषिक्षितिपकृतपूजः प्रतिपदं, तनूजस्तस्याऽऽस्ते भुजगजगदीशघृतियशाः ।
 अधीशो धीराणां धवलकुलधैरियधवलः, श्रियां सोधं धीमान् धवलचरितो वीरधवलः ॥ ७९ ॥
 देशोऽरण्यप्रदेशो नगरनगरसा कन्दरा मन्दिराली,
 तूली धूलीनिवेशस्तृणमृतकबरीधानमेवोपधानम् ।
 कायच्छायाऽनुगक्षी प्रतिदिनमशनं कन्दमूलं डुकूलं,
 वल्कं दारिद्र्यकल्कं सचिव इति शुचिर्द्विषां राज्यलक्ष्मीः ॥ ८० ॥
 न किं स हरितुस्यतास्तुतिपु लज्जते ? यज्जितैररातिनिवहेर्महागिरिगुहागृहेकस्पृहैः ।
 विजित्य मृगवैरिणो निजपुरे नियुक्ताः स्वयं, गृहोपवनमूल्हां विरचयन्ति रक्षां किल ॥ ८१ ॥
 दूरं दुर्ललितेन यस्य महासा शक्रेऽम्बरं त्याजिता, कीर्तिर्वीरमहीमृतां तव भवद्वैलक्ष्यकृष्णच्छविः ।
 गूढक्ष्माधरकुञ्जपुञ्जसदनोत्सङ्गे तमश्छन्नना, चक्रे नाशविनाशमेव रुदतीत्राप्योपमैर्निर्झरैः ॥ ८२ ॥
 अन्तर्व्योम श्रवन्ती मधुरमधु विधुच्छन्नशुभ्रच्छन्दं दि-
 वपत्रं नक्षत्रलक्षच्छलजलकणिकं भानुमद्भारपरागम् ।
 भ्रान्तध्वान्तद्विरेफत्रजमजरगिरिव्याजकिञ्जल्कमेत-
 ह्रीलां नीलाम्बुजस्य श्रयति वियदहो ! यद्यशस्तोयराशौ ॥ ८३ ॥
 अभासतादृशगुणां युवति नितम्बस्तम्ब-स्तनस्तवकमारमृतोऽहसन् याः ।
 माषामु यस्य पृतनासु पुरे रिपुणां, सास्त्रासकाललसिता हसितास्तयाऽपि ॥ ८४ ॥
 प्रतिदिनमपि रौद्रैर्यस्य तप्तः प्रतापैरिति समिति समेतः संभविद्योऽस्तिदृष्टे ।
 जिगमिपुरिरवर्गः स्वर्गमग्रे तडागं, हिममयमिव मेने भानुमानन्दमग्नः ॥ ८५ ॥
 यस्य न्यधितचापचापलचलन्नाराचवीचीचयव्यस्तत्रस्तसमस्तसैविक्रजनव्यालो रुशोकाकुलाः ।
 खेदस्वेदमयं पयःकणगणं भाले दधुर्मोरुपु, व्यक्तं मौक्तिकपट्टवन्धनमिव प्रत्यर्धितृष्वीमुजः ॥ ८६ ॥
 क्रुद्धे युद्धेषु यस्मिन् रिपुनृपनिकरः केशव-व्योमकेश-
 क्रमादीनां पदाब्जैरपि मनसि धृतै रक्षितो न हतेभ्यः ।
 रक्षन्नास्मान्मात्मकमकमलयुगप्राप्तवेगप्रसादा-
 देताम्नो देवताम्नः कथमिव मुवने नापिकोऽगृन् प्रभावैः ? ॥ ८७ ॥

यत्स्रक्षतकुम्भिकुम्भविगलरकीलाकल्लोलिनीपङ्क्तिर्व्यक्तयशोमहीरुहमहो । निर्मूल्यन्ती द्विषाम् ।
 तेषामेव महोदधानलभरं शान्तिं नयन्ती ययो, मुक्तामण्डलमण्डिताऽम्बुधिमगात् तेनैव रत्नाकरः ॥ ८८ ॥
 यद्दोर्मण्डलकुण्डलीकृतधनुःप्रोक्षीनकाण्डावलिन्यासत्रासपराः परं प्रियतमा नेशुर्द्विपां वक्षसः ।
 तासांमप्युरसो रसोत्तरंलराहुःखलुराणामयं, कन्दर्पः करकोटिकुट्टनदराद् दूरेण तूर्णं ययो ॥ ८९ ॥
 प्रत्याकारच्छलगुरुदरीनिःसृतः श्यामकान्तिः, सर्पन् सर्पश्रियमकलयद् यस्य पाणौ कृपाणः ।
 यं ज्वालोक्य प्रस्रभरयशौराशिनिर्मोकभानं, द्वैविक्षीणीपरिवृद्धमहोद्रीपकः प्राप शान्तिम् ॥ ९० ॥
 युद्धपर्वणि कदापि न दृष्टं, यस्य पृष्ठमसुहृत्तिकुरुन्धैः ।
 सप्रतिज्ञमिव वीक्षितुमुत्कैस्तैश्चिरादनुचरत्वमभाजि ॥ ९१ ॥
 कुण्डलप्रतिमितस्वभुजाभ्यां, यश्चतुर्भुज इव प्रतिभाति ।
 चारुचक्रमनुबन्धि दधानो, बाणयुद्धजितकामविपक्षः ॥ ९२ ॥
 यस्पदाम्बुजयुगं रणधूलीधूसरं चिकुरमार्जितिकाभिः ।
 मार्जयन्ति विनता रिपुनार्यः, श्रीनिकेतमिव हस्तधृताभिः ॥ ९३ ॥

यद्दानमभवप्रभूतकनकप्राग्भारसारस्फुरन्नेपथ्यप्रचयप्रकम्पितरुचः प्रेक्ष्य द्विजैर्नां प्रियाः ।
 विन्ध्योद्वासमयाद् घटोद्भवमुनेर्योग्योऽप्युपेतो न यलोपामुद्रिकया तिरस्कृतिगिरा तस्मादुपालम्भ्यते ॥ ९४ ॥
 यस्मिन् दाननिदानकाश्चनचयस्फेरस्करे कर्णिकोचालस्तालदलं न वाञ्छति जनः प्राणप्रियाप्रीतये ।
 तस्मान्मूलपथेऽखिले फलगलन्मैरेयसिक्तोल्लसत्तृण्याभिस्तृणराज एष समभूत् तथ्याभिधानस्ततः ॥ ९५ ॥
 ऋभङ्गिप्रतिबिम्बतोरणदलं प्रौढप्रतापच्छलप्रोघद्रीपमदभ्रशुभ्रयशसा लिप्तं सुधास्पार्द्धैर्ना ।
 पचासस्य विभाति वीरधवलक्षणेणीयासङ्गं पुरो, युद्धकुब्जविरोधिरोधिपरिस्ताविस्फारधारजलम् ॥ ९६ ॥
 उपार्जि विमुताऽद्भुता वसुमती च नीता यशं, क सम्प्रति महामती धृतभरे भवेयं सुखी ? ।
 अनेन गदितैरिति स्फुटसभाजनैर्भानैः, श्रियामिति समाजनैः शुचिचिचारमूचे वचः ॥ ९७ ॥

वस्तुपालवंशवर्णनम्

वंशोऽयं प्रथितोऽतिः प्रभवति प्राग्वाट इत्याह्वया, पुण्यः पुण्यसुधारसेन शुचिना सोद्रेकसेकक्रियः ।
 दिव्यामन्वरलम्बिर्नी सुचरितप्रासादमासादयन्, कीर्षि केतनकौतुकेन तनुते यः स्वर्धुनीस्पर्द्धिनीम् ॥ ९८ ॥
 अच्छिद्रो यदि तत्कृतो गुरुगुणश्रेत्रिर्जलस्तत् कुसस्तेजस्वी यदि धीमतां हृदि गतश्चूडामणिश्चेत् कुतः ! ।
 वंशेऽस्मिन्नजनिष्ट विष्टपचमत्कारिति कीर्तिप्रभाशुभो मौक्तिकरलवन्नवनवध्रीमण्डितश्चण्डपः ॥ ९९ ॥
 चण्डप्रसाद् इति तस्म सुतस्ततोऽभूद्, यत्कीर्तिगिर्षवलितेऽम्बरभित्तिभागे ।
 लीलां लली लिपिरयस्य रशाङ्गबन्धोः, क्रीडारयः प्रकटमेकरयाङ्गशोभी ॥ १०० ॥
 समजनि जिनसेवानित्यद्देवाकृतृष्टिः, प्रगुणगुणगणश्रीस्तस्य कान्ता जपश्रीः ।
 जगति धनतमोभिः कदमले मानसान्त, किल विलसति यस्याः युद्धहंसो विवेकः ॥ १०१ ॥

१ पयसिर्द उदयप्रभोयवस्तुपालस्तुती पश्यपनयासि विपते ॥ २ °जातिप्रियाः मुदिते ॥ ३ °मुनिर्षो
 कां ॥ ४ °तापोच्छलप्रो° मुदिते ॥ ५ °तीपनं मो यशं कां ॥

। माधुर्यधुर्यमधुरोभगुणैकशोभनिष्कम्पसम्पदलिनीनलिनीवनश्रीः ।

।। १ ।।

धूरस्ततस्तनुभवोऽनुभवोपमुक्तमाग्यप्रभावविभवो नयभूर्ध्रुव

॥ १०२ ॥

स श्रीमानुदयाचलोज्वलरुचिर्मेव्यं दधानो जने, धूरः क्रूरतमःसमुच्चयभिद्राशूरः कथं वर्ण्यते ? ।

अन्योन्यव्यतिपङ्गसङ्गतरुचि व्योमच्छले पल्लवे, तेजःकीर्तिमिषेण चक्रमिधुनं सयोजयामास यः॥१०३॥

भ्राता वातायन इव धियां तस्य निःसीमकीर्तिस्तोमः सोमः समजनि जनालोकनीयः कनीयान् ।

देवो देवेष्विव जित्पतिर्मानसे, मानसेहाद्, यस्यावश्यं नृपतिषु पतिः सिद्धराजो रराज ॥१०४॥

विश्वानन्दकरः सदा गुरुरुचिर्जीमूतपूतोन्नतिः, सोमः कोऽपि पवित्रचित्रविकसद्देवशधर्मोन्नतिः । ।

चक्रे मार्गणपाणिशुक्तिरुदरे यः स्वातिवृष्टिप्रजैर्मुक्तैर्मौक्तिकनिर्मलं शुचि यशो दिक्कामिनीभूषणम्॥१०५॥

एतस्य विकसद्भारामस्याजनि वल्लभा । सीताऽऽभूतनयाऽप्येषा, न कुशील्वसन्मतिः ॥१०६॥

आशाराज इति व्यराजयदथ क्षमासण्डमासण्डल-

क्रीडासिन्धुरपश्यतोहरयशःस्तोमेन पुत्रस्तयोः ।

श्रीमान् सोमसमुद्भवो निजमवेऽम्भोधौ गिरीशान् गुरुन्,

सेतुकृत्य तिरोदधे स्वकुलजाहङ्कारमुष्णद्युतः

॥ १०७ ॥

यस्तीर्थानां प्रकरमकरोल्लोकनिर्माणकर्माङ्गर्माणो विधिरधिगतः सोऽभुजन्माङ्गजन्मा ।

आभ्यामुच्चैस्तदपि विजितं यो विनिन्द्येति चित्ते, भक्ति धीमानकृत जननीपादयोरादरेण ॥ १०८ ॥

दृषालोकेऽर्थिलोके सुरसुरभिरिव भ्राजते यस्य बाणी,

चेतोवृत्तिश्च चिन्तामणिरिव फलदः करुणशास्त्रीव पाणिः ।

स्तुत्योऽसौ कस्य न स्यादमरगिरिसमः धूर-सोमप्रसर्प-

चेजःपुञ्जामितश्रीर्लसितसितयशोदम्भजम्भारिकुम्भी ?

॥ १०९ ॥

तस्य प्रिया सुदमधत्त पिनाकपाणेर्देवी कुमारजननीव कुमारदेवी ।

इन्दुः सदा रिपुरजीयते पङ्कजश्रीसर्वस्वदानमुदितेन मुखेन यस्याः

॥ ११० ॥

कामतस्जाम्तसरोदरेऽकवरला कल्पद्रुफर्याङ्गजश्रेणीनिन्दनम्। मिरिद्रुतभातिश्रीरोद्वन्द्वुक्तिः ।

शश्वद्विधविनाशतत्परिनवाधःकारभागीरथी, या मुक्ताफलनिर्मलद्युतिगुणामिव्यक्तिशुक्तिर्वभौ ॥ १११ ॥

चत्वारस्तनया नयाहृतिरसाः कंसारिदोर्विक्रमा, गोदावर्य इवोज्वला दुहितरः सप्त प्रसूतास्तयोः ।

आमहादशतां यदीयवर्दनैर्लेभे मुधादीधितिर्बद्धस्पर्द्ध इवाल्लिकार्कवर्तरोच्छेदाजगन्मोदयन् ॥ ११२ ॥

लावण्याङ्ग इति युतिव्यतिकरैः सत्याभिधानोऽभवद्, शङ्के शङ्करकोपविभ्रमभरादासीदनङ्गः स्मरः ।

१ उत्तरार्धमिदं उदयप्रभोयवस्तुपालस्तुती सप्तविंशतितमपद्येऽपि दृश्यते ॥ २ "वृष्टिं मुहुः, कृत्वा मौक्तिकनि-
र्मलं निजयशो दिक्कामिनीमण्डनम् उदयप्रभोयवस्तुपालस्तुती ॥ ३ "चलन्म" मुदिते ॥ ४ यः श्रीसोम" कं० ॥

५ पद्यमित्युदयप्रभान्ना निर्दिष्टं पाठभेदेन प्राचीनलेखसंग्रह माग २ गत ४ ३ संख्यगिरिनारसत्त्वशिलालेखे दृश्यते । तथाहि-

लावण्याङ्ग इति युतिव्यतिकरैः सत्याभिधानोऽभवद्,

भ्राता यस्य निशानिशान्तयिकसद्यन्द्रप्रकाशाननः ।

शङ्के शङ्करकोपसम्भ्रमभरादासीदनङ्गः स्मरः,

साक्षादङ्गमयोऽयमित्यपहृतः स्वर्गाङ्गनामिर्लघु ॥ ४ ॥

सर्वाङ्गं सुमगोऽयमित्यनिमित्तस्यैवैव बाल्ये हतः, त्यक्त्वा गूढलयं सुरेन्द्रसदसि कीडातति निमग्नं ॥११३॥

महृद्देव इति देवताधिपश्रीरगूत् तदनुभूर्विभूतिभूः ।

धर्मकर्मधिपणावशो यशोराशिदासितसितद्युतिद्युतिः

॥ ११४ ॥

रैक्तः सद्गतिभावभाजि चरणे स्मेरास्पपङ्केरुहमकीडत्परमेष्ठिवाहनतया प्राप्तः प्रतिष्ठां पराम् ।

खेलधर्मलभानसेन समगं कापि श्रयन् पङ्किलं, विश्वे राजति राजहंस इव यः संशुद्धपक्षद्वयः ॥११५॥

आस्ते तस्य सुधारहस्यकवितानिष्ठः कनिष्ठः कृती, बन्धुर्बन्धुरबुद्धिबोधमधुरः श्रीवस्तुपालाभिधः ।

ज्ञानाम्भोरुहकोटरे भ्रमरतां सारङ्गसाम्यं यशःसोमे शीखिलां च गस्य महिमक्षीरोदधौ खं दधौ ॥११६॥

हैस्तामन्यस्तसारस्वतरसरसनप्राप्तमाहात्म्यलक्ष्मी-

स्तेजःपालस्ततोऽसौ जयति वसुधैः पूरयन् दक्षिणाशाम् ।

यद्बुद्धिः कल्पितोरुद्धिपगहनपरक्षोणिभृद्बुद्धिसम्प-

होपासुद्राधिर्पथ स्फुरति लसदिनस्फारसञ्चारहेतुः

॥ ११७ ॥

तद्विमं मौलिषु मौलिं, कुरुपे पुरुपेश ! सकलसचिवानम् ।

क्षितिधव ! तत्तव दोष्णोर्विष्णोरिव भवति विश्रामः

॥ ११८ ॥

श्रुत्वेति मुदितहृदयः, पुण्यप्रागरुह्यलभ्यसभ्यगिरिम् ।

अनयोरनयोऽजितयोर्धरणिधवं व्यथित धरणिधवः

॥ ११९ ॥

सोऽयं प्रख्यातकीर्तिः सुजनजनमनःपद्मोघोष्णधामा,

श्रीतेजःपालनामा स्फुरति मतिरुतास्थानकैल्पदृष्टः ।

पाठारम्भाय लक्ष्म्या दुहिलुरिव दधत् पट्टिकां वर्णवर्णां,

मुक्ताद्भ्रमेत गम्भीरिमगरिमगुणैर्यैः पयोराशिरासीत्

॥ १२० ॥

दिग्धात्रोत्सववीरवीरघवलक्षोणीधवाध्यासितं,

प्राज्यं राज्यरथस्य भारमभितः स्कन्धे दधल्लीलया ।

भ्राति भ्रातरि दक्षिणे समगुणे श्रीवस्तुपालः कर्म,

न श्याम्यः स्वयमश्वराजतनुजः कामं स वामस्थितिः ? ॥ १२१ ॥

यत्कीर्तिप्रसरे. परस्परपरिस्पृष्टोर्द्ध्वदिप्युभिर्दूरं दारितमेवदम्बरमिह अर्धं सुनो मण्डले ।

राशीभावचरिष्णुमीन-मकराद्याकीर्णमर्ण. पतिव्याजादङ्गनमञ्जुलच्छवि न कैः प्रत्यक्षमुपेक्ष्यते ॥१२२॥

नीता वशं विषमवारिगुणेन बाहुस्तम्भे धृता कनकशृङ्खलिकाभियोगात् ।

श्रीर्मेन शिन्धुरवधूरिव भूरिवर्षादानप्रमोदितघनोदितमार्गणालिः

॥ १२३ ॥

१ श्रीडां ततो निं वा० ॥ २ पयमिदमुदयप्रभनाम्ना प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ मध्ये ४३ तमगिरिना-
रमन्तिलालेसे दशयेते । ३ शार्पं च तत्र पाठभेदेन वर्तते—रघुतः सद्गतिभावभाजि चरणे श्रीमहृद्देवोऽपरो,
यद्गता परमेष्ठि० ॥ ३ पयमिदमुदयप्रभनाम्ना प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ मध्ये ४३ तमगिरिनारसत्तिलालेसे
भट्टमनपतया वर्तते ॥ ४ 'धिपस्य स्फुर' गिरिनारशिलालेसे ॥ ५ 'मोष्णुष्ण' मुद्रिते ॥ ६ 'कद्रुश्वहा'
कां ॥ ७ पयमिदं उदयप्रभोयवस्तुपालस्तुौ एकदशपद्यतया, प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ लेख ४३ मध्ये उदय-
प्रभनाम्ना तृतीयपद्यतया च वर्तते ॥ ८ 'पुयै भा' उदयप्रभोयवस्तुपालस्तुौ ॥ ९ 'श्रुलव्याजयोगात्' वा० ॥

धाम्नि स्वर्धामशैलं प्रियवचसि सुधामानने धामिनीशं,
 कण्ठे वैकुण्ठशङ्खं भुजशिरस्युगे जग्मभित्कुम्भिकुम्भौ ।
 पुण्योत्पन्नस्य यस्य स्वयमसमचमत्कारिरूपस्य पाणौ,
 प्रत्यक्षं कल्पवृक्षं जगति जनयतश्चातुरी भातु धातुः ॥ १२४ ॥
 लावण्यद्रवकूपरूपसुभगे निःशेषचेतस्विना-
 मन्तर्वासिनि वाग्धशंवदमधौ राजप्रसादोज्ज्वले ।
 एतस्मिन् सुमनोमनोरमगुणैर्विश्वं च विश्वत्रयं,
 वश्यङ्कुर्वति सोऽपि सम्प्रति पदभ्रष्टो मनोभूरभूत् ॥ १२५ ॥
 अम्भोदभ्रमभाजि दुर्जनजने श्यामायमानद्युतौ,
 तन्वाने भुवनेषु दुस्तमतमःस्तोमं कुकीर्तिच्छलात् ।
 लब्धोच्चश्रनराममार्गणमुत्सल्यातश्रुतिद्वारत-
 स्तूर्णं मानसमानशो सुमनसां हंसोज्ज्वलैर्यद्गुणैः ॥ १२६ ॥
 मूलस्थूलहरित्करिस्थिरपदं शुभ्रप्रमं भूमिभृदग्मस्तम्भमरं नमःसुरसरिद्विद्याजध्वजभ्राजिनम् ।
 उत्तुङ्गं जगतीतलेऽनुलयशःभासादमासाद्य यश्चिन्तातीतफलप्रदोऽवनिजने देवोऽस्तु सेवोन्मुखे ॥ १२७ ॥
 हैन्दुर्विन्दुरपां सुरेश्वरसरिद्विण्डीरपिण्डः पति-
 भासां विद्वमकन्दैलो विसु नमः श्रीवत्सलक्ष्मा किल ।
 कैलास-त्रिदशेभ-शम्भु-हिमवत्प्रायास्तु मुक्ताफल-
 स्तोमः कोमलवाल्काऽस्य च यशःक्षीरोदधौ कौमुदी ॥ १२८ ॥
 गैर्जलिर्जरकुजरे मुरजति प्रौढोर्मिभिर्भृत्यति, क्षीराब्धौ कलहंसिकाफलकलैर्गङ्गाजले गायति ।
 श्यामाकामुकपारिपार्श्वकयुतो विश्वत्रयीसम्भदक्रीडानाटकसूत्रधारपदवी यत्कीर्तिपुरो ययौ ॥ १२९ ॥
 उद्भूतप्रतिभाद्भुतस्य मतिमच्चन्द्रस्य चिद्रूपता-
 माहात्म्यं स्तुमहे किमस्य निखिलग्रन्थाब्धिमन्थात्मनः ? ।
 दुःस्थानां प्रतिभूर्भूतां च विदधे भालस्थलस्थापिता,
 दृक्पातैर्वितथैवं येन कविता काऽपि श्रीलोकीकवेः ॥ १३० ॥
 यत्कीर्तेः स्वैरभैरावणमदसमदभ्रान्तनृह्णालिगीर्त-
 स्फूर्जद्गौनिनादस्फुरदुरुमुरजोह्लासितायाः सितायाः ।
 नित्यं मूर्च्छं सृजन्त्याः शिरसि मुरगिरेक्षारुचारीप्रचार-
 स्पष्टप्रभ्रष्टहारावलिगलितमणिभ्रान्तिमायान्ति ताराः ॥ १३१ ॥

१ 'भ्रमजित्कु' मुद्रिते ॥ २ पद्यविदमुदयप्रमनाम्ना निर्दिष्टं प्राचीनलेखसंग्रह माग २ मध्ये ४३ मंख-
 गिरिनारसत्तनशिलालेखे सप्तमपद्यतयाऽपि वर्तते ॥ ३ 'न्दुलः किल विसुः श्रीवत्सलक्ष्मा नमः गिरिनार-
 शिलालेखे ॥ ४ इत आरभ्य प्रीणि पयानि उदयप्रमीयवस्तुपालस्तुतौ क्रमशः १२-१३-१४ पद्यतया वर्तन्ते ॥
 ५ 'चण्डस्य उदयप्रमीयवस्तुपालस्तुतौ ॥ ६ 'मृतीय चिदधौ भा' मुद्रिते ॥ ७ 'व काचन लिपिर्येन
 त्रिवेदीकवेः उदयप्रमीयवस्तुपालस्तुतौ ॥ ८ 'गीतैः स्फु' मुद्रिते ॥ ९ 'जामुदरूप्यनिभिरिय ससुह्लासि'
 उदयप्रमीयवस्तुपालस्तुतौ ॥ १० 'नृत्यं सृ' उदयप्रमीयवस्तुपालस्तुतौ ॥

अस्मद्भोत्रैकमित्रं त्वमसि निधि शशी कीडया पीडयेन्नः,
 शङ्के पङ्केरुहैः श्रीरिति गदितुमिव प्रीतियुक्ता नियुक्ता ।
 तत्तस्या यस्य ताम्रः कुपित इव करो दानशोभी यशोभि-
 र्भृत्यैश्चके तथेन्दुं त्रिजगति स यथा लक्ष्यते नेक्षितोऽपि ॥ १३२ ॥
 जाता कृष्णपदात् प्रिया जलनिषेदुंष्कर्मभिर्निगमा,
 बह्वेवं परिभाव्य यत् किल दूषो ज्ञम्पां पुरा वै भवे ।
 तन्मन्येऽस्य कराप्रसम्मृतजनिर्भूत्वा गुणश्रेयसी,
 कीर्तिः ख्यातिमवाप्य काऽप्यभिनवा गङ्गेयमुज्जृम्भते ॥ १३३ ॥
 भैतुर्विषमयं विधाय कितवः कोऽप्येति मासुन्मना-
 स्तेनामुं विजये । निवारय यतो मे नीलकण्ठः प्रियः ।

जरुपन्तीति सती यदीययशसा शुभ्रीङ्किते सर्वत-
 सैलोक्येऽपि पिनाकिना सशपथं प्रत्याविता पार्वती ॥ १३४ ॥

क्षीराब्धिर्द्वैतति क्षितौ फणिपतिः स्फारस्फुरत्सफूत्कृतिर्गङ्गा निम्नमुखी करोत्यलिवधूलौके रवं कैरवम् ।
 अन्तः सन्ततमङ्कपङ्कमिपतश्चन्द्रोऽपि तद्भोपितग्लानिर्दानिवरस्य यस्य यशसा तूर्णं हृते वैभवे ॥ १३५ ॥
 प्रतीता नीतीनाशुपरि परिपाकेन रमते, मतिर्देवे सेवा सकलकरणैकान्तकरणम् ।
 अहो ! यस्यावश्यं शरिपुरहृत्प्राणहरणं, रणं दाने दानं सपदि विपदेकक्षयलयः ॥ १३६ ॥
 कौपाटोपपरैः परैश्चलचमूरङ्गचुरङ्गक्षतक्षोणिक्षोद्वशादशोपि जलधिर्धैः स्तम्भतीर्थे पुरे ।
 स्वेदाग्निस्तदिनीघटाघटनाया श्रीवस्तुपालम्फुरतेजस्तिगमार्भस्तिरतसतनुमिस्त्वेरेव सम्यूरितः ॥ १३७ ॥
 यः प्रत्यर्थिक्षितिपतिकरिच्छेदभेदस्विशक्तिमुक्तागौरैरवनिवलयं कीर्तिपूर्वरूपि ।
 तं वरुगन्तं उपि विधुरयामास संश्रामसिंहं, निखिलो यत्करपरिचितः कृष्णसारोऽपि चित्रम् ॥ १३८ ॥

एष्यातः सङ्ग्रामसिंहो वा, शुद्धो वा सिन्धुराजम् ।

संयुध्य गज्यमानोऽस्य, युद्धे सत्याभिधोऽभवत् ॥ १३९ ॥

भमः शङ्ख इति स्वैरौदिविपदामाक्षिप्य लक्ष्मीसुख,

लक्ष्मीशः किल शङ्खलक्ष्मणि करे चिक्षेप चक्षुश्चलम् ।

वीर्यां लसमवीक्ष्य शङ्खममलं यस्य स्वयं विस्मयं,

यच्छन् कदमलसिन्धुराजतनुभूकीर्यां कृताभीकृतः ॥ १४० ॥

असौ कीर्तीः स्वका मन्त्री, कामं प्रीणि जगन्त्यनु । वस्तुपालोऽरिसामन्तयशसामन्तकोऽक्षिपत् ॥ १४१ ॥

पैत्राभिरामहस्तेन, महस्तेन प्रतन्वता । रविणेव तमःस्तोमः, समस्तो महता हतः ॥ १४२ ॥

१ तत्राप्यया यस्य नाम्नः मुञ्जिते ॥ २ मुण्डिमियसी कां ॥ ३ पञ्चमिदं उदयप्रभायवस्तुपालस्तुती
 मयमपयतपि वसन्ते ॥ ४ 'एते निर्भरं, त्रैलो' उदयप्रभायवस्तुपालस्तुती ॥ ५ पञ्चमिदमुदयप्रभान्ना निर्दिष्टं
 प्राचीनदेवमरुद मय २ मध्ये ४३ गण्यगिरिनारसत्क शिलालेखे द्वितीयपद्यायाऽपि दृश्यते ॥ ६ 'मस्तिना
 प्रतनु' मुञ्जिते ॥ ७ पञ्चमिदं उदयप्रभायवस्तुपालस्तुती अष्टादशपद्यया वसन्ते ॥

संयोजितेन मणिमण्डितशातकुम्भकुम्भत्विषा शुचिनखेन करद्वयेन ।

मौलिस्थितेनः जिननाथसनाथमध्यप्रासादवदिनमुखे क्षणमीक्ष्यते यः ॥ १४३ ॥

मालिन्यं मुमुचे जगन्नयशुचेरकन्दुमन्दाकिनीसम्पर्कादपि यत्र दुर्दमतमःसम्बन्धबन्धकृतम् ।

आकाशेन तदप्यमुच्यत चिरं यतीर्थयात्रारजः, स्नात्रादृश्यतद्रात्वनिर्मलमिलत्कीर्तिद्युतिघोतिना ॥ १४४ ॥

मा भूमद्भुवनेऽपि दुस्तरतमस्तोमस्तथा मास्म भूनेत्रेऽपि घुमदां सदाविकसिते सम्मीलनं मर्त्यवत् ।

इत्युद्गामिरजःसमुच्छ्रयमयाद् दग्भोलिपाणिर्महीमग्भोभृद्धिरसीपिचत् प्रैतिदिनं यतीर्थयात्रोद्यमे ॥ १४५ ॥

यद्विष्णुमि-कुलाद्रि-कोल-कमठ-त्र्यालेश्वरैः खेचराः,

कष्टादेव दधुस्तलं तदवनेर्विष्णुश्रुत्वभिर्भुजैः ।

तत् सन्नान्भुजेन वीरघबलो मुद्राद्गुलीलील्या,

तेजःपालकरस्तदेव सवलः स्यातो वलिन्योऽप्यसौ ॥ १४६ ॥

सहोऽधिरोहन्निह रैवताद्रौ, वस्त्रापथस्थानतपोधनानाम् ।

ददौ यदौचित्यधियाऽपि किञ्चित्, कालेन नीतं करतां तदेतैः ॥ १४७ ॥

यात्रापर्वणि रैवतक्षितिधरे प्रीतोऽत्र मन्त्रीधर-

स्तेजःपाल इदं निशम्य जनतोऽथाऽऽह्य तांस्तापसान् ।

सादं द्रग्मसहस्रयुगममुचितं दत्त्वोत्तमर्णव्रजात्,

तद्दामं परिमोचयन् करममु सन्त्याजयामासिवान् ॥ १४८ ॥ युगम् ॥

किञ्चेतेन गुणैः शशाङ्कशुचिमिः कृष्टः सुराष्ट्रपतिः,

पित्रोः पुण्यकृते जिनेश्वरकरं श्रीमीमर्मिहोऽनुचत् ।

तीर्थारक्षकहेतवे तु कृतिना देवादितो दापिता,

सेयं पञ्चशती सुराष्ट्रपतये तस्मै पुराऽभ्यर्थनम् ॥ १४९ ॥

वभूव गोत्रैकगुर्भारीयानेषामशेषागमपारद्वया ।

नागेन्द्रगच्छे स महेन्द्रस्वरिमहेन्द्र-नागेन्द्रयशा मुनीन्द्रः ॥ १५० ॥

कर्मसाक्षिभवतापपीडनं, क्रीडित शमरसौपपल्लवे ।

क्षारितामिलमद स्म दन्तिवद्, यं त्यजन्ति सल्लु कश्मलालयः ॥ १५१ ॥

पन्था ग्रन्थाटवीना मुनिरजनि ततः कोऽपि कल्याणवह्न्याः,

कन्दः कन्दर्पदर्पद्रुमवनदहनान्तिमूः शान्तिस्वरिः ।

प्रत्यग्रमुत्थद्गुर्वाणवनवल्लरीकल्पजल्पेन यस्मिन्,

जल्पाके कोविदेशे मतिमकृत कृती को विदेशे न गन्तुम् ? ॥ १५२ ॥

आनन्दचन्द्रा-ऽमरचन्द्रवरी, तत्पटलक्ष्मीशुचिभूषणागौ ।

अन्तःस्फुरद्रत्नसफलभूतगुरुकामाग्भोजनत्वावभूताम् ॥ १५३ ॥

१ यद्यपि उदयप्रभोयवस्तुपालस्तुती एतेनविदायपययाऽपि वर्तते ॥ २ त्रेषु युसदां सदाविकसिते-
प्यामीलं उदयप्रभोयवस्तुपालस्तुती ॥ ३ 'सुचय' वा० मुक्षिते य ॥ ४ प्रतिपदं यं उदयप्रभोयवस्तुपाल-
स्तुती ॥ ५ 'शापेभ्ररा. वा० ॥ ६ अहाद्रेन भुजेन मुक्षिते ॥ ७ प्रासोऽय मुक्षिते ॥

दन्तौ धर्ममतज्ञस्य दुरितक्षोणीरुहच्छेदने,

गच्छव्योमतलस्य सोम-तरणी मोहान्धकारव्यये ।

सम्यक्त्वक्षितिपस्य दुर्दमरिपुत्रंशे सुजौ शासना-

रप्यस्थौ प्रतिवादिकुम्भदलने यौ व्याघ्र-सिंहौ श्रुतौ ॥ १५४ ॥

श्रीमास्ततोऽजनि मुनिः स तदीयपट्टश्रीपट्टवन्धमुकुटो हरिभद्रधरिः ।

एकत्र सोम-शतपत्रगुणौ सुखाग्नि, शश्वद्विवोधमधुरौ समवासयद् यः ॥ १५५ ॥

नृणां यत्पदपद्मयोर्भुवि भवत्यौन्नत्यहेतुर्नेतिर्भालन्यस्तरजोव्रजो वितनुते सर्वप्रकर्षोदयम् ।

आधत्ते च नखेन्दुदीधितिमरः पञ्चाकरोह्लासनं, स्तौमि श्रीहरिभद्रधरिसुगुरोस्तस्याद्भुतं वैभवम् ॥ १५६ ॥

जयति विजयसेनसुरिखरीकृतसुहृत्तस्तदयं तदीयपट्टे ।

जितजगदपि मन्मथो न यस्य, व्यथित तनुप्रतिपन्थिनोऽपि तापम् ॥ १५७ ॥

ईन्दुः पत्रावलम्बं व्यथित कुवलये दुर्मदारमा प्रपेदे.

गौर्जिः पर्जन्यदन्ती व्यतनुत् जगति स्तम्भभावं फणीन्द्रः ।

चिक्षेप क्षीरसिन्धुर्दिशि विदिशि तृणैः संयुतं वारिजातं,

यस्योद्दामप्रमाणे यशसि विद्विमरे ते तु सन्तोऽप्यसन्तः ॥ १५८ ॥

यस्मादभ्युदयं भजेन्ननु जनो धर्मस्य तस्याप्यसौ,

दूराद् दूरतरं चरत्यनुदिनं संवर्धमानः श्रिया ।

दुर्दैवव्ययमानवैभवभरस्तादृक्षलक्ष्मीकृते,

तस्यैवामिसुखं हि धावति सुघामानुर्यथा भास्वतः ॥ १५९ ॥

दोषोन्मुद्रणमुद्रितेऽपि दिवसारग्भास्मिन्तेऽपि स्थिते,

भाग्याम्गोरोहि निर्विशेषितमनःसन्तोपपोपस्थितिः ।

अन्तः सन्ततधर्मनिर्मलमधुस्वादैकतानाशयः,

साधुर्माधुकरौ विमर्ति विरलो वृत्ति जनः कश्चन ॥ १६० ॥

आयुर्बायुहतोर्मिवत् तरुणिमा धूर्मिभ्रमत्कम्बुवत्,

कम्बुप्रसवदम्बुबुद्बुदकवल्लक्ष्मीलवोऽप्यन्वहम् ।

सद्यो बुद्बुदविन्दुमेदकणवत् तोषोऽपि दोषादिक-

क्रूरमाहनिधौ कुकर्मजलधौ साक्षादिव भेक्ष्यते ॥ १६१ ॥

ईदृगरूपगुरुपदेशविशदस्वाभाविकस्वच्छधी-

स्तेजःपालनिजानुजानुचरितः श्रीवस्तुपालः कृती ।

शुभादभयशःप्रसूतसुभगश्रीवल्लिकन्दोपमां,

धर्मस्थानपरम्परां रचयितुं धत्तेतमामुद्यमम् ॥ १६२ ॥

मज्जन्तीमवनीमवेक्ष्य दुरिताम्भोधौ नवं भूधर-
भाग्भारं रचयाञ्चकार यमसौ तीर्थेशचैत्यच्छलात् ।

तत्रैनःप्रतिदन्तिनाशसुभगः प्रेक्षाशृदङ्गस्वनै-
र्गर्जन् विश्वजैथी जयत्यनुदिनं धर्मद्विपो मूलले ॥ १६३ ॥

स्तम्भनपुरचैवतगिरिदैवतचैत्ये प्रपञ्चिते येन ।

शत्रुञ्जयजिनपुरतस्तीर्थत्रयगतिकलं कुरुतः ॥ १६४ ॥

शत्रुञ्जये भवपयोधितरार्थतीर्थे, येनेन्द्रमण्डपमखण्डपदं व्यधायि ।

तस्मादुरःकरधृताद्भुतकुम्भशक्त्या, तीर्त्वा तमोजलमयन्ति जना जिनाप्रे ॥ १६५ ॥

अस्मिन्नाभिभ्रुवः प्रभोस्तनुभवश्चक्री स चक्रे पुरा,
चैत्यं श्रीभरतः परे तु सगरक्ष्मापालसुख्या व्यधुः ।

देवो दाशरथिः पृथासुतपतिः प्राग्वाटभूर्जाविडिः,
शैलादित्पनूपः स चाग्भटमहामन्त्री च तस्योद्धृतिम् ॥ १६६ ॥

व्यातन्वत्तमरेन्द्रमण्डपमयं श्रीरैवत-स्तम्भना-
लङ्कारप्रमुनेमि-पार्श्वसहितं तीर्थेऽत्र शत्रुञ्जये ।

प्राग्वाटान्वयवार्थिवर्धनविधुधर्मात्रीशमन्त्रीशिता-
श्लाघ्यः सह्यपतिः सतां विजयते श्रीवस्तुपालोऽधुना ॥ १६७ ॥

किं चित्रं यदि यत्सवत्सलतया स्वच्छाशममूर्तिच्छला-
दत्राऽऽखण्डलमण्डपे सुरपुरादभ्याययुः पूर्वजाः ।

एतस्य प्रतिपन्नसूनुपदवीभाजोऽपि येनाद्भुत-
मीत्या वासमिह व्यधाद् विपिपुरं त्यक्त्वाऽपि चाग्देवता ॥ १६८ ॥

श्रेष्ठे काञ्चनपट्टिकं जिनपतेराद्यस्य भामण्डल-
श्रीतुल्यं पुरतोऽपि सत्यपुरभूवीरावतारं मुद्रा ।

कुम्भान् पद्य च पद्यपातकतमश्वाण्डद्युतीन् मण्डपे,
धीशुश्रुञ्जयदान्तदाननदवचके तढागं च यः ॥ १६९ ॥

चक्रे च यो घवलके विमलाद्रिचैत्यं, पञ्चासरं च पुरि गूर्जरकर्णिकायाम् ।

तत्केतुकैतवकरद्वयनतनेन, मुप्रप्रमां नमसि नतैयति स्म कीर्तिम् ॥ १७० ॥

प्रतिष्ठाप्य च मन्त्रीशस्तीर्थेशं मुनिमुग्रतम् । योऽश्वावतारतीर्थस्य, मन्दिरं विदधे हृती ॥ १७१ ॥

प्रामे शासनदधे च, विदधे योऽर्कपालिते । तढागं सामराकारममात्यः प्रपया सह ॥ १७२ ॥

व्यानात् पौषधालानां, नासत्यरुचिचेष्टितः । यः पापौषधनालानां, योगि श्रीमानकारयन् ॥ १७३ ॥

१ यदमिह उदयप्रभोपकृतपत्तनी एवमिहजिनमपचनवाऽपि इतने ॥ २ यदसौ उदयप्रभोपकृतपत्तनी ॥
३ यो विमाति भुयने धीपमेगन्धद्विपः उदयप्रभोपकृतपत्तनी ॥

येन स्तम्भनकाधिदैवतजिनप्रासादमुद्धृत्य तं,
तत्तेने किमपि प्रपाद्वयमपि श्वेतांशुशुभ्रप्रभम् ।

यत् पश्यन्ति पुरो जिनेश्वरपदानुध्यानयात्राधना,
धीमन्तो निजमूर्तिकीर्तिसुकृतं चन्द्रद्वया(सूजा)डम्बरम् ॥ १७४ ॥

श्रीमालवेन्द्रसुमटेन सुवर्णकुम्भानुत्तारितान् पुनरपि क्षितिपालमन्त्री ।
श्रीवैद्यनाथसुरसन्ननि दर्भघत्यामेकोनविंशतिमपि प्रसभं व्यधत् ॥ १७५ ॥

तत्रैव चीरघवलक्षितिवल्लभस्य, मूर्ति तदीयमुदशोऽपि च जैत्रदेव्याः ।
स्वीयानुजस्य च निजस्य च मल्लदेवमन्त्रीश्वरस्य च चकार स गूपमन्त्री ॥ १७६ ॥

नृत्यन्त्या व्योमरञ्जे क्रमकटकज्ञणत्कारतारं युगझा-
रञ्चक्राङ्गनादं सचिवकुलपतेर्वेस्तुपालस्य कीर्तेः ।

खेदमस्वेदविन्दुश्रियमियमयते पद्धतिस्तारकाणां,
यावत् तावत् पताकाश्लचलनविधिं चैत्यमाला विधत्ताम् ॥ १७७ ॥

इमामकृत सद्गुरोर्विजयसेनसूरिप्रभोः, क्रमाम्बुजरजोगृजा विमलमानसोल्लासभृत् ।
प्रशस्तिमुदयप्रभः प्रभवदद्भुतप्रातिभप्रभावभरभासुरः सुकृतकीर्तिकल्लोलिनीम् ॥ १७८ ॥

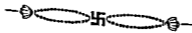
यक्षस्य च कपर्दिनः । वस्तुपालान्वयस्यास्तु, प्रशस्तिः स्वस्तिशालिनी ॥ १७९ ॥

॥ समाप्ता सुकृतकीर्तिकल्लोलिनीसंज्ञकेयं प्रशस्तिः ॥

॥ कृतिरियं पण्डितपुण्डरीकश्रीमदुदयप्रभस्य ॥

॥ सङ्ख्या ग्रन्थाग्रं ४०० ॥ शुभं भवतु ॥

॥ लेखकपाठकयोश्च कल्याणमस्तु ।



१ श्रीवैद्यनाथपरवेदमनि दर्भघत्यां, यान् दुर्मन्दी सुमटघर्मनृपो जहार ।

तान् विंशतिं स्तुतिमतस्वर्गवकुम्भानारोपयत् प्रमुदितो हृदि घस्तुपालः ॥ ४८ ॥

नरेन्द्रप्रभिवस्तुपालप्रशस्तौ ॥

द्वितीयं परिशिष्टम्

नागेन्द्रगच्छमण्डनश्रीउदयप्रभसूरिविनिर्मिता

वस्तुपालस्तुतिः ।



पीयूपादपि पेशलाः शशधरज्योत्स्नाकलापादपि, स्वच्छा नूतनचूतमञ्जरिभरादप्युल्लसत्सौरमाः ।
 वाग्देवीसुखसामसूक्तविशदोद्गारादपि प्राञ्जलाः, केषां न प्रथयन्ति चेतसि मुदं श्रीवस्तुपालोक्तयः ॥ १ ॥
 चेतःकेतकगर्भपत्रविशदं वाचः सुधाबन्धवः, कीर्तिः कार्तिकमासमासलशशिज्योत्स्नावदातद्युतिः ।
 आश्चर्यं क्षितिरक्षणक्षणविधौ श्रीवस्तुपालस्य यत्, कृप्यात्व चरितैरपास्तदुरितैर्लेकिपु मेजे भुजः ॥ २ ॥
 श्रीवस्तुपालमन्त्रीन्द्रोद्भूतः किं गुणगौरवम् ? । यस्य निष्प्रतिमानस्य, तुलनायाः कथा वृथा ॥ ३ ॥

सूरो रणेषु चरणप्रणतेषु सोमो, वक्रोऽतिवक्रचरितेषु बुधोऽर्थबोधे ।

॥ १ ॥ नीतौ गुरुः कृतिजने कविरक्रियासु, मन्दोऽपि च प्रहमयो नहि वस्तुपालः ॥ ४ ॥

मसृणयुसृणयुपकैर्मालपट्टेषु लब्धा, विधिविहितकुवर्णश्रेणिकी याचकानाम् ।

विरचयति सुवर्णश्रेणिभूषाममीपां, भ्रुवमिति नववेधा वस्तुपालः सुमेधाः ॥ ५ ॥

युद्धपर्वणि कदाऽपि न दृष्टं, यस्य पृष्ठमसुदृष्टिकुरन्वै ।

॥ १ ॥ समतिशमिव वीक्षितुमुत्कैस्तैश्चिरादनुचरत्वमभाजि ॥ ६ ॥

शङ्खं शङ्खधरस्य शस्त्रमणि शूलायुधस्य द्विप,
 । वज्रास्त्रस्य रद परश्वधभृतः स्वर्लोकलीलाजये ।

उत्कर्षार्थितया विलम्पतु भटो नि सीमधामा यशो,
 नामाऽऽयस्य हहा ! जहार तु कुतो युग्य जरद्भक्षणः ? ॥ ७ ॥

सेवालन्ति पय समुद्रति दिशामन्तेषु मध्येनम,
 सारङ्गन्ति शशाङ्गति धुंविपिने दानन्ति दन्तीन्द्रति ।

पुष्पस्तोमति मद्पदन्त्यनुलतालण्डं सुधाकुण्डति,
 श्वभ्रान्तर्भुजगन्ति यस्य यशसि प्रत्यर्थिदुष्कीर्तयः ॥ ८ ॥

भ्रुवैपगय विधाय कितवः कोऽप्येति मामुन्मना-
 स्तेनासुं विजये ! निवारय यतो मे नीलकण्ठ मिय ।

१ पयमिदं धर्माभ्युदयदशमवर्गग्रान्ते, प्रबन्धकोशयतवस्तुपालप्रबन्धे पदपठितम् च " एव स्तुत केनापि कविना " इत्युल्लेखेन निर्दिष्टं वर्तते ॥ २ पयमिदं प्रबन्धकोशे वस्तुपालप्रबन्धे अष्टापमारात्तमं " कथितम् " इत्युल्लेखेनो-
 द्दिष्टं वर्तते ॥ ३ पयमिदं सुकृतकीर्तिकलोत्पिन्या ९१ तमम् ॥ ४ पयमिदं सुकृतकीर्तिकलोत्पिन्या ५२ तमम् ॥
 ५ टो रोम्यैरुधामा सुकृतकीर्तिकलोत्पिन्याम् ॥ ६ पयमिदं सुकृतकीर्तिकलोत्पिन्या ३७ तमम् ॥ ७ सुभुवने
 सुकृतकीर्तिकलोत्पिन्याम् ॥ ८ पयमिदं सुकृतकीर्तिकलोत्पिन्या १३४ तमम् ॥

- जल्पन्तीति सती यदीययशसा शुभ्रीकृते निर्भरं,
त्रैलोक्येऽपि पिनाकिना सशपथं प्रत्यायिता पार्वती ॥ ९ ॥
- कराम्भोजं मेजे सततविततं यस्य कमला,
प्रियारागदागादनु दनुजमेत्ता स्वयमसिः ।
यशःसूनुर्नूनं तदजनि तयोरमजकथा-
सदर्पः कन्दर्पद्विपमपि रूपाऽद्यो व्यधित यः ॥ १० ॥
- दिव्यात्रोत्सववीरवीरघवलक्षोणीधवाध्यासितं,
राज्यं राज्यरथस्य भारमभितः स्कन्धे दधल्लीलया ।
धुर्ये आतरि दक्षिणे समगुणे श्रीवस्तुपालः कथं,
न श्लाघ्यः स्वयमश्वराजतनुजः कामं स वामस्थितिः ? ॥ ११ ॥
- गर्जन्निर्जरकुञ्जरे सुरजति प्रौढोर्मिभिर्नृत्यति,
क्षीराब्धौ कलहंसिकाकलकलैर्गङ्गाजले गायति ।
श्यामाकामुकपारिपार्श्वकयुतो विश्वत्रयीसम्मद-
क्रीडानाटकसूत्रधारपदवीं यत्कीर्तिपूरो ययौ ॥ १२ ॥
- उद्धृतप्रतिभाद्भुतस्य मतिमर्चण्डस्य चिद्रूपता-
माहात्म्यं स्तुमहे किमस्य निखिलग्रन्थाब्धिमन्यात्मनः ? ।
दुःस्थाना प्रतिभूभृतां च विदधे भालस्थलस्थापिता,
हृवपातैर्वितथैर्व काचन लिपियेन त्रिवेदीकवेः ॥ १३ ॥
- यत्कीर्तः स्वैरैरावणमदसमदग्रान्तमृद्भालिगीत-
स्फूर्जद्गर्जामृदङ्गध्वनिभिरिव समुल्लासितायाः सितायाः ।
नित्यं नृस्यं सृजन्त्याः शिरसि सुरगिरेश्वारुचारीप्रचार-
स्पष्टप्रमृष्टहारावलिगलितमणिभ्रान्तिमायान्ति ताराः ॥ १४ ॥
- यैर्नदाऽतिचलाऽवलाऽपि कमला गम्भीरिमाद्यैर्गुणै-
स्तैरेषाऽपि न नहते किमु दृढैः कीर्त्तितैर्गजाङ्घ्रिकी ? ।
सञ्चिन्वेति यथा यथा गमयति प्रौढि परा यो गुणा-
नुदाभैव तथा तथाऽभि[स]रति स्वैरं दिगन्तानसौ ॥ १५ ॥
- 'श्रीवामाऽम्बुजमाननं परिणतं पद्माङ्गुलिच्छन्नतो,
जगमुर्दक्षिणपश्चिमान्नमयता पद्मापि देवद्रुमाः ।

१ "कृते स्वयंतस्त्रैलो" गुरुतकीर्त्तिल्लिया ॥ २ पद्यमिदं गुरुतकीर्त्तिल्लिया ३४ तमम् ॥ ३ पद्यमिदं गुरुतकी-
र्त्तिल्लिया १२१ तमम्, तथा उदयप्रभनाम्नैव निर्दिष्टं प्राचीनलेखमंग्रद भाग २ लेख ४३ मध्ये तृतीयम् ॥ ४ भाति ध्या'
गुरुतकीर्त्तिल्लिया प्राचीनलेखमंग्रद भाग २ व ॥ ५ इत आरभ्य प्रीणि पद्यानि गुरुतकीर्त्तिल्लियां क्रमशः १२९-
१३०-१३१ तमानि ॥ ६ "धाम्प्रस्य गुरुतकीर्त्तिल्लियां ॥ ७ "च येन कविता काऽपि त्रिलोकी कवेः गुरुतकी-
र्त्तिल्लियां ॥ ८ "आनिनादस्फुरदुपमुज्जोद्भासि" गुरुतकीर्त्तिल्लिया ॥ ९ नृत्तं स्" गुरुतकीर्त्तिल्लियां ॥
१० पद्यमिदं धर्माभ्युदयगतमसंगन्ते प्रवचकोद्यततस्त्रुगालप्रबन्धे पठितमं च "इतरस्तु" इत्युद्देशेनोक्तिरिति वक्तव्यं ॥

वाञ्छापूरणकारणं प्रणयिनां जिह्वैव चिन्तामणि-

।। जीता यस्य किमस्य शस्यमपरं श्रीवस्तुपालस्य यत् ? ॥ १६ ॥

ईन्दुः पत्रावलम्बं व्यधित कुवलये दुर्मदात्मा प्रपेदे,

॥ गजिं पर्जन्यदन्ती व्यतनुत जगति स्तम्भभावं फणीन्द्रः ।

चिक्षेप क्षीरसिन्धुर्दिशि विदिशि तृणैः संयुतं बारिजातं,

॥ यस्योद्दामप्रमाणे यशसि प्रैद्यमरे ते तु सन्तोऽप्यसन्तः ॥ १७ ॥

पद्माभिरामहरतेन, महस्तेन वितन्वता । रविणेव तमःस्तोमः, समस्तो महता हतः ॥ १८ ॥

मौ भून्मद्भुवनेऽपि दुस्तमतमःस्तोमस्तथा मास्म भूजेत्रेर्षुं द्युसदां सदाविकसितेऽगामीलनं मर्त्यवत् ।

इत्युद्गामिरजःसमुच्छ्रयमयाद् दम्भोलिपाणिर्महीमम्भोभृद्भिरसीपिचत् प्रतिपदं यतीर्थयात्रोत्सव्रे ॥ १९ ॥

ध्वन्तः कञ्जलमञ्जुलथि यदिदं शीतद्युतेर्वोतते, तन्मूढाः कवयन्ति लक्ष्म न वयं सुक्ष्मेक्षिकाकाङ्क्षिणः ।

यद्यात्रोत्सवमद्भुतं रचयता श्रीवस्तुपाल ! त्वया, शीतांशौ लिखितं स्वनाम तदिदं प्रत्यक्षमुद्रीक्ष्यते ॥ २० ॥

मैज्जन्तीमवनीमवेक्ष्य दुरिताम्भोधौ नवं भूधरप्राग्भारं रचयाञ्चकार यदसौ तीर्थेशचैत्यच्छलात् ।

तत्रैनःप्रतिदन्तिनाशसुमगः प्रेक्षासृदङ्गस्वैर्नर्गन् विश्वजैर्यौ विमाति भुवने श्रीधर्मगन्धद्विषः ॥ २१ ॥

श्रीवस्तुपाल ! कलिकालविलक्षणस्त्वं, संलक्ष्यसे जगति चित्रचरित्रपात्रम् ।

यद्दानसौरमवता भवता वितेने, नानेकपेन मदमेदुरिता सुखश्रीः ॥ २२ ॥

ईदृश्यः कस्यापि नायं प्रथयति न परप्रार्थनादेिन्यमन्य-

स्तुच्छ्रमिच्छां विधत्ते तनुहृदयतया कोऽपि निष्पुण्यपण्यः ।

इत्थं कल्पदुर्मेऽस्मिन् व्यसनपरबशं लोकमालोक्य सृष्टः,

स्पष्टं श्रीवस्तुपालः कथमपि विधिना नूतनः करुणवृक्षः ॥ २३ ॥

श्रीवस्तुपालसचिवस्य परे कवीन्द्राः, कामं यशांसि कवयन्तु वयं तु नैव ।

येनेन्द्रमण्डपकृतोऽस्य यशःप्रशस्तिरस्त्येव शक्रहृदि शैलशिलाविशाले ॥ २४ ॥

शक्रे शारदपर्वगर्वितशशिज्योत्स्नासपलं तव,

त्रैलोक्ये गुणजालकं विलसति श्रीवस्तुपालाद्भुतम् ।

यत्पादमूढपाशवैशसकृतातङ्गाभिः शङ्कते,

नैवान्यस्य भवन्ति कीर्तिवरलाः खेलासु हेलसपदम् ॥ २५ ॥

आशाम्यो नवपुष्पपेशलयशःसौरभ्यसम्भावनासंहृतैः सततं पतद्भिरमितो राभार्थिभिः सेवितः ।

रत्नपत्रपवित्रया घनलसत्पुण्यामृतैः सिक्तया, श्लिष्टः श्रीलतया मदीरूढ इव श्रीवस्तुपालः यमौ ॥ २६ ॥

१ तत् पर्याप्तुदयमहाकाव्ये ॥ २ पद्यमिदं मुद्रतकीर्तिकोश्लिन्या १५८ तमम् ॥ ३ विश्वं मुद्रतकीर्तिकोश्लिन्याम् ॥ ४ पद्यमिदं मुद्रतकीर्तिकोश्लिन्या १४२ तमम् ॥ ५ पद्यमिदं मुद्रतकीर्तिकोश्लिन्या १४५ तमम् ॥ ६ 'त्रेऽपि द्युसदां सदाविकसिते सम्मील' मुद्रतकीर्तिकोश्लिन्याम् ॥ ७ प्रतिदिनं यं मुद्रतकीर्तिकोश्लिन्याम् ॥ ८ पद्यमिदं धर्माभ्युदयाष्टमसर्गान्ते वर्णने ॥ ९ पद्यमिदं मुद्रतकीर्तिकोश्लिन्यां १६३ तमम् ॥ १० यमसौ मुद्रतकीर्तिकोश्लिन्याम् ॥ ११ 'यी जयत्यनुदिनं धर्मद्विपो भूतले मुद्रतकीर्तिकोश्लिन्याम् ॥ १२ पद्यमिदं धर्माभ्युदयमहाकाव्यैकादशसर्गान्ते विद्यते ॥ १३ पद्यमिदं धर्माभ्युदयमहाकाव्यपञ्चमसर्गान्ते वर्णते ॥

- नेत्रापाममृताञ्जनं कथमिव श्रीवस्तुपालः॥कृती,
 सोऽयं नास्तु धनोदयः परिलसद्भ्रारिधर्मस्थितिः ! ।
 चक्रे मार्गणपाणिशुक्लिकुहरे यः स्वातिवृष्टिं शुहुः,
 कृत्वा मौक्तिकनिर्मलं निजयशो दिक्कामिनीमण्डनम् ॥ २७ ॥
 श्रीवस्तुपाल ! क्षितिपालमुद्रां, भूमण्डलान्तः कति नैव दधुः ? ।
 दोषस्य दुष्टप्रभवस्य मन्त्रिन् !, प्रभुर्भवानेव तु निग्रहाय ॥ २८ ॥
 या प्रार्थना याचकवक्त्रवासादासादयद् दुर्भगतामतीव ।
 दानाय सैवार्थेषु वस्तुपाल !, स्थिता तवाऽऽस्थे सुभगीवभूव ॥ २९ ॥
 अत्यद्भुता सचिवपुङ्गव वस्तुपाल !, कौतस्कुती स्फुरति धर्मकला तवेयम् ? ।
 यत् कर्हिचिद् विमुक्ततामुपनीय पृष्टा, पीठामि (नि ?) पश्यसि न मार्गणमण्डलस्य ॥ ३० ॥
 त्रिजगति यशसस्ते तस्य विस्तारभाजः, कथमिव महिमानं ब्रूमहे वस्तुपाल ! ।
 सपदि यदनुभावस्फारितस्फीतमूर्तिर्विंधुरगिलदरार्तिं राहुमाहुस्तमङ्कम् ॥ ३१ ॥
 बैाणे गीर्वाणगोष्ठीं भजति भैगवति ब्रह्मभूयं प्रपन्न,
 न्यासे विद्यानिवासे कलयति च कला कैशकीं कालिदासे ।
 माधे मोधां मधोनः सफलयति हैशं वोऽय वाग्देवतायाः,
 सोऽयं धात्रा धरित्र्यां निवसनसदनं प्रस्तुतो वस्तुपालः ॥ ३२ ॥
 र्वर्षीयान् परिलुप्तदर्शनपथः प्राप्त. परं तानवं,
 रोहन्मोहतया तथा हृतपरिस्पन्दोऽतिमन्दोद्यमः ।
 श्रीमन्त्रीधर वस्तुपाल ! भवतो हस्तावलम्ब चिराद्,
 धर्मः प्राप्य महीं विहर्तुमधुना धत्ते पुनः पाटवम् ॥ ३३ ॥

॥ इति नागेन्द्रगच्छीपश्रीउदयप्रभसूरिकृता वस्तुपालस्तुतिः ॥



१ पयस्यास्तोत्रार्थमिदं सुहृत्कीर्तिकोशिन्यां १०५ तमश्लोके ॥ २ *वृष्टिप्रजैर्मुक्तैर्मौक्तिकनिर्मलं शुचिं यशो दिक्कामिनीभूषणम् सुहृत्कीर्तिकोशिन्याम् ॥ ३ पयमिदं धर्माभ्युदयचतुर्थसर्गप्रान्ते वर्तते ॥ ४ पयमिदं पुण्यनप्रबन्धसर्गप्रद्वयवस्तुपालप्रबन्धे २४८ तमं सोमेश्वरदेशोक्तयोरुल्लिखितं वर्तते ॥ ५ मध्यवति पुण्यनप्रबन्धसर्गप्रदे ॥ ६ *द्वयीं वा* पुण्यनप्रबन्धसर्गप्रदे ॥ ७ दशं चाद्य पुण्यनप्रबन्धसर्गप्रदे ॥ ८ पयमिदं धर्माभ्युदयमहाकाव्यप्रथमसर्गप्रान्ते वर्तते ॥

तृतीयं परिशिष्टम्

मलधारिश्रीनरचन्द्रसूरिसूत्रिता

वस्तुपालप्रशस्तिः ।

स वः श्रेयः शत्रुञ्जयशिखरशीर्षकमुकुटः, प्रदोपान्तध्वान्तव्यतिकरनिकाराम्बरमणिः ।

मवन्नान्तिश्रान्तिव्यपनयनदीप्यामृतसर सनाभिः श्रीनाभिप्रभवजिननाथः प्रथयतु ॥ १ ॥

श्रीप्रानवाटकुलेऽत्र चण्डपमुताच्चण्डप्रसादादभूत्,

पुत्रः मोम इति प्रसिद्धमहिमा तस्याश्वराजोऽञ्जजः ।

तस्मात्सुखिणो-मल्लदेवसचिवौ श्रीवस्तुपालस्तथा,

तेजःपाल इति श्रुतास्तनुमुवश्रत्वार एतेऽभवन् ॥ २ ॥

चेतः किं कलिकाले । सालसमहो । किं मोह । नो हस्यते ;

तृष्णे । कृष्णमुखाऽसि किं ? कथय किं विष्णौव । मोघो भवान् ? ।

नूयः किं नु सखे । न खेलति किमप्यस्माकमुज्ज्वृग्मितं,

सैन्यं यत् किल वस्तुपालकृतिना धर्मस्य संवर्धितम् ॥ ३ ॥

दुर्गः स्वर्गगिरिः स कल्पतरुभिर्भेजे न चक्षुष्पथे,

तस्थौ कामगयी जगाम जलधेरन्तः स चिन्तामणिः ।

कालेऽस्मिन्नवलोक्यै याचकचर्मं तिष्ठेत कोऽन्यस्ततः,

स्तुत्यः सोऽस्तु न वस्तुपालमुकृती दानैकवीरः कथम् ? ॥ ४ ॥

स श्रीजिनाधिपतिधर्मधराधुरीणः, श्लाघ्यास्पदं कथमिवास्तु न वस्तुपालः ? ।

श्री-द्वारदा-सुकृतकीर्तिमयत्रिवेण्याः, पुण्यः परिस्फुरति जङ्गमसङ्गमो यः ॥ ५ ॥

स्वच्छन्दं हरिशङ्करः स भगवान् यत्कीर्तिविस्फूर्तिभि-

र्विभ्रद् मस्मकृत्वाहारागनिव तद् भूतेशभूतं वपुः ।

सर्वाङ्गं घटितां गिरीश्वरसुता हुग्धाव्विपुत्रीं जवाद्,

व्यावृत्तां च सहस्ततालहसितैर्वैलक्ष्यमध्यापयत् ॥ ६ ॥

दायादा कुमुदावलिर्विचकिलश्रेणी सहाध्यायिनी,

सभीची सुरसिन्धुवीचिवितति.....की चन्द्रिका ।

१ पद्यमिदं नरचन्द्रसूरिनाम्ना निर्दिष्टं प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ मध्ये ३९ संख्यगिरिनारशिलाकेले प्रथम-
पद्यतया वर्तते ॥ २ पद्यमिदं नरचन्द्रनाम्ना निर्दिष्टं प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ मध्ये ४२ संख्यगिरिनारसत्कशिलाकेले
प्रथमपद्यतयाऽपि दृश्यते ॥ ३ 'कथय यस्य करुणं तिष्ठेत कोऽन्यः स्वतः पुण्यः सोऽस्तु गिरिनारशिलाकेले ॥

शीतज्योतिःप्रकाशं तदनु ससुदितं तद्यशो येन तेने,
शश्वद्विस्तारिराकारजनिमहमहो ! विश्वतो विश्वमेतत् ॥ २१ ॥

चण्डांशोरपि चण्डतामगमयद् यस्य प्रतापोदयः,
शीतांशोरपि शीतमानमभजद् यस्य प्रसादोत्सवः ।

ब्रह्मास्वादनतोऽपि तोषमपुपद् यस्यावदातं यद्वा—
स्तहोकोत्तरमस्य कस्य वचसां पात्रं चरित्राद्भुतम् ? ॥ २२ ॥

यस्मिन् धर्मं पुरस्कृत्य, विपद्भयो रक्षति क्षितिम् । जने जन्यमजन्यं च, द्वयमप्राप्यतां गतम् ॥ २३ ॥

तस्मिन् काञ्चनकोटिभिः प्रणयिनां दारिव्यमुद्राद्बुद्धि,
व्यक्तं काञ्चनशैलखण्डनविधावाखण्डलः शक्तिः ।

आम्यत्येव निदेशतोऽस्य तदयं राज्ञा ससुरः सदा,
नक्षत्रैः परिवारितश्च परितोऽप्यद्याप्यसु रक्षति ॥ २४ ॥

नभस्ये निर्वृष्टाः शरदि नहि यर्पन्ति जलदाः, फलघ्रातैराचैर्न खलु फलवृक्षाश्च फलिनः ।
प्रदुग्धा वा गावः पुनरपि न दुग्धानि ददते, कदाऽप्येतस्योच्चैर्न तु वितरणे श्राम्यति मतिः ॥ २५ ॥

दीर्घः स्फूर्जति सज्जकज्जलमलः खेहं मुहुः सहरिन्नुर्मण्डलवृत्तखण्डनपरः प्रद्वेष्टि मित्रोदयम् ।

सुरः क्रूरकरः परस्य सहते तेजो न तेजस्विनस्तात् केन प्रतिमं श्रुवीमहि महः श्रीवस्तुपालाभिषम् ॥ २६ ॥

५. ५ ॥ इति मलधारित्रीनरचन्द्रसूरिकृता श्रीवस्तुपालप्रशस्तिः ॥

। ॥

। ॥

॥ ॥

॥ ॥

। ॥

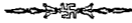
।

१ पद्यमिदं नरचन्द्रनाम्ना निर्दिष्टं प्राचीनलेखनग्रन्थे माग २ मध्ये ३९ सख्यगिरिनारसत्त्वशिलालेखे चतुर्थं पद्यतया, पुरातनप्रबन्धसंग्रहगतवस्तुपालप्रबन्धे २१९ तमं सोमेश्वरदेवोक्तयोः विहितं च वर्तते ॥ २ 'क्रूरकर' गिरिनारशिलालेखे पुरातनप्रबन्धसंग्रहे च ॥ ३ यवीनि सच्चिदं श्री' गिरिनारशिलालेखे ॥

चतुर्थं परिशिष्टम्

१० मलघारित्रीनरेन्द्रप्रभृतरिनिर्मिता

वस्तुपालप्रशस्तिः ।



स मङ्गलं वो वृषभध्वजः क्रियाज्जटावलीसंवलितान्तमण्डलः ।	॥ १ ॥
यदीयमङ्गं किल सर्वमङ्गलाशितं प्रमोदाय न कस्य जायते !	
समूलमुन्मूलयितुं सुरद्रुहः, सन्ध्यासमापौ चुलुकीकृतेऽम्भसि ।	॥ २ ॥
स्वयम्भुवा यः समुजे मटाप्रणीः, समग्रशक्तिः स चुलुक्पथ [श]त्यभूत्	
तदन्वयाम्भोषिविबुधैर्विभूतविरोधिमूलोऽजनि मूलराजः ।	॥ ३ ॥
न कापि दोषोक्तिरभूत् यस्य, यश्चक्रकाशैर्विशदेऽपि विश्वे	
य(त)स्यात्मभूः समभवद् मुजदण्डचण्डश्चासुण्डराज इति राजकमौलिरलम् ।	॥ ४ ॥
भूवह्नमस्तदनु बह्मभराजदेवस्तन्नन्दनो सुदसुदञ्चितवान् प्रजानाम्	
तस्यानुजन्मा समभूत् परस्त्रीसुदुर्लभो दुर्लभराजदेवः ।	॥ ५ ॥
बभूव भीमो रणभूमिभीमस्ततोऽपि सीमा जगतीपतीनाम्	
तदात्मजः संयति लब्धवर्णः, कर्णोऽभवत् कर्णसमप्रतापः ।	॥ ६ ॥
श्रीसङ्गमाद् वीरसोऽपि यस्य, वभार शृङ्गारमयत्वमेव	
सुसुस्तदीमोऽजनि वैरीवीरद्विपेन्द्रसिंहो जयसिंहदेवः ।	॥ ७ ॥
नवेन्दुकुन्दद्युतिभिर्धरित्रीं, यः कीर्तिमुक्ताभिरलङ्घकार	
अयं हि राकासुविलासकौतुकी, रिपुस्तदस्यास्तु विपर्ययोऽधुना ।	॥ ८ ॥
इतीव यो मालवमेदिनीश्वरं, चकार काराविनिवेशदुःस्थितम्	
ततोऽभवत् कीर्षिततालवालः, कुमारपालः क्षितिपालभास्वान् ।	॥ ९ ॥
यस्य प्रतापः शिशिरेऽप्यरीणां, स्वेदोदविन्दूनषिकांश्चकार	
उदप्रतेज.सुकृतैकमन्दिरं, धराधरेन्द्रः स गिरामगोचरः ।	॥ १० ॥
व्यधत् यः शत्रुकलत्रमण्डली, महीमदोषो च विहारभूषणाम्	
तस्मादभूदजपपाल इति क्षितीशः, प्रलधिपार्थिवकुलप्रलयान्रयाशः ।	॥ ११ ॥
श्रीमूलराज इति वैरिसमासराजजिज्यांजविक्रमनयस्तनयस्तदीयः	
बन्धुः कनीयान् विजयां तदीयः, श्रीमीमदेवोऽस्ति महीमहेन्द्रः ।	॥ १२ ॥
प्रवासदायिन्यापि वैरिबर्गो, बभूव यस्मिन्न वनाभिलाषी	

श्रियं चौलुक्यानां प्रकृतिमतिभेदेन विवशां, वशीकृत्याऽमुष्मिन्नसमविनिवेशा[म]कृत यः ।

स नेताऽर्गोराजः समभवद्विहैवान्वयवरे, वरेष्यश्रीशाखां.....णिरद्वैतसुभटः ॥ १३ ॥

भूयांस एव प्रथितप्रतापा, यदास्त्विनरत्तस्य सुता बभूवुः ।

प्रदीप्यते तेषु जयी विनिद्ररुद्रप्रसादो लवणप्रसादः ॥ १४ ॥

अपास्य शौण्डीर्यमदं परेषां, यद्विक्रमो मानसमध्युवास ।

तदङ्गानां च दृशो विकृष्य, बलान् विलासान् विदधेऽश्रुवारि ॥ १५ ॥

तन्नन्दनः कुमुदकुन्दनिर्भैर्यशोभिर्विध्वानि घोरघवलो घवलीकरोति ।

यद्विक्रमः क्रमनिरस्तसमस्तशत्रुर्मन्येऽथ ताम्यतितमामहितातपश्यन् ॥ १६ ॥

चित्रं विवल्गन्नपि यत्प्रतापः, प्रचण्डमार्तण्डमहोमहीयान् ।

विरोधिवर्गस्य निसर्गासिद्धं, मुजामहोप्याणमपाकरोति ॥ १७ ॥

इत्यथ—

प्राग्वाटवंशध्वजकल्पकीर्तिः, श्रीचण्डपः खण्डितचण्डिमाऽभूत् ।

उवास यस्मिन् गुणवारिराशौ, चिराय लक्ष्मीप्रसुरेव धर्मः ॥ १८ ॥

गुणौघहंसालिसरोजपण्डथण्डप्रसादोऽस्य सुतो बभूव ।

यत्कीर्तिसौरभ्यतरङ्गितानि, जगन्मुदेऽद्यापि दिगन्तराणि ॥ १९ ॥

पत्युर्नदीनानिव विध्वनन्दनो, बभूव सोमोऽस्य सुतः कलानिधिः ।

एकाऽपि..... ॥ २० ॥

आशाराजः शस्मधीस्तस्य सजुर्जज्ञे विज्ञश्रेणिसीमन्तरत्नम् ।

येनाऽऽतेने [न] क्वचिद् वालसङ्गश्चित्रं चक्रे नाप्यलीकप्रसक्तिम् ॥ २१ ॥

तस्याऽभवन्निर्मलकर्मकारिणी, कुमारदेवीति सधर्मचारिणी ।

असूत सा नीतिरिवातिनाञ्छितप्रदानुपायांश्चतुरस्तनूहान् ॥ २२ ॥

लूणिगः प्रथमस्तेषु, मल्लदेवस्तजोऽपरः । वस्तुपालः सुधीरस्मात्, तेजःपालोऽथ धीनिधिः ॥ २३ ॥

वंशधीमौलिभ्रमिहं, मल्लदेवं कथं स्तुवे ? । यस्य धर्मधुरीणस्य, विवेकः सारथीयते ॥ २४ ॥

सरस्वतीकेलिकलामरालः, स वस्तुपालः किमु नाभिनन्वः ? ।

जिताः पदन्यासमनन्यतुल्यं, वितन्वता के कवयो न येन ? ॥ २५ ॥

दानं दुर्गतवर्गसर्गललितव्यत्यासवैहासिकं, शौण्डीर्यं भुजदण्डचण्डिमकथासर्वज्ञं विद्विषाम् ? ॥

सुद्विर्यस्य दिगन्तमूलमुजामाहृष्टिविधा श्रियां, कस्यासौ न जगत्प्रमात्यतिलरुः श्रीवस्तुपालो मुदेः ॥ २६ ॥

तेजःपालः सचिवतिलको नन्दताद् भाग्यभूमिर्यस्मिन्नासीद् गुणवितविनामव्यपोहः [प्ररोहः] ।

यच्छायासु त्रिभुवनवनप्रेक्षणीषु प्रगरुमं, प्रक्रीटन्ति प्रसरमसुदः कीर्तयः श्रीसहायाः ॥ २७ ॥

धन्यः स धीरघवलः शितिकैटमारिर्यस्थेदमद्भुतमहो महिमप्ररोहम् ।

दीपोप्यदीधिति-सुधाकिरणप्रवीणं, मन्त्रिद्वयं किल विलोचनतामुपैति ॥ २८ ॥

प्रेक्ष्यास्यैव प्रमुमीति-विभृति-वपुरा-ऽऽयुषाम् । वस्तुपालः स्थिरे धर्मकर्मण्येव धियं दधौ ॥ २९ ॥

- अगप्यपुण्योदयसत्यकाश्यपीमघौघनिघांतनकर्मकर्मठाम् ।
सहैव सङ्गेन नमस्यकर्मणा, यस्तीर्थयात्रामकरोन्महामतिः ॥ ३० ॥
- अभ्यर्च्य देवान् पथि सायुमण्डलीमाराध्य शुद्धाशन-पानकादिभिः ।
उद्धृत्य दीनानुपकृत्य धार्मिकान्, यो यात्रया प्राप पवित्रतां पराम् ॥ ३१ ॥
- उद्धृत्य पश्चात्सरजैनवेदम, यस्तत्र संस्थाप्य च पार्श्वनाथम् ।
चकार चौलुक्यपुरे स्वकीर्तिसखीत्वमुत्सवं वनराजकीर्तिम् ॥ ३२ ॥
- श्रीयुगादिप्रभोर्वेदमन्युर्दुदाचलमूर्ध्नि यः । श्रेयसे मह्यदेवस्य, मह्यिदेवमतिष्ठिपत् ॥ ३३ ॥
- विभ्राणं परितो जिनेन्द्रमवनान्युच्चैश्चतुर्विंशतिं, तापोचीर्णसुवर्णदण्डकलशालङ्कारतारश्रियम् ।
यः शत्रुञ्जयदेवसेवनमनाः शत्रुञ्जयाख्यं जिनप्रासादं घवळकतामनि पुरे निर्मापयामासिवान् ॥ ३४ ॥
- गोमहप्रोज्जितासूनां, देवभयमुपेयुषाम् । राणभट्टारकाणां यस्तत्रागारमकारयत् ॥ ३५ ॥
- वापं तस्य परः स्मेरपद्मां पीयूषवान्धवीम् । प्रपां चापतिमां विश्वप्रीतिदां यो व्यधापयत् ॥ ३६ ॥
- पौषघशालाद्वितयं, यस्याऽऽस्ते तत्र मुनिभटाकीर्णम् ।
कलिशत्रुभीतिमहुरधर्मधराधीशदुर्गनिभम् ॥ ३७ ॥
- पुरोत्तमे स्तम्भनकाभिघाने, निवेशने पार्श्वजिनेश्वरस्य ।
योऽकारयत् काञ्चनकुम्भदण्डमस्रण्टधर्मा शिखरं गरीयः ॥ ३८ ॥
- नाभेयं नेमिनाथं च, तदीये गूढमण्डपे । सरस्वतीं जगत्यां च, स्थापयामास यः कृती ॥ ३९ ॥
- अकारयन्नगाकारं, प्राकारं परितोऽत्र यः । निद्रायदमनक्रीडाभट्टं च प्रपाद्वयम् ॥ ४० ॥
- यश्चकार नवोद्धारधारि...द्रुतवैभवाम् । सुधासहचरीं तत्र, वापीं व्याकोशपङ्कजाम् ॥ ४१ ॥
- मृगुनगरमौलिमण्डनमृनिमुव्रततीर्थनाथभवने यः ।
देवकुलिकासु विशतिमितासु हेमानकारयद् दण्डान् ॥ ४२ ॥
- तस्य गर्भगृहोत्सङ्गे, यस्त्रैलोक्यदिवाकरी । पार्श्वनाथ-महावीरौ, क्षान्तिपीरो न्यवीविशत् ॥ ४३ ॥
- नगराख्ये महास्थाने, चैत्यमाद्यजिनेशितुः । येनोद्धृत्य समुद्भे, कीर्तिर्मरतचक्रिणः ॥ ४४ ॥
- व्याघ्ररोत्य(पल्लव)भिघे ग्रामे, पूर्वजैः कारितं पुरा । येन तत्पुण्यवृद्धयर्थमुद्धृतं जिनमन्दिरम् ॥ ४५ ॥
- निरीन्द्रग्रामे बोडाख्यवालीनाथस्य मन्दिरम् । विप्रसङ्घातघाताय, प्रजानामुद्धार यः ॥ ४६ ॥
- स्थापयन् सीङ्गुलग्राममण्डने जिनवेशनि । य. श्रीवीरजिनं विश्वप्रमोदमदजीवयत् ॥ ४७ ॥
- श्रीवैद्यनाथवरवेदमनि दर्भवत्यां, यान् दुर्मदी सुमटवर्मनृपो जहार ।
तान् विंशतिं द्युतिमतस्तपनीयकुम्भानारोपयत् प्रमुदितो हृदि वस्तुपालः ॥ ४८ ॥
- श्रीवीरघवलमूर्तिर्जयतलदेव्याश्च मूर्तिरसमश्रीः । श्रीमह्यदेवमूर्तिः, स्वमूर्तिरनुजस्य मूर्तिश्च ॥ ४९ ॥
- श्रीवैद्यनाथगर्भद्वारबहिर्भित्तिसम्भवे निलये ।
अन्तर्भक्तिनिमीलितकरकमलाः कारिता येन ॥ ५० ॥ युग्मम् ॥

१ धीमालयेन्द्रसुभटेन सुवर्णकुम्भानुत्तरितान् पुनरपि श्रित्तिपालमन्त्री ।

श्रीवैद्यनाथवरवेदमनि दर्भवत्यामेकोनविंशतिमपि प्रसभं व्यघत्त ॥ १७५ ॥

उदयप्रभियायां शुद्धतकीतिक्रमोत्तिन्याम् ॥

- । स्वविरोधिनीं शुचिर्भुवस्तुमारक्ष्ये च बदरकूपे च ।
 । यस्य प्रपां प्रपश्यन्, कलयत्यधिकाधिकं तापम् ॥ ५१ ॥
- उद्धारानुजो यस्य, तीर्थे कासहृदाभिषे । नामेयमवनं तुङ्गं, स्वयमम्ब्यालयं पुनः ॥ ५२ ॥
 स्तम्भतीर्थं नगोत्तुङ्गे, धाम्नि भीमेश्वरस्य यः । शातकुम्भमयं कुम्भं, केतने चाध्यरोपयत् ॥ ५३ ॥
 तत्र लोलाकृतिं दोलाकालं धोतीं च मेसलाम् । यो वृषं च तुपारांशुकान्तिकल्पमकल्पयत् ॥ ५४ ॥
 यः स्फुरन्मेदुरामोदे, तस्य गर्भगृहोदरे । मूर्ती न्यवेशयद् धीमानात्मनश्चानुजस्य च ॥ ५५ ॥
 । तस्य जगत्यां प्रीत्यै, ललितादेव्याः स्ववल्लमाया यः ।
 । सूत्रयति स्म पवित्रां, वटसावित्रीसदनसहिताम् ॥ ५६ ॥
 किं च कारयता तत्र, तत्रविक्रयवेदिकाम् ।
 । स्वस्य प्रकटिता येन, कृत्याऽकृत्यविवेकिता ॥ ५७ ॥
- उद्धृत्य वैद्यनाथस्य, वेश्म योऽत्रैव मण्डपे । मूर्तिं श्रीमल्लदेवस्य, शस्यकीर्तिरतिष्ठिपत् ॥ ५८ ॥
 पुण्यं प्रतापसिंहस्य, यः स्वपौत्रस्य वर्धयन् । तत्रैव रचयानास, ध्वस्तप्रीन्मातपां प्रपाम् ॥ ५९ ॥
 प्रभूतमूतराजस्य, यशोराजस्य मन्दिरम् । रम्यं निर्मापयामास, कीर्तीनां वासवेश्म यः ॥ ६० ॥
 असौ भुवनपालस्य, शिवाय शिवमन्दिरम् । अस्थापयत् समं रम्यैर्दशभिर्देवतालैः ॥ ६१ ॥
 तज्जगत्यां च यः काम्यं, चण्डिकायतनं नवम् । वेश्म रत्नाकरस्यापि, निस्सपलमसूत्रयत् ॥ ६२ ॥
 पञ्च पौषधशालाश्च, तत्र येन वितन्वता । पञ्चोत्तरविमानश्रीपात्रमात्मा व्यतन्यत ॥ ६३ ॥
 पुण्यायाऽज्जयसिंहस्य, रोहडीजिनधाम्नि यः । नामेयप्रतिमां तस्य, मूर्तिं च निरमापयत् ॥ ६४ ॥
 इद्वैवाष्टापदोद्धारं, श्रीशालिगजिनालये । लक्ष्मीघर[स्य] पुण्यार्थमुपकारी चकार यः ॥ ६५ ॥
 तत्रैकं राणकश्रीमदम्बडस्य तथाऽपरम् । पुण्यार्थं वैरिसिंहस्य, यस्तीर्थेशं न्यवीविशत् ॥ ६६ ॥
 श्रीकुमारविहारेऽत्र, वृत्रारातिनतक्रमौ । पार्श्वनाथ-महावीरौ, प्रीत्या यः प्रत्यतिष्ठिपत् ॥ ६७ ॥
 ग्रामेऽर्कपालितकनाम्नि जिनेश्वरस्य, वीरस्य मन्दिरमुदारमकारि येन ।
 । भूतेश्ववेश्म च मनोहरमध्वनीना, सजीविनी तपनतापरिपुः प्रपा च ॥ ६८ ॥
 येनात्रैव वियच्छुम्बिवीचिवाचालकूलम् । कासारः कारयाश्चक्रे, क्षीरनीराधिवान्धवः ॥ ६९ ॥
 मन्येऽस्मिन्ननुदानेन वष्टुपे पीयूषवर्षैर्मुहुः, केनाप्येतदवश्यमम्बरसरित्थिक्लेशैः पूरितम् ।
 व्यक्तं ब्रह्मसुतामारालकुलजैः कीर्णै मरालैरिदं, तेनैतस्य न वस्तुपालसरसः स्तोत्रं गुणानीदृग्हे ॥ ७० ॥
 षलम्पां पुण्यलम्ब्यश्रीः, प्रासादो वृषमप्रमोः । येनोद्दिष्टे मुदा मल्लदेवस्य सुकृतश्रिये ॥ ७१ ॥
 । ललितादेव्याः पत्न्याः, सुकृताय जिनेन्द्रभवनभासि तटम् ।
 । तत्र नवकमलललितं, ललितसरः कारितं येन ॥ ७२ ॥
 शशुञ्जयनगोत्सङ्गे, श्रीगुणादिजिनेशितुः । कार्वत्स्वरमयं रम्यं, पृष्ठपट्टनतिष्ठिपत् ॥ ७३ ॥
 तस्यैवाऽऽद्यविमोक्षैत्यप्रवेशे येन वामतः । सुव्रतस्वामिनं न्यस्य, भृगुकच्छविभूपणम् ॥ ७४ ॥
 । वीरं दक्षिणतः सत्यपुरार्थीशं निवेश्य च ।
 । तदन्ते भारती देवी, विद्याराध्या न्यवीयत ॥ ७५ ॥ युगम् ॥
 तत्रैवाकारयद् धाम्नि, काञ्चनान् मण्डपत्रये । पौत्रप्रतापसिंहस्य, श्रेयसे कलशानसौ ॥ ७६ ॥

- स्तोत्रं नामिनरेन्द्रनन्दनगुणान् गोत्रं च कीर्तिं समं, व्याहारं सचिवारविन्दतरणैरेतस्य दानाम्बुधेः ।
यत्रोवास विकस्वरोमयमुखी प्रीत्यैव देवीन्द्रा, तद् येनास्य विभोरकार्यत पुरो ह्वपारणं तोरणम् ॥७७॥
- अत्रैव शैले रचयाञ्चकार, मनोज्ञमाखण्डलमण्डपं यः ।
प्रयान्ति वैलक्ष्यमवेक्ष्य यस्य, लक्ष्मीं सहस्राक्षदशोऽप्यवश्यम् ७८ ॥
- तत्र रैवतकाधीशः, प्रसुश्च स्तम्भनेश्वरः । वस्तुपाले विष्टत्येव, प्रीतिमागत्य तस्थतुः ॥ ७९ ॥
- श्रीवस्तुपालस्य कयाऽतिभक्त्या, नेमिः समाकृष्यत ? कौतुकं नः ।
इतीव तस्मिन्नवलोकना-ऽम्बा-प्रद्युम्न-शाम्बाः सममभ्युपेयुः ॥ ८० ॥
- तत्राऽऽत्मस्वामिनो वीरघवलस्य धरापतेः । स्वर्दिपामद्विपारूढां, मूर्तिं स्थापयति स्म यः ॥ ८१ ॥
- अत्रैव शत्रुञ्जयशैलमौलौ, नन्दीश्वरद्वीपगतान् जिनेन्द्रान् ।
तस्यानुजः स्थापयति स्म तेजःपालामिधानो यशसां निधानम् ॥ ८२ ॥
- धर्मस्थानमिदं विलोक्य जगतामानन्दकन्दोदयप्रावृट्कल्पमनल्पसम्भ्रममरान् नन्दीश्वराख्यं जनः ।
तेजःपालयशांसि मांसलरसं गायन् मुहुर्गायते, मन्ये नूतनवस्तुसंस्त्रववशोद्भूतां प्रभूतां मुदम् ॥ ८३ ॥
- अनुपमदेव्यास्तेन, स्वप्रेयस्याः प्रभूतसुकृताय ।
आदिजिनेश्वरपुरतो, विदधेऽनुपमासरश्च नवम् । ॥ ८४ ॥
- विशेषके रैवतकस्य मूर्तः, श्रीनेमिचैत्ये जिनवेदमसु त्रिषु ।
श्रीवस्तुपालः प्रथमं जिनेश्वरं, पार्श्वं च वीरं च मुदान्यवीविशत् ॥ ८५ ॥
- तदन्तिके च निःशेषसुरा-ऽसुरनिषेविताम् । कारयाभास यः काव्यकामधेनुं स्वरस्वतीम् ॥ ८६ ॥
- येनाऽऽत्मनः स्वपत्न्याश्च, स्वस्य भ्रातुः कनीयसः । तद्भार्यायाश्च शैवेयचैत्येऽकार्यन्त मूर्तयः ॥ ८७ ॥
- अम्बिकाभवने येन, मूर्तिं स्वस्यानुजस्य च । जगन्नेत्रसुधावृष्टिः, कारिता चारिमास्पदम् ॥ ८८ ॥
- तदीये शिखरे नेमिं, चण्डपश्रेयसे च यः । मूर्तिं रम्यां तदीयां च, मल्लदेवस्य च व्यधात् ॥ ८९ ॥
- चण्डप्रसादपुण्यं वर्द्धयितुं योऽवलोकनाशिखरे ।
स्थापितवान् नेमिजिनं, तन्मूर्तिं स्वस्य मूर्तिं च ॥ ९० ॥
- प्रद्युम्नशिखरे सोमश्रेयसे नेमिनं जिनम् । सोममूर्तिं तथा तेजःपालमूर्तिं च योऽतनोत् ॥ ९१ ॥
- यः शाम्बाशिखरे नेमिजिनेन्द्रं श्रेयसे पितुः
..... तन्मूर्तिं च, कारयामास भक्तितः ॥ ९२ ॥
- वस्त्रापथे जगत्यां, भवनाम्नः शूलिनो भवनमतुलम् ।
उद्धरति स्म विवेकी, तेजःपालस्त्वदनुजन्मा ॥ ९३ ॥
- पुरतः कालमेघस्य, क्षेत्रपालस्य कारितः । अधिनोर्मण्डपस्तत्र, तेनैव मतिशालिना ॥ ९४ ॥
- प्रीतो वस्त्रापथमुवि पुरा यद् ददौ तापसामां, सद्यः किञ्चित् तदिदमधुना प्रापितं तैः करत्वम् ।
प्रामोद्वारादन्विलमपि तन्नोचयामास तेभ्यस्तेजःपालः सुकूलकृतधीर्वस्तुपालानुजन्मा ॥ ९५ ॥
- स्ववंश्यमूर्तिभिः श्रीमद्येमिनाधेन चान्वितः । मुखोद्घाटनकस्तम्भे, वस्तुपालेन निर्ममे ॥ ९६ ॥
- अशाराजस्य पितुः, पितामहस्यापि सोमराजस्य । मूर्तियुगमत्र मन्त्री, व्यधापयत् तुरगपृष्ठस्यम् ॥ ९७ ॥

द्वारे यत् किल दक्षिणामनुगतं यच्च प्रतीच्यां स्थितं,
यत् कौबेरदिगाश्रितं च सदनं श्रीनेमिनाथप्रभोः ।
कामं मण्डयति स्म तानि सचिवोत्सः स यैस्तोरणै-

र्दृष्टिस्तद्विभवं विभाज्य जगतो नान्यत्र विश्राम्यति ॥ ९८ ॥

गुरुः कुलेऽस्य नागेन्द्रगच्छव्योमार्यमाऽभवत् । श्रीमहेन्द्रप्रभः श्रीमान्, शान्तिस्वरिस्ततः श्रुतः ॥ ९९ ॥

आनन्दा-ऽमरसूरी, तदीयगच्छान्विकौस्तुमप्रतिमौ ।

तदनु हरिमद्रस्वरिः, शमरत्नमहोदधिः समभूत् ॥ १०० ॥

तत्पदे विजयसेनसूरयः, पूरयन्ति कृतिनां मनोरथान् ।

वस्तुपालजिनबिम्बपद्मतिर्जृम्भते जगति यत्प्रतिष्ठिता ॥ १०१ ॥

अत्यद्भुतैः कृत्यशतैरजसं, योऽसाधयद्दर्भमतुल्यकर्म ।

श्रीवस्तुपालः सचिवावतंसः, प्रकल्पतां कल्पशतायुरेपः ॥ १०२ ॥

यो विद्वद्भिरप्येवं स्तूयते—

त्यागाराधिनि राघेयेऽप्येककर्णेन भूरभूत् ।

उदिते वस्तुपाले तु, द्विकर्णा वर्ण्यतेऽधुना ॥ १०३ ॥

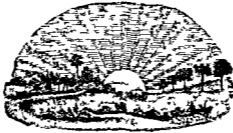
जज्ञे हर्षपुरीयगच्छतिलकः श्रीमन्मुनीन्दुप्रभु-

देवानन्दगुरुस्ततस्तदपरः सूरिश्च देवप्रभः ।

तच्छिष्यैर्नरचन्द्रसूरिगुरुभिर्दत्तपतिष्ठोदय-

स्तामेतामतनोत् प्रशस्तिमतुल्यं सूरिर्नरेन्द्रप्रभः ॥ १०४ ॥

॥ इति मन्त्रीश्वरवस्तुपालप्रशस्तिः श्रीनरेन्द्रप्रभसूरिविरचिता ॥



पञ्चमं परिशिष्टम् ।

मलधारित्रीनरेन्द्रप्रभसूरिविनिर्मिता

वस्तुपालप्रशस्तिः ।

त्वस्ति श्रीवह्निसालाय, वस्तुपालाय मन्त्रिणे । यद्यशःशशिनः शत्रुदुष्कीर्त्या शर्वरीयितम् ॥ १ ॥

शौण्डीरोऽपि विवेकवानपि जगन्नाताऽपि दाताऽपि वा,
सर्वः कोऽपि पथीह मन्थरगतिः श्रीवस्तुपालाश्रिते ।

त्वज्योतिर्दहनाहुतीकृततमःस्तोमस्य तिग्मध्रुतेः,

कः शीर्ताशुपुरःसरोऽपि पदवीमन्वेतुमुत्कन्धरः ?

॥ २ ॥

श्रीवस्तुपालसचिवस्य यशःप्रकाशे, विश्वं तिरोदधति धूर्जटिहासभासि ।

मन्ये समीपगतमप्यविभाव्य हंसं, देवः स [प]न्नवसतिश्चलितः समाधेः

॥ ३ ॥

वास्तवं वस्तुपालस्य, वेत्ति कश्चरिताद्भुतम् ? । यस्य दानमविश्रान्तमार्धिष्वपि रिपुष्वपि

॥ ४ ॥

श्रेण्येपु द्विपतां पुरेषु विपुलज्वालाकसालोदयाः,

खेलन्ति स्म दवानलच्छलभृतो यस्य प्रतापामयः ।

जृम्भन्ते स्म च पर्वगर्वितसितज्योत्तिःसमुत्तेकिते,

ज्योत्स्नाकन्दलकोमलाः शरवणव्याजेन यत्कीर्तयः

॥ ५ ॥

कुन्दं मन्दप्रतापं गिरिशगिरिरिपाहङ्कृतिः साशुभिन्दुः,

पूर्णन्दुः सिद्ध.....विशुरिमा पाञ्चजन्यः समन्दुः ।

शेषाहिर्निदिशेषः कुमुदमपमदं कौमुदी निष्प्रमोदा,

क्षीरोदः सापनोदः क्षतमहिम हिमं यस्य कीर्तेः पुरस्तात्

॥ ६ ॥

यस्योर्वीतिलकस्य किन्नरगणोद्गीतैर्यशोभिर्मुहुः,

स्मेरद्विस्मयलोलमौलिविपलचन्द्रामृतोज्जीविनाम् ।

सृष्टिर्नाभवदीदृशी मम न मेऽप्य.....वाप्येति गां,

मुण्डभ्रमरिणद्विधातृशिरसां शम्भुः परं पिप्रिये (?)

॥ ७ ॥

राकाताण्डवितेन्दुमण्डलमहःसन्दोहसंश्रितादिभि-

र्यत्कीर्तिप्रकरैर्जगन्धयतिरस्कारिकदेवाकिभिः ।

अन्योन्यानवलोकनाकुलिनयो. नैलात्मजा-शूलिनोः,

क त्वं क त्वमिति प्रगल्भरमसं वाचो विवेरुर्मिथः

॥ ८ ॥

१ पद्यमिदं नरेन्द्रसूरिनाम्ना निर्दिष्टं प्राचीनलेखनग्रन्थे भाग २ मध्ये ४१ संख्यागिरिनारसत्कशिकालेभे
वस्तुपालप्रशस्तिः १५० ॥

बाढं प्रौढयति प्रतापशिविनं कामं यशःकौमुदीं, सामोदां तनुते सतां विकचयत्यास्यारविन्दाकरान् ।
शत्रुस्त्रीकुचपत्रबल्लिविपिनं निःशेषतः शोषयत्यन्यः कोऽप्युदितो रणाम्बरतले यस्यासिधाराधरः ॥९॥
तत्सत्यं कृतिभिर्यदेप भुवनोद्धारैकधौरेयतां, धिम्नापो मृगमच्युतस्थितिरिति प्रेमोत्तरं गीयते ।
यत्र प्रेम निरर्गलं कमलया सर्वाङ्गमालिङ्गिते, केषां नाम न जज्ञिरे सुमनसामौर्जित्यवत्यो मुदः ॥१०॥

न यस्य लक्ष्मीपतिरप्युपैति, जनार्दनत्वात् समतां मुकुन्दः ।

वृषप्रियोऽप्युग्र इति प्रसिद्धिः, दधत्रिनेत्रोऽपि न चास्य तुल्यः ॥ ११ ॥

स्वस्ति श्रीबलये, नमोऽस्तु नितरां कर्णाय दाने ययो-

रस्पष्टेऽपि दिशां यशः कियदिदं बन्धास्तदेताः प्रजाः ।

दृष्टे सम्प्रति वस्तुपालसचिवत्यागे करिष्यन्ति ताः,

कीर्तिं काञ्चन या पुनः स्फुटमियं विश्वेऽपि नो मास्यति ॥ १२ ॥

यस्मिन् विश्वजनीनवैभवधरे विश्वम्भरां निर्भरश्रीसम्भारविभाव्यमानपरमप्रेमोत्तरां तन्वति ।

प्राणिप्रत्ययकारि केवलमभूद्देहीति संकीर्तनं, लोकानां न कदापि दानविषयं नाप्रार्थनामोचरम् ॥ १३ ॥

दृश्यन्ते मणि-मौक्तिकस्तवकिता यद्विद्वदेणीदृशो,

यजीवन्त्यनुजीविनोऽपि जगतश्चिन्ताश्मविस्मारिणः ।

यच्च ध्यानमुचः स्मरन्ति गुरवोऽप्यश्रान्तमाशीर्गिरः,

प्रादुष्यन्त्यमला यशःपरिमला श्रीवस्तुपालस्य ते ॥ १४ ॥

कौटैरैः कटक-ऽहुलीय-तिलकैः केयूर-हारादिभिः, कौशेयैश्च विभूष्यमाणवपुषो यस्याणिविश्राणितैः ।

विद्वांसो गृहमागताः प्रणयिनीरप्रत्यभिन्नाभृतस्तैस्तैः स्वं शपथैः कथं कथमपि प्रत्याययाञ्चक्रिरे ॥ १५ ॥

तैस्तैर्येन जनाय काञ्चनचयैरश्रान्तविश्राणितैरानिन्ये भुवनं तदेतदमितोऽप्यैश्वर्यकाष्टां तथा ।

दानैकव्यसनी स एव समभूदत्यन्तमन्तर्यथा, कामं दुर्धृतिधामयाचकचम् भूयोऽप्यसम्भावयन् ॥ १६ ॥

आगो यद्वसुवारिवारितजगद्धारिद्यदावानलश्चेतः कण्टककुट्टनैकरसिकं वर्णाश्रमेष्वन्वहम् ।

सह्यामश्च समग्रवैरिविषदामद्वैतवैतण्डिकस्तन्मध्ये वसति त्रिधाऽपि सचिबोचंसेऽत्र वीरो रसः ॥ १७ ॥

आश्रयं वसुवृष्टिभिः कृतमनःकौतूहलाकृष्टिभिर्मिस्मिन् दानवनाधने तत इतो वर्षत्यपि प्रत्यहम् ।

दूरे दुर्दिनसंक्रयाऽपि सुदिनं तत्किञ्चिदासीत् पुनर्येनोर्बीजलयेऽत्र कोऽपि कमलोद्भासः परं निर्मितः ॥ १८ ॥

साक्षाद् ब्रह्म परं धरागतमिय श्रेयोविवर्तैः सतां,

तेजःपाल इति प्रेतीतमाहिमा तस्यानुजन्मा जयी ।

यो धत्ते न दशां कदापि कलितावयामविद्यामर्यां,

यं चोपास्य परिस्पृशन्ति कृतिनः सद्यः परां निर्वृत्तिम् ॥ १९ ॥

१ पद्यमिदं नरेन्द्रसूरिनाम्ना प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ मध्ये ४१ संख्यगिरिनारसत्कशिलालेखे प्रथमपद्यताया वर्तते ॥ २ पद्यमिदं नरेन्द्रसूरिनाम्ना प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ पद्य ४१ संख्यगिरिनारसत्कशिलालेखे द्वितीयपद्यतायाऽपि विद्यते ॥ ३ पद्यमिदं नरेन्द्रसूरिनाम्ना प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ मध्ये ४१ संख्यगिरिनारसत्कशिलालेखे द्वादश-पद्यतायाऽपि वर्तते ॥ ४ प्रसिद्धम् गिरिनारशिलालेखे ॥

सङ्घामः कतुभूमिरत्र सततोद्दीपः प्रतापोऽनलः,

श्रूयन्ते स्म समन्ततः श्रुतिमुखोद्गारा वि[धी]नां गिरः ।

मन्त्रीशोऽयमशेषकर्मनिपुणः क्रमोपवेष्टा द्विषो,

होतव्याः फलवांस्तु वीरधवलो यज्वा यशोराशिभिः

॥ २० ॥

श्लाघ्यः स वीरधवलः क्षितिपावतंसः, कैर्नाम ? विक्रम-नयाविव मूर्तिमन्तौ ।

श्रीवस्तुपाल इति धीरल्लामतेजःपालश्च बुद्धिनिलयः सचिवौ यदीयौ

॥ २१ ॥

अनन्तप्रागल्भ्यः स जपति बली वीरधवलः, सशैलं साम्भोधि भुवमनिशमुद्धर्तुमनसः ।

इमौ मन्त्रिप्रद्यौ कठपति-कोलाधिपकलामदभ्रां विभ्राणौ मुदमुदयिनीं अस्य तनुतः

॥ २२ ॥

युद्धं वारिधिरेष वीरधवलः क्षमाशक्रदोर्विक्रमः,

पोतस्तत्र महान् यशःशतपटाटोपो न पीनद्युतिः ।

सोऽयं सारमरुद्भिरञ्चतु परं पारं कथं न क्षणाद्,

यत्राश्रान्तमरित्रतां कलयतः स्वावेव मन्त्रीश्वरौ

॥ २३ ॥

स्यैरं आम्यतु नाम वीरधवलक्षोणीन्दुकीर्तिर्दिवं,

पातालं च महीतलं च जलधेरन्तश्च नक्तन्दिवम् ।

धीसिद्धाङ्गननिर्मलं विजयते श्रीवस्तुपालाल्ख्यया,

तेजःपालसमाह्वया च तदिदं यस्या द्वयं नेत्रयोः

॥ २४ ॥

श्रीमन्त्रीश्वरवस्तुपालयशसामुचावचैर्वीचिभिः,

सर्वस्मिन्नपि लम्बिते धवलतां कल्लोलिनीमण्डले ।

गङ्गावैमिति प्रतीतिविकलस्ताम्यन्ति कामं भुवि,

भ्राम्यन्तस्तनुसादमन्दितमुदो मन्दाकिनीधार्मिकाः

॥ २५ ॥

हृदो रोहण ! रोहति त्वयि शुभुः किं पीनतेयं ? शृणु,

भ्रातः ! सम्प्रति वस्तुपालसचिवत्यागैर्जगत प्रीयते ।

तस्मास्त्येव ममाधिकुट्टनकथा प्रीतिदरीकिन्नरी-

गीतैस्तस्य यशोऽभूतैश्च तदियं मेदस्विता मेऽधिकम्

॥ २६ ॥

देवै स्वर्नाभ ! कष्टं, ननु क इव भवान् ? नन्दनोद्यानपालः,

खेदस्तत् कोऽयं ? केनाप्यहह ! हृत इतः काननात् कल्पवृक्षः ।

हुं मा वादीस्तदैतत् किमपि करुणया मानवाना मयैव,

प्रीत्याऽऽदिष्टोऽयमुर्व्यांस्तिलकयति तलं वस्तुपालच्छलेन

॥ २७ ॥

१ पद्यमिदं नरेन्द्रपरिनाम्ना निर्दिष्टं प्राचीनलेख्यसंग्रहे खल २ पद्ये ४५ संख्यापरिणामरसकविकलेसे दशम पद्यतयाऽपि विद्यते ॥ २ 'नीयात्रिकाः गिरिनारदिलालेखे ॥ ३ पद्यमिदं नरेन्द्रपरिनाम्ना निर्दिष्टं प्राचीनलेख्यसंग्रह भाग २ पद्ये ४१ संख्यापरिणामरसकविकलेने नवमपद्यतया, पुस्तकप्रबन्धसंग्रहगतवस्तुपालप्रबन्धे माणिक्यवर्द्धि-उक्तिनया २५६ श्लोके च भवति ॥

कर्णायाम् नमो नमोऽस्तु बलये त्यागैकहेवाकिनौ, यौ द्वावप्युपमानसम्पदमित्यत्कालं गतौ त्यागिनाम् ।
भाष्याम्भोधिरतः परं पुनरयं श्रीवस्तुपालश्चिरं, मन्ये धास्यति दानकर्मणि, परामौपम्यधौरेयताम् ॥२८॥

व्योमोत्सन्नरुधः सुधाधवलिताः कक्षागवाक्षाङ्किताः,
स्तम्भश्रेणिविजृम्भमाणमणयो मुक्तावचूलोज्ज्वलाः
दिव्याः कल्पमृगीदृशश्च विदुषां यत्त्यागलीलायितं,
व्याकुर्वन्ति गृहाः स कस्य न मुदे श्रीवस्तुपालः कृती ! ॥ २९ ॥

यद् दूरीक्रियते स्म नीतिरतिना श्रीवस्तुपालेन तत्,
काञ्चित् संवननौपधीमिव वशीकाराय तस्यैक्षितुम् ।
कीर्तिः कौञ्जनिकुञ्जमञ्जनगिरिं प्राकट्टैलमस्ताचलं,
विन्ध्योर्वीधर-शर्वपर्वत-महामेरुनपि प्राश्रयति ॥ ३० ॥

देवः पङ्कजभूर्विभाव्य भुवनं श्रीवस्तुपालोद्भवैः,
शुभ्रांशुद्युतिभिर्भ्यशोभिरमितोऽलक्ष्यैर्बलक्षीकृतम् ।
कल्पान्तोद्भुतदुग्धनीरधिपयःसन्तापशङ्काकुलः,
शङ्के यत्सर-मास-वासरगणैः सख्याति सर्गस्थितेः ॥ ३१ ॥

चित्रं चित्रं समुद्रात् किमपि [नि]रगमद् वस्तुपालस्य पाणे-
र्यो दानाम्बुप्रवाहः स खलु समभवत् कीर्तिसिद्धस्रवन्ती ।
साऽपि स्वच्छन्दमारोहति गगनतलं खेलति क्षमाधराणां,
शृङ्गोत्सङ्केपु रङ्गत्यमरमुवि मुहुर्गाहते खेचरोर्वीन् ॥ ३२ ॥

पुण्यारामः सकलसुमनःसंस्तुतो वस्तुपालः, तत्र स्मेरा गुणगणमयी केतकीगुल्मपङ्क्तिः ।
तस्यामासीत् किमपि तदिदं सौरगं कीर्तिदम्भाद्, येन प्रौढप्रसरसुहृदा वासि[ता] दिग्विभागाः ॥३३॥
सेचं सेचं स खलु विपुलैर्वासनावारिपूरैः, स्फीतां स्फातिं [वि]तरणतरुर्वस्तुपालेन नीतः ।
तच्छायायां भुवनमस्त्रिलं हन्त ! विश्रान्तमेतद्, दोलकेलिं श्रयति परितः कीर्तिकन्या च तस्मिन् ॥३४॥

श्रीवस्तुपालयशसा विशदेन दूरादन्योन्यदर्शनदरिद्रदृशि त्रिलोक्याम् ।
नामौ स्वयम्भुवि विशत्वपि निर्विदशङ्कं, शङ्के स जुम्बति हरिः कमलामुखेन्दुम् ॥ ३५ ॥
स एष निःशेषविपक्षकलः, श्रीवस्तुपालः पदमद्भुतानाम् ।
यः शङ्करोऽपि प्रणयित्रजस्य, विभाति लक्ष्मीपरिरम्भयोग्यः ॥ ३६ ॥

चीत्कारैः शकटव्रजस्य विकटैरधीयद्येयारवैरारावै रवणोत्तरस्य बहलैर्बन्दीन्द्रकोलाहलैः ।
नारीणामथ चञ्चरीभिरशुभमेतस्य चित्रत्वये, मन्त्रोच्चारमिवाचचार चतुरो यस्तीर्थया[त्रा]नहम् ॥ ३७ ॥

॥ इति मलघाटिन्धीनरेन्द्रप्रमच्चरित्ता घस्तुपालप्रशस्तिः ॥

पष्ठं परिशिष्टम्

श्रीजयसिंहसूरिविरचिता

वस्तुपालतेजःपालप्रशस्तिः ।

श्रेयः श्रीगुणिसुव्रतः स तनुतां यो मन्दरागस्तले, तन्वानः कमठाधिनाथममृतोद्धारकैधौरेयकः ।
निर्मथ्यैनमधर्मकर्मलहरीपूरैरपारं भवाङ्गारं पुरुषोत्तमाय न तमां ददते स्म कस्मै श्रियम् ! ॥ १ ॥

यस्मै रश्मिभरो गभीरिमगुणकान्तेन कल्लोलिनी-
कान्तेनाञ्जनपुञ्जमञ्जिमजयी शङ्के स्वकीयोऽर्पितः ।

यस्येव क्रमसेवनाय च मुदा मुक्तोऽङ्गभूः कच्छपो,

लेभे लाञ्छनतां स यच्छतु सतां श्रीसुव्रतो निर्वृतिम्

॥ २ ॥

आनन्दाय सुदर्शनाऽस्तु जगतां यस्या मुखेनामृतो, नम्राया गुणिसुव्रतकमनसादर्शमतिच्छन्दिना ।
आत्मद्वादशतां बहन्नहरहर्देवो हिमांशुर्महाकरूपानरूपपतङ्गपाटवतिस्कारे चकारोधमम् ॥ ३ ॥

रक्षादक्षो दिवि दिविपदां कोऽपि सन्ध्यासमाधिं,

ध्यातुर्धातुश्चलुकजलतः शौर्यराशिः पुराऽऽसीत् ।

भेहन्त्सङ्गप्रतिमिततया सम्मुखीनो बभूव,

भ्रूसंरम्भत्रसदसुहृदो यस्य युद्धे य एव

॥ ४ ॥

'बंदो विश्वत्रितयविदितः पर्वणां वेदम तम्माधौलुक्याख्यः समजनि समुन्मीलदौत्रत्यलीलः ।
सच्चूलप्रस्मितसितयशश्चेलतानातिरेकादेकच्छत्रामतनुत महीं मूलराजो महीन्दुः ॥ ५ ॥

कृत्वाऽपः कच्छपं सिन्धुराजप्रशोभशोमितः । अमन्दरोचितभुजोऽप्यभवद् यः श्रियः'प्रियः' ॥ ६ ॥

कीर्तिस्तोममुधामृतानि वसुधामण्डानि रेजुः सुधा-

कुण्डानीव नवत्रिविष्टपसदां स्वाघानि यस्मिन् विभौ ।

रक्षानागचतुष्क्रिका इव सदा सेवासमायातपट्-

त्रिगद्राजकुलीयदक्षिणभुजव्याजेन येषां वसुः

॥ ७ ॥

तस्मादकरमलमिलनिजकीर्तिगुणिसुव्रतानां निजमहोद्दहनाशिदीप्तम् ।
मूर्तिं हरस्य धरणीं रिपुराजमुद्दैधामुण्डराज इति राजयति स्म राजा

॥ ८ ॥

यत्तद्भवती हरसिद्धिसिद्धप्रपेव रेजे समराटवीपु ।
 मृत्युन्मुखैः साहसिभिर्यशोभः, क्रीतं निजाङ्गक्षतजेन यस्याम् ॥ ९ ॥
 भूवल्लभस्तदनु वल्लभराजदेवः, ख्यातः क्षितौ समिति यः सितविभ्रमाभिः ।
 हृष्यामदामभिरपूजि सुराङ्गनाभिः, शृङ्गारदैवतभिवेप्सितकान्तदाता ॥ १० ॥
 स्वयं विभ्रमेषु परेषु सुद्धसिद्धैकचिन्ताचयचान्तनिद्रः ।
 यः स्वप्नसङ्घैरपि बाहुदण्डकण्डूतिनिर्भेदमुदं न भजे ॥ ११ ॥
 तस्माद्भूद् भूवल्यस्य मूपा, भीदुर्लभो दुर्लभराजदेवः ।
 यस्यासिसिन्धौ वितताभिरेत्य, मग्नं महीभृत्कुलवाहिनीभिः ॥ १२ ॥

सुरस्त्रीणां नेत्रं सृजति निजरूपादनिमिषं, ध्रुवं तस्मिन् मस्मीकृतरिपुरभूद् मीमन्वृपतिः ।
 यदुत्पाते जाते द्रुतवृत्तभियो भोजवृत्ततेरुरः श्रीरास्यं गीः करमसिलता युक्तमनुचत् ॥ १३ ॥

यद्दानोदकजातसिन्धुपटलैः कीर्तिप्रभापाण्डुभिः, शशुस्त्रीजनसाङ्गनाश्रुसलिलस्रोतस्विनीभिः समम् ।
 सम्भिवैव पदे पदे तनुमतामन्तः समन्तान्मुदं, तन्वद्भिर्जितगाङ्गायासुनजलैर्धात्री पवित्रीकृता ॥ १४ ॥

क्रामन्ति स्म यथा यथाऽन्वरपथाद् यात्रासु यात्रावनीजैत्रे सर्पति दर्पतारतुरगक्षुण्णा रजोरराजयः ।
 पश्यन्तीव तथा तथा त्रिपथगातोयेऽपि विच्छायतां, शङ्के कीर्तिरगादचौतधवला दूरेऽतिदूरादपि ॥ १५ ॥

तस्माद् विस्मारितरतिपतिः कामिनामङ्गधाम्ना, नाम्ना कर्णः समजनि भुजाशालिनां मौलिरत्नम् ।
 निम्बं बन्दिग्रहमपि निजं बहुमन्यन्त मन्ये, धन्यम्मन्या रिपुयुवतयो यस्य रूपं निरूप्य ॥ १६ ॥

यदङ्गपटनोत्सृष्टैः, परमाणुगणैरिव । विधिर्विधाय कन्दर्पं, सदर्यां धामपि व्यधात् ॥ १७ ॥
 सप्ततनुप्रपञ्चेन, यस्तां कीर्तिपटीं व्यधात् । चतुर्दशापि विश्वानि, च्छादयाच्चक्रिरे यया ॥ १८ ॥

व्यजयत जयसिंहदेवभूपस्तदनु 'दिशंस्त्रिदशप्रभुप्रभावः ।
 यदासि यदैसिषेवतुदुग्धमुग्धैः, श्रितशुभुभिर्दिवि दोहफेनसाम्यम् ॥ १९ ॥

तत् त्रैलोक्यनिभत्रिभूमिकभृद्कोडस्फुरन्मालवङ्गमाभृत्कीर्तिनिताम्बिनीमुखपरिक्षेपाय पांस्तृकरम् ।
 लीलालक्षजगद्भयं खरखुरोत्सातक्षमामण्डलच्छद्रौघैरुरगालयेऽपि तुरगा यस्य क्षणाच्चिक्षिपुः ॥ २० ॥

विधस्थोपकृतिव्रतव्यतिकरैस्तेर्यद्यशस्तेजसोः,
 सामान्यप्रतिपक्षिमप्यसुलभां लब्ध्वेन्दु-तीव्रयुती ।

काङ्क्षन्तौ चिरनन्वितानिव तयोरासुःप्रवृद्धयौपर्धौ,
 द्रष्टुं काञ्चन काञ्चनक्षितिधरोपान्तेऽपि तौ आभ्यतः ॥ २१ ॥

तत्कालं कलहे निहत्य किमपि प्रत्याथिताः शत्रवः, स्वर्गस्त्रीपरिरम्भेऽपि न मनःस्वास्थ्यं समासेदिरे ।
 यं कल्पान्तकृतान्तवक्त्रकुहराकारस्फुरत्कार्मुकं, पश्यन्तः प्रसरन्तमद्भुतभयावेशेन मीलदृशः ॥ २२ ॥

अवञ्चयन्नाशु कृपाणपातं, विरोधिवीरा नमनक्रियाभिः ।
 यस्याङ्घ्रिपङ्केरुहवद्धवासां, लक्ष्मीं च दक्षा रमसादशुद्धम् ॥ २३ ॥

स्वैरेव प्रहृत्तैर्द्विपद्मिरीमृतैः सुरीभिः समं,
गीतं प्रीतिरसैः स्वमेव हृषिते तस्मिन् यशः शृण्वति ।
इमां पाति स्म कुमारपालनृपतिर्यत् कीर्तिकालुष्यदं,
तद् बाष्पाञ्जनकदमलं न रुदतीवित्तं सवितोऽग्रहीत् ॥ २४ ॥

जैनं धर्ममुदीचकार सहसाऽर्णोराजमन्त्रासयद्, बाणैः कुङ्कुणमग्रहीदपि गुरुचक्रे स्मरध्वंसिनम् ।
इत्थं यस्य परिक्षतक्षितिभृतो हंसावलीनिर्मलैः, रामस्येव निरन्तरं नवयशःपूरीर्दिशः पूरिताः ॥ २५ ॥

तादृग्दानपरम्परामिरभितो निष्कादय कालं कलिं,
त्रेता-द्वापरयोरहम्प्रथमिकापद्मस्यहं पदपतोः ।

श्रेयश्चन्दनतो विशेषकविधिं कृत्वा यशोजाह्ववी-

पाथोभिः कृतिना स्वयं कृतयुगो येनाभिषिक्तः क्षितौ ॥ २६ ॥

अजयदजयपालभूमिपालः, क्षितिमथ मन्मथमञ्जुलेन येन ।

त्रिपुररिपुरपि प्रमूनबाणैरिव पिहितः सहसा यशःसमूहैः ॥ २७ ॥

अन्तर्बल्कीर्तिकासारं, कृतान्मानस्य सर्वतः । लम्फेनलबायन्ते, तारा गगनदन्तिनः ॥ २८ ॥

बाळः श्रीमूलराजोऽथ, विक्रीडन् समराङ्गणे । द्विपलताप्रतानानि, समूलमुदमूल्यत् ॥ २९ ॥

आपये प्रसृतिसम्भ्रमेण यत्तेजसा रिपुयशःसुधारसः ।

तेन निर्गलितबिन्दुवृन्दवद्, धोतते वियति तारकाततिः ॥ ३० ॥

श्रीमीमारमथो बमार भुजयोः श्रीमीमदेशो विमुर्दानारम्भविजृम्भमाणविमवप्रागल्भ्यगर्जघशाः ।

गीतो यत्तुलया विरोचनमुतः पातालवैतालिकैर्योत्तालमनोभिरन्वहमहङ्कारं चकार स्मितः ॥ ३१ ॥

यदाननसरोज्जेन, नित्यस्मेरेण निर्जितः । सज्जलञ्ज इवामज्जद्, यद्यशोजलधौ विधुः ॥ ३२ ॥

अर्णोराजाङ्गजातं कलकलहमहासाहसिकयं चुलुक्यं,

श्रीलावण्यप्रसादं व्यतनुत स निजश्रीसमुद्धारधुर्यम् ।

साम्य प्रत्येकधाराद्वयफलितमुजायुग्मशाली रिपूर्णां,

कीलालैः पीतवासा इव समिति चतुर्बाहुतामेति सङ्गः ॥ ३३ ॥

तादृक्कम्पव्यतिकरमृतां सर्वतः पर्वतानां, व्यातन्वद्भिः क्षयसममरुत्पूरशङ्कातिरेकम् ।

यत्प्रत्यर्षिक्षितिषवधुवर्गनिःश्वासवातत्रातोत्पातैरिव दिवि सदा त्रेमुरकेंदु-ताराः ॥ ३४ ॥

भूमारोदृतिधुर्यदुर्द्धरभुजस्तस्याङ्गजन्मा स्फुर-

त्कीर्तिः श्रीषवल्लोऽस्ति वीरधवल्लोऽहङ्कारलङ्घेधरः ।

यस्मिन् निभ्रति मार्गणै रिपुगणै हृष्यन्ति तस्याङ्गनाः,

कानोऽयं कुरुते मदेकवशगं चिचेशमित्याशया ॥ ३५ ॥

विक्रीडतो यस्य नवप्रताप-यशःकुमारौ जगदङ्गणान्तः ।

प्रभावमाजौ लसतस्तदङ्गरक्षामु दक्षाविव सूर-राजौ ॥ ३६ ॥

पाताले बलिर्जराज्यविशदं विश्वभ्रामण्डले, यल्लीलायितमञ्जुले सुरपुरे कल्पद्रुमुद्राजुषि ।
दारिद्येन मयद्रुतेन सहसा यद्वैरिवीराश्रयादश्रान्तप्रसरेण शैलशिखरकोडेषु विकीर्णितम् ॥ ३७ ॥

यस्यासिरम्भोदसहोदरश्री, शौर्यं द्विपस्येव मदप्रवाहः ।

सर्पन् सदपारिनरेन्द्रकीर्तिकासारपूरं कलुषीचकार ॥ ३८ ॥

सचिवप्रवरं कञ्चित्, प्रार्थितस्तेन पार्थिवः । श्रीमान् भीमो मुदा वाचमुवाच श्रवणाश्रुतम् ॥ ३९ ॥

वाग्देवताचरणकाञ्चननूपुरश्रीः, श्रीचण्डपः सचिवचक्रशिरोऽवतंसः ।

प्राग्वाटवंशतिलकः किल कर्णपूरलीलायितान्यधित गूर्जरराजधान्याः ॥ ४० ॥

मतिकल्पलता यस्य, मनःस्थानकरोपिता । फलं गूर्जरमूषानां, सङ्कल्पितमकल्पयत् ॥ ४१ ॥

वाग्देवीप्रसादः (८), सनुश्रण्डप्रसाद इति तस्य । निजकीर्तिवैजयन्त्या, अनयत गगनारूणे गङ्गाम् ॥ ४२ ॥

पातालमूले पिहिताशुभासः, पृथ्वीविभागेऽपि हराट्टहासः ।

स्वर्गेऽपि दुग्धाब्धिपयोविलासः, कीर्तिर्यदीया त्रिजगत्सुवास ॥ ४३ ॥

कीर्तिकश्मलितपार्षणसोमः, सोम इत्यजनि तस्य तनुजः ।

सिद्धराजगुणमूषणभाजः, ससदो विशददर्पणकल्पः ॥ ४४ ॥

उत्कर्षप्रगुणां गुणा-ऽगुणपरिज्ञानौचिति मन्महे, तस्य प्रीतिरसादनन्यमनसा येनान्वहं सेविताः ।

देवस्तीर्थकृदेव केचलनिधिर्विद्यानिधान गुरु, सुरिः श्रीहरिभद्र एव गुणधीः सिद्धेश्च एवाधिपः ॥ ४५ ॥

सीताकुक्षिसरोवरैकवरलाकान्तोऽश्वराजाल्यया, तस्याभूत् तनुभूः सदाऽपि जननीभक्तौ च यः पावनः ।

स्फूर्जद्गूर्जेज्जटकोटरपदन्यासोत्थपापच्छिदे, स्वर्नद्याऽपि समाश्रितः । सितलसत्कीर्तिच्छविच्छन्नना ॥ ४६ ॥

सप्तलोकचरी सप्ततीर्थयात्रासमुद्रवा । गङ्गा जिगाय यत्कीर्तिर्विध्वनितयविस्तृताम् ॥ ४७ ॥

भैमीव नैपथमहीरमणस्य तस्य, कान्ता सती समजनिष्ट कुमारदेवी ।

यन्मानसे जिनपदाम्बुजभाजि शुद्धपक्षद्वयः पतिरराजत राजहंसः ॥ ४८ ॥

श्रीमल्लदेव इति तत्तनुमूर्धभूव, यत्कीर्तिपूरशशिनोर्गगनारूपाटे ।

स्पर्धोद्भुरं प्रसृतयोरिव साम्यदण्डं, स्वर्दण्डमेव विधिरन्तरधत् ह्यष्टः ॥ ४९ ॥

विद्येते ह्यधविद्यौ तदनु तदनुजौ धीनिधी वस्तुपाल-

स्तेजःपालश्च तेजस्तरणितरुणिमस्फूर्तिरोचिष्युमूर्ती ।

श्रीमन्नेतौ निजश्रीकरणपदकृतव्याघ्रती प्रीतियोगात्,

तुभ्यं दास्यामि विश्वं जयतु नवनवं धाम तन्मन्त्रमित्रम् ॥ ५० ॥

इत्युक्त्वा प्रीतिपूर्णाय, श्रीवीरध्वलाय तौ । श्रीभीमभूमुजा दत्तौ, विचमाश्रमिवाऽऽमनः ॥ ५१ ॥

अन्ये केचन रोचमानमतयो मन्त्रीधरा मास्करा,

लप्स्यन्ते वत ! वस्तुपालसचिवाधीशेन साम्यं कुतः ? ।

सार्धं यल्लघुबन्धुनाऽपि दिविपद्भुन्दैकमान्द्यः स्वय,

सामान्यप्रतिपत्तिगौरवपदं वाचस्पतिर्वाञ्छति

॥ ५२ ॥

वीरश्रीवरधाम्नि वीरघवले सिंहारवान् मारवान्, जेतुं यातवति पररुडपुलकैरङ्कुरयन् पौरुषम् ।
यस्तीर्त्वा यदुसिंहसिंहणवलम्भोधि मुजक्रीडया, गर्जनर्जितवान् यशस्त्रिजगतीमुक्तालतामण्डनम् ॥५३॥

सम्पूर्णं भुवने धनेन रजसा श्रीतीर्थयात्रापरिस्यन्दिस्पन्दनवृन्दतारतुरगघातक्रमोत्पातिना ।
यत्कीर्तेः सह पांशुकेलिसुहृदो नन्दन्ति मन्दाकिनी-दुग्धाम्भोधि-विभावरीविभु-ककुत्सुग्मीन्द्र-रुद्रादयः ५४

येनाऽकारि तमोनिकारिकलशालङ्कारि शत्रुञ्जयदमाभृन्मण्डनमिन्द्रमण्डपमहो ! नामेयमर्तुः पुरः ।
तेनैकां ध्रुवुनीं दधद्विमगिरिः पार्श्वस्थपार्श्वप्रभृ-श्रीमन्नेमिनिकेतकेतनयुगामोगेन निर्मित्तितः ॥५५॥

यः शत्रुञ्जयशेखरं जिनगृहश्रीतारहारं स्वलचाराधोरणि तोरणं यदसृजत् तन्मूर्ध्नि लक्ष्मीः स्थिता ।
शङ्केऽभृदुदितद्विपक्षवदना नन्तुं समागच्छतो, नामेयं प्रणिपत्य च प्रचलतो यस्याऽऽस्यवीक्षाशया ॥५६॥

श्रीशत्रुञ्जयशृङ्गसीम्नि सरसि प्राप्याभु यत्कारिते, नीचैत्याय सुधाकराय विबुधाः कुर्वन्ति नोपक्रमम् ।
इत्यहं कृतिनोऽबहं विदधते कुन्दावदातद्युता, भास्वच्छाश्वतराकया जगति यत्कीर्त्यां परीतेऽमितः ५७

येन व्यधाप्यत विधुद्युतिहारिवारी, श्रीपादलिप्तनगरीमुकुरस्तडागः ।
ययत्यगस्तिरिह कोऽपि तदेतु तन्याद्, दोःस्फालनं मुहुरितीव महोर्मिभिर्भ्यः ॥ ५८ ॥

अर्कपालितकामे, तेन तेनेऽहृतं सरः । यस्य निस्यन्दलेखेव, पार्श्वे वहति वाहिनी ॥ ५९ ॥
येनोजपन्तगिरिमण्डननेमिचैत्ये, नामेय-पार्श्वजिनसद्युगं व्यधायि ।

अन्तः स्वयंपटितनामिज-नेमिनाथ-श्रीस्तम्भनेशगृहमप्युदधारि हारि ॥ ६० ॥

स्वर्गं यद्गुरुचैत्यतोरणशिर पथापदैः प्राप यद्वापी-कूप-तडागमार्गचलनैः पातालमूलं ययौ ।
सा यत्पौषध-मन्दिरोदर-वराऽऽरामप्रपामध्यमूषिश्रामश्रयणेन मूमिमपि यत्कीर्तिर्मुहुर्गाहते ॥ ६१ ॥

यजिर्मापितदेवमन्दिरशिरःकल्याणकुम्भप्रमाप्राग्मौरैर्विदधे सदा सुदिवसं सर्वत्र धात्रीतले ॥
दृश्यः शाश्वतिकस्तथा प्रस्तरश्यामच्छविच्छन्नना, यत्सङ्गक्षतवैरिचामनयनावकत्रेषु रात्रिक्षणः ॥६२॥

अस्थापयत् स्थिरमतिः शकुनीविहारे, संसारतारिलसदम्बडधर्मपुञ्जे ।
श्रीपार्श्व-वीरजिनपुङ्गवयुग्मदम्भाद्, यो यामिकद्वयमिवाभिमधर्मबन्धुः ॥ ६३ ॥

तमेकदा करारोपमितस्वर्णशेखरः । श्रीतेजःपालमन्त्रीशो, मुदा ज्येष्ठं व्यजीज्ञपत् ॥ ६४ ॥
सुव्रतक्रमनस्कृतिहेतोर्यातवान् मृगपुरं प्रति सोऽहम् ।

काव्यमुज्ज्वलनयो जयसिंहसूरिरित्यपठद न मध्मे
तेजःपाल ! कृपालुधुर्य ! विमलप्राग्वाटवंशध्वज !, ॥ ६५ ॥

श्रीमन्मण्डकीतिरथ वदति त्वत्सम्मुख मन्मुखत्वात् ।

१. °वत्याय गा० ॥ २. पद्यमिदं पुरातनप्रबन्धसंप्रदान्तगतयस्तुपालतेजःपालप्रबन्धे—“ एकदा मन्त्री
तेजःपालो भृगुपुरमायात् । तत्र श्रीमुनिमुव्रतचैत्याचार्ये श्रीरासिंहसूरिभिरुक्तम्—मन्त्रिन् ! सन्देशक
मेकं शृणु । [मन्त्रिणोक्तम्—आदिरयताम् । अयं पाषाणयामिन्यां गृह्या युवत्येका समेल्य प्राह ” इत्युल्लेखानन्तरं
निष्कृतं वर्तते । पद्यम् ६२ । तथा उपदेशात्तरङ्गिण्यां ७४ तमपद्येऽप्येवंस्वपैत्रैव वर्तते । केवलं तत्र “ धीमुनि-
मुव्रतचैत्याचार्यैरुक्तम् ” इति वर्तते, न तत्र रासिंहसूरैरन्यस्य वा कस्याप्याचार्यस्य नामोल्लेखो वर्तते इति ॥

आजन्मावधि वंशयष्टिकलिता भ्रान्ताऽहमेकाकिनी,
वृद्धा सम्प्रति पुण्यपूर्ण ! भवतः सौवर्णयष्टिस्पृहा ॥ ६६ ॥

इत्युक्त्वा मम पञ्चविंशतिमितास्तेन स्वयं दर्शिता-
स्तस्मिन् सुव्रतघाम्नि देवकुलिकाः कल्याणकुम्भस्पृशः ।

ताः सौन्दर्यमृतोऽपि कान्तिनिधिभिः कल्याणदण्डैर्विना,
सीमन्तैरिव सुश्रुवो विदधते नान्तः सतां सम्मदम् ॥ ६७ ॥

आदेशं देव ! यद्येवं, दस्ते स्वच्छेन चेतसा । हेमदण्डानिमानत्र, तदहं कारये रयात् ॥ ६८ ॥

इत्यन्तःस्मितवस्तुपालसचिवादेशाह्वसतेजसस्तेजःपालमहामतिर्व्यरञ्चयत् कल्याणदण्डानिमान् ।
प्रत्येकं हरहासहारिमहसो येषां शिखासु स्थिता, नृत्यन्ति प्रतिवासरं परिचलकेतुच्छलात् कीर्तयः ६९

जुह्वन् पातकपादपैकदहने तीर्थेशधर्मो निजां, कर्माणीं न कति क्रतूनकृत स श्रीवस्तुपालानुजः ? !
दण्डा यूपवदुच्चसुव्रतगृहक्षमाभृद्द्रवायामगी, तत्तेनाऽम्बडमण्डलेश्वरयशःसिन्धौ समारोपिताः ॥ ७० ॥

दत्ते चेतसि सम्मदं सुकृतिनां तेनेयमुत्तम्भिता, चञ्चलारुमरीचिर्वाचिकलिता कल्याणदण्डावलिः ।
पूर्वोर्वाधरकुञ्जतः प्रसरता प्रातर्वियत्कानने, यत्राऽऽगत्य भियेव गोपतिगवीवृन्देन मन्दायते ॥ ७१ ॥

यावच्चण्डपगोत्रमण्डनमणेः कीर्तिर्वियद्वाहिनीहस्ता दिग्गजगर्जिवाचविभवैर्बोमाङ्गणे नृत्यति ।
दण्डास्तायदमी सुवर्णघटनाविभ्राजिनः केतनक्रीडत्किङ्किणिकारव्यतिकरैः कुर्वन्तु गीतक्रमम् ॥ ७२ ॥

तेजःपालयशोविलासविशदश्रीणां दिशां कौतुकक्रीडामण्डपडम्बरं महदहो ! यावद् दधात्यम्बरम् ।
तावन्नूतनजातरूपजनितः सोऽयं समुत्तम्भनस्तम्भस्तोमसमानतां वितनुतामुण्डदण्डमजः ॥ ७३ ॥

स्वस्तिश्रीव्योमदेशाद्दुदयनतनुभूकीर्तिरुर्वीतले श्री-

तेजःपालं मसन्ना वदति मतिमता वन्द्य ! नन्धा मदायुः ।

येन त्वत्कृप्तहेमध्वजपिततभुजा दुःपनादाहदूना,

लिम्पन्तां ता मुहुर्नामिह जिनगृहिकास्तत्रयशश्चन्दनेन ॥ ७४ ॥

मोहो द्रोहधियाऽधिरोहति रस श्रीपुञ्जहृत्पञ्जरे, क्षितो यः कलिकालकेलिविधुरो दक्ष ! त्वया रक्षितः ।

श्रीसौमान्वयवार्धिवर्धनकलासोम ! स्वयं निर्मलो, धर्मः प्रत्युपकारकर्मठतया स त्वां क्षितौ रक्षतु ॥७५॥

श्रीवस्तुपाल ! तव चित्तवनप्ररूढः, सत्त्वोपकारमतिसारणिसिच्यमानः ।

सत्यत्र-पुण्यकुसुमः फलद्रोऽस्तु तुभ्यमव्याजविश्वसुहृदे जिनधर्मवृक्षः ॥ ७६ ॥

श्रीसुव्रतपदाम्भोजमधुप्रातमधुगतः । एतां प्रशस्तिमस्तापां, जयसिंहः कविर्व्याधात् ॥ ७७ ॥

॥ धीजयसिंहसुरिधिरचिता यस्तुपालतेजःपालप्रशस्तिः ॥



सप्तमं परिशिष्टम् वस्तुपालस्तुतिकान्यानि ।

स्वस्ति श्रीवस्तुपालाय, वभौ यद्द्विसुभ्रुवः । क्रोडीकृताम्बरं रौप्याञ्जनभाजनवद् यशः ॥ १ ॥

अन्तःक्षारं रिपूणां घनमपि कवलीकृत्य तृष्णातुरेव,
त्वत्कीर्तिनाऽऽप तृप्तिं भुवि सचिव ! जवात् क्षीरनीराकरेऽपि ।

तस्मादाकाश-नाकोरगनगरचरस्वर्धुनीपानहेतोः,

सर्वत्रापि त्रिलोकीहितचरित । चिरं सम्भ्रमाद् चम्भमीति ॥ २ ॥

भवद्भुजभुजङ्गोऽसौ, वस्तुपाल ! द्विषां भये । अस्ति दधाति फूत्कारविषोद्गारसहोदराम् ॥ ३ ॥

औषधीशसखः सत्यं, वस्तुपालयशोभरः । येन प्रसर्पता पश्य, विश्वं मुक्तामयं कृतम् ॥ ४ ॥

शेषद्वेषविधायिनीमपि भवत्कीर्तिं सुधासोदरां, श्रीमन्त्रीश ! मुलस्फुरद्विषभिदे गायन्ति नागाङ्गनाः ।

शम्भुः स्वान्नविरोधिनीमपि पुनर्नित्योपरोधादिमां, देवीर्गापयते विषाकुलगलश्यामत्वसंलुप्तये ॥ ५ ॥

कल्पद्रुमप्रसवावतंसमधुपीक्ष्णहारलब्धोपमाः, कामं कामगवीनवीनपयसां पानेन तारस्वराः ।

ताश्चिन्तामणिरग्निभस्मिततमःस्तोमे सुमेरोर्गुहागर्भे चण्डपगोत्रमण्डन ! भवद्दानानि देव्यो जगुः ॥ ६ ॥

देव ! त्वत्प्रतिपन्थिपार्थिवपुरीसौधाप्रभागादिच, प्राप्य व्योमविहारदुर्लभमपि प्रौढप्ररूढप्रभः ।

श्रीमच्चण्डपगोत्रमण्डन ! भवत्कीर्त्या जितो यामिनीजीवेशस्तनुते वृषं निजमुखे लक्ष्मच्छविच्छन्नान् ॥ ७ ॥

गुणप्रामे रामे जितसितकरे सत्यपि निजे, स्वयं गृह्णासि त्वं परगुणमतादृक्षमपि यत् ।

अयं लोभक्षोभश्चतुर ! चतुराम्भोधिरसनावनीशिक्षादक्ष ! स्फुरति किमु ते मन्त्रिमुकुट ! ॥ ८ ॥

भोगीन्द्रस्त्वङ्गुजेन त्रिपुररिपुरपि त्वत्प्रभुत्वप्रभावैः,
शीताशुस्त्वन्मुखेन त्रिदशसरिदपि त्वच्चरित्रप्रपञ्चैः ।

शक्रेभस्त्वद्गतेन प्रसभमशुभतां लम्बिताः सज्जलज्जं,

निर्मज्जन्ति स्म तस्मिन् सचिव ! तव यशस्तोयधौ वस्तुपाल ! ॥ ९ ॥

भतां भोगभृतां विभर्ति वसुधामेव प्रभावाद्भुता,

दिग्दन्तीन्द्रकरस्तु हन्ति च रिपून् धत्ते च धात्रीमिमाम् ।

श्रीमन्त्रीश ! भवद्भुजस्तु कृतिना दत्ते च विचित्रज,

भिन्ने च द्विपतो दधाति च धरामेषां क साम्यं मिथः ॥ १० ॥

इन्दुर्निन्दति कौमुदीसमुद्रयं मुक्तामणीनां ततिर्गुक्तालङ्कृतिरस्तचण्डिमहिम् दर्पी न सर्पाधिपः ।

गर्वं शर्वधराधरो न कुरुते न स्वर्धुनी स्पर्द्धिनी, श्रीमन्त्रीश्वरवस्तुपालयशसि त्रैलोक्यमाकामति ॥ ११ ॥

बलि-कर्ण-दधीचिकीर्तयः, कल्पिद्वापितमत्यजन् मलम् ।

तव दानपयोनिदीकृतस्नपनश्चण्डपगोत्रमण्डन !

शङ्के पङ्कजिनीपतिः कद्रुभुजा सार्धं स्वयं प्रार्थितः, कर्षं कर्षमिलातलादनुदिनं त्वद्दानतोयच्छटाः । ॥ १२ ॥

श्रीमच्चण्डपवंश्य ! सिद्यति शचीचित्तेशलीलावनं, नैवं चेत् कथमन्यथा विटपिनामप्यत्र दानक्रिया ! ॥ १३ ॥

॥ वस्तुपालस्तुतिकान्यानि ॥

अष्टमं परिशिष्टम्

वस्तुपालस्तुतिकाव्यानि ।

[महामात्यश्रीवस्तुपालविनिर्मितनरनारायणानन्दमहाकाव्यप्रतिसर्गप्रान्त-
गतानि अन्यान्यकविविरचितानि वस्तुपालस्तुतिकाव्यानि ।]

सह्यासिंहप्रृतनारुधिरारुणानि, श्रीवस्तुपालकरवालविजृम्भितानि ।

कीनाशकासरकटाक्षसहोदराणि, को नाम वीक्षितुमपि क्षमते विपक्षः ॥ १ ॥
प्रथमसर्गप्रान्ते ॥

दंड्यः कस्यापि नायं प्रथयति न परमोर्थनादैरन्यमन्य-

स्तुच्छामिच्छां विषये तनुहृदयतया कोऽपि निपुण्यपण्यः ।

इत्थं कल्पद्रुमेऽस्मिन् व्यसनपरवशं लोकमालोक्य सृष्टः,

स्पष्टं श्रीवस्तुपालः कथमपि विधिना नूतनः कल्पवृक्षः ! ॥ २ ॥

द्वितीयसर्गप्रान्ते ॥

श्रीवस्तुपाल ! कलिकालविलक्षणस्त्वं, संलक्ष्यसे जगति चित्रचरित्रपात्रम् ।

यद् दानसौरभवता भवता बितेने, नानेरूपेन मदमेदुरिता मुखश्रीः ॥ ३ ॥

तृतीयसर्गप्रान्ते ॥

शृङ्गासि नाम परतोऽपि नवान् गुणांस्त्वं, त्यागो गुणस्तव नवस्तु न वस्तुपाल ! ।

लोकौत्तरस्तदपरस्य नरस्य स स्याद्, यत् तादृशो नहि इशोः पथि मादृशानाम् ॥ ४ ॥

चतुर्थसर्गप्रान्ते ॥

कैरसरसिरुहं ते वासवेदम श्रियोऽभूदजनि वदनपद्मं सन्न वाग्देवतायाः ।

इह जगति समस्ते वस्तुपाल ! स्तुमः कं !, सन्निवतिलक ! धन्यं तद् वदाऽन्यं वदान्यम् ॥ ५ ॥

पञ्चमसर्गप्रान्ते ॥

१ पयमिदं धर्माभ्युदयमहाकाव्यैकादशसर्गप्रान्ते वर्तते, उदयप्रभीषयवस्तुपालस्तुतौ २३तमं वर्तते, जिनद्वर्षीयवस्तुपालचरिते "कृपालवालं धीवस्तुपालं स्तौति स्म कथन ।" इत्युल्लेखेन निर्दिष्टं चपि वर्तते ॥ २ पयमिदमुदयप्रभीषयवस्तुपालस्तुतौ २३तमं वर्तते ॥ ३ पयमिदं नरनारायणानन्द-
महाकाव्यनवमसर्गप्रान्तेऽपि वर्तते ॥

इतरगुणकथायाः काथिकत्वस्पृहायामिह बहति सहास्यं कस्य नो लास्यमास्यम् ? ।
तव तु विततकीर्तेः कीर्तनं कर्तुकामः, सुरगुरुरपि शङ्के वस्तुपाल ! त्रपालः ॥ ६ ॥

षष्ठसर्गप्रान्ते ॥

जनन्यामोहवल्लीयमिन्दिरा मन्दिरे स्थिता । मन्त्रिणा वस्तुपालेन, कल्पवल्ली विनिर्मिता ॥ ७ ॥

सप्तमसर्गप्रान्ते ॥

श्रीवस्तुपालसचिवस्य परे कवीन्द्राः, कामं यशांसि कवयन्तु वयं तु नैव ।
येनेन्द्रमण्डपकृतोऽस्य यशःप्रशस्ति-रस्त्येव शकहृदि शैलशिलाविशाले ॥ ८ ॥

अष्टमसर्गप्रान्ते ॥

कैरसरसिरुहं ते वासवेश्म श्रियोऽमृदजनि वदनपद्मं सन्न वाग्देवतायाः ।
इह जगति समस्ते वस्तुपाल ! स्तुमः कं ?, सचिवतिलक ! धन्यं तद् वदाऽन्यं वदान्यम् ॥ ९ ॥

नवमसर्गप्रान्ते ॥

या श्रीः स्वयं जिनपतेः पदपद्मसन्ना, भालस्थले सपदि सङ्गमिते समेता ।
श्रीवस्तुपाल ! तव भालनिभालनेन, सा सेवकेषु सुखमुन्मुखातामुपैति ॥ १० ॥

दशमसर्गप्रान्ते ॥

त्वत्कीर्तिज्योत्सना जाता, तीरे नीरेशिशुः सिते । नेक्ष्यन्ते पक्षिभिर्वस्तुं, वस्तुपाल ! वनालयः ॥ ११ ॥
मुकुलितकमलोदयः कवीन्दुः, क इव न काव्यसुधानिर्विभूव ? ।

स्फुरदुरुविभवस्तु वस्तुपालः, कविसविता कविताप्रभाभिरामः ॥ १२ ॥

एकादशसर्गप्रान्ते ॥

ईरो रणेषु चरणप्रणतेषु सोमो, वक्रोऽतिवक्रचरितेषु बुधोऽर्थबोधे ।
नीतो गुरुः कृतिजने कविरक्रियासु, मन्दोऽपि च ग्रहमयो नहि वस्तुपालः ॥ १३ ॥

द्वादशसर्गप्रान्ते ॥

श्रीवस्तुपाल ! जितचालमृणालगर्भे, शुभ्रं वितन्वति जगत् तव कीर्तिपूरे ।
मन्यामहे कुबल-कज्जल-कोकिला-ऽलि-काकोल-कोलसहशामभिधा मुधाऽभूत् ॥ १४ ॥

त्रयोदशसर्गप्रान्ते ॥

लक्ष्म्यामाकृष्टिमुच्चाटनमनयवति स्तम्भमुज्ज्व्ग्भिदग्भे,
दोषे विद्वेषमभ्यन्तररिपुषु मृति वश्यतां चिचवृवौ ।

१ पद्यमिदं धर्माभ्युदयमहाकाव्यरथमसर्गप्रान्ते, उदयप्रभयवस्तुपालस्तुतौ च २४तमं वर्तते ॥
२ पद्यमिदं नरनारायणानन्दमहाकाव्यपद्यमसर्गप्रान्तेऽपि वर्तते ॥ ३ पद्यमिदं धर्माभ्युदयमहाकाव्य-
तृतीयसर्गप्रान्तेऽपि वर्तते ॥ ४ पद्यमिदं उदयप्रभयवस्तुपालस्तुतौ चतुर्थं वर्तते, प्रथम्यकोशे "अपरस्तु"
श्रुत्युपलेनोपेक्षितं वर्तते, उपदेशातरङ्गिण्यां कविरन्दमध्यात् कल्पविदुक्तयोऽक्षितं च वर्तते, जिनहर्ष-
वस्तुपालचरिते पुनः हरिहरौकितया निरर्द्धनं दारते ॥

कर्तुं यद् वस्तुपाल ! प्रभवसि सकले मण्डले तत् तवैव,
श्रीमन्मन्त्रीश ! मन्त्रे स्फुरति निरवधिः काऽपि पट्कर्मसिद्धिः ॥ १५ ॥
चतुर्दशसर्गप्रान्ते ॥

भवति हि विभवो भवः परेषां, तव विभवोऽभिवस्तु वस्तुपाल ! ।
इह महिममहो यशः प्रसूते, यदयममुत्र परत्र पुण्यलक्ष्मीम् ॥ १६ ॥
पञ्चदशसर्गप्रान्ते ॥

अचिन्त्यदातारमजातशत्रुं, श्रीवस्तुपालं कति नाश्रयन्ति ? ।
चिन्तामणिः सोऽपि युधिष्ठिरश्च, नान्वर्थसामर्थ्यपदं यदग्रे ॥ १७ ॥

शैले शारदपर्वगर्वितशशिज्योत्स्नासपत्नं तव,
त्रैलोक्ये गुणजालकं विलसति श्रीवस्तुपालाद्गतम् ।
यत् तादृग्दृढपाशवैशसकृतातङ्कामिशङ्काः स्फुटं,
नैवान्यस्य भवन्ति कीर्तिवरलाः खेलासु हेलास्पदम् ॥ १८ ॥
षोडशसर्गप्रान्ते ॥

वस्तुपालस्तुतिकाव्यम् ।

श्रीवस्तुपालमन्त्रिणा सौवर्णमपीमयाक्षरा एका सिद्धान्तप्रतिलेखिता । अपरास्तु श्रीताड-
कागदपत्रेषु मपीवर्णाञ्चिताः ६ प्रतयः । एवं सप्तकोटिद्वयव्ययेन सप्त सरस्वतीकोशा लेखिताः ।
तदनु श्रीउदयप्रभसूरिमिराशीर्वादः प्रदत्तः । तद्यथा—

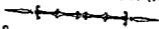
जम्बूद्वीपो जलभिपरिस्वाभूषितो यावदास्ते,
ज्योतिश्चक्रं सुरगिरितटी पर्यटत्येव यावत् ।
यावत् कूर्मो बहति वसुधां त्वद्यशःपुञ्जसार्धं,
जीयाज्जैनं मुखनिव परं पुस्तक वस्तुपाल ! ॥

उपदेशतरङ्गिणी पत्रम् १४२ ॥

१ पयमिदं जिनदर्यायवस्तुपालचरिते “रूपालवालं श्रीवस्तुपालं स्तौति स्म कथन ।” इत्युपदेशेनो-
क्तिरिति वर्तते ॥ २ पयमिदमुदयप्रभमीयवस्तुपालस्तुतौ २५तमं वर्तते ॥

नवमं परिशिष्टम्

श्रीगिरिनारपर्वतस्थाः प्रशस्तिशिलाछेवाः ।



गूर्जेरेश्वरमहामात्यश्रीवस्तुपाल-तेजःपालकारितश्रीनेमिनाथप्रासाद-
गताः पद् दृहत्प्रशस्तयः ।

(३८-१)

नमः सर्वज्ञाय ।

पायान्नेमिजिनः स यस्य कथितः स्वामीकृतागस्थिता-
वग्रे रूपदिदक्षया स्थितवते प्रीते सुराणां प्रभौ ।

काये भागवते वनेवक... द्विपोलावने शंसता-

मिदशां(?)...मपि.....वनाजवे..... ॥ १

स्वस्ति श्रीविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे फागुण शुदि १० बुधे श्रीमदणहिलपुर(*)वास्त
प्राग्वाटान्वयप्रसूत ठ० श्रीचंडपात्मज ठ० श्रीचंडप्रसादांगज ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीआश
राजनंदनस्य ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसंभृतस्य ठ० श्रीलुण्णिग महं० श्रीमालदेवयोरनुजस्य महं
श्रीतेजःपालाम्जन्मनो महामात्यश्रीवस्तुपालस्यात्मजे महं० श्रीललितादेवीकुक्षिसरो(*)वररा
हंसायमाने महं० श्रीजयतसिंहे सं० ७९ वर्षपूर्वं स्तंभतीर्थमुद्राव्यापारान् व्यापृण्वति सा
सं० ७७ वर्षे श्रीशत्रुंजयोजयंतप्रभृतिमहातीर्थयात्रोत्सवप्रभावाविर्भूतश्रीमद्देवाधिदेवप्रसादासादित
संपाधिपत्येन चौलुक्यकुलनभस्तलप्रकाशनैकमार्तडमहाराजाधिराजश्रीलवणप्रसाददेवसु(*)तमहा
राजश्रीवीरघवलदेवप्रीतिप्रतिपन्नराज्यसर्वैर्धव्येण श्री-शारदाप्रतिपत्त्यापत्येन महामात्यश्रीवस्तुपालेन
तथा अनुजेन सं० ७६ वर्षपूर्वं गूर्जेरमंडले घवलककप्रमुखनगरेषु मुद्राव्यापारान् व्यापृण्वता
महं० श्रीतेजःपालेन च श्रीशत्रुंजया-ऽर्षुदाचलप्रभृतिमहातीर्थेषु श्रीमदणहिलपुर-भृगुपुर(*)स्तंभ-
नकपुरस्तंभतीर्थ-दर्भवती-घवलककप्रमुखनगरेषु तथा अन्यसमस्तस्थानेष्वपि कोटिशोडशिनवधर्म-
स्थानानि प्रभूतजीर्णोद्धारश्च कारिताः ॥ तथा सचिवेश्वरवस्तुपालेन इह स्वयंनिर्मापितश्रीशत्रुंजय-
महातीर्थावतारश्रीमदादितीर्थकरश्रीभूतपदेव-स्तंभनकपुरावतारश्रीपार्श्वनाथदेव-सत्यपु(*)रावता-
रश्रीमहावीरदेवप्रभृतिप्रसहित-कश्यपीरावतारश्रीसरस्वतीमूर्तिदेवकुलिकाचतुष्टय-जिनयुगल-अम्बा-
ऽवलोकना-गम्भ-प्रद्युम्नशिखरेषु श्रीनेमिनाथदेवालंकृतदेवकुलिकाचतुष्टय-सुरगाधिरूढस्वपितामह
महं० ठ० श्रीसोम-निजपितृ ठ० श्रीआशाराजमूर्तिद्वितय-चारुतोरणत्रय-श्रीनेमिनाथ (*)
देव-आत्मीयपूर्वजा-ऽप्रजा-ऽनुज-मुत्रादिमूर्तिसमन्वितमुखोद्घाटनकस्तंभश्रीअष्टापदमहातीर्थप्रभृतिअने-

१ परिशिष्टेऽभिन्न (*) गकोठम् पुत्रिचिह्नं सर्वत्र शिलालेखवर्षांकसमाप्तियोत्सवसाम्यम् ॥

ककीर्तनपरम्पराविराजिते श्रीनेमिनाथदेवाधिदेवविम्पितश्रीमदुज्जयंतमहातीर्थे आत्मनस्तथा स्व-
 धर्मचारिण्याः प्राग्वाटजातीय ४० श्रीकान्हडपुत्र्याः ४० राणुकुक्षिसंगूताया महं० श्रीललिता-
 देव्याः (*) पुण्याभिवृद्धये श्रीनागेंद्रगच्छे भट्टारकश्रीमहेंद्रसूरिसंताने शिष्यश्रीशांतिसूरिशिष्य-
 श्रीआणंदसूरि-श्रीअमरसूरिपट्टे भट्टारकश्रीहरिभद्रसूरिपट्टालंकरणप्रभुश्रीविजयसेनसूरिप्रतिष्ठित-
 श्रीअजितनाथदेवादिर्विशतितीर्थकरालंकृतोऽयमभिनवः समंडपः श्रीसम्भेतमहातीर्थवतारप्रा-
 सादः कारितः ॥ (*)

पीयूषपूरस्य च वस्तुपालमन्त्रीशितुश्चायमियान् विभेदः ।

एकः पुनर्जीवयति प्रमीतं, प्रमीयमाणं तु मुविं द्वितीयः ॥ १ ॥

श्रीद-श्रीदयितेश्वरप्रभृतयः संतु क्वचित् तेषुपि ये,

प्रीणंति प्रमविष्यवोऽपि विभवैर्नाकिचनं कंचन ।

सोऽयं सिंचति कांचनैः प्रतिदिनं दारिद्र्यदावानल-

प्रम्लानां पृथिवीं नवीनजलदः श्रीवस्तुपालः (*) पुनः ॥ २ ॥

आतः । पातकिनां किमत्र कथया दुर्मंत्रिणामेतया ? ,

येषां चेतसि नास्ति किंचिदपरं लोकोपकारं विना ।

नन्वस्यैव गुणान् गृणीहि गणशः श्रीवस्तुपालस्य य-

स्तद्विश्वोपकृतिव्रतं चरति यत् कर्णेन चीर्णं पुरा ॥ ३ ॥

मित्त्वा भानुं भोजराजे प्रयाते, श्रीमुंजेऽपि स्वर्गसाम्राज्यभाजि ।

एकः संप्रत्यर्थिनां वस्तुपालस्तिष्ठत्यशु (*) म्यंदनिष्कंदनाय ॥ ४ ॥

चौलुक्यक्षितिपालमौलिसचिव ! त्वत्कीर्तिकोलाहल-

क्षैलोक्येऽपि विलोक्यमानपुलकानंदाश्रुभिः श्रूयते ।

किं चैषा कल्द्वृषिताऽपि भवता प्रासाद-वापी-प्रपा-

कूपा-ऽऽराम-सरोवरप्रभृतिभिर्घात्री पवित्रीकृता ॥ ५ ॥

स श्रीतेजःपालः, सच्चिद्विधिरकालमस्तु तेजस्वी ।

येन वयं निश्चिताश्चितामणिने(४)व नंदामः ॥ ६ ॥

लवणप्रसादपुत्रश्रीकरणे लवणसिंहजनकोऽसौ ।

मंत्रित्वमत्र कुरुतां, कल्पशतं कल्पतरुकल्पः ॥ ७ ॥

पुरापादेन दैत्यारैर्मुंवनोपरिवर्तिना । अधुना वस्तुपालस्य, हस्तेनाधःकृतो बलिः ॥ ८ ॥

दैयिता ललितादेवी, तनयमवीतनयमाप सच्चिवेद्राव् ।

नाम्ना जयंतसिंहं, जयंतमिन्द्राव् पुलोमपुत्रीव ॥ ९ ॥ (*)

[पते] श्रीगूर्जेश्वरपुरोहित ४० श्रीसोमेश्वरदेवस्य ॥

१ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ६४ संख्य १-१ संख्यासुंदावनमत्कशिलालेखयोः क्रमशः ४०तमं प्रथमं च सोमेश्वरदेवकृतिरूपेणैव वर्तते ॥ २ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ६४ संख्यासुंदावनमत्क-
 शिलालेखे ४४४तमं सोमेश्वरदेवकृतिरूपेणैव वर्तते ॥

स्तंमतीर्थेऽत्र कायस्थवंशे वाजडनंदनः । प्रशस्तिमेतामल्लिखत्, जैत्रसिंहशुभः सुधीः ॥ १ ॥

वाहडस्य तनुजेन, सूत्रधारेण धीमता । एषा कुमारसिंहेन, समुत्कीर्णा प्रयत्नतः ॥ २ ॥

श्रीनेमिखिजगद्गुरुभ्यायाश्च प्रसादतः । वस्तुपालान्वयस्यास्तु, प्रशस्तिः स्वस्तिशालिनी ॥ ३ ॥

(गिरिनार इन्स्क्रिप्शन्म् नं. २ । २१-२३)

(३९-२)

.....यः पु....तयदुकुलक्षीराणवेन्दुर्जिनो,
 यत्पादाब्जपवित्रमौलिरसमश्रीरुञ्जयन्तोऽप्ययम् ।
 धचे मूर्ध्नि निजप्रमुप्रसूमरोहामप्रभामण्डलो,
 विश्वक्षोणिभृदाधिपत्यपदवीं नीलातपत्रोज्ज्वलाम् ॥ १ ॥

स्वस्ति श्रीविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे फागुण शुदि १० बुधे श्रीमदणहिल(०)पुरवास्तव्य-
 प्राग्वाटान्वयप्रसूत ठ० श्रीचण्डपालात्मज ठ० श्रीचण्डप्रसादाङ्ग ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्री-
 आशाराजनन्दनस्य ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसंभूतस्य ठ० श्रीलुण्णिग महं० ठ० श्रीमालदेवगुरु-
 जस्य महं० ठ० श्रीतेजःपालाप्रजन्मनो महामात्यश्रीवस्तुपालस्यात्मजे महं० ठ० श्रीललितादेवी
 (०) कुक्षिसरोवरराजहंसायमाने महं० श्रीजयन्तसिंहे स० ७९ वर्षपूर्वं मुद्राव्यापारं व्याष्ट्वति
 सति सं० ७७ वर्षे श्रीशत्रुंजयोऽजयन्तप्रभृतिमहातीर्थयात्रोत्सवप्रभावविभूतश्रीमद्देवाधिदेवप्रसादासावि-
 तसंपाधिपत्येन चौलुक्यकुलनभस्तलप्रकाशनैकमार्तण्डमहाराजाधिराजश्रीलवण(०)प्रसाददेवसुतम-
 हाराजश्रीवीरधवलदेवश्रीतिप्रतिपत्तराज्यसर्वेश्वर्येण श्री-शारदाप्रतिपत्तापत्येन महामात्यश्रीवस्तुपालेन
 तथाऽनुजेन सं० ७६ वर्षपूर्वं गूर्जरमण्डले धवलककप्रमुखनगरेषु मुद्राव्यापारान् व्याष्ट्वता महं०
 श्रीतेजःपालेन च श्रीशत्रुंजया-ऽर्जुदाचलप्रभृतिमहातीर्थेषु (०) श्रीमदणहिलपुर-भृगुपुर-स्तम्भनक-
 पुरस्तम्भतीर्थ-दर्भवती-धवलककप्रमुखनगरेषु तथाऽन्यसमस्तस्थानेष्वपि कोटिशोऽभिनवधर्मस्थानानि
 प्रभूतजीर्णोद्धारार्थं कारिताः । तथा सचिवेधरश्रीवस्तुपालेनेह स्वयंनिर्मापितश्रीशत्रुंजयमहातीर्था-
 वतारश्रीमदादित्यैकरधीकप्रमदेव (०) स्तम्भनकपुरावतारश्रीपार्श्वदेव-सत्यपुरावतारश्रीमहावीरदे-
 वप्रभस्तिसहित-फरमीरावतारश्रीमरस्वतीमूर्तिदेवकुलिकाचतुष्टय-जिनद्वया-ऽम्बा-ऽवलोकना-शा-
 म्य-प्रभुमन्दिश्वरेषु श्रीनेमिनाथदेवालङ्कृतदेवकुलिकाचतुष्टय-चुरगाधिरूढनिजपितामह ठ० श्रीसोम-
 निगपितृ ठ० श्रीप्राशाराज (०) मूर्तिद्विनय-चारुनोरणत्रय-श्रीनेमिनाथदेव-आत्मीयपूर्वजा-ऽम्बा-
 ऽनुब-पुत्रादिमूर्तिसमन्वितमुम्भोद्घाटनकस्तम्भ-श्रीब्रह्मापदमहातीर्थममृतिअनेककीर्तनपरम्पराविराजिते
 श्रीनेमिनाथदेवाधिदेवविभूषितश्रीमदुजयन्तमहातीर्थे आत्मनस्तथा स्वभार्यायाः प्राग्वाटश्रातीय ठ०
 श्रीशान्दहडपुण्याः ठ० (०) राणुश्रिमंमृताया मठ० श्रीमोरुकायाः पुण्याभिवृद्धये श्रीनागेन्द्र-
 गच्छे महारकधीमद्देन्द्रधरिमन्त्राने निन्वधीप्रान्तिधरिगिण्यधीप्रानन्दधरि-श्रीअमरधरिपठे मधः-

१ वर्षदिने प्राचीनत्रैलोक्यमंथ १ भागे ४१-४२-४३ मंथनगिरिनारमन्थप्रकरणेन प्राग्भागे वर्तते ॥
 २ वर्षदिने प्राचीनत्रैलोक्यमंथ १ भागे ४३-४४ मंथनगिरिनारमन्थप्रकरणे प्राग्भागेऽपि वर्तते ॥
 ३ वर्षदिने प्राचीनत्रैलोक्यमंथ १ भागे ४५-४६-४७ मंथनगिरिनारमन्थप्रकरणे प्राग्भागे वर्तते ॥

एकश्रीहरिमद्रक्षरिपट्टालंकरणश्रीविजयसेनद्वरिप्रतिष्ठितश्रीऋषभभदेवप्रमुखचतुर्विंशतितीर्थकरालंकृतो-
ऽयमभिनवः समण्ड(*) ५ः श्रीसंभेतमहातीर्थवतारप्रधानप्रासादः कारितः ॥ ॥ ॥

चेतः किं कलिकाल । सालसमहो । किं मोह ! नो हस्यते ? ,
तृप्णे ! कृष्णमुखाऽसि किं ? कथय किं विग्नौष ! मोघो भवान् ? ।

भूमः किं नु सखे ! ? न खेलति किमप्यस्माकमुज्जृम्भितं,
सैन्यं यत् किल वस्तुपालकृतिना धर्मस्य सवर्षितम् ॥ १ ॥

यं विधुं बन्धवः सिद्धमर्थिनः शत्रु (*) ।
.....ण.... पश्यन्ति, वर्ण्यतां किमयं मया ? ॥ २ ॥

वैरं विभूति-भारस्यो, प्रसुत्व-प्रणिपातयोः । तेजस्विता-प्रशमयो, शमितं येन मन्त्रिणा ॥ ३ ॥

दीपैः स्फूर्जति सज्जकज्जलमलः म्नेह मुहुः सहर-
न्निन्दुर्मण्डलवृत्तखण्डनपरः प्रद्वेष्टि मित्रोदयम् ।

सूरः क्रूरतरः परस्य सहते तेजो न तेजस्विन-
सात् केन प्रतिम ब्र (*) वीमि सचिवं श्रीवस्तुपालामिवम् ? ॥ ४ ॥

औयाताः कति नैव यान्ति कति नो यास्यन्ति नो वा कति,
स्थानस्थाननिवासिनो भवपथे पान्थीभवन्तो जनाः ? ।

अस्मिन् विस्मयनीयबुद्धिजलधिर्विध्वंस्य दस्युन् करे,
कुर्वन् पुण्यनिधिं घिनोति वसुधां श्रीवस्तुपालः परम् ॥ ५ ॥

दधेऽस्य वीरधवलक्षितपस्य राज्यभारे धुरंधरधुरा (*) ।
श्रीतेजपालसचिवे दधति स्वबन्धुभारोद्धृतावविधुरैकधुरीणभावम् ॥ ६ ॥

इह तेजपालसचिवो, विमलितविमलाचलेन्द्रमष्टतमृतम् ।
कृत्वाऽनुपमसरोवरममरण प्रीणयाचक्रे ॥ ७ ॥

एते श्रीमलधारिश्रीनरचन्द्रसूरीणाम् ॥

इह वालिगसुतसहजिगपुत्राऽऽनकतनुजवाजडतनूजः ।
अलि (*) न्वदिमा कायस्थः, स्तम्भपुरीयध्रुवो जयतसिंहः ॥ १ ॥

हेरिमण्डप-नन्दीश्वरशिल्पी-वरसोमभदेवपौत्रेण । बकुलस्वामिसुतेनोत्कीर्णा पुरुषोत्तमेनेयम् ॥ २ ॥

श्रीनैमैस्त्रिजगद्गर्तुरम्बायाश्च प्रसादतः । वस्तुपालान्वयस्यास्तु, प्रशस्तिः स्वस्तिशालिनी ॥ ३ ॥

१ पयमिदं नरचन्द्रसूरिकृतवस्तुपालप्रशस्तौ तृतीयपद्यतयाऽपि वर्तते ॥ २ पयमिदं नरचन्द्रसूरिकृत-
वस्तुपालप्रशस्तौ २६ पद्यतयाऽपि दृश्यते ॥ ३ पयमिदं धर्माभ्युदयमहाकाव्यनवमसर्गाप्रान्तेऽपि दृश्यते ॥
४ पयमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ४० संख्यगिरिनारसत्कप्रशस्त्यावपि प्रान्तभागे वर्तते ॥ ५ पयमिदं
प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ४०-४१ संख्यगिरिनारप्रशस्त्योरपि प्रान्तभागे दृश्यते ॥ ६ पयमिदं प्राचीनजैन-
लेखसंग्रह १ भागे ३८-४०-४२-४३ संख्यगिरिनारप्रशस्तिष्वपि प्रान्तभागे वर्तते ॥

महामात्यश्रीवस्तुपालस्य प्रशस्तिरियं ६०३ महामात्यश्रीवस्तुपालभार्या महं० श्रीसोमकुत्राया
धर्मस्थानमिदम् ॥

(गिरिनार इन्स्क्रिप्शन्स् नं० २ । २३-२४)

(४०-३)

॥ ॐ नमः सर्वजाय ॥

प्रणमदमरपेह्नुन्मौलिस्फुरन्मणिधोरणी-
तरुणकिरणश्रेणीशोणीकृताखिलविग्रहः ।

सुरपतिरकरोन्मुच्यतेः स्नात्रोदकैर्धुंस्तृणारुण-

सुततनुरिवापायात् पायाज्जगन्ति शिवाङ्गजः

॥ १ ॥

स्वस्ति श्रीविक्रमसवत् १२८८ वर्षे फागुण शुदि १० बुधे श्रीमदणहिलपुरवास्यप्रा(१)-
ग्वाटान्वयप्रसूत ठ० श्रीचण्डपालात्मज ठ० श्रीचण्डप्रसादाङ्गज ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीआशा-
राजनन्दनस्य ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसंभूतस्य ठ० श्रीलुणिग महं० श्रीमालदेवयोरनुजस्य महं०
श्रीतेजःपालामजन्मनो महामात्यश्रीवस्तुपालस्यात्मजे मह० श्रीललितादेवीकुक्षिसरोवरराजहंस-
यमाने (१) महं० श्रीजयन्तसिंहे सं० ७९ वर्षपूर्वं स्तम्भनकतीर्थमुद्राव्यापारं व्यापृष्वति सति
सं० ७७ वर्षे श्रीशृङ्गयोजयन्तप्रभृतिमहातीर्थयात्रोत्सवप्रभावाविर्भूतश्रीमदेवाधिदेवप्रसादासादित-
संघाधिपत्येन चौलुक्यकुलनमस्तलमकाशनैकमार्तण्डमहाराजाधिराजश्रीलचणप्रसाददेवसुतमहाराज-
श्रीवीरधव(१) श्लेदेवभीतिप्रतिपन्नराज्यसर्वधर्म्येण श्री-शारदाप्रतिपन्नापत्येन महामात्यश्रीवस्तुपालेन
तथाऽनुजेन सं० ७६ वर्षपूर्वं गूर्जरमण्डले घनलककप्रमुखनगरेषु मुद्राव्यापारान् व्यापृष्वता महं०
धीतेजःपालेन च शृङ्गया-ऽर्जुदाचलप्रभृतिमहातीर्थेषु श्रीमदणहिलपुर-भृगुपुर-स्तम्भनकपुरस्तम्भ-
तीर्थ-दर्भवती-धव(१)लककप्रमुखनगरेषु तथाऽन्यसमस्तस्थानेष्वपि कोटिशोऽभिनवधर्मस्थानानि प्रभू-
तजीर्णोद्धारार्थ कारिताः । तथा सचिपेश्वरश्रीवस्तुपालेनेह स्वयंनिर्मापितश्रीशृङ्गयमहातीर्थावतार-
श्रीमदादितीर्थकरश्रीरूपमदेव-स्तम्भनकपुरावतारश्रीपार्थनाथदेव-श्रीमत्पुत्रावतारश्रीमहावीरदे-
व(१)मशन्तिसहित-रुद्रमीरावतारश्रीसरस्वतीमूर्तिदेवकुलिकाचतुष्टय-जिनयुगला-ऽम्बा-ऽवलोकना-
श्याम्-प्रद्युम्नशिल्पेषु धीनेमिनाथदेवालकूनदेवकुलिकाचतुष्टय-सुरगाधिरूढनिजपितामह ठ० श्री-
सोम-म्बपितृ ठ० श्रीआशाराजमूर्तिद्वितय-कुनराधिरूढमहामात्यश्रीवस्तुपालानुज महं० श्रीतेजः-
पालमूर्तिद्वय-चारुनेरणप्रय-धीनेमिनाथदेव-आन्मीयपूर्वजा-ऽप्रजा-ऽनुज-पुत्रादिमूर्तिसमन्वितमुम्भो-
द्घाटनकस्तम्भधीर्गमेतमहातीर्थमभृतिअनेकतीर्थपरम्पराविराजिते धीनेमिनाथदेवाधिदेवविम्पितश्रीन-
दुजयन्तमहातीर्थे आत्मनन्त्रया म्भार्यायाध्व प्रागशटशतीय ठ० श्रीकान्हडपुम्बाः ठ० (१) राशु-
कुक्षिसंभूताया महं० धीमोरुकाया, पुण्याभिरुदये धीनागेन्द्रगच्छे भटारकधीमहेन्द्रधरिसंताने
गिन्धश्रीशान्तिधरिगिन्धश्रीप्राणन्दधरि-धीअमरधरिपदे भटारकधीहरिमद्रधरिपद्यलंकरणमुभी-

विजयसेनद्वरिप्रतिष्ठितरूपमदेवालङ्कृतोऽयनभिनवः समण्डपः श्रीअष्टापदमहातीर्थावतारनिरुपम-
प्रधानप्रासादः कारितः ॥

प्रासादैर्गगनाङ्गणप्रणयिभिः पातालमूलकपैः,
कासौरैश्च सितैः सिताम्बरगुहैर्नीलैश्च लीलवनैः ।
येनेयं नयनिर्जितेन्द्रसचिवेनालङ्कृताऽलं क्षितिः,
क्षेमैकायतनां चिरायुर्दयी श्रीवस्तुपालोऽस्तु सः ॥ १ ॥

संदिष्टं तव वस्तुपाल ! बलिना विध्वज्ययात्रिका-
न्मत्वा ना(ः)रुदतश्चरित्रमिति ते हृद्योऽसि नन्याधिरम् ।
नार्थिभ्यः क्रुचमर्थितः प्रथयसि स्वल्पं न दत्से न च,
स्वक्षायां बहु मन्यसे किमपरं ? न श्रीमदान्मुह्यसि ॥ २ ॥

अरिवल्लदलनश्रीवीरनामाऽयमुन्यां, सुरपतिरवतीर्णसर्कयामस्तदस्य ।
निवसति सुरशास्त्री वस्तुपालाभिधानः, सुरगुरुरपि तैजःपालसंज्ञः समीपे ॥ ३ ॥
उदारः शूरो वा(ः)रुचिरस्वचनो वाऽस्ति नहि वा,
भवतुल्यः कोऽपि क्वचिदिति चुलुबधेन्द्रसचिव ! ।
समुद्भूतभ्रान्तिर्नियतभवगन्तुं तव यश-

स्यतिर्गोहे गोहे पुरि पुरि च याता दिशि दिशि ॥ ४ ॥

सा कुत्रापि युगत्रयी वत ! गता स्रष्टा च स्रष्टिः सतां,
सीदत्साधुरसंवरस्युचरितः खल्लवलोऽभूत् कलिः ।
तद्विश्वार्तिनिवर्तनैकमनमा प्रजोऽधुना शं(ः)भुना,
प्रमत्तावन्तव वस्तुपाल ! भवते यद् रोचते तन् कु- ॥ ५ ॥

के^१ निघाय वसुधातले घनं, वस्तुपाल ! न यमालयं गताः ? ।
त्वं तु नन्दसि निवेशयन्निद्रं, दिक्षु धावति जने क्षुधावति ॥ ६ ॥

पीत्रेण धारय वराहपने ! धरिर्त्री, सूर्य ! प्रकाशय सदा जलदाभिपिच्छ ।
विश्राणितेन परिपाल्य वस्तुपाल !, मारं भरत्सु यद्विमं निद्रये विधा(ः)त्रा ॥ ७ ॥

आत्मा त्वं जगतः सदागतिरियं कीर्तिभुवं पुष्करं,
मैत्री मन्त्रिवरः स्मिरा घनरसः श्लोकस्तमोन्नः शमः ।
नोक्तः केन करुणवाभूत्करः कायश्च भास्वानिति,
स्यष्टं धूर्नेट्टिमूर्तयः कृतपत्राः श्रीवस्तुपाल ! त्वयि ॥ ८ ॥

विद्या यद्यपि वैदिकी न लभते सौभाग्यमेवा क्वचि-
न्न म्मार्तं कुरुने च कश्चन वचः कर्णद्वये य(ः)यपि ।

राजानः कृपणाश्च यद्यपि गृहे यद्यप्ययं च व्यय-
श्चिन्ता क्वाऽपि तथापि तिष्ठति न मे श्रीवस्तुपाले सति ॥ ९ ॥

- कर्णे खलप्रलपितं न करोषि रोषं, नाविष्करोषि न करोष्यपदे च लोभम् ।
तेनोपरि त्वमवनेरापि वर्तमानः, श्रीवस्तुपाल ! कलिकालमघः करोषि ॥ १० ॥
- सर्वत्र आन्तिमती, सर्वविदस्त्वदभवत् कथं कीर्तिः ? । (*)
श्रीवस्तुपाल ! पैतृकमनुहरते सन्ततिः प्रायः ॥ ११ ॥
- सोऽपि बलेरबलेपः, स्वल्पतरोऽभूत् तथैव कल्पतरोः ।
श्रीवस्तुपालसचिवे, सिञ्चति दानामृतैर्जगतीम् ॥ १२ ॥
- नियोगिनागेषु नरेक्षराणां, भद्रस्वभावः खलु वस्तुपालः ! ।
उद्दामदानप्रसारस्य यस्य, विभाज्यते कापि न मत्तभावः ॥ १३ ॥
- विबुधैः पयोधिमध्यादेको बहु(*)भिः करीन्दुरुपलब्धः ।
बहवस्तु वस्तुपाल !, प्राप्ता विबुध ! त्वयैकेन ॥ १४ ॥
- प्रथमं धनप्रवाहैर्वाहैरथ नाथमात्मनः सचिवः ।
अधुना तु सुकृतसिन्धुः, सिन्धुरघ्नैः प्रमोदयति ॥ १५ ॥
- श्रीवस्तुपाल ! भवता, जलधेर्गम्भीरता किलाऽऽकलिता ।
आनीय ततो गजता, स्वपतिद्वारे यदाकलिता ॥ १६ ॥
- एते श्रीमद्गुर्जेश्वरपुरोहि(*)त ठ० श्रीसोमेश्वरदेवस्य ॥
इह वालिगद्युतसहजिगपुत्राऽऽनकतनुजवाजडतनूजः ।
अलिखदिमां कायस्यः, सत्सम्पुरीयध्रुवो जयतसिंहः ॥ १ ॥
- हेरिमण्डप-नन्दीश्वरशिल्पीश्वरसोमदेवपौत्रेण ।
बकुलसामिसुतेनोत्कीर्णां पुरुषोत्तमेनेयम् ॥ २ ॥
- महामात्यश्रीवस्तुपालस्य प्रशस्तिरियं निष्पन्ना ॥ ६०३ ॥
श्रीनेमिखिजगद्गुर्वरम्भायाश्च प्रसादतः ।
वस्तुपालान्ययस्यास्तु, प्रशस्तिः स्वस्तिशालिनी ॥ ३ ॥
- महामात्यश्रीवस्तुपालमार्या महं० श्रीसोखुकाया धर्मस्थानमिदम् ॥
(गिरिनार इन्स्क्रिप्शन्स् नं० २ । २४-२५)
(४१-४)
- ॐ नमः श्रीनेमिनाथदेवाय ॥
तीर्थेशाः प्रणतेन्द्रसंहतिशिरःकोटीरकोटिस्फुर-
चेजोजालजलप्रवाहलहरीप्रक्षालितामिद्वयः ।

१ पद्यमिदं प्राचीनत्रैलोक्यसंग्रह २ भागे ३९ संख्यागिरिनारसम्प्रदायावपि प्रान्तभागे वर्तते ॥ २ पद्यमिदं प्राचीनत्रैलोक्यसंग्रह २ भागे ३९-४१ संख्यागिरिनारप्रदायोरपि प्रान्तभागे वर्तते ॥ ३ पद्यमिदं प्राचीनत्रैलोक्यसंग्रह २ भागे ३८-३९-४२-४३ संख्यागिरिनारसम्प्रदायावपि प्रान्तभागे वर्तते ॥

ते वः केवलमूर्तयः क्वलितारिष्टां विशिष्टाममी,
तामष्टापदशैलमौलिमणयो विश्राणयन्तु श्रियम् ।

स्वस्ति श्रीविक्रमार्कसंवत् १२८८ वर्षे फागुण (*) शुदि १० बुवे श्रीमदणहिलपुरवास्तव्य-
प्राग्वाटान्वयप्रसूत ठ० श्रीचण्डपालालज ठ० श्रीचण्डप्रसादाङ्ग ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीआशा-
राजनन्दनस्य ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसंभूतस्य ठ० श्रीलुण्णिग महं० श्रीमालदेवयोरनुजस्य ठ०
महं० श्रीतेजःपालाप्रजन्मनो महामात्यश्रीवस्तुपालस्यात्मजे (*) महं० श्रीललितादेवीकुक्षिसरो-
वराजहंसायमाने महं० श्रीजयन्तसिंहे सं० ७९ वर्षपूर्वं श्रीस्तम्भतीर्थवेलाकुलमुद्रान्यापारं व्यापृ-
ष्यति सति सं० ७७ वर्षे श्रीशुंजयोजयंतप्रमृतिमहातीर्थयात्रोत्सवप्रभावविभूतश्रीमदेवाधिदेवप्रसा-
दासादितसंचाधिपत्येन चौलुक्यकुलनमत्तलप्रकाशनैक (*) मार्तण्डमहाराजाधिराजश्रीलवणप्रसाद-
देवमुनमहाराजश्रीवीरधवलदेवप्रीतिप्रतिपन्नराज्यसर्वैश्वर्येण श्री-शारदाप्रतिपन्नापत्येन महामात्यश्रीव-
स्तुपालेन तथाऽनुजेन सं० ७६ वर्षपूर्वं गूर्जरमण्डले धवलकक्रप्रमुखनगरेषु मुद्रान्यापारं व्यापृष्यता
महं० श्रीतेजःपालेन च श्री (*) शुंजय-शुंदाचलमहातीर्थेषु श्रीमदणहिलपुर-भृगुपुर-स्तम्भनक-
पुर-स्तम्भतीर्थ-दर्भवती-धवलकक्रप्रमुखनगरेषु तथाऽन्यसमस्तस्थानेष्वपि कोटिशो धर्मस्थानानि
प्रभूतजीर्णोद्धारश्च कारिताः । तथा सचिवेश्वरश्रीवस्तुपालेनेह स्वयंनिर्मापितशुंजयमहातीर्थव-
(*) तारश्रीमदादितीर्थकरश्रीऋषभदेव-स्तम्भनकपुरावतारश्रीपार्श्वनाथदेव-सत्यपुरावतारश्रीमहा-
वीरदेवप्रशस्तिसहित—ऋषीरावतारश्रीसरस्वतीदेवकुलिकाचतुष्टय—जिनयुगला-ऽम्बा—ऽवलोकना-
शाम्भ-प्रद्युम्नशिल्लरेषु श्रीनेमिनाथदेवालंकृतदेवकुलिकाचतुष्टय-तुरगाधिरूढनि (*) जपितामह ठ०
श्रीसोम-पितृ ठ० श्रीआशाराजमूर्तिद्वितय-तोरणत्रय-श्रीनेमिनाथदेव-आत्मीयपूर्वजा-ऽप्रजा-ऽनुज-
पुत्रादिमूर्तिसमन्वितमुखोद्घाटनकस्तम्भश्रीसंभेतावतारमहातीर्थप्रमृतिअनेककीर्तनपरम्पराविराजिते श्री-
नेमिनाथदेवाधिदेवविभूषितश्रीमदुजयन्तमहातीर्थे आ (*) त्मनस्तथा स्वमार्यायाः प्राग्वाटशातीय
ठ० कान्हडपुत्र्याः ठ० राणुकुक्षिसंभूतायाः महं० श्रीसोस्तुकायाः पुण्याभिवृद्धये श्रीनागेन्द्रगच्छे
महारकश्रीमहेन्द्रधरिसंताने शिष्यश्रीशान्तिधरिशिष्यआपान्दधरि-श्रीअमरधरिपट्टे महारकश्रीहरि-
मद्रधरिपट्टालंकरणश्रीविजयसेनधरिप्रतिष्ठि (*) तश्रीमद्रादिजिनराजश्रीऋषभदेवप्रमुखचतुर्विंशतितीर्थ-
करालंकृतोऽयमभिनवः समण्डपः श्रीअष्टापदमहातीर्थावतारप्रधानप्रासादः कारितः ।

स्वस्ति श्रीवलये नमोऽस्तु नितरां कर्णाय दाने ययो-
रस्पष्टेऽपि दृशां यशः कियदिदं वन्यास्तदेताः प्रजाः ।
दृष्टे संप्रति वस्तुपालसचिवत्यागे करिष्यन्ति ताः,
कीर्तिं कांचन या पुनः स्फुटमियं विधेऽपि नो गायति
कौटीरैः कटक-ऽङ्गुलीय-तिलकैः केयूर-हारादिभिः,
कौशेयैश्च विभूष्यमाणवपुषो यत्पाणिविश्राणितैः ।

॥ १ ॥

विद्वंसो गृहमागताः प्रणयिनीरप्रत्यभिज्ञामृत-

स्तैस्तैः स्वं शपथैः कथं कथमिव प्रत्याययांचकिरे

॥ १ ॥

न्यासं व्यातनुतां विरोचनमुत (*) स्त्यागं कवित्वश्रियं,

मास-न्यासपुरःतराः पृथु-रघुभायाश्च धीरप्रतम् ।

प्रज्ञां नाकिपताकिनीगुल्फि श्रीवस्तुपाल ! ध्रुवं,

जानीमो न विवेकमेकमकृतोत्सेकं तु कौतस्कुतम् ?

॥ ३ ॥

वास्तवं वस्तुपालस्य, वेत्ति कश्चरिताद्भुतम् ? । यस्य दानमविश्रान्तमर्थिष्वपि रिपुष्वपि

॥ ४ ॥

स्तोतव्यः खलु वस्तुपालसचिवः कैर्नाम याम्बैवै-

र्यस्य (*) त्यागविधिर्विभूय विविधां दारिद्र्यमुद्रां हठात्

विश्वेऽस्मिन्नखिलेऽप्यसृज्यदसावर्थाति दातेति च,

द्वौ शब्दावभिधेयवस्तुविरहज्याहन्यमानस्यती

॥ ५ ॥

आघेनाप्यपवर्जनेन जनितार्थित्वप्रमाथान् पुनः,

स्तोकं दत्तमिति क्रमान्तरगतानाह्वययन्नार्थिनः ।

पूर्वसाद् गणसंख्ययाऽपि गुणितं यस्तेष्वनावर्तिषु,

द्रव्यं (*) दातुमुद्रसाहसकमलस्तस्यौ चिरं दुःखितः

॥ ६ ॥

विश्वेऽस्मिन् किल पद्मपङ्किलतले प्रस्थानवीथीं विना,

सीदन्नेष पदे पदे न पुरतो गन्तेति संचिन्तयन् ।

धर्मस्थानशतच्छलेन विदग्धे धर्मस्य वर्षीयसः,

संचाराय शिबकलयपपदवीं श्रीवस्तुपालः स्फुट्य

॥ ७ ॥

अभोजेषु मरालमण्डलरुचो डिण्डीरपिण्डत्विषः,

कासारेषु (*) पयोधिरोधसि लुठन्निर्गिक्तमुक्ताश्रियः ।

ज्योत्स्नाभाः कुमुदाकरेण सदनोद्यानेषु पुष्पोल्लवणाः,

स्मृतिं कामिव वस्तुपालइतितः कुर्वन्ति नो कीर्तयः ?

॥ ८ ॥

देवै स्वर्गाथ ! कष्टं ननु क इव भवान् ! नन्दनोद्यानपालः,

खेदस्तत् फोऽथ ! केनाप्यहह ! हत इतः कान्नात् कल्पवृक्षाः ।

हुं मा वादीखदेतत् किमपि (*) करुणया मानवानां मयैव,

प्रीत्याऽऽदिदोऽयमूर्ध्नास्तिटक्यति तलं वस्तुपालच्छलेन

॥ ९ ॥

श्रीनैन्त्रीधरवस्तुपालयशामामुद्यावचैर्वाचिमिः,

सर्वस्मिन्नपि लभिते धवळतां फल्लोलिनीमण्डले ।

गङ्गैवेमिति प्रतीतिविक्रलात्प्राम्यन्ति फामं सुवि,
 आम्यन्तस्तनुमादमन्दितमुदो मन्दाकिनीयात्रिकाः ॥ १० ॥

वस्त्रं (*) निर्वासनाज्ञानयनपथगतं यस्य दाष्टिप्रदस्यो-
 र्दष्टिः पीयूषवृष्टिः प्रगयिषु परितः पेतुपी सप्रसादम् ।
 प्रेमालापस्तु कोऽपि स्फुरदमनपरव्रतसंसादवेदी,
 नेदीयान् वस्तुपालः स सख्यं यदि तदा को न माग्येकमुनिः! ॥ ११ ॥

साक्षाद् ब्रह्म परं धरागतमिदं श्रेयोविवर्तः सनां,
 तेजःपाल इति प्रसिद्धमहिमा तस्यानु(*)जन्मा जयी ।
 यो धत्ते न दगां कदाऽपि कलितावचामवियामयीं,
 यं चोपास्य परिसृष्टान्ति कृतिनः सद्यः परां निर्द्वैतिम् ॥ १२ ॥

आकृष्टे कमलाकुण्डस्य कुन्दारममस्य संस्तम्भनं,
 वश्यत्वं जगदाश्रयस्य यशसामाशान्तनिर्वासनम् ।
 मोहः शत्रुपराक्रमस्य सृतिरप्यन्यायदस्योरिति,
 स्वेरं पङ्क्तिर्गर्गनिर्मितिमया मन्त्रोऽस्य मन्वीशितुः ॥ १३ ॥ (*)

पूजे मलधारिश्रीनरेन्द्रसूरीणाम् ।

स्तम्भतीर्थेऽत्र कायस्थवंशे वाजडनन्दनः । प्रशस्तिमेतामलिख्यञ्जैत्रसिंहध्रुवः सुभीः ॥ १ ॥

हरिमण्डप-नन्दीश्वरशिल्पीश्वरसोमदेवपौत्रेण । वकुलसामिमुतेनोत्कीर्णां पुरुषोत्तमेनेयम् ॥ २ ॥

श्रीवस्तुपालप्रभोः प्रशस्तिरियं निष्पन्ना ॥ मङ्गलं महाश्रीः ॥

(गिरिनार इन्स्क्रिप्शन्स् नं० २ । २६-२७)

(४२-५)

ॐ नमः सर्वज्ञाय ॥

ये उज्जयन्तं.....जयामृप्रजाकल्याणा ।

सस्ति श्रीविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे फागुण शुदि १० बुधे श्रीमदणहिलपुरवा(*)स्तव्य-
 प्राग्वाटान्वयप्रमूत ठ० श्रीचण्डपालात्मज ठ० श्रीचण्डप्रसादाङ्ग ठ० श्रीसोमतनुज ठ०
 श्रीआशाराजनन्दनस्य ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसंभूतस्य ठ० श्रीलुण्णिग महं० श्रीमालदेवयोरनु-
 जस्य महं० श्रीतेजःपालाप्रजन्मनो महामात्यश्रीवस्तुपालस्यात्मजे महं० श्रीललितादेवीकुक्षिसरो-
 वराजहंसाय(*)माने महं० श्रीजयन्तसिंहे सं० ७९ वर्षपूर्वं स्तम्भतीर्थे मुद्राव्यापारान् व्यापृ-
 ष्यति सति सं० ७७ वर्षे शत्रुंजयोऽजयन्तप्रभृतिमहातीर्थयात्रोत्सवप्रसादाविर्भूतश्रीमद्देवाधिदेवप्रसा-
 दासादितसंधाधिपत्येन चौलुक्यकुलजभस्मालप्रकाशनं कर्मातण्डमहाराजाधिराजश्रीलवणप्रसाददेवसु-

१ पद्यमिदं नरेन्द्रप्रमीयलधुवस्तुपालप्रशस्तौ १९पद्यरूपेणापि वर्तते ॥ २ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसमूह
 २ भागे ३८-४२-४३ पृष्ठ्यगिरिनारसत्कप्रशस्तिष्वपि प्रान्तभागे दृश्यते ॥ ३ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसमूह
 २ भागे ३९-४० संक्षयगिरिनारसत्कप्रशस्त्योरपि प्रान्तभागे वर्तते ॥

तमहाराजश्रीवीरघ(*))वलदेवप्रीतिप्रतिपन्नराज्यसर्वैश्वर्येण श्री-शारदाप्रतिपन्नापत्येन महामात्यश्रीवस्तु-
पालेन तथाऽनुजेन सं० ७६ वर्षपूर्वं गूर्जरमण्डले धवलककप्रमुखनगरेषु मुद्राव्यापारं व्यापृष्यत्र
महं० श्रीतेजःपालेन च श्रीशुश्रुंजया-ऽर्जुदाचलप्रभृतिमहातीर्थेषु श्रीमदणहिलपुर-भृगुपुर-स्त(*))
म्भनकपुर-स्तम्भतीर्थ-दर्भवती-धवलककप्रमुखनगरेषु तथाऽन्यसमस्तस्थानेष्वपि कोटिशोऽभिनवधर्म-
स्थानानि प्रभूतजीर्णद्वाराश्च कारिताः । तथा सचिवेश्वरश्रीवस्तुपालेनेह स्वयंनिर्मापितश्रीशुश्रुंजय-
महातीर्थवतारश्रीमद्रादित्थिकरश्री क्रमभदेव-स्तम्भनकपुरावतारश्रीपार्श्वनाथ-देव—सत्यपुरावतार-
श्री(*))महावीरदेवप्रशस्तिसहित—कश्मीरावतारश्रीसरस्वतीमूर्तिदेवकुलिकाचतुष्टय—जिनसुगला—ऽम्बा-
ऽवलोकना—शाम्ब—प्रद्युम्नाशिखरेषु श्रीनेमिनाथदेवालंकृतदेवकुलिकाचतुष्टय—सुरगाधिरूढस्वपिताम्ह
महं० श्रीसोम—निजपितृ ठ० श्रीआशाराजमूर्तिद्वितय-चास्तोरणत्रय-श्रीनेमिनाथदेव-आत्मीय(*))
पूर्वजा—ऽयजा—ऽनुज—पुत्रादिमूर्तिसमन्वितमुल्लोद्घाटनकस्तम्भश्रीअष्टापदमहातीर्थप्रभृतिअनेककीर्तनपरम्प-
राविराजिते श्रीनेमिनाथदेवाधिदेवविभूषितश्रीमदुजयन्तमहातीर्थे आत्मनस्तथा स्वधर्मचारिण्या
प्राग्वाटगतीय ठ० श्रीकान्हडपुण्याः ठ० राशुकुक्षिसंमृताया महं० श्रीललितादेव्याः पुण्याभि(*))
वृद्धये श्रीनागेन्द्रगच्छे भट्टारकश्रीमहेन्द्रसूरिसंताने शिष्यश्रीशान्तिसूरिशिष्यश्रीआणन्दसूरि-श्री-
अमरसूरिपट्टे भट्टारकश्रीहरिभद्रसूरिपट्टालंकरणप्रभृतिविजयसेनसूरिप्रतिष्ठितश्रीअजितनाथदेवादि-
विंशतितीर्थकरालंकृतोऽयमभिनवः समण्डपः श्रीसंमैतमहातीर्थवतारप्रासादः कारितः ।

सं श्रीजिनाधिपतिधर्मधराधुरीणः, श्लाघास्पदं कथमिवास्तु न वस्तुपालः? ।

श्री-शारदा-सुकुन्त-कीर्ति-नयादिवेष्याः, पुण्यः परिस्फुरति जङ्गमसङ्गमो यः ॥ १ ॥

विश्रुता-विक्रम-विद्या-विदग्धता-वित्तवितरण-विवेकैः ।

यः सप्तभिर्विकारैः, कलितोऽपि वमार न विकारम् ॥ २ ॥

यस्य मूः किमसावस्तु, वस्तुपालसुतः सदा । नावर्णासावथाप्येतौ, धर्मकर्मकृतौ कृतौ ॥ ३ ॥

कस्यापि कविता नास्ति, विनाऽस्य हृदयासुखम् ।

वास्तवं वस्तुपालस्य, पद्यामस्तद् व्यं च यम् ॥ ४ ॥

दुर्गः स्वर्गगिरिः स कल्पतरुभिर्भेजे न चक्षुष्यथे,

तस्यौ कामगवी जगाम जलधेरन्तः स चिन्तामणिः ।

कालेऽसिन्नवलोस्य यस्य करुणं(णं) तिष्ठेत् कोऽन्यस्ततः,

पुण्यः सोऽस्तु न वस्तुपालमुदृती दानैकवीरः कथम्? ॥ ५ ॥

सोऽयं मन्त्री गुरुतितरासुद्धरन् धर्मभारं,

श्लाघामूर्धं नयति न कथं वस्तुपालः सहेल्म्? ।

तेजःपालः स्ववलयलः सर्वकर्मण्युद्धि-

र्द्धतीपीकः कल्पतिनरां यस्य धीरेयकल्पम् ॥ ६ ॥

१ पद्यमिदं नरचन्द्रीयसमुगलप्रसन्नौ पद्यमरदचेनापि हृदये ॥ २ पद्यमिदं धर्माभ्युदयमहासाम्यप्रथम-
मर्गे २३१मरणचेनापि हृदये ॥ ३ पद्यमिदं नरचन्द्रीयसमुगलप्रसन्नौ चतुर्भरणयाऽपि हृदये ॥

पतस्मिन् वसुवामुवाञ्जलधरे श्रीवस्तुपाले जग-

ञ्जीवार्तो सिचयोच्चयैर्नवनवैर्नक्तं दिवं वर्षति (*) ।

आसामन्वजनो घनोज्जितशशिश्योत्नाच्छवल्गाद्गुणो-

द्भूतैरद्य दिगन्वराद्यापि यशोवाप्तोभिराच्छादितम्

॥ ७ ॥

स्वमीर्मन्थाचलेन्द्रमनपपरिचयादेव पारिप्लवेयं,

भ्रूमद्भस्वैव भद्राच्चकितमृगदृशां प्रेमनस्येतरस्य ।

आयुर्निश्वासवायुप्रणयपरतयैवेवमस्यैर्वदुस्यं,

स्यास्तुर्धर्मोऽयमेकः परमिति हृदये (*) वस्तुपालेन मेने

॥ ८ ॥

तेत्रैःपालस्य विष्णोश्च, कः स्वरूपं निरूपयेत् ? । स्मितं जगत्रयीं पातुं, यदीयोदरकन्धरे ॥ ९ ॥

ललितादेवी नाम्ना, सधर्मिणी वस्तुपालस्य ।

असामगिरिस्तनयस्तनयोऽयं (*) जयतर्सिहास्यः

॥ १० ॥

दृश वपुश्च वी.....च, परस्परविरोधिनी । विवादा.....जैत्रसिंहस्वारूप्यवादि (?) कः ॥ ११ ॥ (*)

श्रुतिरियं मलधारिश्रीनरचन्द्रसूरीणाम् ॥

सम्भमतीर्थेऽत्र कायस्थवंशे वाजडनन्दनः । प्रशस्तिमेतामलितजैत्रसिंहध्रुवः सुधीः

॥ १ ॥

वोहृदस्य तन्त्रेण, सूत्रयारेण धीमता । एषा कुमारसिंहेन, समुत्कीर्णां प्रयत्नतः

॥ २ ॥

श्रीनेमैस्त्रिजगद्गुरुम्बायाश्च प्रसादतः । वस्तुपालान्वयस्यास्तु, प्रशस्तिः स्वस्तिशालिनी

॥ ३ ॥

(गिरिनार इन्स्क्रिप्शन्स् नं० २ । २७-२९)

(१३-६)

ॐ नमः श्रीसर्वज्ञाय ॥

संभेतात्रिशिरःकिरीटमणयः स्मेरसराहं कृति-

ध्वंसोल्लासितकीर्तयः शिवपुरप्राकारतारश्रियः ।

आनत्यश्रितसंविवादिबिलसद्रत्नौघरत्नाकराः,

कल्याणावलिहेतवः प्रतिकलं ते सन्तु वस्तीर्थयाः

॥ १ ॥

स्मिन् श्रीविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे फागुण शुद्धि १० बुधे श्रीमदणहिलपुरवास्तव्यप्राग्घाट-
कुण्डालङ्करण (*) श्रीचण्डपालात्मजे ठ० श्रीचण्डप्रसादाङ्गज ठ० श्रीसोमवनुज ठ० श्रीआशाराज-
नन्दनस्य ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसम्भूतस्य ठ० श्रीलुण्णिग महं० श्रीमालदेवयोरनुजस्य महं० श्री-
तेजःपालाप्रजन्मनो महामात्यश्रीवस्तुपालस्यात्मजे महं० श्रीललितादेवीकुक्षिसरोवरराजहंसायमाने

१ पद्यमिदं नरचन्द्रीयवस्तुपालप्रशस्ती पोद्दशपद्यनयाऽपि वर्तते ॥ २ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ६४ संख्यश्रुतदायलसूक्तशिलालेखे पोदशं सोमेश्वरदेवकृतितया वर्तते ॥ ३ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ३४-४१-४२ संख्यगिरिनारप्रशस्तिष्वपि प्रान्तभागे वर्तते ॥ ४ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ३८-४३ संख्यगिरिनारसम्भूतप्रशस्तीरपि प्रान्तभागे वर्तते ॥ ५ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ३८-३९-४०-४३ संख्यगिरिनारप्रशस्तिष्वपि प्रान्तभागे वर्तते ॥

महं० श्रीजयन्तसिंहे स० ७९ वर्षपूर्वं स्तम्भ (*) तीर्थमुद्राव्यापारान् व्यापृष्वति सति स० ७७ वर्षे श्रीशत्रुंजयोजयन्तप्रभृतिमहातीर्थयात्रोत्सवप्रभावाविभूतश्रीमद्देवाधिदेवप्रसादासादितसङ्घाधिपत्येन चौलुक्यकुलमस्तत्प्रकाशनैकमार्तण्डमहाराजाधिराजश्रीलवणप्रसाददेवसुतमहाराजश्रीवीरधवलदेवप्रीतिप्रतिपन्नराज्यसर्वैश्वर्येण श्री-शारदाप्रतिपक्षापत्येन महामा (*) त्यश्रीवस्तुपालेन तथा अनुजेन स० ७६ वर्षपूर्वं गूर्जरमण्डले धवलकक्रप्रमुखनगरेषु मुद्राव्यापारान् व्यापृष्वता मह० श्रीतेजःपालेन च श्रीशत्रुंजया-ऽर्बुदाचलप्रभृतिमहातीर्थेषु श्रीमदणहिलपुर-भृगुपुर-स्तम्भनकपुर-स्तम्भतीर्थ-दर्भ-वती-धवलकक्रप्रमुखनगरेषु तथा अन्यसमस्तस्थानेष्वपि फोटिशोऽभिनवधर्मस्थानानि प्रभूतजी (*) णो-द्वाराश्च कारिता ॥ तथा श्री-शारदाप्रतिपन्नपुरसचिवेश्वरश्रीवस्तुपालेन स्वधर्मचारिण्या प्राग्गट-ज्ञातीय ठ० श्रीज्ञानहृदयुष्या ठ० राणुकुक्षिसम्भूताया मह० श्रीललितादेव्यास्तथा आत्मन पुण्या-मिष्टद्वये इह स्वयनिर्मापितश्रीशत्रुंजयमहातीर्थधतारश्रीमदादित्यैर्करश्रीभ्रूपभदेव-स्तम्भनरूपुरा-वतारश्रीपार्श्वनाथदेव-सत्यपुरा (*) वतारश्रीमहावीरदेवप्रशस्तिरहित-कश्मीरावतारश्रीसरस्वतीम-तिदेवकुलिकाचतुष्टय-जिनयुगल-अम्बा-ऽनलोकना-शाम्भ प्रद्युम्नशिखरेषु श्रीनेमिनाथदेवालकृतदेव-कुलिकाचतुष्टय-नुरगाधिरूढनिजपितामह मह० श्रीसोम-स्वपितृ ठ० श्रीआशाराजमूर्तिद्वित्रय चास्तो-रणत्रय-श्रीनेमिनाथदेव-आत्मीयपूर्वजा-ऽप्रजा-ऽनुज-पुत्रादिमूर्तिस (*) मन्वितसुलोद्घाटनकलाभ-श्रीध-ष्टापदमहातीर्थप्रभृतिअनेककीर्तनपरंपराविराजिते श्रीनेमिनाथदेवाधिदेवविभूषितश्रीमदुज्जयंतमहातीर्थे श्रीनागेन्द्रगच्छे मद्यारकथीमहेंद्रधरिसंताने शिष्यश्रीशांतिधरिशिष्यश्रीआणंदधरि-श्रीअमरधरिषष्टे मद्यारकश्रीहरिमद्रसरिपट्टालकरणप्रभृतिविजयसेनधरिप्रतिष्ठित (*) श्रीमदजितनाथदेवप्रमुखविंशतिती-र्थैकरालकृतोऽयममिनव समण्डप श्रीसंमेतावतारमहातीर्थप्रासादः कारित ॥ छ ॥

मुंष्याति प्रसभ वसु द्विजपतेर्गौरीशुरु लङ्घयन्,
 नो धत्ते परलोकतो भयमहो ! हसापलापे कृती ।
 उच्चैरास्तिकचक्रमालमुकुट ! श्रीवस्तुपाल ! स्फुट,
 भेजे नास्तिकतामय तव यज्ञ पूर कुतस्त्या (*) मिति ? ॥ १ ॥

कोषोटोपपरै परैश्वलचमूरङ्गचुरङ्गक्षत-
 क्षोणीशोदवसादशोपि जलधि श्रीस्तम्भतीर्थे पुरे ।
 स्वेद्राम्मस्तदिनीघटाघटनया श्रीवस्तुपालसुर-
 चेजस्तिम्भगभस्तिस्ततनुमिलैरेव सम्भूरित ॥ २ ॥

दिभ्यात्रोत्सववीरवीरधवलक्षोणीधवाप्यासित,
 प्राग्य राज्यरथस्य भारमभित स्वधे दपहीलया ।

१ पद्यमिदं धर्माभ्युदयमहाकाव्यनवममार्गप्रा-तेऽपि दरयते ॥ २ पद्यमिदं मुहूर्तकीर्तिकोशिन्यां १३० तम-
 पद्यमनाऽपि वरते ॥ ३ पद्यमिदं मुहूर्तकीर्तिकोशिन्यां १२१ पद्यस्यैव उदयप्रमीयवस्तुपालस्तुती च ११
 पद्यस्यैवाऽपि दरयते ॥

भाति आतरि दक्षिणे समगुणे श्रीवस्तुपालः कथं,

न स्थाय्यः स्वयमश्वराजतनुजः कामं स वामस्थितिः ?

॥ ३ ॥

लावण्यांग इति द्युतिव्यतिकरैः सत्याभिधानोऽभवद्,

आता यस्य निशानिशातविकसच्चन्द्रप्रकाशाननः ।

शंके शंकरकोपसंभ्रमभरादासीदनंगः स्मरः,

साक्षादंगमयोऽयमित्यपहृतः स्वर्गांगनाभिर्लुधु

॥ ४ ॥

रैक्तः सद्गतिभावभाजि चरणे श्रीमल्लदेवोऽपरो,

यद्भ्राता परमेष्ठिवाहनतया प्राप्तः प्रतिष्ठां पराम् ।

खेलनिर्मलमानसेन समयं कापि श्रयन् पंकिलं,

विधे राजति राजहंस इव यः संशुद्धपक्षद्वयः

॥ ५ ॥

सोऽयं तस्य सुधाहरस्य कवित्तानिष्ठः कनिष्ठः कृती,

बंधुबंधुरनुद्विबोधमधुरः श्रीवस्तुपालाभिधः ।

ज्ञानांभोरुहकोटेर भ्रमरतां सारंगसाम्यं यशः-

सोमे सौरितुलां च यस्य महिमक्षीरोदधौ सं दधौ

॥ ६ ॥ (*)

इदंविंदुरपां सुरेश्वरसरिड्विडीरपिडः पति-

भासां विद्रुमकंदलः किल विभुः श्रीवत्सलक्ष्मा नमः ।

कैलास-त्रिदेशम-शंसु-हिमवत्प्रायास्तु मुक्ताफल-

स्तोमः फोमलवालुकाऽस्य च यशःक्षीरोदधौ कौमुदी

॥ ७ ॥

हस्ताग्रन्यस्तसारस्वतरसरसनप्राप्तमाहात्म्यलक्ष्मी-

स्तेजःपालस्ततोऽसौ जयति वसुभैरः पूरयन् दक्षिणाशाम् ।

यद्दुद्धिः कल्पितोरु(१)द्विपगहनपरक्षोणिभृद्दुद्धिसंप-

छोपासुद्राधिपस्य स्फुरति लसदिनस्फारसंचारहेतुः

॥ ८ ॥

पुण्यश्रीसुंवि मल्लदेवतनयोऽमृत पुण्यसिंहो यशो-

वर्यः स्फूर्जति जैत्रसिंह इति तु श्रीवस्तुपालालजः ।

तेजःपालसुतस्त्वसौ विजयते लावण्यसिंहः स्वयं,

यैर्विधेऽभवदेकपादपि कलौ धर्मधनुष्यादयम्

॥ ९ ॥

एते श्रीनागेंद्रगच्छे भट्टारकश्रीउदय(२)प्रभसूरीणाम् ।

स्तम्भतीर्थेऽत्र कायस्यवंशे बाजडानंदनः । प्रशस्तिमेतामलिखजैत्रसिंहध्रुवः सुधीः

॥ १ ॥

१ पद्यमिदं सुकृतकीर्तिकलोत्थिन्या ११३ पद्यतयाऽपि वर्तते ॥ २ पद्यमिदं सुकृतकीर्तिकलोत्थिन्या ११५ पद्य-
रूपेणापि वर्तते ॥ ३ पद्यमिदं सुकृतकीर्तिकलोत्थिन्या १२८ तमपद्यरूपेणापि दृश्यते ॥ ४ पद्यमिदं सुकृतकीर्ति-
कलोत्थिन्या ११७ पद्यतयाऽपि वर्तते ॥ ५ पद्यमिदं प्राचीनभैरवसंप्रद २ भागे ३८-४१-४२ संख्यगिरिनार-
प्रशस्तियपि प्रान्तभागे वर्तते ॥

वाह्यस्य तनूजेन, सूत्रधारेण धीमता । एषा कुमारसिंहेन, समुत्कीर्णां प्रयत्नतः ॥ २ ॥

श्रीनेमैस्त्रिजगद्गुरुस्त्रयायाश्च प्रसादतः । वस्तुपालान्वयस्यास्तु, प्रशस्तिः स्वस्तिशालिनी ॥ ३ ॥

श्रीवस्तुपालप्रभोः प्रशस्तिरियं निष्पन्ना । शुभं भवतु ॥

(४४-७)

वस्तुपालविहारेण, हारेणेवोज्ज्वलश्रिया ।

उपकण्ठस्थितेनायं, शैलराजो विराजते ॥ १ ॥

श्रीविक्रमसंवत् १२८९ वर्षे आश्विनवदि १५ सोमे महामात्यश्रीवस्तुपालेन आत्मश्रेयोऽर्थं पश्चाद्भागे श्रीकपर्दियसुप्रासादसमलंकृतः श्रीशत्रुञ्जयावर्तारुश्रीआदिनाथप्रासादस्तदग्रतो वाम-पक्षे स्वीयसद्धर्मचारिणी महं श्रीललितादेविश्रेयोऽर्थं विशतिजिनलंकृतः श्रीसम्भेतशिश्ररप्रासाद-स्तथा दक्षिणपक्षे द्वि० मार्या महं श्रीसोसुश्रेयोऽर्थं चतुर्विंशतिजिनोपशोभितः श्रीअष्टापदप्रासादः अपूर्वपाटरचनारुचिरतरमभिनवप्रासादचतुष्टयं निजद्रव्येण कार्याचके ।

(लिष्ट ऑफ आर्कियोलॉजिकल रिमेंस इन बॉम्बे प्रेसिडेंन्सी पृ० ३६१)

(४५-८)

महामात्यश्रीवस्तुपाल महं श्रीललितादेवीमूर्ति ।

(४६-९)

महामात्यश्रीवस्तुपाल महं श्रीसोसुकामूर्ति.... ।

(लि० ऑ० आ० रि० इ० बॉ० प्रॉ० पृ० ३५७-८)

(४७-१०)

वस्तुपालविहारेण, हारेणेवोज्ज्वलश्रिया ।

उपकण्ठस्थितेनायं, शैलराजो विराजते ॥ १ ॥

(४८-११)

वस्तुपालविहारेण, हारेणेवोज्ज्वलश्रिया ।

उपकण्ठस्थितेनायं, शैलराजो विराजते ॥ १ ॥

(लि० ऑ० आ० रि० इ० बॉ० प्रॉ० पृ० ३५९)



१ पदमिदं प्राचीनत्रैलोक्यसंग्रह २ भागे १८-४१ संवत्परिनिवारण-उत्तरास्तोत्रेणि प्रस्तुतागे वर्तते ॥
२ पदमिदं प्राचीनत्रैलोक्यसंग्रह १ भागे १८-१९-१०-४१ संस्तुतिनिवारणश्रियाणि प्रस्तुतागे वर्तते ॥
३ पदमिदं प्राचीनत्रैलोक्यसंग्रह २ भागे ४७-४८ संस्तुतिनिवारण-उत्तरास्तोत्रेणि वर्तते ॥

श्रीअर्बुदाचलोपरिस्थिताः प्रशस्तयः ।

गूर्जेश्वरमहामात्यश्रीतेजःपालकारितश्रीलूण-
वसहिकागतप्रशस्तिखेवाः ।

(६४)

॥ ६० ॥

वंदे सरस्वतीं देवीं, याति या क्वि[व]मानसम् ।

नी[यमा]ना [निजेने]व, [यानमा]नस[व]ासिन[र] ॥ १ ॥

य. [क्ष]ातिमा[नन्य]रु [णः प्रकोपे, शातोऽपि दीप्त]ः स्मरनिग्रहाय ।

निमीलिताक्षोऽ[पि सम]प्रदर्शी, स व. शिवायास्तु शि* [वात्]नूतः ॥ २ ॥

अणहिलपुरगस्त स्वस्तिपात्रं प्रजा [नाम]जरजिर [घुतुल्यैः] पा [स्य]मानं चु[लुक्यैः] ।

[विरम]ति रमणीनां य[त्र वक्त्रे]न्दु [मंदी]कृत इव [सि]त्पक्षप्रसयेऽप्यधुकारः ॥ ३ ॥

तत्र प्राग्वाटान्वयमुकुटं कुतजप्रसून (*) विशदयशाः ।

दानविनिर्जितकरुपद्रुमपंडश्चंद्रयः समभूत् ॥ ४ ॥

चंद्रप्र[सा]दसं[ज्ञ.], स्वकुल[प्रासा]दहेमदंडोऽस्य ।

प्रसर[त्की]तिपताकः, पुण्यविपाकेन सूनुरभूत् ॥ ५ ॥

आत्मगुणैः किरणैरिव, सोमो रोमोद्भवं सता (*) कुर्वन् ।

उदगादगाधमध्याहुगघोदविवाधवाचस्मात् ॥ ६ ॥

एतस्मादजनि जिनाधि[नः] धमकिं, विभ्राणः स्वमनसि शश्वदश्वरा[जः] ।

तस्याऽऽसीद्दयिततमा कुमारदेवी, देवीव त्रिपुररिपोः कुमारमाता ॥ ७ ॥

तयो. प्रथमपु (*) त्रोऽमृन्मन्त्री लूणिगसज्ञया ।

दैवादवाप बालोऽपि, सालोक्यं [व]ासवेन सः ॥ ८ ॥

पूर्धमेव सचिव. स कोविदैर्गण्यते स्म गुणवत्सु लूणिगः ।

यस्य निस्तुपगतैर्मनीषया, धिक्कृतेव विषणस्य धीरपि ॥ ९ ॥

श्रीमल्लदेवः श्रि(*)तमल्लिदेवः, तस्यापुत्रो मंत्रिमतल्लिकाऽभूत् ।

बभूव यस्यान्यधनागनासु, लुब्धा न बुद्धिः शमलब्धबुद्धेः ॥ १० ॥

धर्मविधाने भुवनच्छिद्रपिधाने विभिन्नसधाने ।

सृष्टिकृता न हि सृष्टः, प्रतिमल्लो मल्लदेव(*)स्य ॥ ११ ॥

नीलनीरदकदम्बकमुक्तश्वेतकेतुकिरणोद्धरणेन ।

मल्लदेवयशसा गलहस्तो, हस्तिमहदशनांशुषु दत्तः ॥ १२ ॥

तस्यानुजो विजयते विजितेंद्रियस्य, सारस्वतामृतकृताद्भुतहर्षवर्षः ।

श्रीवस्तु(★)[पा]ल इति भालतलस्थितानि, दौःस्थ्याक्षराणि मुकृती कृतिनां विल्लंपन् ॥ १३ ॥

विरचयति वस्तुपालश्चलुक्यसचिवेषु कविषु च प्रवरः ।

न कदाचिदर्थहरणं, श्रीकरणे काव्यकरणे वा ॥ १४ ॥

तेजःपालः पालितस्वा(★)मितेजःपुंजः सोऽयं राजते मंत्रिराजः ।

दुर्वृत्तानां शंकनीयः कनीयानस्य आवा विश्वविभ्रांतकीर्तिः ॥ १५ ॥

तेजःपालस्य विष्णोश्च, कः स्वरूपं निरूपयेत् ? । स्थितं जगन्नयीसूत्रं, यदीयोदरकंदरे ॥ १६ ॥

जाल्हु-भाऊ-साऊ-धनदेवी-सोहगा-चयजुकाख्याः ।

परमलदेवी चैषां, क्रमादिमाः सप्त सोदर्यः ॥ १७ ॥

एतेऽश्वराजपुत्रा, दशरथपुत्रास्त एव चत्वारः । प्राप्ताः किल पुनरवनावेकोदरवासलोमेन ॥ १८ ॥

अनुजन्मना समेतस्तेजःपा(★)लेन वस्तुपालोऽयम् ।

मदयति कस्य न हृदयं ?, मधुमासो माधवेनेव ॥ १९ ॥

पंथानमेको न कदापि गच्छेदिति स्मृतिप्रोक्तमिध स्मरंतौ ।

सहोदरौ दुर्द्धरमोहचौरे, संभूय धर्माध्वनि तौ प्रवृत्तौ ॥ २० ॥

इदं सदा सो(★)दरयोरुदेखु, युगं युगव्यायमदोर्युगश्चि ।

युगे चतुर्थेऽप्यनघेन येन, कृतं कृतस्यागमनं युगस्य ॥ २१ ॥

मुक्कामयं शरीरं, सोदरयोः सुचिरमेतयोरस्तु ।

मुक्कामयं किल महीबलयमिदं भाति यत्कीर्त्या ॥ २२ ॥

ए(★)कोत्पत्तिनिमिचौ, यद्यपि पाणी तयोस्तथाऽप्येकः ।

वामोऽम्बुदनयोर्न तु, सोदरयोः कोऽपि दक्षिणयोः ॥ २३ ॥

धर्मस्थानांकितामुर्वी, सर्वतः कुर्वताऽमुना । दत्तः पादो बलाहंपुयुगलेन कलेर्गले ॥ २४ ॥

इत्तथौलुक्यपवीरा(★)जां, धंशे शास्त्राविशेषकः ।

अर्णोराज इति ख्यातो, जानस्तेजोमयः पुमान् ॥ २५ ॥

तस्मादनंतरमनंतरितप्रतापः, प्राप क्षितिं क्षतरिपुर्लक्षणप्रसादः ।

स्वर्गापगाजललक्षितार्णसुभ्रा, बभ्राम यस्य लवणाब्धिमतौत्य कीर्तिः(★) ॥ २६ ॥

मुनन्तस्मादासीद्दशरथकजुत्तयप्रतिरुतेः,

प्रतिश्मापालानां क्ववस्तितपले वीरधवलः ।

१ पद्यमिदं प्राचीनवेनडेरामह २ भागे ४२ गङ्गागिरिनारयणकशिलाश्लोके नयमं मत्तपारिधीनरन्ध्रधरि-
र्हाश्लोके निर्दिष्टं वर्णने ॥ २ पद्यमिदं त्रिनदवर्षययन्पुपालव्यरित्ते सोमभारदेवनाम्नेय वर्णते ॥

यशःपुरे यस्य प्रसरति रतिक्लान्तमनसा-

॥ मसाध्वीनां भमाऽभिसरणकलायां कुशलता ॥ २७ ॥

चौलुक्यः स्रुक्ती स वीरघवलः क(०) गेजपानां जपं,

॥ यः कर्णेऽपि चकार न प्रलपतामुद्दिश्य यौ मंत्रिणौ ।

आभ्यामभ्युदयातिरेकलचिरं राज्यं स्वभर्तुः कृतं,

॥ बाहानां निवहाः घटाः करटिनां वद्धाश्च सौभाग्ये ॥ २८ ॥

तेन मंत्रिद्वयेनायं, जाने जानूपवर्तिना । वि(०)मुर्जद्वयेनेव, सुखमाश्लिष्यति श्रियं ॥ २९ ॥

इतश्च—

गौरीवरश्चशुरमूधरसमवोऽयमस्त्यवुदः ककुदमद्रिकदंबकस्य ।

मंदाकिनीं धनजटे दधुतुत्तमां[गे], यः श्यालकः शशिमृतोऽभिनयं करोति ॥ ३० ॥

कचिदिह विहरंतीर्वी(०)क्षमाणस्य रामाः, प्रसरति रतिरंतमोक्षमाकांक्षतोऽपि ।

कचन मुनिमिरर्ध्यां पश्यतस्तीर्थवीथीं, भवति भवचिरक्ता धीरधीरात्मनोऽपि ॥ ३१ ॥

श्रेयःश्रेष्ठवशिष्ठहोमहुतशुक्कुंडान्मृतंडात्मज-

प्रघोताधिकदेहदीधितिभ(०)रः कोऽप्याविरासीन्नरः ।

तं मत्वा परमारणैकरसिकं स व्याजहार श्रुते-

राधारः परमार इत्यजनि तन्नामाऽथ तस्यान्वयः ॥ ३२ ॥

श्रीधूमराजः प्रथमं वभूव, भूवासवस्तत्र नरंद्रवंशे ।

मूमिमृतो यः कृतवानभिज्ञान्, पक्षद्वयोच्छे(०)दनवेदनासु ॥ ३३ ॥

घंधुक-ध्रुव-भटादयस्ततस्ते रिपुद्विपघटाजितोऽभवन् ।

यत्कुलेऽजनि पुमान् मनोरमो, रामदेव इति कामदेवजित् ॥ ३४ ॥

रोदःकंदरवर्तिकीर्तिलहरीलिप्तामृतांशुधुते-

रमधुन्नवशो यशोघवल इ(०)त्यासीचनुजस्ततः ।

यशौलुक्यकुमारपालनृपतिप्रत्यर्थितामागतं,

मत्वा सत्वरमेव मालवपतिं च(व)छालमालब्धवान् ॥ ३५ ॥

शत्रुश्रेणीगलविदलनोन्निद्रनिक्षिप्तघारो,

घारावर्षः समजनि सुतस्तस्य विश्वप्रकाश्यः ।

क्रोषाक्रांतप्र(०)धनवसुधानिश्चले यत्र जाता-

भ्योतन्नेत्रोत्पलजलकणाः कौंकषाधीशपत्न्यः ॥ ३६ ॥

सोऽयं पुनर्दाशरथिः पृथिव्यामव्याहृतौजाः स्फुटमुज्जगाम ।

मारीचवैरादिव योऽधुनाऽपि, [मृ]गव्यमव्यग्रमतिः करोति ॥ ३७ ॥

सामं(*)तसिंहसमिति क्षितिविक्षतौजाः, श्रीगूर्जरक्षितिपरक्षणवक्षिणासिः ।

प्रह्लादनस्तदनुजो दनुजोत्तमारिचारित्रमत्र पुनरुज्ज्वलयांचकार ॥ ३८ ॥

देवी सरोजासनसंभवा किं?, कामप्रदा किं सुरसौरभेयी? ।

प्रह्लादनाकारधरा(*)धरायामायातवत्येष न निश्चयो मे ॥ ३९ ॥

धारावर्षसुतोऽयं, जयति श्रीसोमसिंहदेवो यः ।

पितृतः शौर्यं विधां, पितृव्यकाहानमुभयतो जगृहे ॥ ४० ॥

मुक्त्वा विप्रकरानरातिनिकरान्निर्जित्य तर्त्कचन,

प्रापत् संप्रति सोम(*)सिंहवृपतिः सोमप्रकाशं यशः ।

येनोर्वीतलमुज्ज्वलं रचयताऽप्युत्पान्यताभीर्भया,

सर्वेषामिह विद्विषां नहि मुस्तान्मालिन्यमुन्मूलितं ॥ ४१ ॥

वसुदेवस्येव सुतः, श्रीकृष्णः कृष्णराजदेवोऽज्य ।

मात्राधिकप्रतापो, यशोद(*)यासंश्रितो जयति ॥ ४२ ॥

इतश्च—

अन्वयेन विनयेन विद्यया, विक्रमेण सुकृतक्रमेण च ।

कापि कोऽपि न पुमानुपैति मे, वस्तुपालसदृशो दृशोः पथि ॥ ४३ ॥

देयिता ललितादेवी, तनयमवीतनयमाप सचिवेद्रात् ।

नाम्ना जयंत(*)सिंहं, जयंतमिद्रात् पुलोमपुत्रीव ॥ ४४ ॥

यः शैशवे विनयवैरिणि बोधबंध्ये,

घटे नयं च विनयं च गुणोदयं च ।

सोऽयं मनोभवपरामवजागरूक-

रूपो न कं मनसि च्युंति जैत्रसिंहः? ॥ ४५ ॥

श्रीवस्तुपालपुत्रः, कल्पायुरयं जयं(*)तसिंहोऽस्तु ।

कामादधिकं रूपं, निरूप्यते यस्य दानं च ॥ ४६ ॥

सं श्रीतेजःपालः, सचिवधिरकालमस्तु तेजस्वी । येन जना निधिताधितामग्निनेव नंदति ॥ ४७ ॥

यच्चाणकया-ऽमरगुरु-मरुद्वाधि-शुक्रादिकानां,

प्रागुत्पादं व्यथित मुवने (*) मंत्रिणां बुद्धिपान्नां ।

चक्रेऽभ्यासः स सख विधिना नूनमेतं विधातुं,

तेजःपालः कथमितरथाऽऽधिक्यमापैप तेषु? ॥ ४८ ॥

१ पद्यमिदं प्राचीनत्रैलोक्यसंग्रह २ भागगत ३८ संक्षयगिरिनारसत्कशिलालेखे नवमं शोमेधरदेवकृतिरूपे-
नेव निर्दिष्टं वर्तते ॥ २ पद्यमिदं प्राचीनत्रैलोक्यसंग्रह २ भागगत ३८ संक्षयगिरिनारसत्क १०१ संक्षयार्जुनसं-
प्रशरारथोः क्रमताः पद्यं प्रथमं च शोमेधरदेवकृतिरूपे निर्दिष्टं वर्तते ॥

अस्ति स्वस्तिनिकेतनं तनुभृतां श्रीवस्तुपालानुज-
स्तेजःपाल इति स्थितिं बलिभृतासुर्वीतले पालयन् ।

आत्मीयं व(०)हुमन्यते न हि गुणग्रामं च कामंदकि-

श्राणक्योऽपि चमत्करोति न हृदि प्रेक्षास्पदं प्रेक्ष्य यम्

॥ ४९ ॥

इतश्च महं० श्रीतेजःपालस्य पत्न्याः श्रीअनुपमदेव्याः पितृवंशवर्णनम् ॥

प्राग्वाटान्वयमंडनैकमुकुटः श्रीसांद्रचंद्रावती-

वास्तव्यः स्त(०)वनीयकीर्तिलहरिप्रक्षालितश्मातलः ।

श्रीगागाभिषया सुधीरज्जनि यद्वृत्तानुरागादभूत्,

को नासप्रमदो न दोलितशिरा नोद्भूतरोमा पुमान् ?

॥ ५० ॥

अनुसृतसज्जनसरणिर्घरणिगनामा बभूव तचनयः ।

स्वप्रभुहृदये (०) गुणिना, हारेणैव स्थितं येन

॥ ५१ ॥

त्रिभुवनदेवी तस्य, त्रिभुवनविख्यातशीलसंपन्ना ।

दयिताऽभूदनयोः पुनरंगं द्वेषा मनस्त्वेकम्

॥ ५२ ॥

अनुपमदेवी देवी, साक्षाद्दक्षायणीव शीलेन ।

तद्बहुहिता सहिता श्रीतेजःपालेन (०) पत्याऽभूत्

॥ ५३ ॥

इयमनुपमदेवी दिव्यवृत्तप्रसूनव्रततिरजनि तेजःपालमंत्रीशपत्नी ।

नय-विनय-विवेकौचित्य-दाक्षिण्य-दानप्रमुखगुणगणैर्दुद्योतिताशोपगोत्रा

॥ ५४ ॥

लावण्यसिंहस्तनयस्तयोरयं, रयं जयति (०) [द्वि] यदुष्टवाजिनाम् ।

लब्ध्वापि मीनभ्रजमंगलं वयः, प्रयाति धर्मैकविधायिनाऽध्वना

॥ ५५ ॥

श्रीतेजपालतनयस्य गुणानमुष्य, श्रीलूणसिंहकृतिनः कति न स्तुवंति ? ।

श्रीबंधनोद्भूतरैरपि यैः समंतादुद्दामता त्रिजगति क्रि(०)यते स्म कीर्तेः

॥ ५६ ॥

गुण-धननिधानकलशः, प्रकटोऽयमवेष्टितश्च खलसर्पैः ।

उपचयमयते सततं, सुजनैरुपजीव्यमानोऽपि

॥ ५७ ॥

मह्यदेवसचिवस्य नंदनः, पूर्णसिंह इति लीलुकासुतः ।

तस्य नंदति सुतोऽयमह्वणा (-) देविभूः सुकृतवेदम पेशढः

॥ ५८ ॥

अभद्रनुपमा पत्नी, तेजःपालस्य मंत्रिणः । लावण्यसिंहनामाऽयमायुष्मान्नेतयोः सुतः

॥ ५९ ॥

तेजःपालेन पुण्यार्थं, तयोः पुत्र-कलत्रयोः । हर्म्य श्रीनेमिनाथस्य, तेने तेनेदमर्षुदे

॥ ६० ॥

तेजःपाल इति क्षितीदुसचिवः शंखोज्ज्वलाभिः शिला-

श्रेणीभिः स्फुरद्विदुंकुंदरुचिरं नेमिप्रमोर्गदिरम् ।

उधैर्मंडपमग्रतो जिना[वरा]वासद्विपंचाशतं,

तत्पार्श्वेषु भलानकं च पुरतो निष्पादयामासिवान्

॥ ६१ ॥

- श्रीमच्छंड[प]संभवः [सम]भवच्छंडप्रसादस्ततः,
सोमस्तत्प्रभवोऽश्वराज इति तत्पुत्राः पवित्राशयाः ।
- श्रीमल्लूणिग-मल्लदेवसचिवश्रीवस्तुपालाह्वया-
स्तेजःपालसमन्विता जिनमतारामोन्नमजीरदाः ॥ ६२ ॥
- श्रीमंत्रीश्वरवस्तुपालतनयः श्रीजै(*)वर्सिहाह्वय-
स्तेजःपालसुतश्च विश्रुतमतिर्लावण्यसिंहाभिधः ।
- पृतेपां दश मूर्तयः करिवधूस्कंधाधिरूदाश्चिरं,
राजते जिनदर्शनार्थमयतां दिग्मायकानामिव ॥ ६३ ॥
- मूर्तीनामिह पृष्ठतः करिवधूपृष्ठप्रतिष्ठाजुषां,
तन्मूर्तिर्विम(*)लाश्मलचक्रगताः कान्तासमेता दश ।
- चौलुक्पक्षितिपालवीरधवलस्याद्वैतबंधुः सुषी-
स्तेजःपाल इति व्यधापयदयं श्रीवस्तुपालानुजः ॥ ६४ ॥
- तेजःपालः सकलप्रजोपजीव्यस्य वस्तुपालस्य ।
सविधे विभाति सफलः, (*) सरोवरस्येव सहकारः ॥ ६५ ॥
- तेन प्राच्युगेन या प्रतिपुर-भ्रामा-ऽप्य-शैलशूलं,
वापी-कूप-निपान-कानन-सरः-प्रासाद-सत्रादिका ।
- धर्मस्थानपरंपरा नवतरा चक्रेऽथ जीर्णोद्धृता,
तत्संख्याऽपि न बुध्यते यदि परं तद्वेदि (*) नी मेदिनी ॥ ६६ ॥
- शंभोः श्वासगतागतानि गणयेद् यः सन्मतिर्योऽथवा,
नेत्रोन्मीलनमीलनानि कलयन्मार्कंडनाम्नो मुनेः ।
- संख्यातुं सचिवद्वयीविरचितामेतामपेतापर-
व्यापारः सुकृतानुकीर्तनतर्ति सोऽप्युज्जिहीते यदि (*) ॥ ६७ ॥
- सर्वत्र वर्सतां कीर्तिरश्वराजस्य शाश्वती । सुकर्तुमुपकर्तुं च, जानीते यस्म संततिः ॥ ६८ ॥
- भासीच्छंडपमंडितान्वयगुरुर्ध्वागिंद्रगच्छश्रिय-
भृडारलमयलसिद्धमहिमा हरिर्महेंद्रामिषः ।
- तस्माद्विस्मयनीयचारुचरितः श्रीश्रुति(*) [हरिस] तो-
प्यानंदा-ऽमरहरियुगमुदयचन्द्रार्कदीप्रद्युति ॥ ६९ ॥
- श्रीजैनशासनवनीनवनीरवाहः, श्रीमास्ततोऽप्यधरो हरिभद्रहरिः ।
विद्यामदोन्मदगदेष्वनवधवैद्यः, ख्यातस्ततो विजयसेनमुनीधरोऽयम् ॥ ७० ॥
- गुरो [स्त] (*) स्या[सि] पां पात्रं, हरिरस्त्पुदयप्रमः ।
मौक्तिकानीव सूक्तानि, माति यत्प्रतिभांबुधेः ॥ ७१ ॥

॥ एतद्धर्मस्थानं, धर्मस्थानस्य चास्य यः कर्ता ।	॥ ११
तावद् द्वयमिदमुदियादुदयत्ययमर्षुदो यावत् ॥	॥ ७२ ॥
श्रीसोमेश्वरदेवश्चलुक्यनरदेवसेवितांहि (*)युगः ।	॥ १
रचयांचकार रुचिरां, धर्मस्थानप्रशस्तिमिमाम् ।	॥ ७३ ॥

श्रीनेमेरम्बिकायाश्च, प्रसादादर्जुदाचले । वस्तुपालान्वयस्यास्तु, प्रशस्तिः सन्तिशालिनी ॥ ७४ ॥

सूत्र० केल्हणसुतघांघलपुत्रेण चंडेश्वरेण प्रशस्तिरियमुत्कीर्णा । (*) श्रीविक्रम [संवत् १२८७ वर्षे] फाल्गुण वदि ३ रवौ श्रीनागेंद्रगच्छे श्रीविजयसेनसूरिभिः प्रतिष्ठा कृता ॥

(६५)

॥ ६ ॥ ॐ नमः [सर्वज्ञाय ॥ सव] त् १२८७ वर्षे लौकिकफाल्गुनवदि ३ रवौ अद्य श्री-
मदणहिलपाटके चौलुक्यकुलकमलराजहंससमस्तराजावलीसमलं कृतमटाराजाधिराजश्रीम [१ मदेव] .
(*) विजयराज्ये त... .. श्रीवसिष्ठ (४) कुंडयजनानलोद्भूतश्रीमद्भूमराजदेव-
कुलोत्पन्नमहामंडलेश्वरराजकुलश्रीसोमसिंहदेवविजयिराज्ये । तस्यैव महाराजाधिराजश्रीभीमदेवस्य
प्रसा [दात् गूर्ज] (*) रत्रामंडले श्रीचौलुक्यकुलोत्पन्नमहामंडलेश्वरराणकश्रीलवणप्रसाददेवसुत-
महामंडलेश्वरराणकश्रीवीरधवलदेवसत्कसमस्तमुद्राव्यापारिणा श्रीमदणहिलपुरवास्तव्यश्रीप्राग्वाट-
ज्ञातीय ठ० श्रीचंड[पसुत ठ० श्री] (*) चंडप्रसादात्मज महं० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीआसराज-
भार्या ठ० श्रीकुमारदेव्योः पुत्र महं० श्रीमल्लदेव सधपति महं० श्रीवस्तुपालयोरनुजसहोदरभ्रातृ
महं० श्रीतेजःपालेन स्वकीयभार्या महं० श्रीअनुपमदेव्यास्तल्लुक्षि [समूतप] (१) वित्रपुत्र महं०
श्रीलूणसिंहस्य च पुण्ययशोऽभिवृद्धये श्रीमदर्जुदाचलोपरि देउलवाडाप्राभे समस्तदेवकुलिकालकृतं
विशालहस्तिशालोपशोभितं श्रीलूणसिंहवसहिकाभिधानश्रीनेमिनाथदेवचैत्यमिदं कारित ॥ छ ॥
(*) प्रतिष्ठितं श्रीनागेंद्रगच्छे श्रीमहेंद्रसूरिसताने श्रीशांतिहरिशिष्यश्रीआणंदसूरि-श्रीअमरचंद्र-
सूरिपहलंकरणप्रभुश्रीहरिमद्रसूरिशिष्यैः श्रीविजयसेनसूरिभिः ॥ छ ॥ अत्र च धर्मस्थाने कृत-
यावकगोष्टि (छि) कानां नामा (*) नि यथा ॥ महं० श्रीमल्लदेव महं० श्रीमस्तुपाल महं० श्री-
तेजःपालप्रभृतिभ्रातृत्रयसतानपरंपरया तथा महं० श्रीलूणसिंहसत्कमातृकुलपक्षे श्रीचंद्रावतीवास्त-
व्यप्राग्वाटज्ञातीय ठ० श्रीमावदेवसुत ठ० श्रीशालिगतनुज ठ० (*) श्रीमागरतनय ठ० श्री-
गागापुत्र ठ० श्रीधरणिगभ्रातृ महं० श्रीराणिग महं० श्रीलीला तथा ठ० श्रीधरणिगभार्या ठ०
श्रीतिष्ठुणदेविकुक्षिसंमूत महं० श्रीअनुपमदेवीसहोदरभ्रातृ ठ० श्रीसौम्यसीह ठ० श्रीआम्बसीह
ठ० श्रीऊदल (*) तथा महं० श्रीलीलासुत महं० श्रीलूणसीह तथा भ्रातृ ठ० जगसीह ठ०
रत्नसिंहानां समस्तकुटुंबेन एतदीयसंतानपरंपरया च एतस्मिन् धर्मस्थाने सकळमपि स्नपनपूजा-
सारादिकं सदैव करणीयं निर्वाहणीयं च ॥ तथा ॥ (*) श्रीचंद्रावत्याः सत्कमस्तमहाजनसत्कल-

जिनचैत्यगोष्टि(ष्टि)कप्रभृतिश्रावकसमुदायः ॥ तथा उवरणी-फीमरेउलीग्रामीयप्राग्वाट ज्ञा० श्रे०
 रासल उ० आसधर तथा ज्ञा० भाणिभद्र उ० श्रे० आल्हण तथा ज्ञा० श्रे० देल्हण उ०
 खीम्बसी(*)ह धर्कटज्ञातीय श्रे० नेहा उ० साल्हा तथा ज्ञा० धउलिम उ० आसचंद्र तथा
 ज्ञा० श्रे० चहुदेव उ० सोम प्राग्वाटज्ञा० श्रे० सावड उ० श्रीपाल तथा ज्ञा० श्रे० जीदा
 उ० पाल्हण धर्कटज्ञा० श्रे० पासु उ० सादा प्राग्वाटज्ञातीय पूना उ० सा(*)ल्हा तथा
 श्रीमालज्ञा० पूना उ० साल्हाप्रभृतिगोष्टि(ष्टि)काः । अमीभिः श्रीनेमिनाथदेवमतिष्ठा(ष्ठा)वर्षम-
 धियात्राष्टाहिकार्यां देवकीय चैत्रदि ३ तृतीयादिने स्नपनपूजाद्युत्सवः कार्यः ॥ तथा फांसिहेदमा-
 मीय ऊएसवालज्ञा(*)तीय श्रे० सोहि उ० पाल्हण तथा ज्ञा० श्रे० सलखण उ० वालण
 प्राग्वाटज्ञा० श्रे० सांतुय उ० देल्हुय तथा ज्ञा० श्रे० गौसल उ० आल्हा तथा ज्ञा० श्रे०
 कोला उ० आम्वा तथा ज्ञा० श्रे० पासचंद्र उ० पूनचंद्र तथा ज्ञा० श्रे० जसवीर उ०
 ज(*)मा तथा ज्ञा० ब्रह्मदेव उ० राल्हा श्रीमालज्ञा० फयहुरा उ० कुरुधरप्रभृतिगोष्टि-
 (ष्टि)काः । अमीभिस्तथा ४ चतुर्थदिने श्रीनेमिनाथदेवस्य द्वितीयाष्टाहिकामहोत्सवः कार्यः ॥
 तथा ब्रह्माणवास्तव्यप्राग्वाटज्ञातीय महाजनि० (*) आंभिग उ० पूनड ऊएसवालज्ञा० महा०
 धांधा उ० सागर तथा ज्ञा० महा० सादा उ० वरदेव प्राग्वाटज्ञा० महा० पाल्हण उ०
 उदयपाल ओइसवालज्ञा० महा० आचोधन उ० जगसीह श्रीमालज्ञा० महा० वीसल उ०
 पासदेव प्रा(*)ग्वाटज्ञा० महा० वीरदेव उ० अरसीह तथा ज्ञा० श्रे० धणचंद्र उ० रामचंद्र-
 प्रभृतिगोष्टि(ष्टि)काः । अमीभिस्तथा ५ पंचमीदिने श्रीनेमिनाथदेवस्य तृतीयाष्टाहिकामहोत्सवः
 कार्यः ॥ तथा धउलीग्रामीय प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० सर(*)जण उ० पासवीर तथा ज्ञा० श्रे०
 बोहडि उ० पूना तथा ज्ञा० श्रे० जसहुय उ० जेगण तथा ज्ञातीय श्रे० साजन उ० मोला
 तथा ज्ञा० पासिल उ० पूनुय तथा ज्ञा० श्रे० राजुय उ० सावदेव तथा ज्ञा० दूगसरण उ०
 साहणीय ओइसवाल(*)ज्ञा० श्रे० सलखण उ० महं जोगा तथा ज्ञा० श्रे[०] देवकुंपारं
 उ० आसदेवप्रभृतिगोष्टि(ष्टि)काः । अमीभिस्तथा ६ षष्ठीदिने श्रीनेमिनाथदेवस्य चतुर्थाष्टाहि-
 कामहोत्सवः कार्यः ॥ तथा मुंडस्थलमहातीर्थवास्तव्य प्राग्वाटज्ञातीय (*) श्रे० सं० धीरण उ०
 गुणचंद्र पाल्हा तथा श्रे० सोहिय उ० आश्वेसर तथा श्रे० जेजा उ० खांखण तथा फीलिणी-
 ग्रामवास्तव्य श्रीमालज्ञा० चापल-गाजणप्रभृतिगोष्टि(ष्टि)काः । अमीभिस्तथा ७ सप्तमीदिने श्री-
 नेमिनाथदेवस्य पंचमाष्टाहिकाम(*)होत्सवः कार्यः ॥ तथा हंडाउद्रग्राम-डवाणीग्रामवास्तव्य
 श्रीमालज्ञातीय श्रे० आम्युय उ० जमरा तथा ज्ञा० श्रे[०] लखण उ० आधू तथा ज्ञा०
 श्रे० आसल उ० जगदेव तथा ज्ञा० श्रे० सुमिग उ० धणदेव तथा ज्ञा० श्रे० जिणदेव उ०
 'जाला(*) प्राग्वाटज्ञा० श्रे० आसल उ० सादा श्रीमाल ज्ञा० श्रे० देदा उ० वीसल तथा
 ज्ञा० श्रे० आमधर उ० आमल तथा ज्ञा० श्रे० धिरदेव उ० धीरुय तथा ज्ञा० श्रे० गुणचंद्र
 उ० देवधर तथा ज्ञा० श्रे० हरिया उ० हेमा प्राग्वाटज्ञा० श्रे० रुखमण(*) उ० कडुपामभृ-
 तिगोष्टि(ष्टि)काः । अमीभिस्तथा ८ अष्टमीदिने श्रीनेमिनाथदेवपञ्चाष्टाहिकामहोत्सवः कार्यः ॥

तथा [म]डाहडवास्तव्यप्राग्वाटजातीय श्रे० देसल उ० ब्रह्मसरणु तथा ज्ञा० जसकर उ० श्रे०
घणिया तथा ज्ञा[०] श्रे० (*) देल्हण उ० आल्हा तथा ज्ञा० श्रे० वाला उ० पद्मसिद्ध
तथा ज्ञा० श्रे० आंबुय उ० बोहडि तथा ज्ञा० श्रे० वोसरि उ० पूनदेव तथा ज्ञा[०] श्रे०
वीरुप उ० स्राजण तथा ज्ञा० श्रे० पाहुय उ० जिणदेवप्रभृतिगोष्टि(ष्ठि)काः । अमीभिस्तथा ९
नवमोदिने (*) श्रीनेमिनाथदेवस्य 'सप्तमाष्टाहिकामहोत्सवः कार्यः ॥ तथा साहिलवाडावास्तव्य
ओइसवालजातीय श्रे० देल्हा उ० आल्हण श्रे० नागदेव उ० आम्बदेव श्रे० काल्हण उ०
आसल श्रे० बोहिय उ० लाखण श्रे० जमदेव उ० वाहड श्रे० (*) सीलण उ० देल्हण
श्रे० बहुदा श्रे० महघरा उ० घणपाल श्रे० मूनिग उ० वाषा श्रे० गोसल उ० वहडाप्रभृति-
गोष्टि(ष्ठि)काः । अमीभिस्तथा १० दशमीदिने श्रीनेमिनाथदेवस्य अष्टमाष्टाहिकामहोत्सवः कार्यः ॥
तथा श्रीअर्जुदोपरि देउल(*)वाडावास्तव्यसप्तमस्तथावकैः श्रीनेमिनाथदेवस्य पंचापि कल्याणि-
कानि यथादिनं प्रतिवर्षं कर्तव्यानि । एवमियं व्यवस्था श्रीचंद्रावतीपतिराजकुलश्रीसोमसिंहदेवेन
तथा तत्पुत्र राज० श्रीकान्हडदेवप्रभुसकुमरैः समस्तराजलोकैस्त(*)था श्रीचंद्रावतीयस्थानपति-
मद्वारकप्रभृतिकविलास तथा गूगलीब्राह्मणसमस्तमहाजनगोष्टि(ष्ठि)कैश्च तथा अर्जुदाचलोपरि श्री-
अचलेश्वर श्रीवसिष्ठ तथा संनिहितप्राग्देउलवाडाग्राम-श्रीश्रीमातामहबुग्राम-आबुपग्राम-
ओरामाग्राम-उत्तरछग्राम-सिहरग्राम-सालग्राम-हेठउंजोग्राम-आखीग्राम-श्रीघांघलेश्वरदे-
वीयकोटडीप्रभृतिद्वादशग्रामेषु सतिष्ट(ष्ठ)मानस्थानपतिरपोधन-गुगुलीब्राह्मण-राठियप्रभृतिसमस्तलोकै-
स्तथा मालि-भाडाप्रभृतिग्रामेषु सतिष्ट(ष्ठ)मानश्रीप्रतीहा(*)रवंचीयसर्वराजपुत्रैश्च आत्मीयात्मीय-
स्वेच्छया श्रीनेमिनाथदेवस्य मंडपे ससुपविश्योपविश्य महं० श्रीतेजःपालपार्थात् स्वीयस्वीयप्रमो-
दपूर्वकं श्रीलूणसीहवसहिकाभिधानस्यास्य धर्मस्थानस्य सर्वोऽपि रक्षामारः स्वीकृतः । तदेतदा(*)-
स्मीयवचनं प्रमाणीकुर्बमि(द्वि)रैतैः सर्वैरपि तथा एतदीयसंतानपरंपरया च धर्मस्थानमिदमाचंद्रार्क
यावत् परिरक्षणीयम् ॥ यतः—

किमिह कपाल-कमंडलु-वलकल-सितरक्तपट-जटापटलैः ।

व्रतभिदमुज्ज्वलमुन्नतमनसां प्रतिपन्ननिर्घहणं ॥ १ ॥ छ ॥ (*-)

तथा महाराजकुलश्रीसोमसिंहदेवेन अस्यां श्रीलूणसिंहवसहिकायां श्रीनेमिनाथदेवाय पूजां-
गमोगार्थं वाहिरह्वां डवाणीग्रामः शासनेन प्रदत्तः ॥ स च श्रीमोमसिंहदेवान्यर्थनया प्रमारा-
न्वयिमिराचंद्रार्कं यावत् प्रतिपाल्यः ॥ २ ॥ (*)

सिद्धक्षेत्रमिति प्रसिद्धमहिमा श्रीपुंडरीको गिरिः,

श्रीमान् रवंतकोऽपि विश्वविदितः क्षेत्रं विमुक्तेरिति ।

गूजं क्षेत्रमिदं द्वयोरपि तयोः श्रीअर्जुदस्तत्प्रभु,

भेजाते कथमन्यथा सममिमं श्रीआदि-नेमी स्वयम् ?

॥ २ ॥

संसारसर्वस्वमिहैव मुक्तिसर्वस्वमप्यत्र जिनेशदृष्टं ।

विलोभ्यमाने भवने तवास्मिन्, पूर्वं परं च त्वयि दृष्टिपांथे

॥ ३ ॥

श्रीकृष्णर्षीयश्रीनयचंद्रधरैरिमे ॥

सं० सरवणपुत्र सं० सिंहराज साधू साजण सं० सहसा-साहदेपुत्री 'सुनयव' प्रणमति
॥ शुभम् ॥

(६६)

- (१) ॥ ॐ ॥ स्वस्ति ॥ सं० १२९६ वर्षे वैशाख शुदि ३ श्रीशत्रुंजयम-
- (२) हातीर्थे महाभायश्रीतेजपालेन कारितमंदीसरवर-
- (३) पश्चिममण्डपे श्रीआदिनाथविं देवकुलिका दंडक-
- (४) लसादिसहिता । तथा इहैव तीर्थे महं [०] श्रीवस्तुपालका-
- (५) रितश्रीसत्यपुरीयश्रीमहावीरविं खचकं च । इहि(है)व
- (६) तीर्थे शैलमयविं द्वितीयदेवकुलिकामध्ये खचक-
- (७) द्वय श्रीऋषभादिचतुर्विंशतिका च । तथा गूढमण्डपपूर्वद्वा-
- (८) रमध्ये खचकं मूर्तियुग्मं तदुपरे श्रीआदिनाथविं श्री-
- (९) उज(ज्ज)यंते श्रीनेमिनाथपादुकामंडपे श्रीनेमिनाथवि-
- (१०) वं खचकं च । इहैव तीर्थे महं [०] श्रीवस्तुपालकारितश्री-
- (११) आदिनाथस्याग्रत(तो) मंडपे श्रीनेमिनाथविं खचकं च ।
- (१२) श्रीअर्बुदाचले श्रीनेमिनाथचैत्यजगत्यां देवकुलि-
- (१३) काद्वयं पदविंसहितानि ॥ श्रीजावालपुरे श्रीपा-
- (१४) र्श्वनाथचैत्यजगत्यां श्रीआदिनाथविं देवकुलिका
- (१५) च । श्रीतारणगढे श्रीअजितनाथगूढमंडपे श्रीआ-
- (१६) दिनाथविं खचकं च ॥ श्रीअणहिल्लपुरे हथीयावापी-
- (१७) प्रत्यासन्न श्रीसुविधिनाथविं तच्चैत्यजीर्णोद्वारं च ॥
- (१८) वीजापुरे देवकुलिकाद्वयं श्रीनेमिनाथविं श्रीपा-
- (१९) र्श्वनाथविं च । श्रीमूलप्रासादे कवलीखचकद्वये
- (२०) श्रीआदिनाथ श्रीमुनिसुव्रतस्वामिं च ॥ लाटाप-
- (२१) ल्यां श्रीकुमरविहारजीर्णोद्वारे श्रीपार्श्वनाथस्याग्र-
- (२२) त(तो) मंडपे श्रीपार्श्वनाथविं खचकं च । श्रीप्रह्लादनपु-
- (२३) रे पाल्हविहारे श्रीचंद्रप्रभस्वामिमंडपे खचक-
- (२४) द्वयं च । इहैव जगत्यां श्रीनेमिनाथस्याग्रत(तो) मंडपे
- (२५) श्रीमहावीरविं च । एतत् सर्वं कारितमस्ति ॥ श्रीनाग-
- (२६) पुरीयवरदुडीया साहु नेमडसुत सा० राहड ।
- (२७) सा० जयदेव भा० सा० सहदेव सत्पुत्र संघ० सा०
- (२८) खेटा भा० गोसल सा० जयदेव सुत सा० वीरदे-

- (२९) व देवकुमार हाल्य सा० राहड सुत सा० जिणचंद्र
 (३०) घणेश्वर अमयकुमार लघुआवृ सा० लाहडेन
 (३१) निजकुटुंबसमुदायेन इदं कारितं । प्रतिष्ठितं
 (३२) श्रीनागेंद्रगच्छे श्रीमदाचार्यविजयसेनसूरिभिः ॥
 (३३) श्रीजावालिपुरे श्रीसौवर्णगिरौ श्रीपार्श्वनाथजगत्यां
 (३४) अष्टापदमध्ये सप्तकद्वयं च ॥ लाटापर्यां श्रीकुमारवि-
 (३५) हारजगत्यां श्रीअजितस्वामिविंबं देवकुलि-
 (३६) का दंड-कलससहिता । इहैव चैत्ये जि-
 (३७) नयुगलं श्रीशांतिनाथ श्रीअजितस्वामि ।
 (३८) एतत् सर्वं कारावि(पि)तं ।
 (३९) श्रीअणाहिल्लपुरप्रत्यासन्न चारोपे
 (४०) श्रीआदिनाथविंबं प्रासादं गूढमंड-
 (४१) पं छ चउकिया सहितं सा० राहड-
 (४२) सुत सा० जिणचंद्र भार्या सा० चाहि-
 (४३) णिकुशिसंग्रहेन संघ सा० दे-
 (४४) वचंद्रेण पिता माता आत्मश्रेयो-
 (४५) र्थं कारापितं ॥ छ ॥

(६७)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे श्रीमत्पत्तनवास्तव्य प्राग्वाटजातीय श्रीचंडप श्रीचंड-
 प्रसाद श्रीसोम महं० श्रीआसरासुतश्रीमालदेव महं० (*) श्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्री-
 तेजपालेन महं० श्रीवस्तुपालभार्यायाः मह० श्रीसोसुकायाः पुण्यार्थं श्रीसुपार्श्वजिनालंकृता देव-
 कुलिकेयं कारिता ॥ छ ॥ छ ॥

(६८)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे श्रीपत्तनवास्तव्य प्राग्वाटजातीय श्रीचंडप श्रीचंड-
 प्रसाद श्रीसोम महं० श्रीआमरासुतश्री(*)मालदेव महं० श्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्री-
 तेजपालेन महं० श्रीवस्तुपालभार्यालतादेविश्रेयोऽर्थं देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥ छ ॥

(६९)

दं० ॥ संवत् १२८८ वर्षे श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद श्रीसोम महं० श्रीआसरांगज महं०
 श्रीवस्तुपालसुत महं० श्रीजयतसीहश्रेयोऽर्थं (*) महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥

दं० [॥] श्रीसुवधिनाथस्य कल्या०

फाल्गुन वदि ९ च्यवन

(७०)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद श्रीसोम महं० श्रीआसरांगज महं० श्रीतेजपालेन श्रीजयतसीहमार्याजयतलदेवि [*] श्रेयोऽर्थं देवकुलिका कारिता ॥

(७१)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटजातीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद श्रीसोम महं० श्रीआसरांगज महं० श्रीतेजपालेन श्रीजयतसीहमार्यामहूवदेवि(*)श्रेयोऽर्थं देवकुलिका कारिता ॥

(७२)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटजातीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद श्रीसोम महं० श्रीआसरान्वयसमुद्भव महं० श्रीतेजपालेन महं० श्रीजयतसी(*)हमार्या महं० श्रीरूपादेवि-श्रेयोऽर्थं देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥

(७३)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोम महं० श्रीआसरान्वये महं० श्रीमालदेवसुताश्रीमहजलभयोऽर्थं महं० श्रीतेजपालेन दे(*)वकुलिका कारिता ॥ छ ॥

(७४)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटजातीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोम महं० श्रीआसरान्वये महं० श्रीमालदेवसुताबाईश्रीसदमलभयो(*)ऽर्थं महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥

(७५)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटजातीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोम महं० श्रीआसरान्वये महं० श्रीमालदेवसुत महं० श्रीपुंनमीहीपमा(*)र्या महं० श्रीआल्हण-देविश्रेयोऽर्थं महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥

(७६)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटजातीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमा-न्वये महं० श्रीआमरासुत महं० श्रीमालदेवीपमार्या महं० श्रीपातृश्रेयोऽर्थं महं० श्रीतेजपालेन देवकुलि(*)का कारिता ॥

(७७)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटजातीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमा-न्वये महं० श्रीआमरासुत महं० श्रीमालदेवीपमार्या महं० श्रीतील्लूश्रेयोऽर्थं महं० श्री(*)-तेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥

(७८)

१०० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटवंशीय श्रीचंडप, श्रीचंडप्रसाद महं०, श्रीसोम महं० श्रीआसरा महं० श्रीमालदेवान्वये महं० श्रीपुंनसीहसुत महं०, श्रीपेयडश्रेयोऽर्थं महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥

(७९)

१०० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटवंशीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये महं० श्रीमालदेवसुत महं० श्रीपुंनसीहश्रेयोऽर्थं महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥ छ ॥

(८०)

१०० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटवंशीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये महं० श्रीआसरासुत महं० श्रीमालदेवश्रेयोऽर्थं तत्सोदरलघुभ्रातृ महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥

(८१)

१०० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटवंशीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोम महं० श्रीआसरा महं० श्रीमालदेवान्वये महं० श्रीपुंनसीहसुताबाईश्रीवलालदेविश्रेयोऽर्थं महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥

(८७)

संवत् १२९० वर्षे प्राग्वाटवंशीय महं० श्रीसोमान्वये महं० श्रीतेजपालसुत महं० लूणसीहभार्यारिचणादेविश्रेयोऽर्थं महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥ शुभं भवतु ॥

(८८)

१०० ॥ संवत् १२९० वर्षे महं० श्रीसोमान्वये महं० श्रीतेजपालसुत महं० श्रीलूणसीहभार्या महं० श्रीलपमादेविश्रेयोऽर्थं महं० तेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥

(८९)

१०० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२९० वर्षे श्रीपत्तनवास्तव्य प्राग्वाटवंशीय महं० श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये महं० श्रीआसरासुत महं० श्रीमालदेवभ्रातृ महं० श्री(*)-वस्तपालपोखुज महं० श्रीतेजपालेन स्वकीयभार्या महं० श्रीअनुपमदेविश्रेयोऽर्थं देवश्रीमुनि-सुप्रतदेवस्य देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥

(९०)

श्रीनृपविक्रमसंवत् १२९० वर्षे प्राग्वाटजातीय महं० श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद श्रीसोम महं० श्रीआसरावन्मसमुद्भव महं० श्रीतेजपालेन स्वसुतापलदेविश्रेयोऽर्थं देवकुलिका कारिता ॥

(९१)

संवत् १२९० वर्षे प्राग्वाटज्ञातीय महं० श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद श्रीसोम श्रीआसरा-
न्वयसमुद्भूत महं० धीतेजपालेन स्वसुतश्रीलूणसीहसुतागउरदेविश्रेयोऽर्थं देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥

(९४)

॥ दे० ॥ स्वस्ति श्रीविक्रमनृपात् सं० १२९३ वर्षे चैत्र वदि ८ शुके अघेह श्रीअर्बुदाचल-
तीर्थे स्वयंकारितश्रीलूणसीहवसहिकाख्यश्रीनेमिनाथदेवचैत्ये जगत्यां श्रीप्राग्वाटज्ञातीय ठ०
चंडप ठ० श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये श्रीआसराज-भार्याश्रीकुमारदेव्योः सुत महं०
श्रीमालदेवसंधपतिश्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्रीतेजःपालेन स्वमगिन्या चाईझालहणदेव्याः
श्रेयोऽर्थं विहरमानतीर्थंकरसीमंघरस्वामिप्रतिमालंक्रता देवकुलिकेयं कारिता प्रतिष्ठिता श्रीनागेंद्र-
गच्छे श्रीविजयसेनसूरिमिः ॥ छ ॥

(९५)

स्वस्ति श्रीविक्रमनृपात् सं० १२९३ वर्षे चैत्र वदि ८ शुके अघेह धीअर्बुदाचलतीर्थे स्वयं-
कारितश्रीलूणसीहवसहिकाख्यश्रीनेमिनाथदेवचैत्ये जगत्यां श्रीप्राग्वाटज्ञातीय ठ० चंडप ठ०
श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये ठ० श्रीआसराज-भार्याश्रीकुमारदेव्योः सुत महं० श्रीमालदेव-
संधपतिश्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्रीतेजःपालेन स्वमगिनीचाईमाउश्रेयोऽर्थं विहरमानतीर्थंकरश्री-
युगंधरस्वामिजिनप्रतिमालंक्रता देवकुलिकेयं कारिता ॥ छ ॥

(९६)

स्वस्ति श्रीविक्रमनृपात् सं० १२९३ वर्षे चैत्र वदि ८ शुके अघेह श्रीअर्बुदाचलतीर्थे
स्वयंकारितश्रीलूणसीहवसहिकाख्यश्रीनेमिनाथदेवचैत्ये जगत्यां श्रीप्राग्वाटज्ञातीय ठ० चंडप
ठ० श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये ठ० श्रीआसराज-भार्याश्रीकुमारदेव्योः सुत महं० श्री-
मालदेवसंधपतिश्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्रीतेजपालेन स्वमगिन्या[ः] साउदेव्या[वी] श्रेयोऽर्थं
विहरमानतीर्थंकरश्रीबाहुजिनालंक्रता देवकुलिकेयं कारिता ॥ छ ॥

(९७)

स्वस्ति श्रीविक्रमनृपात् सं० १२९३ वर्षे चैत्र वदि ८ शुके अघेह श्रीअर्बुदाचलतीर्थे स्वयं-
कारितश्रीलूणसीहवसहिकाख्यश्रीनेमिनाथदेवचैत्ये जगत्यां श्रीप्राग्वाटज्ञातीय ठ० चंडप ठ०
श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये ठ० श्रीआसराज-भार्याश्रीकुमारदेव्योः सुत महं० श्रीमाल-
देवसंधपतिश्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्रीतेजपालेन स्वमगिन्या चाईघणदेवीश्रेयसे विहरमानतीर्थ-
करश्री[सु]बाहुयिवालंक्रता देवकुलिकेयं कारिता ॥

(९८)

॥ दे० ॥ स्वस्ति धीनृपविक्रमसंवत् १२९३ वर्षे चैत्र वदि ८ शुके अघेह श्रीअर्बुदाचल-
महातीर्थे स्वयंकारितश्रीलूणसीहवसहिकाख्यश्रीनेमिनाथदेव(*)चैत्यजगत्यां श्रीप्राग्वाटज्ञातीय

ठ० श्रीचंडप ठ० श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये ठ० श्रीआसराज ठ० श्रीकुमारदेव्याः सुत महं० श्रीमालदेव । सधप(५)ति महं० । श्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्रीतेजःपालेन स्वभगिन्या वार्दिसोहगायाः श्रेयोऽर्थं शाश्वतजिनरूपभदेवालंकृता देवकुलिका कारि[ता] ॥

(८९९)

॥ दं० ॥ स्वस्ति श्रीनृपविक्रमस(स)वत् १२९३ वर्षे चैत्र वदि ८ शुके अचेह श्रीअर्जुदाचल-
महातीर्थे स्वयंकारितश्रीलूणसीहवसहिकायां श्रीनेमिनाथदेवचैत्ये, जगत्यां (*) ॥ श्रीप्राग्वाट-
ज्ञावी(ती)य ठ० श्रीचंडप ठ० श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये ठ० श्रीआसराज ठ० श्रीकुमार-
देव्योः सुन महं० श्रीमालदेव महं० श्रीवस्तुपालयोरनुज मह० (*) श्रीतेजःपालेन स्वभगिन्या
वार्दिवयलुकायाः श्रेयोऽर्थं श्रीवर्धमानाभिधशाश्वतजिनप्रतिमालंकृता देवकुलिकेयं कारिता ॥ शुभं
भवतु ॥ मंगलं महाश्रीः ॥

(१०२)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसवत् १२९३ वर्षे चैत्र वदि ७ अचेह श्रीअर्जुदाचलमहातीर्थे स्वय-
कारितश्रीलूणसीहवसहिकायां श्रीनेमिनाथदेवचैत्ये जगत्यां महं० श्रीतेजःपालेन (*) मातुलसुत
भामा राजपालभणितेन स्वमातुलस्य महं० श्रीपूजपालस्य तथा भार्या महं० श्रीपूजदेव्याश्च
श्रेयोऽर्थं अस्या देवकुलिकायां श्रीचंद्राननदेवप्रतिमा कारिता ॥

(१०३)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२९३ चैत्र वदि ७ श्रीअर्जुदाचलमहातीर्थे प्राग्वाटज्ञातीय ठ०
श्रीचंडप ठ० श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये ठ० श्रीआसराजसुत(*) महं० श्रीमालदेव
महं० श्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्रीतेजःपालेन स्वभगिन्याः पञ्चलायाः श्रेयोऽर्थं श्रीवारिसेणदेवा-
लंकृता देवकुलिकेयं कारिता ॥

(११०)

संवत् १२९७ वर्षे वैशाख वदि १४ गुरौ प्राग्वाटज्ञातीय चंडप चंडप्रसाद महं० श्री.....
.....रा सुतायाः ठकुराजीसंतोपाकुक्षिसंभूताया
महं० श्रीतेजःपालद्वितीयभार्या महं० श्रीसुहृडादेव्याः श्रेयोऽर्थं एतत् त्रिगदेवकुलिकासत्तक
श्रीश्रंतिनाथविंबेच कारितं ॥ छ ॥

(१११)

संवत् १२९७ वैशाख सुदि १४ गुरौ प्राग्वाटज्ञातीय चंडप चंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये

महं० श्रीआसराजसुत महं० श्रीतेजःपालेन श्रीमत्पचनवास्तव्यमोदनातीय ठ० झाल्हण सुत
ठ० आसासुताया ठकुराजीसंतोपाकुशिसंभूताया महं० श्रीतेजःपालद्वितीयभार्या महं० श्रीसुहृडा-
देव्याः श्रेयो.....

(१३१)

- (प्रथमहस्ती) [महं० श्रीचंडप ।]
 (द्वितीयहस्ती) [महं० श्रीचंडप्रसाद ।]
 (तृतीयहस्ती) महं० श्रीसोम ।
 (चतुर्थहस्ती) महं० श्रीआसराज ।
 (पंचमहस्ती) [महं० श्रीलूणिग ।]
 (षष्ठहस्ती) [महं० श्रीमल्लदेव ।]
 (सप्तमहस्ती) [महं० श्रीवस्तुपाल ।]
 (अष्टमहस्ती) [महं० श्रीतेजःपाल ।]
 (नवमहस्ती) [महं० श्रीजैत्रसिंह ।]
 (दशमहस्ती) [महं० श्रीलावण्यसिंह ।]

- (१ हस्तिशृष्टमार्गे) { १ आचार्यश्रीउदयसेन । २ आचार्यश्रीविजयसेन ।
 ३ महं० श्रीचंडप । ४ महं० श्रीचापलदेवी ।
 (२ " ") १ महं० श्रीचंडप्रसाद । २ महं० श्रीवामलदेवी ।
 (३ " ") १ महं० श्रीसोम । २ महं० श्रीसीतादेवी ।
 (४ " ") १ महं० श्रीआसराज । २ महं० श्रीकुमारदेवी ।
 (५ " ") १ महं० श्रीलूणिगदेव । २ महं० श्रीलूणादेवी ।
 (६ " ") १ महं० श्रीमालदेव { २ महं० श्रीलीलादेवी ।
 ३ महं० श्रीप्रतापदेवी ।
 (७ " ") १ महं० श्रीवस्तुपाल { २ महं० श्रीललितादेवी ।
 ३ महं० श्रीचिजलदेवी ।
 (८ " ") १ महं० श्रीतेजःपाल । महं० श्रीअनुपमदेवी ।
 (९ " ") १ महं० श्रीजयतसिंह । महं० श्रीजयतलदेवी ।

(१० " ")

॥ { १ महं० श्रीलावण्यसिंह । २ महं० श्रीरूपादेवी ।
 { १ महं० श्रीसुहृदसीह । २ महं० श्रीसुहृदादेवी ।
 { ३ महं० श्री सलखणदेवी । . . . ()

(२४२)

सं० १२७८ वर्षे फाल्गुण वदि ११ गुरौ श्रीमत्पचनवास्तव्य प्राग्वाटज्ञातीय ठ० श्री-
 चंडेशानुज ठ० मृमाकीयानुज(?) ठ० श्रीआसराजतनुज महं० श्रीमालदेवश्रेयसे सहोदर
 महं० श्रीवस्तुपालेन श्रीमछिनाथदेवखचकं कारितमिदमिति । मंगलं महाश्रीः ॥ शुभं भवतु ॥



(३)

श्रीतारणदुर्गस्थः शिलालेखः ।

(५४३)

द० ॥ स्वस्ति श्रीविक्रमसंवत् १२८५ वर्षे फाल्गुण शुदि २ रवौ । श्रीमद्गणहिलपुरवास्तव्य
 प्राग्वाटान्वयप्रसूत ठ० श्रीचंडपाल्मज ठ० श्रीचंडप्रसादांगज ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीआशा-
 राजनन्दनेन ठ० कु(*).मारदेवीकुक्षितभूतेन ठ० श्रीलृणिग महं० श्रीमालदेवयोरनुजेन महं०
 श्रीतेजःपालामजन्मना महामात्यश्रीवस्तुपालेन आत्मनः पुण्याभिवृद्धये इह श्रीतारंगकपर्वते
 श्रीअजितस्यामिदेवचैत्ये श्रीआदिनाथदेवजिनविगलंकृतं स्वतकमिदं कारितं । प्रतिष्ठितं श्री-
 नामेन्द्रगच्छे महारकश्रीविजयसेनसरिभिः ॥



(४)

श्रीशत्रुंजयपद्या(पाज)शिलालेखः ।



- (१) [श्रीमद्गणहिलपचन] वास्तव्य प्राग्वाटान्वय-
 (२) [प्रसूत ठ० श्रीचंडतनुज] ठ० श्रीचंडप्रसादां-
 (३) [गज ठ० श्रीमोमपुत्र] ठ० श्रीआशाराजनं-

- (४) [दनेन ठ० श्रीदृणिग ठ०] श्रीमालदेव संपप-
 (५) [ति महं० श्रीवस्तुपालानु] ज महं० श्रीतेजःपाले-
 (६) [न श्रीशुंजयतीर्थे] संचारपात्रा कारिता ॥

(५)

अणाहिलपत्तनान्तर्गताः शिलालेखाः ।

(१)

॥ सं० १२८४ वर्षे ॥

विश्वानंदकरः सदा गुरुचिर्जीमूतलीलां दधौ,

सोमश्चरुपवित्रचित्रविकसद्देवशर्मोन्नतिः ।

चक्रे मार्गणपाणिशुक्तिवुहरे यः स्वातिवृष्टिचित्रै-

मुक्तैर्भौक्तिकनिर्मलं शुचि यशो दिक्कामितिमंडनम्

॥ १ ॥

युक्तं.....सोमसचिवः कुंदेदुशुभ्रैगुणै-

रिदः सिद्धनृपं विमुच्य मुकृती चक्रे न कंचिद्विमुम् ।

रंगदुमंगमदप्रदच्छदमदः श्रीसन्न पद्मं किमु,

सोह्यासाय विहाय भास्करमहस्तेजोन्तरं बांछति

॥ २ ॥

पर्वणैषीदसौ सीतामविधामित्रसंगतः ।

अमृत्रितमहाधर्मलापवो राघवोऽपरः

॥ ३ ॥

(२)

सं० १२८४ वर्षे श्रीमत्पत्तनपास्तव्य प्राग्वाट ठ० श्रीचंडप्रसाद सुत ठ० श्रीसीमः ॥

(३)

सं० १२८४ वर्षे श्रीमत्पत्तनवास्तव्य प्राग्वाट ठ० श्रीपूनसीह सुत ठ० आत्हणदेवी
 कुम्भिः ठ० पेशहः ॥

(४)

सं० १३५२ वर्षे कार्तिक सु० ११ गुरु सं० पेशट सुत सं महाकेन परपरसमेत
 सुरती ऋगति ॥

(६)

अर्बुदाचलगतौ अत्रशिष्टौ शिलालेखौ

(१-२५६)

दं० ॥ सं० १२८७ वर्षे चैत्र वदि ३ शुके महं० श्रीवस्तुपाल महं० श्रीतेजःपालाः ॥
य [ः] पूर्षजपुण्याय अस्मिन्नर्बुदगिरौ श्री

(२-२६०)

नृपविक्रमसंवत् १२८७ वर्षे फाल्गुण सु(व)दि ३ सोमे(रवौ) अयेह श्रीअर्बुदाचले श्री-
मदनहिलपुरवास्त० प्राग्वाटशतीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये महं० श्री-
आसरासुत महं० मालदेव महं० श्रीवस्तुपालयोरनुज भ्राष्ट्र महं० श्रीतेजःपालेन स्वकीयभार्या
महं० श्रीअनुपमदेवीकुक्षिसमूत सुत महं० श्रीलूणसौहृपुण्यार्थं अस्यां श्रीलूणवमहिकायां श्रीनेमि-
नाथमहातीर्थे कारितं ॥ छ ॥ छ ॥

(श्रीजयंतविजयजीसंगृहीत श्रीअर्बुद-प्राचीन-जैन-लेखसंदोह)

(७)

स्तम्भतीर्थीय-श्रीआदीश्वरमन्दिरगतः शिलालेखः

(१) ॐ नमः श्रीसर्वज्ञाय ॥

धीराः सत्त्वमुग्रान्ति यन्निमुवने.....नेति श्रुतं,

साहित्योपनिष[नि](२)पणमनसो यत्प्रातिभं मन्वते ।

सार्धजं च यदामनेति पुनयस्तर्किचिदत्यद्भुतं,

ज्योतिर्द्योतितवि(२)दृषं वितनुतां मुक्तिं च मुक्तिं च वः ॥ १ ॥

श्रीमद्गुर्जरचक्रवर्तिनगरप्रासमतिष्टोऽजनि,

प्राग्वाटाद्वयर(४)म्यवंशविलसन्नुक्तामणिश्रंढपः ।

यः संपाप्य समुद्रतां किल दधौ राजप्रसादोह्यम-

द्विक्कलंकप(५)कीर्तिशुभ्रलहरिः श्रीमंतमंतर्जिनं

॥ २ ॥

अजनि रजनिजानिग्योतिर्योतिकीर्तिम्बिजगति तनुज(६)न्मा तस्य चंडप्रसादः ।

नममणिसमश[ईः सुंद]रः पाणिपथः, कमकृण न कृताथै अत्य कल्पद्रुकल्पः(७) ॥ ३ ॥

पत्नी तस्याजायतात्यायताक्षी, मूर्त्तेश्च श्रीः [पुण्य]पात्रं जयश्रीः [१]

अजे ताम्याममिमः धरसंज्ञः, पुत्रः धी(८)मान् सोमनागा द्वितीयः

॥ ४ ॥

- निर्माप्याऽऽदिजिनेन्द्रविबमसम शेषत्रयोविंशति
 श्रीजैनप्रतिमाविराजि(९)तमसावभ्यच्चितु वेदमनि [1]
- पूज्यश्रीहरिमद्रसुरिसुगुरो [पाश्चात् म] तिष्ठाप्य च,
 स्वस्याऽऽत्मीयकुलस्य चा [क्ष] (१०) यमय श्रेयोनिधान व्यघात् ॥ ५ ॥
- असात्राशाराजं तनुनमपर सोमसचिव,
 प्रियाया सीताया शुचिच(११)रितवत्यामजनयत्
 [यशोभि] भिर्जगति विशदे क्षीरजलधौ,
 निवासैकपीतिमुदममजदि(१२)दु प्रतिपद ॥ ६ ॥
- श्रीरैवते निर्मितसप्तयात्र, [केनोपमानस्त्रिह] सोऽश्वराजः ।
 कलकशकामुपमान(१३)मेव, पुण्यात्यहो यस्य यश शशाके ॥ ७ ॥
- अनुजोऽप्यापि सुमनुजस्त्रिभुवनपालस्तथा स्वसा केली ।
 (१४)आशाराचनम्याजनि, जाया च कुमारदेवीति ॥ ८ ॥
- तस्यामूचनयास्तया(य) प्रथमक श्रीमल्लदेवोऽपर
 श्व(१५)चच्चडमरीचिमडलमहा श्रीमस्तुपालस्तत ।
 तेजःपाल इति प्रसिद्धमहिमा विश्वेऽत्र तुर्य स्फुर-
 चा(१६)तुर्य समजायतायतमति पुत्रोऽश्वराजादसौ ॥ ९ ॥
- श्रीमल्लदेवपौत्रो, लील्लुत्तपुण्यसिंहतनुज(१७)मा ।
 आल्लुहणदव्या जात, पृथ्वीसिंहास्तयाऽस्ति विख्यात ॥ १० ॥
- श्रीवस्तुपालसचिवस्य गेहिनी देहिनीव गृ(१८)हलक्ष्मी ।
 विशदतरचिचवृत्ति, श्रीललितादेविसजाऽस्ति ॥ ११ ॥
- सीताशुप्रतिवीरपीवरयशा विश्वेऽत्र (१९)पुत्रस्तयो
 विख्यात प्रसरदुणो विन[यते श्रीजैत्रसिं]हः कृती ।
 लक्ष्मीर्यत्करपक्वप्रणयिनी हीनाश्रयोत्थेन सा,
 (२०)वायश्चित्तमिवाचरत्यहरह स्नानेन दानामसा ॥ १२ ॥
- अनुपमदेव्या पत्न्या, श्रीतेज.पालसचिवतिलकस्य [1]
 (२१)लावण्यसिंहनामा, धाम्नो धामाऽयमात्मजो जजे
 नाम्बन् कति नाम सति कति ते नो वा भविष्यन्ति के [1] ॥ १३ ॥
- वे(२२)जु षापि न कोऽपि सचपुरुष श्रीरस्तुपालोपम ।
 पुण्याच्च महेश्वरनिशमहो सर्वाभिसारोद्धरो,
 येनाय वि(२३)जित कलिर्विदपता तीर्थेश्वरानोत्सव ॥ १४ ॥

लक्ष्मीं धर्मांगयोगेन, स्थेयसीं तेन तन्वता [1]

पौषघालयमा.....(२४)निर्ममेन विनिर्ममे

॥ १५ ॥

श्रीनागेंद्रमुनींद्रगच्छतरणिर्जेन महेंद्रप्रभोः, षष्टे पूर्वमपूर्ववाह्यनि(२५)धिः श्रीशांतिघुरिर्गुरुः [1]

आनंदामरचंद्रसुरियुगलं तस्मादमृतत्पदे, पूज्यश्रीहरिभद्रसुरिगुरवोऽमृध्वन् मु(२६)नो मृषणं ॥१६॥

तत्पदे विजयसेनसरयस्ते जयंति मुवनैकभूषणं [1]

ये तपोज्वलनभूविमृतिभिस्तेजयं(२७) ति निजकीर्त्तिदर्पणं

॥ १७ ॥

स्वकुलगुरु....., पौषघशालामिमामाल्येंद्रः । पित्रोः पवित्रहृदयः, पुण्यार्थं(२८) कल्पयामास ॥१८॥

वाग्देवतावदनवारिजमित्रसामर्द्धराज्यदानकलितोरुयशःपताकां [1]

चक्रे गुरोर्विज(२९)यसेनमुनीश्वरस्य, शिष्यः प्रशस्तिमृदयप्रमसुरिरेनां ॥ १९ ॥

सं० १२८१ वर्षे महं० श्रीवस्तुपालेन कारितपौषघ(३०)शालास्यधर्मस्थानेऽस्मिन् ऋष्टि

राजदेवसुत श्रे० मयधर । भां० सोमा उ भां० घारा । व्यव० वेला उ वीकल । श्रे० पूना

(३१)सुत बीजा वेडी० उदेयपाल उ आसपाल मां० आल्हण उ गुणपाल एतैर्गोष्ठिकत्वमर्गाङ्गनं ।

एभिर्गोष्ठिकैरस्य धर्मस्थानस्य(३२).....स्तंभतीर्थेऽत्र कायस्थवंशे वाज.....ऽभिन्वि.

मिह च ठ० सू०.....[जैत्र] मिह ध्रुव.....कुमरसिंहनेत्कीर्णां ॥

(एनाल्स ऑफ घी भाण्डारकर ओरिफण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना
वॉ० ९, एष्ट १७७ लेख १)

(८)

गणेशरघामगतः शिलालेखः

(१) ॥ ९० ॥ स्वस्ति ॥ संवत् १२९१ वर्षे वैशाख शुदि १४ गुरो श्रीमदृणहिलपुराकल्प

प्राग्वाट व० (ठ०) श्रीचंडपालज [चं](२)उप्रमादांगज ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीशान्नागत्र-

तनुजन्मा ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसमुद्रत ठ० श्रीलूणि[ग](३) महं० श्रीमालदेव [कुमा]मृदु

महं० श्रीतेजःपालामज महामाल्यश्रीवस्तुपालात्मज महं० श्रीजयतमिहें [संभं]।श्रीवैशुदास

सं० ७१ वर्षपूर्णे व्याघ्रवति महामाल्यश्रीवस्तुपाल महं० श्रीतेजःपालाम्यां समस्तमहादेवैः ।

(५)नया अ[न्य]समस्तस्थानेष्वपि कोटिशोऽभिनवधर्मस्थानानि जाणोदाराथ कागिः ॥ २५ ॥

सचिपेधरश्रीवस्तु(६)पालेन आत्मनः पुण्यार्थमिह गाणउलिमामे प्रया श्रीगणेश्वरदेवदेवः पुरा

स्मोरणं तः प्रतोली द्वारा.....(७)त प्राकारश्च कारितः ॥ ० ॥

गांभीर्ये जलधिर्वलिर्वितरणे पूषा प्रतापे स्मरः, सौंदर्ये पुरुषप्रते रघुपतिर्वाचरपरिर्वाच

नैकेऽस्मिसुपमानतामुपगताः मर्वेषु नः संप्रति, प्राप्ता नेस्तुपमेयनां तदधिकश्रीवस्तुसां

.....(९)विद्रग्धमतयस्तुल्यौ कौटिल्य-वस्तुपालौ ।

.....कुर्वते न, कस्मात् कूपारयोः समतां ॥ २ ॥

वदनं वस्तुपालस्य, (१०) कमलं को न मन्यते । यत्सूर्यालोकने स्मे[रं], भवति प्रतिवासरं ॥ ३ ॥

श्रीवस्तुपाल संवति, परमं हतिकर्मक (१) [१]

.....वा(११) भवता निवृत्तिरधिजनेन संघटिता ॥ ४ ॥

तस्मै स्वस्ति चिरं चुलुक्यतिलकामात्याय.....

.....(१२).....कर्मनिर्मलमतिः सौवस्तिकः शंसति ।

राधेयेन विना विना च शिविना य.....(१३).....स्मयं

.....स्व.....गच्छन्ति संतः सदा ॥ ५ ॥

महामात्यश्रीवस्तुपालस्य प्रशस्तिरि[य].....

(एनास्त ऑफ धी भांडारकर ओरिण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना

वॉ० ९ पृष्ठ १८० लेख २)

(९)

नगरग्रामगतः शिलालेखः

(१) ॥ ९० ॥ संवत् १२९२ वर्षे आपाद् शुदि ७ रवौ श्रीनारदमुनिविनिवेशिते श्रीनगरवरमहा-
स्थाने सं० ९०३ वर्षे अ(२)तिवर्षाकालवशादतिपुराणतया च आकस्मिकश्रीजयादित्यदेवीयमहा-
प्रासादपतनविनष्टायां श्रीरत्नादेवीमूर्ती(३) पश्चात् श्रीमत्पत्तनवास्तव्यप्राग्वाट ठ० श्रीचंडपालज
ठ० श्रीचंडप्रसादांगज ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीआशाराजनंद(४)नेन ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसंग्रहेन
महामात्यश्रीवस्तुपालेन स्वभार्यायाः ठ० कान्हडपुत्र्याः ठ० राणुकुक्षिभवा(५)या महं० श्रीललिता-
देव्याः पुण्यार्थमिद्वैव श्रीजयादित्यदेवपत्न्याः श्रीरत्नादेवीमूर्तिरियं कारिता ॥ शुभमस्तु ॥ छ ॥

(एनास्त ऑफ धी भाण्डारकर ओरिण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना

वॉ० ९ पृष्ठ १८२ लेख ३)

(६)

वस्तुपालतीर्थयात्रालेखः

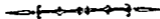
सं० १२४९ वर्षे संघपति स्वपितृ ठ० श्रीआद्याराजेन समं महं० श्रीवस्तुपालेन श्रीत्रिम-
लाद्रौ रैवते च यात्रा कृता । सं० ५० वर्षे तेनैव समं स्थानद्वये यात्रा कृता । सं० ७७ वर्षे स्वयं
संघपतिना मूत्वा स(स्व)परिवारयुतं ९० वर्षे सं० ९१ वर्षे सं० ९२ वर्षे सं० ९३ वर्षे महाविस्तरेण
स्थानद्वये यात्रा कृता । श्रीशत्रुंजये अर्मुन्येव पंच वर्षाणि तेन सहितेन सं० ८३ वर्षे सं० ८४ सं०
८५ सं० ८६ सं० ८७ सं० ८८ सप्त यात्राः सपरिवारेण तेन क्तसेश्रीनेमिनाथाम्बिका-
प्रसादाद्या.....भूता भविष्यति ॥

॥ ॥

(वॉट्सन म्युझियम-राजकोट)

॥ ॥

॥ ॥



दशमं परिशिष्टम्

आचार्य श्रीउदयप्रभधिरचिताया उपदेशमालाकर्णिकाख्यः
विशेषवृत्तेः आद्यन्तगते ।

मङ्गल-प्रशस्ती ।

आदिः—

अहंस्तनोतु सुवनाद्भुतकल्पवृक्षः, श्रेयःफलं निविडबोधसुमप्रसूतम् । ॥ १ ॥
यस्याङ्घ्रिभ्रूलमभितः पतितप्रसूनमायाः सुरा-ऽसुर-नराधिपसम्पदोऽपि ॥ १ ॥
देवः स वः शतमखप्रसुखामरौघकृत्प्रथः प्रथमतीर्थपतिः पुनातु ।
मुक्तिक्रमो न..... ॥ २ ॥

विन्तातीतफलप्रदः स दिशतु श्रेयो युगादिप्रभुर्भुर्जुर्जन्मनि यस्य कल्पतरवः सर्वेऽप्युपादानताम् ।
नेत्थं चेत् कथमन्यथा वसुमतीमस्मिन्नलङ्घुर्वति, त्रैलोक्यैकगुरौ न गोचरममी जग्मुर्जगत्सुपात् ! ॥३॥
तुङ्गेभमीमसितीवतरेण कर्मजातं व्रतेन विनिपात्य भवाटवीपु ।
मुक्तावलिश्रियमशिश्रियदात्म..... ॥ ४ ॥

लीलासञ्चरणं च नूपुररणत्कारश्रियं च स्वयं, बोद्धुं साधु निषेव्यते खगकुलोचसेन हंसेन या ।
किञ्जल्कप्रसनप्रसक्तमनसस्तस्यैव हेतोः करे, कुर्वाणा कमलं सतां भवतु सा ब्राह्मी परब्रह्मणे ॥ ५ ॥
जौयाद् विजयसेनस्य, प्रभोः प्रातिभदर्पणः । प्रतिविम्बितमात्मानं, यत्र पश्यति भारती ॥ ६ ॥
संपस्याद्भुतपुण्यपण्यविपणौ सा मा..... ।

.....पदेशपद्धतिरसौ सा प्रातराशायते ॥ ७ ॥
गाथास्ताः खलु धर्मदासगणिनः सज्जातरूपश्रियः, किञ्चैप स्फुरदर्थरत्नानिकरः सिद्धार्थिगैवार्पितः ।
तेनैतामतिबुधसंस्कृतमयीमातन्वतः कर्णिकां, वृधि मेऽत्र सुवर्णकारपदवीसीमाश्रमश्चिन्त्यताम् ॥ ८ ॥
यतः—

.....यथाविधिस्तवकघटनादुज्जृम्भते यथासि तु शिल्पिनः ॥ ९ ॥

अन्तगता प्रशस्तिः—

कमठघनमृताम्भोराशिसंवासिसर्पापिपतिकलितमूर्तिर्नीलनालीककान्तिः ।
सितरुचि-रविराजहोचनः केवलश्रीपरिचयचतुरात्मा श्रीजिनो वः श्रियेऽस्तु ॥ १ ॥

१ पद्यमिदं मुकूतकीर्तिवज्रोत्थिन्यां प्रथमराटरूपेणापि वर्तते ॥ २ पद्यमिदं मुकूतकीर्तिकोत्थिन्या सप्तमपद-
तयाऽपि वर्तते ॥ ३ पद्यमिदं धर्मान्युदयमहाकाव्ये प्रथमसर्गे चतुर्दशपद्येनापि वर्तते ॥

श्रीवर्धमानः शमिनां मनांसि, जिनो विनोतु त्रिपदी यदीया ।

व्यामोति विश्वं बलिघात(ति)कर्मजयोदिता विश्वमनधरश्रीः ॥ २ ॥

श्रीवीरशासनमहामहिमागरिष्ठः, श्रीमद्रुचाहुविहिताचरणप्रतिष्ठः ।

काले कलावपि विलुप्तघनाघसङ्घः, श्रीमानयं विजयते यतिमूलसङ्घः ॥ ३ ॥

श्रीनागेन्द्रकुले मुनीन्द्रसवितुः श्रीमन्महेन्द्रप्रभोः, पट्टे पारगतागमोपनिषदां पारङ्गमग्रामणीः ।

देवः संयमदैवतं निरवधिस्त्रिविधवागीश्वरः, सज्जज्ञे कलिकल्मषैरकलुषः श्रीशान्तिस्वरिर्गुरुः ॥ ४ ॥

शक्तिः काऽपि न कापिलस्य न नये नैयायिको नायकश्चार्वाकः परिपाकमुज्झितमतिर्चौद्धश्च नौद्धत्यमाक् ।

स्याद्वैशेषिकशेमुषी च विमुखी वादाय वेदान्तिके, दान्तिः केवलमस्य वक्तुरयते सीमां न मीमांसकः ॥५॥

तत्पट्टे प्रथमः शमिप्रभुरमृदानन्दस्वरिः परः, सज्जज्ञेऽमरचन्द्रस्वरिरखिलानुचानचूडामणिः ।

शश्वद् यस्य सरस्वतीप्रसरणे सिद्धेशितुः संसदि, प्राज्ञैश्चेतसि वेतसीतरुरसावाचार्यकं कार्यते ॥ ६ ॥

सिद्धान्तोपनिषन्निषण्णहृदयो धीजन्मभूस्तत्पदे,

पूज्यः श्रीहरिभद्रस्वरिभवाचारित्रिणाभगणीः ।

आन्वा शून्यमनाश्रयैरतिचिराद् यस्मिन्नवस्थानतः,

सन्तुष्टैः कलिकालगौतम इति ख्यातिर्वितेने गुणैः ॥ ७ ॥

गुरुः श्रीहरिभद्रोऽयं, लेभेऽधिकवयःस्थितिम् । मोहद्रोहाय चारित्रनुपनासीरवीरताम् ॥ ८ ॥

तत्पदे विजयसेनसूरयः, पूरयन्ति कृतिनां मनोरथान् ।

तद्रुची घृणमसूत नूतना, कामधेनुरिव सर्वकामदम् ॥ ९ ॥

गर्वात् पूर्वमनादैरैरवहितैः पश्चात् ततो विस्मितैः, प्रस्विन्नैरनुविष्टतामभिरथो वादेऽनुवादे क्षणात् ।

मायैर्मानिमीनिषणां परिणता पुंस्त्वेन वागेप इत्याक्षिप्तैरथ सेव्यतेऽथ सहसा यः सादरं वादिभिः ॥१०॥

यस्योपदेशममृतोपमितं निषीय, श्रीवस्तुपालसचिवेश्वर-तेजपालौ ।

सद्वाधिपत्यमसमं जिनतीर्थतेजःसंवर्धनाञ्जितशतक्रतु चक्रतुस्तौ ॥ ११ ॥

श्रीमद्विजयसेनस्य, सौमनस्यं नमस्यत । यद्वासिता धृताः कैर्न, गुणाः शिष्याश्च मूर्धसु ? ॥ १२ ॥

शिष्यस्तस्य च लक्षणक्षणचणः साहित्यसौहित्यवा-

नुयचर्कवितर्ककर्कशमनाः सिद्धान्तशुद्धातुरः ।

श्रीधर्माभ्युदये कविः प्रविलसहुर्वादिगोत्रे पवि-

स्तामेतामृदयप्रभास्यगणभृद् शृषि व्यपात् कर्णिकाम् ॥ १३ ॥

तस्याऽऽज्ञया विजयसेनमुनीश्वरस्य, शिष्येण सेयमृदयप्रभदेवनाम्ना ।

योग्या विशेषविदुषामुपदेशमालाशृषिः कथामथनतोऽभिनवा वितेने ॥ १४ ॥

प्रथमादर्शं प्रथमानमानसो देवबोधविवुध इमाम् ।

स्थपतिरिव स्थापयिता, गुरुषु नतोऽननुत साहाय्यम् ॥ १५ ॥

• चान्द्रे कुले कलशतः किल सूरिदेवानन्दाप्रशिष्यकनकप्रमधुरिनाम्नः ।
 प्रद्युम्नधुरिरुदितः कवितासमुद्रमुष्टिन्धयोऽम्बुवदशोधयदेप वृत्तिम् ॥ १६ ॥
 उत्तेकितोत्सूत्रनिरूपणाद्यैर्षाऽऽशातना स्यात् तनुकाऽपि काचित् ।
 मिथ्याऽस्तु मे दुष्कृतमत्र साक्षी, श्रीसङ्गमद्वारक एव तीर्थम् ॥ १७ ॥
 एकैकेन विमोहशक्यचरणांश्छित्त्वा कषायानिमाम्,

दीप्ते भानु-कृशानुधामनि मनश्चैकेन हुत्वाऽऽत्मनः ।

मन्त्रस्याष्टशतैरितीह जपितैस्तैः पञ्चभिः सिद्धये,

गाथाभिर्गुरुगुम्फिता विजयते जप्योपदेशावलिः

॥ १८ ॥

करुणाविष्करणादितो विवरणाद् विज्ञाय विज्ञात्मनामाम्नायादुपदेशपद्धतिमिमांसासेवमानो मुदा ।
 लोकाग्रोपरिवर्तिनीममिमुर्सी कुर्वीत वीतान्यधीवृत्तिर्निर्वृतिदेवतां शिवपुरीसाम्राज्यकामः कृती ॥ १९ ॥
 तत्त्वोदित्वरसप्तगुमिकमहासादराजाङ्गणं, यावद् भाति जगद्गुरोर्मगवतः तीर्थेशित्तुः शासनम् ।
 तावच्छावक-साधुधर्मविजयस्तम्भद्वयालम्बिनी, वृत्तिर्वन्दनमालिका विजयतां तत्रोपदेशसजः ॥ २० ॥

सेयं पुरे धवलके नृपवीरवीरमन्त्रीशुपुण्यवसतौ वसतौ वसद्भिः ।

वर्षे अह-अह-रवौ कृंतमौर्कसंज्ञैः, श्लोकैर्विशेषविश्रुतिर्विहिताऽद्भुतश्रीः

॥ २१ ॥

इत्याचार्यश्रीउद्यमप्रमदेवसङ्घटितायामुपदेशमालायाः कार्णिकायां विशेषवृत्तौ तृतीयः परिवेशः
 सम्पूर्णः ॥ अं० ३७१४ । एतावता च सम्पूर्णा उपदेशमालायाः कार्णिकाख्या विशेषवृत्तिरिति ।
 अंथ १२२७४ । छ । छ ॥

एकादशं परिशिष्टम्

गूर्जेश्वरपुरोहितश्रीसामेश्वरदेवविरचितस्य सुरधोत्सवमहाकाव्यस्य
महामात्यश्रीवस्तुपालवंशवर्णनादिप्रतिषद्भिः
प्रशस्तिरूपः पञ्चदशः सर्गः ।

अस्ति प्रशस्ताचरणप्रधानं, स्थानं द्विजानां नैगरामिधानम् ।
कर्तुं न शक्नोति कदाऽपि यस्य, त्रेतापवित्रस्य कलिः कलङ्कम्
सत्तीर्थस्य सुराश्रितेन जगता यस्योपमा स्यात् कथं, ॥ १ ॥
स्वाध्यायैकनिघेर्गतश्चैतितृतेनोर्वीतलेनापि वा ? ।
यत्सौधेषु विशुद्धिवर्जितवपुर्वालोऽपि नाऽऽलोक्यते,
वन्दे श्रीनगरं तदेतदखिलस्थानातिरिक्तोदयम्
हृतनयनसुलैर्मखाभिधूमैः, श्रुतिकटुभिर्वडुघृन्दवेदपाठैः । ॥ २ ॥
कलिरकलितसम्भदः प्रदत्ते, न सल्ल पदं विदुषां गृहेषु यत्र
चञ्चत्पञ्चमखाभिभ्रमतमसि स्थाने त्रिनेत्रानल- ॥ ३ ॥
ज्वालाप्रज्वलितप्रसूनधनुषा देवेन दत्तोदये ।
श्रीमक्षां च पवित्रतां च परमामालोक्यन्तः सुराः,
स्वर्वासेऽप्यरसा रसामरजनग्न्याजेन मेजुः स्थितिम्
तस्मै संयमिनामिनोय मुनये नित्यं नमस्कुर्महे, ॥ ४ ॥
यन्माहात्म्यमसह्यमाह स गुरुर्गुह्यमनाः कौशिकः ।
आविर्भूतममृतपूर्वचरितश्रेष्ठाद् वशिष्ठात् ततः,
सत्कर्मोद्धरमैध्वरस्थितिविदा स्थानेऽत्र गोत्रं महत्
येषामशेषाधिपतिः प्रसन्नः, सल्लपपाणिः प्र(फ)णिकङ्कणेन । ॥ ५ ॥
त एव सन्मृतिमिहाभ्रुवन्ति, [कुले] गुलेचा(वा)णिभया प्रसिद्धे
श्रीसौलशर्मा विमले कुलेऽत्र, जन्म द्विजन्मप्रवरः प्रपेदे । ॥ ६ ॥
यः स्वर्गिणः सोमरसेन यागे, पितृश्च पिण्डैरपृणत् प्रयागे ॥ ७ ॥

१ आनन्दपुरम् ॥ २ देवा, मदिरा च ॥ ३ सर्पा, वेदभ्रष्टाश्च ॥ ४ भूदेवा ॥ ५ स्वामिने,
मर्त्याश्च ॥ ६ कृष्क, विश्वामित्रश्च ॥ ७ यज्ञविद्याविदाश्च ॥ ८ ईश्वरः ॥ ९ 'प्लुव' ख ॥ १० 'गुलेचा'
इति स्थानाकारेण गोप्रस्थावठङ्गमाम प्रतीयते, पर च डॉक्टर-रामकृष्ण-गोपाल-माण्डारकरमहाशयै
१८८१-८४ वर्षीय 'रिपोर्ट' पुस्तके 'गुलेचा' इत्येव पाठ आश्रित ॥

- सोलः सलीलमवनीमवतामसौ वः, सौवस्तिकोऽस्त्विति वरं स्मरता स्मरारेः ।
 श्रीगुर्जरक्षितिमुजा किल मूलराज-देवेन दूरमुपरुष्य पुरो दधे यः ॥ ८ ॥
 यथा प्रतिष्ठां महतीं वसिष्ठस्तिग्मांशुवंशे भगवानवाप ।
 निजेन सौवस्तिकतागुणेन, चौलुक्यमूपाळकुले तथाऽसौ ॥ ९ ॥
 विधिवद् वाजपेयं यः, कलिकालेऽप्यकरुपयत् । कियतीं वा जपेयं तच्चरिताद्भुतसंहिताम् ॥ १० ॥
 ऋग्वेदवेदी च श(कृ)तकजुश्च, दत्तान्नदानश्च जितेन्द्रियश्च ।
 तिरोहिते तत्र पुरोहितेन्द्रं, तदङ्गजन्माऽजनिं लल्लुशर्मा ॥ ११ ॥
 यः करोति स्म चाँमुण्डराजाख्यं नृपमाशिर्षां । हेतिर्पतापसम्पन्नं, हविषा च हविर्भुजम् ॥ १२ ॥
 श्रीमुञ्जनामा तनुजस्तदीयः, स्वयं स्वयम्भूरिव मृतलेऽभूत् ।
 वाक्षप्यलाभाय तथाहि सद्भिरभाजि मौञ्जी रशनेव वृत्तिः ॥ १३ ॥
 सद्भंशजातेन गुणान्वितेन, शरासनेनेव पुरोहितेन ।
 एतेन मेने भुवने न किञ्चिद्दुर्लभं दुर्लभराजदेवः ॥ १४ ॥
 सन्तापशान्तिं जगतोऽपि सोमस्तन्नन्दनश्चन्दनवच्चकार ।
 पाँयूपहारी हरिणाङ्कितश्च, सत्यां वभाजे द्विजराजतां यः ॥ १५ ॥
 यस्याशीःप्रतिपादितोदययुजा श्रीभीमभूमीमुजा,
 क्षीरक्षालितशालितन्दु(ण्डु)लसितं साक्षात्कृतं तचशः ।
 येनाशाक्रमणक्षमेण त इमे मूर्तिप्रभेदाः प्रभो-
 र्भस्मोद्धूलनमन्तरेण धवलाः सर्वेऽपि निर्वर्तिताः ॥ १६ ॥
 भित्त्वा भानुं तत्र ताते प्रयाते, पुत्रः श्रीमार्तामशर्मा बभूव ।
 कृत्वा सम्यक् संत संस्थाः क्रतूनां, क्रीता कम्प्रा येन सँभ्राडभित्त्वा ॥ १७ ॥
 सदा यदाशीःपरिपूर्णकर्णं, श्रीकर्णेनामा नृपतिः प्रकाण्डम् ।
 वसुन्धरामण्डलमर्णवान्तं, वान्तारिनारीनयनान्मु चक्रे ॥ १८ ॥
- १ अस्य मूलराजपुरोहितस्य सोलस्य सत्तामयो मूलराजराज्यसमय एव ॥ २ पुरोहितः ॥ ३ अवं
 मूलराजमहाराज वि० सं० १९३-१०५३ वर्षेषु राज्यमकार्षत्, इति Indian Antiquary Vol.
 XI P. 219 ॥ ४ अस्य चामुण्डराजपुरोहितस्य लल्लुशर्मणः सत्तासमयश्चामुण्डराजराज्यसमय एव ॥
 ५ चामुण्डराजराज्यम्-वि० सं० १०५३-१०६६ ॥ ६ आयुषम्, दीप्तिय ॥ ७ पौष्यम्, सन्तापश्च ॥
 ८ अस्य दुर्लभराजपुरोहितस्य श्रीमुञ्जनाम्न सत्तामयो दुर्लभराजराज्यसमय एव ॥ ९ मौञ्जी शक्तिरिति
 मुञ्जवर्द्धनमानाना ब्राह्मणं भवतीत्यर्थः । एतेन मुञ्जस्य उदाचारात्सुक भवतीत्यर्थः । अथ च मौञ्जी वेसला
 धारणयो रचना ब्राह्मण्यलाभाय सद्भिरुप्यते ॥ १० दुर्लभराजराज्यम्-वि० सं० १०६६-१०७८ ॥ ११
 अस्य भीमराजपुरोहितस्य सोमस्य जीवनमयो भीमराजराज्यसमय एव ॥ १२ विष्णुना, युगेण च ॥
 १३ वमजे च ॥ १४ ब्राह्मण्य, चन्द्रत्व च ॥ १५ भीमराजराज्यम्-वि० सं० १०७८-११२० ॥
 १६ शोधेप्यादकोऽशी ॥ १७ शिरस्य ॥ १८ अस्य श्रीकर्णराजपुरोहितस्याऽऽमशर्मणः स्थितितमयः श्रीकर्ण
 राजराज्यसमय एव ॥ १९ अतिशयोक्ताः ॥ २० वाजपेययाजीनि ॥ २१ श्रीकर्णराजराज्यम्-वि० सं०
 ११२०-११५० ॥

दानानि तानि सदनानि च तानि शम्भोरम्भोजराजिरुचिराणि सरांसि तानि ।

थेनामुना मुनिजनानुकृता कृतानि, विचैश्वर्यकुलसम्भवमूपदत्तैः ॥ १९ ॥

धाराधीशपुरोधसा निजन्पक्षोर्णा विलोक्याम्बिलां,

चौलुक्याकुलितां तदत्ययकृते कृत्या किलोत्पादिता ।

मन्त्रैर्यस्य तपस्यतः प्रतिहता तत्रैव तं मान्त्रिकं,

सा संहत्य तडिलता तरुमिव क्षिप्रं प्रयाता क्वचित्

॥ २० ॥

तस्मात् कुमारः सुकुमारमूर्तिर्मूर्तिस्तपोराशिमिवोज्जगाम ।

स्वराजराज्योदयदायिनी वागुवास शैक्तेरिव यस्य वक्त्रे

॥ २१ ॥

यद्दः सिन्धुवसुन्धरापतिरतिषौढप्रतापोऽपि य-

श्रीतः स्फीतयलोऽपि मालवपतिः कारां च दारान्वितः ।

दसः सोऽपि सैपादलक्षनृपतिः पादानतिं शिक्षितः,

श्रीसिद्धक्षितिपेन सैप विभवः सर्वोऽपि यस्याऽऽशिषाम्

॥ २२ ॥

कुंजोपशोभितैर्मागैस्तडगैश्च परःशतैः । दृष्टं पूर्वं च यश्चक्रे, चक्रवर्तिपुरोहितः

॥ २३ ॥

ऋजुरोहितमृत्पुरोहितत्वस्पृहयेव त्रिदिवं गतस्य तस्य ।

तनुमूर्मनुमूपतिपणीतस्मृतिस्वस्वमवाप सर्वदेवः

॥ २४ ॥

मध्वदेर्व्यधित साधु सपर्यामध्वरेषु जयति स्म सुरेयाम् ।

मानवानविदितापरयाञ्जो, मानवानकृत चैप कृतार्थान्

॥ २५ ॥

र्क्षिष्यामयनमीयुषि तत्र, क्षत्रसचमनमस्करणीये ।

अध्यगामि विधिरामिगनाम्ना, वैदिकस्तदनु तचनुजेन

॥ २६ ॥

सत्कर्मनिर्माणरतेरमुष्य, म्रीडानिदागं द्वयमेतदासीत् ।

स्ववर्णनाकर्णनमुचमेभ्यः, संसारकारान्तरवस्थितिश्च

॥ २७ ॥

ज्येष्ठः श्रेष्ठतमः समस्तविदुषां श्रीसर्वदेवाह्वयः,

श्रेयःसम्पदपास्तदुस्तरतनाः श्रीमान् कुमारोऽनुजः ।

मुञ्जोऽथ द्विजकुञ्जरस्तदनुजो न्यायाजडेनाहृढ-

श्चत्वारस्तनयास्ततः समभवन् वेदा इव ब्रह्मणः

॥ २८ ॥

१ मालयाभिरतियशोचर्मणः पुरोहितेन सदेवमूर्तिं गृज्जराजश्रीसिद्धराजागरनामधेयजयसिद्धदेवेन म्पाइलीहृत्वा शीस्य सद्गर्भमभिकारेण हृत्वोत्पादिता । गा ष वामनामर्मेणः पुरोधसः शान्तिमन्त्रैः प्रतिविद्या कनी तमेव मालयाधीशपुरोहितं संहत्य निरोहितेति श्रूयते ॥ २ शर्कामिश्रयुगः ॥ ३ वोदृत्तनामा ॥ ४ यशो- चर्मणाम् ॥ ५ आनलदेयः ॥ ६ श्रीसिद्धराजराज्यम् त्रि० सं० ११५०-११५९ ॥ ७ जर्ल, दर्भय ॥ ८ इरस्पतिः ॥ ९ विष्णोः ॥ १० शर्मिर्माणं गनपति ॥ ११ अग्निहोत्रादिः ॥ १२ अस्य सिद्धराजपुरोहितस्य सपर्येयस्य श्रीरत्नमयः सिद्धराजराज्यस्य एव ॥

कुमारपालस्य चुलुक्यमर्षुरज्ञानि गङ्गासलिले निधाय ।

श्रीसर्वदेवेन गयाप्रयागविप्राः प्रदानेन कृताः कृतार्थाः ॥ २९ ॥

स्थाने स्थाने तडागानि, शिवपूजा दिने दिने । विप्रे विप्रे च सत्कारः, स्थाया यस्य गृहे गृहे ॥ ३० ॥

राहौ गृहीतोष्णकरे कुमारः, कुमारपालस्य सुतेन राज्ञा ।

कृतोपरोधोऽपि परं पुरोधाः, प्रत्यग्रहीत् तस्य न रत्नराशिम् ॥ ३१ ॥

यः शौचसंयमपटुः कटुकेश्वराख्यमौराध्य भूधरसुताघटितार्थदेहम् ।

तां दारुणामपि रणाङ्गणजातघातत्रातव्यधामैजयपालनृपादपास्थत् ॥ ३२ ॥

विलोक्य दुष्कालवशेन लोकं, कङ्कालशेषं सविशेषशूकः ।

श्रीमूलराजं दलितारिराजमचीकवृ(र)त् तर्करमोचनं यः ॥ ३३ ॥

दुष्टारिकोटिकदनोत्कटराष्ट्रकूटकुल्येन शल्यैतरणाङ्गणकौङ्कणेन ।

सर्वप्रधानपुरुषाधिपतिः प्रतापमल्लेन भूपतिममल्लिकया कृतो यः ॥ ३४ ॥

सेनानीर्विदधे कुमार इति यः शङ्के चुलुक्येन्दुना,

जित्वा सोऽथ जवादवार्थतरसः प्रत्यर्थिपृथ्वीपतीन् ।

इष्टां तद्विषयद्विमाशिपमिव प्रादात् पुरोधाः स्वयं,

तस्मै याज्यमहीमुजे निजचमूवीरव्रजैरक्षैः ॥ ३५ ॥

धाराधीशे विन्ध्यवर्मण्यवन्ध्यक्रोधाध्मातेऽप्याजिमुत्सृज्य याते ।

गोगस्थानं पतनं तस्य मद्भक्त्वा, सौधस्थाने खानितो येन कूपः ॥ ३६ ॥

गृहीतं कुप्यता कुप्यं, मालवेश्वरदेशतः । दचं पुनर्गीयाश्चाङ्गे, येनाकुप्यमकुप्यता

जित्वा ग्लेच्छपतेर्बलं तदत्तुलं राज्ञी सरःसन्निधौ, ॥ ३७ ॥

स्वःसिन्धोः सलिलैर्विधाय विधिवत् भीतिं पितृणामपि ।

दानी भोक्षमनुक्षतक्षितितले कृत्वाऽब्दमब्दव्रजे,

राजार्थं रचयाञ्चकार चतुरः स्वार्थं प्रजार्थं च यः ! ॥ ३८ ॥

यः कर्माणि च पशुणांश्च तनुते तद्भू-सुवः-स्वस्रयं,

कीर्तिर्यस्य च यश्च निर्मलरुचिर्नो जातुचिन्मुञ्चति ।

१ कुमारपालराज्यम् वि० सं० ११९९-१२३० ॥ २ अथ कुमारपालपुरोहितस्य कुमारस्य सत्ता-
 यमयः कुमारपालराज्ये ॥ ३ अजयपालेन ॥ ४ सामन्तसिंहयुदे हि श्रीअजयपालदेवः प्रहारपीडया
 मृत्युकोटिमायातः कुमारनाम्ना पुरोहितेन श्रीकटुकेश्वरमाराज्य पुनः स जीवितः ॥ ५ अजयपालराज्यम्
 वि० सं० १२३०-१२३३ ॥ ६ शुकः शुक्यतीक्ष्णमः शुकः ॥ ७ मूलराजराज्यम् वि० सं० १२३३-
 १२३५ ॥ ८ कुमारः श्रीअजयपालपुरभीममूलराजसकाशाद् दुष्कालपीडितानां प्रजानां तदानीं हरमोचनं
 कारितवान् ॥ ९ निहतकौङ्कणाधिपतिमल्लिकार्जुनेन ॥ १० धरिदेवसपुत्रिम् ॥ ११ अमणाङ्कः, तपुजैर-
 चण्डितैश्च ॥ १२ अयं विन्ध्यवर्मा यशोवर्मणाः वीरः ॥

शस्त्राविष्कृतिरध्वरे च युधि च श्लाघ्योऽज्जिहीते यतः,

सूत्रं यस्य हृदि स्फुरत्यविरतं ब्राह्मं च राज्यस्य च ॥ ३९ ॥

अरुन्धतीव कान्ताऽस्य, पत्युराज्ञामरुन्धती । अभूदभिधया लक्ष्मीः, साशालक्ष्मीरिव क्षितौ ॥ ४० ॥

आदिमः प्रथममन्दिरं महादेव इत्यभिधया तदङ्गम् ।

येन पाणिनिहितेन पङ्कजेनेव तुप्यति परं सरस्वती ॥ ४१ ॥

सोमेश्वरदेव इति, क्षितिदेवस्यास्य बन्धुरगुजन्मा ।

अजनि कनिष्ठस्तस्य, आता स्यातान्वयो विजयः ॥ ४२ ॥

तैस्त्रिभिः प्रथममध्यमोत्तमैः, स्वे पदे च पुरुषैर्व्यवस्थितैः ।

शब्दशास्त्रमिव गोत्रमुच्चकैः, सत्क्रियं समजनिए विष्टपे ॥ ४३ ॥

सोमेश्वरदेवकवेरवेत्य लोकम्पृष्णं गुणग्रामम् । हरिहर-सुभटप्रभृतिभिरभिहितमेवं कविप्रवरैः ॥ ४४ ॥

श्रीसोमेश्वरदेवस्य, कवितुः सवितुश्च कौ । सतृणाम्यवहारस्य, निरासेऽपि रसपदा ॥ ४५ ॥

वादेवतावसन्तस्य, कवेः श्रीसोमशर्मणः । धुनोति विबुधान् सूक्तिः, साहित्याम्भोनिधेः सदा ॥ ४६ ॥

तव वक्त्रं शतपत्रं, सद्दर्शनं सर्वशास्त्रसम्पूर्णम् । अवतु निजं पुस्तकमिव, सोमेश्वरदेववाग्देवी ॥ ४७ ॥

वसिष्ठानिष्ठायाः पदमिति जगत्यस्ति पटहः,

प्रकृष्टास्त्वेपामप्यजनिपत सुञ्जप्रभृतयः ।

कुले जातोऽप्येषां शतश्रुतिदुहित्रा पुनरयं,

स्वयं पुत्रीचके नवकविगुणप्रीणितहृदा ॥ ४८ ॥

कान्येन नव्यपदपाकरसास्पदेन, यामार्धमात्रपटितेन च नाटकेन ।

श्रीमीमभूमिपतिसंसदि सम्यलोकमस्तोकसम्पदवरांवदमादधे यः ॥ ४९ ॥

कवीन्द्रपदवीस्पृहामहह । तेऽपि तन्वन्ति य-

द्भ्रुचः क्रकचक्रकेशं प्रथयति व्यथां कर्णयोः ।

कविः स विरलः पुनर्भुवि भवाटशो दृश्यते,

सुधाभिरभिषेचनं रचयतीव यः सूक्तिभिः ॥ ५० ॥

मन्दश्छन्दसि कोऽपि कोऽपि विकलः सालङ्कृतिव्याकृता-

वर्थे कोऽपि वृथाश्रमो रसनिपावन्धः स कोऽप्यध्वनि ।

यत्रान्तर्विहरद्विरक्षितनयामजीरमञ्जुस्वर-

स्पर्द्वावन्धुभिरैक एव कवते कान्यैः कुमारात्मजः ॥ ५१ ॥

१ अयं श्रीहरिर्षवन्तो हरिद्वरो धीरध्वजलणजगमीषे नैपधधुस्तकं प्रथमं यस्तुपालेऽन्यथे सल्लनयत्-
रि हरिद्वरध्वन्ये प्रथम्यकोनो स्फुरमुपलभ्यते ॥ २ श्रीमदेयराग्यम् वि० सं० १२१५-१२१६; एक-
उपनिषुधनपालरण्यम् वि० सं० १२१८-१२०० ॥ ३ अयं कुमारस्य पुत्रः सोमेश्वरदेवकवि-
वेषमभावनयोर् ॥

वैदुष्यं विगताश्रयं श्रितवति श्रीहेमचन्द्रे दिवं,

श्रीप्रह्लादानमन्तरेण विरतं विश्वोपकारप्रतम् ।

इद्वा तद् द्वयमत्र मन्त्रिमुकुटे श्रीवस्तुपाले कवि-

स्तकीर्तिस्तुतिकैतवादिदि मुदामुद्गारभारब्धवान्

॥ ५२ ॥

प्राग्वाटान्वयवारिधौ विधुरिव श्रीचण्डपः प्रागमत्,

सम्भूतोऽद्भुतसत्य-शौचसदनं चण्डप्रसादस्ततः ।

सोमस्तपनयो नयोज्वलमतिस्तस्याऽश्वराजः सुतः,

पूतात्माऽथ तदङ्गमूः सुकृतमूः श्रीवस्तुपालोऽभवत्

॥ ५३ ॥

उत्फुल्लमङ्गीप्रतिमलङ्कीर्तिः, श्रीमल्लदेवोऽभवदप्रजन्मा ।

चभूव तस्यावरजश्च तेजःपालामिधानः सचिवप्रधानम्

॥ ५४ ॥

श्रीवस्तुपालस्य चिरायुरस्तु, दिशां प्रकाशं दिशते सदा यः ।

कर्पूरकिर्मिरितकेरलखीरदावदातचुतिभिर्द्यशोभिः

॥ ५५ ॥

क्षीणे चक्षुषि भेषजं भगवती कालीधरी देहिनां,

देहे चित्रविचित्रमाजि शरणं श्रीवैद्यनाथः प्रभुः ।

संसारज्वरजर्जरे हृदि सदा विष्णुर्भविष्णुर्मुदे,

दौर्गत्ये च जिपांसिते गतिरसौ श्रीवस्तुपालः पुनः

॥ ५६ ॥

न वदति परया रुपाऽपि वाचः, स्पृशति परस्य न मर्म नर्मणाऽपि ।

विरमति मतिमानमात्यचन्द्रः, क्वचन च नार्थिकदार्थितोऽपि दानात्

॥ ५७ ॥

धनमनवरतक्षितीन्द्रसेवाश्रमसमवाप्तमयज्ञतोऽपि दत्ते ।

अपरमपि परोपकारकं यद्, विमृशति वस्तु तदेव वस्तुपालः

॥ ५८ ॥

सत्यं ब्रुये भवतु मा क्षतिरत्र काचिद्, मूत्वा स्वल्पकृतिनाऽपि मयाऽतिमात्रम् ।

मन्त्री समे च विपमे च परीक्षितोऽसौ, इष्टं त दुष्टमिह किञ्चन सञ्चरिन्ने

॥ ५९ ॥

अयमनुदिनद्रागोत्कर्षितप्राणवर्षत्परिचरितचरित्रः स्वस्तिमानस्तु मन्त्री ।

तुहिनकरसमार्थैर्यस्य कीर्तिप्रतानैरजनिपत रजन्यः प्राहाराकाविपाकाः

॥ ६० ॥

उमन्ते लोकतः पापा, शपानन्ये नियोगिनः । अधिकारमधिकारममात्यः शास्त्रस्यो पुनः ॥ ६१ ॥

त एव स्तूपन्ते नृपतिपशुभिर्धीवरतया,

प्रजानामानायः सपदि मज्जु येभ्यः प्रपतति ।

तदित्यं ह्यस्थानां चकितचकितं वापि बसतां,

मनां सम्प्रत्येकः सचिवशिबतातिर्भुवि भवान्

॥ ६२ ॥

१ टेमचन्द्रः शुमारपालराज्ये १० नं १२१९ वर्षे स्वर्गमगमत् ॥ २ अवं प्रह्लादानामिदम्. सोम-
श्वरपिताः शुमारस्य पुत्रः ॥

अर्थदानदलितार्थदुःस्थितिं, स्वां विना विनयनम् । सम्प्रति ।

मृज्यते जगति केनचित् सतां, वस्तुपाल ! न कपालदुर्लभिः

॥ ६३ ॥

गोमयरसानुलिप्ते, कीर्तिसुधाघवलिते च मुचनगृहे ।

श्रीवस्तुपाल ! भवतश्चकास्ति चित्रं चरित्रमिह

॥ ६४ ॥

पीयूषैः प्रणता हिमैः प्रणिहिता ताराभिराराधिता,

गङ्गावीचिभिरर्चिता परिचिता दिग्दन्तिदन्तांगुभिः ।

कर्पूरैः परिशीलिता मलयजैरावर्जिता मण्डिता,

डिण्डीरस्तवकैश्चैरनुसृता मन्त्रीश ! कीर्तिस्तव

॥ ६५ ॥

प्रवर्तमानेऽत्र कवित्वसन्ने, सत्कृत्य सत्पात्रममाल्यमेवम् ।

कृतार्थमात्मानमसावमंस्त, सौवन्तिको गुर्जरनिर्जराणाम्

॥ ६६ ॥

कुमारपुत्रेण कुमारमातुः, काव्य तदेतज्जगदेकदेव्याः ।

धृतिस्मृति-व्याकृति-यज्ञविद्याविशारदेन क्रियते स तेन

॥ ६७ ॥

॥ इति श्रीगुर्जेश्वरपुरोहितश्रीसोमेश्वरदेवविरचिते सुरथोत्सवनाम्नि

महाकाव्ये कविप्रशस्तिवर्णनो नाम पञ्चदशः सर्गः ॥



द्वादशं परिशिष्टम्

गूर्जरेश्वरमहामात्यश्रीवस्तुपालकविविरचितस्य नरनारायणानन्द-
महाकाव्यस्य प्रशस्तात्मकः षोडशः सर्गः ।

- शोभाभिमूतपुरुहूतपुरं पुरन्ध्रीलावण्यलोभितजगन्नगरं गरीयः ।
धाम श्रियोऽणहिलपाटकनाम कामलीलामयं जयति गूर्जरभूमिभूषा ॥ १ ॥
- वाग्देवतां यदि जना जननीमिवैनामानन्दिनः प्रतिदिनं हृदि नन्दयन्ति ।
यस्मिन्निमान् मदनतुल्यरुचस्तथापि, निर्मत्सरा त्यजति नो सुतवत्सला श्रीः ॥ २ ॥
- प्राग्वाटगोत्रतिलकः किल कश्चिदत्र, श्रीचण्डपः स्फुटमसण्डपदप्रतिष्ठः ।
विस्फूर्जितान्यथित गूर्जरराजराज्यराजीवजीवनरविः सचिवावतंसः ॥ ३ ॥
- कृष्णीकृत्तारिवदना मुमनोमनांसि, रागास्पदं विदधती यदलक्ष्यरूपा ।
आनन्दमार्दितविचारमदैर्यदीयकीर्तिमुषा जितसुधा बुबुधे बुपेन्द्रैः ॥ ४ ॥
- चण्डप्रसाद इति सादितविश्वदौस्व्यस्तन्नन्दनः स्वकुलनन्दनकरूपशासी ।
शुकामयप्रसवसञ्चयचारुवञ्चकीर्तिप्रभासुरभिताम्बरमूर्धभूव ॥ ५ ॥
- शास्त्रार्थवारिमरहारिहृदालवालसरोपिता मतिरुता वितता नितान्तम् ।
यस्य प्रकाशितरविमहतापवद्विश्वायार्थिभिर्नृपकुलैः फलदा सिषेवे ॥ ६ ॥
- पुण्यस्य पापपटलीजयिनो जयश्रीरासीत् तदीयदयिता नयगूर्जपथीः ।
यस्या मनो दयितमक्तिःसुरसवन्तीस्नानोज्ज्वलां जनयति स्म जिनेन्द्रसेनाम् ॥ ७ ॥
- नैवोष्ठसम्पुटविपाटनया कदाचिदेपा हिमतं जितसुधाविभयं व्यघट ।
श्वेतपुतिः कल्पतां तदयं हृदन्तः, केनापरेण परिभूततनुस्तनोति ! ॥ ८ ॥
- श्रीरङ्गमूर्धममूदनयोर्नयाद्यश्रीरङ्गमूर्जगति शूर इति प्रतीतः ।
अस्वमतां सुरगुरुः सह शिष्यवर्गार्थचे स्म यन्मतिजितशिरचिन्तयेव ॥ ९ ॥
- धूदामणीकृतजिनाङ्गिनमप्रपद्यः, कर्णमुरद्वुरसुवर्णविभूषणश्रीः ।
सद्वर्त्मनि प्रबलदुर्मन्दमोहचौरः, दुःसधरेऽपि विरुलास य एव शूरः ॥ १० ॥
- ह्लासपि कान्तिरुचयेव यदीयकीर्तेर्दिव्यं छत्रमिज जगत्प्रपवादभीतः ।
इन्दुः सुभावपुरपि प्रसुरौगधीनामप्येव सर्पनिभलक्ष्मपृत्तौ न शुद्रः ॥ ११ ॥
- सोमाभिपसदनुजः सुजनाननाञ्जमूर्धोऽम्बवद् विबुधसिन्धुविशुद्रनुदिः ।
यन्मानसेऽकृतसे विरुलास धार्थिक्षिप्तौर्वनापविधुरेव सरस्वतीयम् ॥ १२ ॥
- क्रीडाकषासु सदमि सुसादां मदेव, मौलिं विक्रम्य किल सोऽपि गुरुः सुराणाम् ।
यहृदिनैमवभारस्य विचारितस्य, नीराजनान्यदृष्ट चयलपूररलीः ॥ १३ ॥

- देवः परं जिनवरो हरिभद्रस्वरिः, सत्यं गुरुः परिवृढः खलु सिद्धराजः ।
 धीमाननेन नियतं नियमत्रयेण, कीर्तिं व्यधात् त्रिपथगामिव यः पवित्राम् ॥ १४ ॥
- पुस्फूर्जं भूर्जैरधराधवसिद्धराजराजत्सभाजनसभाजनभाजनस्य ।
 दुर्मन्त्रिमन्त्रितदवानलविह्वलायां, श्रीसण्डमण्डननिमा भुवि यस्य कीर्तिः ॥ १५ ॥
- कुर्वन् परार्थ्यगणिते सति यद्गुणानामैकैकविन्दुरचनामुडुकैतवेन ।
 चन्द्रच्छलेन कति नो खटिनीर्धुभिचौ, धाता व्यधादथ विधास्यति कीर्तिशेषाः ? ॥ १६ ॥
- नो चेद् यशासि वलि-कर्ण-दधीचिमुस्या, दानोत्सवैरविरलानि भुवि व्यधास्यन् ।
 भक्तैरदास्यत् विलसमरालवाल्लक्ष्मीर्यदीयघनदानयशोनदीपु ॥ १७ ॥
- श्रीवाससद्भकरपद्मगदीपकल्पां, व्यापारिणः कति न विभ्रति हेममुद्राम् ? ।
 प्रज्वालयन्ति जगदप्यनयैव केऽपि, येन व्यमोचि तु समस्तमिदं तमस्तः ॥ १८ ॥
- कान्ता जगत्रितयविस्मयनीयनीतेः, सीतेति रामचरितस्य बभूव तस्य ।
 यज्ञोचनं स्थिरतरं दयिताननेन्दौ, दूरेण काञ्चनमृगाश्रियमन्वगच्छत् ॥ १९ ॥
- हर्षादसौ हस्तु शीतकरोऽपि मासा, भृङ्गीरुत्वैरपि च हुङ्कुरुतां सरोजम् ।
 दूरावलम्बितशिरोम्बरम्बरेण, यस्या मुखं जगति न प्रकटं यदासीत् ॥ २० ॥
- तत्सम्भवस्त्रिभुवनाभरणं वभार, शुभ्रं यशोभरमनश्वरमश्वराजः ।
 मुक्त्वा कलङ्ककलितं ललितं हिमांशुं, हर्षादलाभि सकलाभिरय कलाभिः ॥ २१ ॥
- यं मातृभक्तिशुचिमेव यशश्छलेन, ससेव्य जातमुकृतो रजनीमुजङ्गः ।
 आसीज्जगन्नितयविस्तृतवैभवश्च, साक्षात् कलङ्करहितश्च सदोदितश्च ॥ २२ ॥
- हुत्वा सदध्वरचितेषु तमासि तीर्थयात्रोत्सवेषु खलु सप्तसु पावकेषु ।
 यः सप्तपूर्वपुरुषैकमुदे यशोऽम्भ-पूर्तानि सप्त भुवनानि कृती प्रतेने ॥ २३ ॥
- संस्तूयमानचरितः परितः प्रतुङ्घैः, सत्यवते मुकृतसूनुरिवान्हं यः ।
 लज्जामसज्जयत चापगुरुद्विजेन्द्रद्रोणक्षयक्षणतदुक्तिविचारणेन ॥ २४ ॥
- तस्य प्रिया प्रणयपात्रममात्रशीललीलायितं वत ! वभार कुमारदेवी ।
 आलीयत प्रतिपदं जिनपादपद्मे, चित्तेशवक्त्रकमले च यदीयदृष्टिः ॥ २५ ॥
- यस्या मुखे जिनगुणमहणप्ररोहप्रीत्या शिरः प्रतिकलं परिकम्पयन्त्याः ।
 हित्वाऽम्बुजं च रजनीरमणं च लोला, दोलाकुतूहलसं समसेवत श्रीः ॥ २६ ॥
- सूनुस्योरजनि नीरजनिर्मलास्यः, धीलास्यम्ः स्मरकलः किल लूणिगास्यः ।
 वास्येऽपि यस्य चरितं विरराज बृद्धसवादकं कमनिराकृतपल्लवस्य ॥ २७ ॥
- यस्याऽऽननं द्विजवियुक्तमपि द्विजेन्द्रसान्द्रप्रभाभरमभात्रवशैशवस्य ।
 अङ्गं च केशलवमुक्तमपि व्यराजद्, यस्य प्रवालरुचिराधरपाणिपादम् ॥ २८ ॥
- सत्याभिपस्तदनुजो मनुजावतंसरलं बभूव विदितो भुवि मल्लदेवः ।
 यस्मात्प्रतः प्रतिकलं गतिविभ्रमेण, विभ्राजने स्म न महानपि हस्तिमल्लः ॥ २९ ॥

और्वाग्मिनाऽपतन यः सततं पयोधौ, पातालसीम्नि फणिकुत्कृतिदावदाहः ।
 चण्डेव चण्डकरधर्मघटेति मत्वा, यस्योज्ज्वलानि वचनानि सुधा सिषेवे ॥ ३० ॥
 तस्यानुजः पितृपदाम्बुजचञ्चरीकः, श्रीमातृभक्तिसरसीरसकेलिहंसः ।
 साक्षाजिनाधिपतिधर्मनृपाङ्गरक्षो, जागर्ति नर्तितमना हृदि वस्तुपालः ॥ ३१ ॥
 नागेन्द्रगच्छमुकुटाऽमरचन्द्रस्रिषादाब्जभृङ्गहरिभद्रमुनीन्द्रशिष्यात् ।
 व्याख्यावचो विजयसेनगुरोः सुधाममास्वाद्य धर्मपथि सप्तधिकोऽभवद् यः ॥ ३२ ॥
 कुर्वन् मुहुर्विमल-रैवतकादितिर्भयात्रां स्वकीयपितृपुण्यकृते मुदा यः ।
 सङ्घट्टिसङ्घपदरेणुभरेण चित्रं, सद्दर्शने जगति निर्मलयाम्बभूव ॥ ३३ ॥
 धर्मोचितीं रुचितकामगवीं निषेव्य, दुग्धप्रपास्त्रिजगतौऽपि वितत्य कीर्तीः ।
 यो मातृदुग्धरसपानमहोत्सवानामानृत्यमात्मनि कथञ्चन नैव मेने ॥ ३४ ॥
 भास्वत्प्रभावमधुराय निरन्तरायधर्मोत्सवव्यतिकराय निरन्तराय ।
 यो गूर्जरावनिशिरोमणिभीमभूपमन्त्रीन्द्रतापरवशत्वमपि प्रपेदे ॥ ३५ ॥
 यः कामवृत्तिरनुजेन निजेन तेजःपालेन पूर्णनृपकार्यपरम्परेण ।
 सद्धर्मकर्षरस एव मनो मनोज्ञविद्वद्विनोदपयसि स्नपयाम्बभूव ॥ ३६ ॥
 यः स्वीयमातृ-पितृ-बन्धु-कलत्र-पुत्र-मित्रादिपुण्यजनये जनयाञ्चकार ।
 सदर्शनव्रजविकासकृते च धर्मस्थानावलीवलयिनीमवनीमशेषाम् ॥ ३७ ॥
 कीर्त्या सौरभसारसान्द्रसुभनःसन्दोहसन्दोहकृ-

स्कान्त्या पाति वसन्तमन्वहमसावित्यर्पिताथैक्रमम् ।

ख्यातिं प्राप वसन्तपाल इति यो नामाद्वितीयं मुदा,
 विद्वद्विः परिकल्पितं हरिहर-श्रीसोमशर्मादिभिः ॥ ३८ ॥

श्रीशृङ्गायशैलशेखरमणेः श्रीनामिद्वनुग्रहोः,

पीत्वा वक्त्रसुषांशुदीधितिसुधामाकण्ठमुत्कण्ठया ।

न्यातन्वन् कवितां नितान्तमुदितः सद्यस्तदुद्गारवत्,
 तस्यैवाऽऽदिजिनेश्वरस्य जनयामास स्तवं यो नवम् ॥ ३९ ॥

नरनारायणानन्दो, नाम कन्दो मुदामिदम् । तेने तेन महाकाव्ये, वाददेवीधर्मसुतुना ॥ ४० ॥

उद्गास्वद्विध्वविद्यालयमयमनसः । कोविदेन्द्राः ! वितन्द्राः !,

मन्त्री बद्धाङ्गलिर्वो विनयनतशिरा याचते वस्तुपालः ।

अल्पप्रज्ञामबोधादपि सपदि मया कल्पितेऽस्मिन् प्रचन्ये,

भूयो भूयोऽपि यूयं जनयत नयनशेषतो दोषमोषम् ॥ ४१ ॥

॥ इति श्रीगूर्जेश्वरमहामात्म्यश्रीवसन्तपालचिरचिते नरनारायणानन्द-
नाम्नि महाकाव्ये प्रशस्तिप्रपञ्चो नाम षोडशः सर्गः ॥

त्रयोदशं परिशिष्टम्

गूर्जेश्वरमहामात्यश्रीवस्तुपालविरचितस्तोत्रादि ।

मनोरथमयं विमलाचलतीर्थमण्डनश्रीजादिनाथस्तोत्रम् ।

- लब्ध्वा मानुषजन्म जातिसुकुलप्रप्तां प्रतिष्ठाभिमां,
 वृत्त्वा धर्मधुरीणतामधिगतः सङ्घ्वाविपत्यश्रियम् ।
 तीर्थेशामिम ! वस्तुपालसचिवो विश्वाग्रजाप्रत्यदा-
 ऽऽरोहाय प्रगुणां मनोरथमयीं निःश्रेणिमाश्रियत् ॥ १ ॥
- श्रीनामेय ! मनोरथाः शतपथा मिय्याभिमानाम्बुधेः,
 कल्लोला इव विस्फुरन्ति विषयग्राहग्रहल्यप्रिताः ।
 हित्वा तानिति वस्तुपालसचिवः सह्योधुग्धोदधे-
 भेंजे वीचिसमानिमान् शमदमप्रव्यक्तमुक्ताफलान् ॥ २ ॥
- प्रत्याशं प्रसरत्कषायविषयज्वालाकरालादितो,
 दूरीभूय मयङ्कराद् भवदवाद् व्यामोहधूमान्धितः ।
 श्रीशत्रुञ्जयशैलपावन ! जिन ! त्वद्वक्त्रचन्द्रातपो-
 पास्तिध्वस्ततमाः शमामृतहृदे दाहं कदाऽहं क्षिपे ? ॥ ३ ॥
- पतस्मिन् भववारिधौ निरवधिक्रोधौर्ववहेश्च्युत-
 खस्तो लोभतिमिङ्गिलस्य गिलनात् क्लेशाम्भसो निर्गतः ।
 सस्तस्तात ! कदा कदाग्रहमहाग्राहाच्च शत्रुञ्जय-
 द्वीपं प्राप्य मजेय जेयविजयप्रीतः परां निर्द्वैतिम् ? ॥ ४ ॥
- संसारव्यवहारतो रतिमऽतिव्यावर्त्य कर्तव्यता-
 वार्तामप्यपहाय चिन्मयतया त्रैलोक्यमालोकयन् ।
 श्रीशत्रुञ्जयशैलगह्वरगुहामध्ये निबद्धस्थितिः,
 श्रीनामेय ! कदा लभेय गलितज्ञेयामिमानं मनः ? ॥ ५ ॥
- स्वामिन् ! मृत्युहरेरहं हरिणवन्नष्टोऽतिकष्टायुष-
 व्याधिव्याधशतैर्वृतः श्रितमवारण्योऽश्ररप्यो अमन् ।
 नामेय ! त्वमनाकुलः कुलपतिर्यत्रासि तस्मिन्नमे,
 श्रीशत्रुञ्जयशैलनामनि कदा पुण्याश्रमे विश्रमम् ? ॥ ६ ॥

श्रीगर्वोष्मभिरौष्मलेषु धनिनामीप्यानिज्ज्वालया,
 जिह्वालेषु मृगीदशामनुशयाद्भूमयितेषु द्विषाम् ।
 वक्त्रेषु ग्लपितामिमां त्रिजगतीगिस्तन्द्रचन्द्रोदये,
 देव श्रीविमलाद्रिकेतन ! कदा दास्ये त्वदास्ये दशम् ? ॥ ७ ॥
 क्रोधेन ज्वलितो हतोऽऽमिपुमिः पञ्चेपुणा पञ्चभिः,
 वद्धो मोहमहाद्विषा च विषयग्रामं प्रकामं श्रितः ।
 तद् ध्वस्तान्तरवैरिवार ! सुवनस्वामिन् ! सनाथे त्वया,
 दुर्गे श्रीविमलाद्रिनामनि सुखं स्थातास्मि सुस्थः कदा ? ॥ ८ ॥
 आस्यं कस्य न वीक्षितं ? क न कृता सेवा ? न के वा स्तुताः ?,
 वृष्णापूरपराहतेन विहिता केषां च नाभ्यर्थना ? ।
 तत् त्रातर ! विमलाद्रिनन्दनवनीकरूपैककरुद्रम् !,
 त्वामासाद्य कदा कदर्शनमिदं भूयोऽपि नाहं सद्दे ! ॥ ९ ॥
 संसारे सुखहेतुवस्तुविषयैरुत्सङ्गितैः सङ्गते-
 र्दत्ता देव ! त्वदन्यदेव तदियं वाञ्छा ममोत्सेकिनी ।
 श्रेयोवैभव ! नाभिसम्भव ! भवाकूपारपारङ्गम् !,
 श्रीशानुञ्जयमण्डनेन भवता भावी कदा सङ्गमः ? ॥ १० ॥
 एताः शयामृतसेन हृदारुवाले, संवर्धिताः पृथुमनोरथवलयो मे ।
 विश्वैकमित्र ! भगवन् ! भवतः प्रसादाल्लोकोत्तरैः फलभरैः सफलीभवन्तु ॥ ११ ॥
 धर्मध्यानमना मनोरथमयं स्तोत्रं युगादिप्रभो-
 ध्वके गूर्जरचक्रवर्तिसचिवः श्रीवस्तुपालः कविः ।
 प्रातः प्रातरधीयमानमनया यच्चित्तवृत्ति सता-
 माधत्ते विमुक्ता च ताण्डवयति श्रेयःश्रियं पुप्यति ॥ १२ ॥

॥ इति गूर्जरेश्वरस्यद्वाप्रस्यश्रीवस्तुपालविरचितं मनोरथमयं विमलानन्द-
 तीर्थमण्डनश्रीआदिनाथजिनस्तोत्रम् ॥

रैवतकाद्रिमण्डनश्रीनेमिजिनस्तवः ।



जयत्यसमसंयमः शमितमन्मथप्राभवो, भवोदधिमहातरिर्दुस्तिदावपाथोधरः ।
तपस्तपनपूर्वदिक्लृपकर्मवल्लीगजः, समुद्रविजयाङ्गजस्त्रिभुवनैकचूडामाणिः ॥ १ ॥
अहङ्कृतिलतायुधं प्रमदमान्द्यसिद्धौपधं, मदेन्धनधनज्जयः स्मरकरीन्द्रकण्ठीरवः ।
स्पृहारजनिवासरः प्रथितपङ्कतीव्रातपः, समुद्रविजयात्मजः स्फुरतु मानसे मेऽनिशम् ॥ २ ॥
भेरुर्मे रुचिमातनोति न मुधा मानी हिमानीगिरिः, कैलासस्तु न वस्तुतः स्तुतिपदं वन्ध्यः स विन्ध्याचलः ।
श्लाघ्यो रैवत एव केवलमयं शृङ्गाणि शृङ्गारय-स्युद्यैर्यस्य जगत्रयस्तुतिपदः श्रीनेमिकल्पद्रुमः ॥ ३ ॥
संसारात्तितपोपतापशमनश्रद्धालवः ! किं मुधा, रागद्वेषदयोस्तुकेर्धत ! बुधाः ! सेव्यान्तरैः सेवितैः ? ।
आजन्मोपशमाभृतैकतरसः श्रीरिष्टनेमिमगो-निर्वृत्यौपयिकं पदाम्बुजयुगं घच प्रसक्तं हृदि ॥ ४ ॥
यस्यानीकवधूमिरेव विजिताः स्व-भू-सुव स्वामिनो, मौलौ शासनमुद्रन्ति भुवने देवोऽयमेकः स्मरः ।
सोऽप्याब्रन्मजितः करोति न करे जैत्रं धनुर्थं प्रति, प्रीति रैवतदेवतं वितनुतां देवाधिदेवः स वः ॥ ५ ॥
येषां मूर्तिरसौ तवेश ! परमानन्दैकनिस्स्यन्दिनी, ध्यानावेशवशंवदा स्मृतिपथे शश्वत् पुनीतेतमाम् ।
तेषां सम्मदवारिपूरितदृशां शैवेय ! नैवेयम-प्याधत्ते मनसश्चमत्कृतिसुम्नं सा सिद्धिसीमन्तिनी ॥ ६ ॥
साम्राज्यं चतुरर्णवीनिवसनक्षोणीशमौलिस्खल-त्पादाब्जं न सुरा-ऽसुरेन्द्रसुकुटस्पृष्टां हिपीटं च न ।
सिद्धिं शाश्वतसौख्यसङ्गसुभगां नाम्यर्थये किन्तु मे, श्रीशैवेय ! तवेयमस्तु चरणाम्भोजेषु भक्तिर्भृशम् ॥ ७ ॥
नेपथ्यैरतिधीभवत्पृथुतरापथ्यैरतथ्यप्रथै-रुद्यद्वैद्युतडम्बैरैः किमपरैरेकैव भूयान्मम ।
आश्लेषस्पृह्यालमुक्तियुवतिप्रीतिप्रियम्भावुका, श्रीमन्नेमिजिनेशितुः स्तुतिरियं भ्रैवेयकं शाश्वतम् ॥ ८ ॥

इत्थं श्रीवस्तुपालः सुकृतसुरतरोरालवालखिलोकी-

स्वामिन् नेमे ! त्वदीयक्रमकमलरज-पुञ्जपुण्यैकमालः ।

संचाधीशशुलुक्पक्षित्तिपतिमचिवः शारदाधर्मद्वन्दु-

र्विज्ञप्तिं ते विषत्ते प्रथय मम सदा दर्शनेन प्रसादम् ॥ ९ ॥

श्रीसङ्गमर्तुसचिवेश्वरवस्तुपालकल्लेन नेमिनमनेन किलाष्टकेन ।

यः स्तौति तस्य कमलामविलम्बमम्बादेवी तनोत्यतनु सन्तनुते च तेजः ॥ १० ॥

॥ इति गूर्जरेश्वरमहामात्यश्रीवस्तुपालकृतो रैवतकाद्रि-

मण्डनश्रीनेमिजिनस्तवः ॥

श्रीगर्वोष्मभिरौष्मलेषु धनिनामीप्यांनलज्वाला
 जिह्वालेषु मृगीदशामनुश्रयाद्भूमायितेषु
 यक्त्रेषु ग्लपितामिमां त्रिव्रगतीनिस्तन्द्रचन्द्रोदरे
 देव श्रीविमलाद्रिकैतन ! कदा दास्ते
 क्रोचेन ज्वलितो हतोऽहमिषुभिः पञ्चेपुणा पञ्चि-
 बद्धो मोहमहाद्विषा च विषयमामं प्रका-
 तद् ध्वस्तान्तरवैरिवार ! भुवनस्वामिन् ! सनाथे
 दुर्गे श्रीविमलाद्रिनामनि सुखं स्थाताति
 आस्यं कस्य न वीक्षितं ? क्व न कृता सेवा ? न
 तृप्यापूरपराहतेन विहिता केषां च ना-
 तत् प्रातर ! विमलाद्रिनन्दनवनीकरूपैककल्पद्रु-
 त्वामासाद्य कदा कदर्शनमिदं भूयोऽपि
 संसारे सुखहेतुवस्तुविषयैरुत्सङ्गितैः सङ्गतै-
 र्दत्ता देव ! त्वदन्यदेव तदियं चाञ्छा
 श्रेयोवैभव ! नाभिःसम्भव ! मयाकूपारपारङ्गम !,
 श्रीशत्रुञ्जयमण्डनेन भवता भावी कदा
 पताः शमासृतरसेन हृदाल्बाले, संवर्धिताः पृ-
 विश्वैकमित्र ! मगवन् ! भवतः प्रसादाल्लोकोचरैः
 धर्मध्यानमना मनोरथमयं स्तोत्रं युगादिप्रभो
 श्वके गूर्जरचक्रवर्तिसचिवः श्रीवस्तुप
 प्रातः प्रातरधीयमानमनपां यच्चित्तवृष्टिं सता-
 माधत्ते विभुता च ताण्डवयति श्रेय धि

॥ इति गूर्जरेश्वरमहामातयश्रीवस्तुपालविरचितं
 तीर्थमण्डनश्रीआदिनाथजिनस

(४)

महामात्यश्रीवस्तुपालकृता आराधना ।



न कृतं सुकृतं किञ्चित्, सतां संस्मरणोचितम् । मनोरथैकसाराणामेकमेव गतं वयः ॥ १ ॥
 अर्हन्तस्त्रिजगद्वन्द्यान्, सिद्धान् विध्वस्तबन्धनान् । साधूंश्च जैनधर्मं च, प्रपद्ये शरणं त्रिधा ॥ २ ॥
 कृतं पद्मविघजीवानां, पीडनं क्रीडयाऽपि यत् । हास्यादिना विमूढेन, यन्मृषा भाषितं मया ॥ ३ ॥
 परद्रव्येष्वदत्तेषु, यन्मनोऽपि नियोजितम् । कथञ्चिदभिलाषोऽपि, यदब्रह्मणि निर्मितः ॥ ४ ॥
 मूर्च्छया विहितः कश्चिद्रामहो यत् परिग्रहे । स्वप्नेऽप्याऽऽविष्कृता या च, रजनीभोजने स्पृहा ॥ ५ ॥
 चक्रे कोपश्च यत्किञ्चिद्, या च काचिदहङ्कृतिः ।
 माया लोमश्च यस्तत्र, मिथ्या दुष्कृतमस्तु मे ॥ ६ ॥
 यद् वात्सल्यं कृतं नैव, यद् गुणा नानुमोदिताः । गुरवो यदवज्ञाताः, संस्तुता यत् कुतीर्थिकाः ॥ ७ ॥
 कुदेशना च या चक्रे, यत् सिद्धान्तेऽप्यवासना । यत् सत्कर्मप्रमादश्च, निन्दामि तदशेषतः ॥ ८ ॥
 ज्ञान-दर्शन-चारित्रं, गोचरे विहितं च यत् । मार्गानुसारतः सर्वास्ताम्येयोरनुमादये (!) ॥ ९ ॥
 त्यजामि पापमाहारं, नाद्ये मध्यमखण्डतः । श्रयेऽहं सुकृतं पारमविकं दुष्कृतं त्यजन् ॥ १० ॥

॥ इति मन्त्रीश्वरश्रीवस्तुपालकृता आराधना ॥



चतुर्दशं परिशिष्टम्

श्रीमदरिसिंहविरचितं

सुकृतसंकीर्तनमहाकाव्यम् ।

वनराजः

- श्रीवेदमविस्मयमयप्रबलप्रतापश्चापोत्कटाऽन्वयवनैकहरिर्नरेन्द्रः ।
आसीदसीमचरितः परितप्तशत्रु-भालार्पिताङ्घ्रिनलिनो वनराजदेवः ॥ १ ॥
- यत्खड्गखण्डितविरोधिशिरोऽधिरक्त-स्रोतस्विनीभिरुदधिर्विदधे सरागः ।
येनाऽधुनाऽप्यरुणतां भजतस्तदङ्ग-सम्पर्कतोऽर्क-शशिनावुदयक्षणेपु ॥ २ ॥
- निर्गत्य कोशकुहरादसिदन्दशूकः, श्यामो यथागतमगात् त्वरितं यदीयः ।
एतेषु मास्म विशदेप परैरितीव, रुद्धेषु वक्त्रविवरेषु कराङ्गुलीभिः ॥ ३ ॥
- खट्वाङ्गसङ्गतकरस्तरवारिलम्-कृत्वारिमुण्डमिपतः समराङ्गणे यः ।
भालाधिरोपितहुताशनचण्डचक्षु-राभादिभासुरविरोधिविभासुरश्रीः ॥ ४ ॥
- तेने कृतान्तसमतां रसनासनाभि-धारोद्गुरो यदसिरञ्जनमङ्गुलश्रीः ।
अहाय यस्य युधि दर्शनसंज्ञयैव, भिन्दन्नरीनधित किङ्करतां कृतान्तः ॥ ५ ॥
- स्तब्धप्रकम्पितविलीनविवेर्णगात्रैः, खिन्नैर्विभङ्गुररवस्फुरदश्रुलेशम् ।
उन्मुच्य पौरुषमवाप्य च भीरुभावं, यः सेव्यते रिपुभिल्लुपुलकैः प्रसन्नः ॥ ६ ॥
- आकर्ण्य तूर्णमुपकर्णयितुं च यस्य, कीर्तिं मुहुर्भुजगभीरुगणेन गीताम् ।
चक्षुःश्रवा रसवशेन दृशां निमेषोन्मेषक्रियामनिमिषोऽपि चकार शेषः ॥ ७ ॥
- वक्रीकृते धनुषि मौक्तिकताडपत्रज्योत्स्नाम्बुभारभृति पल्लवतां दधाने ।
यस्याऽऽननं विकचवारिजकरूपमन्त-भेजे विहाय परराजकरान् जयश्रीः ॥ ८ ॥
- श्रीगत् पुरं भुवि पुरन्दरपचनामं, तेनाऽऽदधेऽणहिलपाटकनामधेयम् ।
स्त्रीणां मुखे स्मरतपस्विवनेऽजनीन्दु-पद्मश्रियोरसुहृदोरपि यत्र योगः । ॥ ९ ॥
- अन्तर्वसद्दनजनाद्भुतभारतो भू-र्मां अद्रयतादिति भृशं वनराजदेवः ।
पञ्चासराह्वनवपार्श्वजिनेशवेशम-व्याजादिह क्षितिपरं नवमाततान ॥ १० ॥

(४)

महामात्यश्रीवस्तुपालकृता आराधना ।



- न कृतं सुकृतं किञ्चित्, सतां संस्मरणोचितम् । मनोरथैकसाराणामेकमेव गतं वयः ॥ १ ॥
- अर्हतस्त्रिजगद्गन्धान्, सिद्धान् विध्वस्तवन्धनान् । साधुंश्च जैनधर्मं च, प्रपद्ये शरणं त्रिधा ॥ २ ॥
- कृतं पङ्क्तिधर्मीनां, पीडनं क्रीडयाऽपि यत् । हास्यादिना विमूढेन, यन्मृषा भाषितं मया ॥ ३ ॥
- परद्रव्येष्वदत्तेषु, यन्मनोऽपि नियोजितम् । कथञ्चिदभिलाषोऽपि, यदब्रह्मणि निर्मितः ॥ ४ ॥
- मूर्च्छया विहितः कश्चिदाब्रह्मो यत् परिग्रहे । स्वप्नेऽप्याऽऽविष्कृता या च, रजनीभोजने स्पृहा ॥ ५ ॥
- चक्रे कोपश्च यत्किञ्चिद्, या च काचिदहङ्कृतिः ।
- मायां लोभश्च यस्तत्र, मिथ्या दुष्कृतमस्तु मे ॥ ६ ॥
- यद् वात्सल्यं कृतं नैव, यद् गुणा नानुमोदिताः । गुरवो यदवज्ञाताः, संस्तुता यत् कुतीर्थिकाः ॥ ७ ॥
- कुदेशना च या चक्रे, यत् सिद्धान्तेऽप्यवासना । यत् सत्कर्मप्रमादश्च, निन्दामि तदशेषतः ॥ ८ ॥
- शान-दर्शन-चारित्र्यं, गोचरे विहितं च यत् । मार्गानुसारतः सर्वांस्तान्येयोरनुमादये (?) ॥ ९ ॥
- त्यजामि पापमाहारं, बाह्ये मध्यमखण्डतः । श्रयेऽहं सुकृतं पारभविकं दुष्कृतं त्यजन् ॥ १० ॥

॥ इति मन्त्रीश्वरश्रीवस्तुपालकृता आराधना ॥



चतुर्दशं परिशिष्टम्

प्राचीनहस्तलिखितप्रतिप्रान्तगता वस्तुपालादि-
प्रतियद्वाः पुष्पिकाः ।

(१)

धर्माभ्युदयमहाकाव्य अपरनाम संघपतिचरित

सं० १२९० वर्षे चैत्र शुदि ११ रवौ स्तम्भतीर्थवेद्यकुलमनुपालयता महं० श्रीवस्तुपालेन
धीधर्माभ्युदयमहाकाव्यपुस्तकमिदमलेखि ॥ छ ॥ छ ॥ शुभमस्तु श्रोतृव्याख्यातृणाम् ॥

(संभात श्रीशान्तिनाथ-ताडपत्रीय-भंडार)

(२)

आचारांगवृत्ति-सूत्र-निर्युक्ति

सर्वभाषासत्या ३६७ ॥ आचारनिर्युक्तिः समाप्ता ॥ आचारांगवृत्तिः १२३०० । आचारसूत्रं
२५०० । निर्युक्तिः ४७७ ॥ सवत् १३०३ वर्षे मार्गवदि १२ गुरो अघेह श्रीमदणहिलपाटके
महाराजाधिराजश्रीवीरसलदेवराज्ये महामात्यतेजःपालमतिपचौ श्रीश्रीआचारांगपुस्तकं लिखित-
मिति ॥ कल्याणमस्तु श्रीजिनशासनप्रवचनाय ॥ मंगलं महाश्री. ॥

(संभात श्रीशान्तिनाथ-ताडपत्रीय-भंडार)

(३)

देशीनाममाला

संवत् १२९८ वर्षे आश्विन शुदि १० रवौ अघेह श्रीमृगुकचले महाराजकश्रीवीरसलदेव....
महं० श्रीतेजपालमुत महं० श्रीलूणसीहमश्रुतिपचकुलमतिपचौ आचार्यश्रीजिपादेवचरिते देसी-
नाममाला लिखापिता । लिखिता च कायस्वशादीय महं० अयंतसिंह.....सु.....

(पाटण संघवीपाटक-ताडपत्रीय-भंडार)

(४)

जीतकल्पचूर्णिः तद्वात्तिश्च

शुभाशुभि वस्तुपालसचिवस्वामोऽस्य चन्द्रातप-

स्तेनोन्मीलितमर्षिर्नैवकुले यत् तु श्रियस्ताण्डवम् ।

तस्याः पादतल्पपातरमसौर्जुनैरिवोद्गायत्रै-	
स्तेनातस्तरिरे वरप्रितयदाःकिजल्कजालैर्दिशः	॥ ३७ ॥
विश्वेऽस्मिन् कस्य चेतो हरति नहि समुह्यास्य विश्वासमुच्चैः,	
प्रौढश्वेतांशुरोचिःप्रचयसहचरी वस्तुपालस्य कीर्तिः ।	
मन्ये तेनेयमारोहति गिरिषु मिया लीयते गह्वरेषु,	
स्वर्गोत्सन्नानुषास्ते भजति जलनिधिं याति पातालमूलम्	॥ ३८ ॥
एतेभ्यः प्रमुणा सगौरवमहं तावत् प्रदत्ता परं,	
देशं देशममी भ्रमन्ति तदहं गच्छाम्यमीभिः समम् ।	
नो चेत् काऽप्यपरा मिलिष्यति वधूस्तत्रेति मीत्या ध्रुवं,	
कीर्तिर्यस्य गुणाननु भ्रमति स श्रीवस्तुपालः कृती	॥ ३९ ॥
सोऽयं धार्त्री धवलयति को वस्तुपालोऽचलेन्द्र-	
मत्समादाविर्भवति समरे काऽपि दोःस्फूर्तिगङ्गा ।	
यस्यां ममाः प्रतिबसुमतीवल्लभानां समन्तात्,	
सम्पन्नते न्वत्त पुनरनावृत्तये कीर्त्तयस्ताः	॥ ४० ॥ छ ॥
(पाठ्य संघवीपाटक-तादपत्रीय-भंठार)	

(५)

महामात्य श्रीवस्तुपालसुतजैत्रसिंहलेखित पुस्तिका प्रशस्तिः ।

प्राग्वाटान्वयमण्डनं समजनि श्रीचण्डयो मण्डपः,	
श्रीविश्रामकृते तदीयतनयश्चण्डप्रसादामिधः ।	
सोमन्तलभवोऽभवत् कुबलयानन्दाय तस्याऽऽत्मन्-	
राशाराज इति श्रुतः श्रुतरहस्तत्वावनोपे बुधः	॥ १ ॥
तज्जन्मा वस्तुपालः सचिवपतिरसौ सन्तनं धर्मकर्मा-	
लंक्रमणैकबुद्धिर्विबुधजन[चम ?]त्कारिचारित्रपात्रम् ।	
मातः सहाधिपत्नं दुरितविजयिनीं सूत्रयन् सङ्घयात्रां	
धर्मस्यौज्वल्यमाधात् कलिसमयमयं कालिमानं विदुष्य	॥ २ ॥
यस्याग्रजो महद्देव उत्तम्य इव वाक्पतेः ।	
उपेन्द्र इव चेन्द्रस्य तेजःपालोऽनुजः पुनः	॥ ३ ॥
चौतुक्वचन्द्रलूणप्रमादतनुजस्य वीरघनलम्ब ।	
यो दध्रे राज्यधुरंमेकपुत्रीणं विधाय निजमनुजम्	॥ ४ ॥

विमुक्ता-विक्रम-विद्या-विदग्धता-वित्त-वितरण-विवेकैः ।

यः सप्तमिविकारैः कलितोऽपि बभार न विकारम् ॥ ५ ॥

अपि चाप्यायिता वापी-मपा-कूप-सरोवरैः । पोषिता पोषधागरैर्जीर्णोद्धारैः समुद्धृताः ॥ ६ ॥

श्रिया प्रीतया निर्व्याजं पूजिता सहपूजनैः । प्रशस्तिविस्तरस्तोमैः सरस्वत्यापि संस्तुता ॥ ७ ॥

शौर्यैर्णोर्जस्वितां नीता स्फीता नव्योक्तिसूक्तिभिः । प्रीताऽर्थिसार्थसत्कारैरुपकारैः पुरस्कृता ॥ ८ ॥

वासिता साधुवादेन तोरणैस्तुभ्रतां गता । हैमस्रग्दामकुम्भेन्द्रमण्डपाद्यैश्च मण्डिता ॥ ९ ॥

नित्यं शत्रुञ्जयाद्गौ नवजिनभवनोत्तुम्भशृङ्गाप्रजाम्—

द्वातव्याधूतधौतध्वजपटकपटाद् यस्य नर्नर्त्तिं कीर्त्तिः ।

तस्येयं गेहलक्ष्मीर्विभवति ललितादेविनाम्नी तदीयः

पुत्रोऽयं जैत्रसिंहः स्फुरति जनमनःकन्दरामन्दिरेषु ॥ १० ॥

दृष्ट्या वपुश्च वृत्तं च परस्परविरोधिनी ! । विवदाते समं यस्मिन् मिथस्तारुण्य-वार्द्धके ॥ ११ ॥

सोऽयं स्रहवदेवी कुक्षिभवस्य प्रतापसिंहस्य । तनयस्य श्रेयोऽर्थं व्यधापयत् पुस्तिकामेताम् ॥ १२ ॥

पुष्पदन्ताविमौ यावद् दीप्तौ ब्रह्माण्डमण्डपे । एषा सुपुस्तिका तावद् धर्मजागरणम् ॥ १३ ॥

[एतत्प्रशस्तियुक्ता पुस्तिका पचननगरे वाढीपार्श्वनाथमाण्डागारे विद्यते ।]



पञ्चदशं परिशिष्टम्

श्रीविजयसेनसूरिविरचित

रेवंतगिरिरासु ।

परमेसर तित्थेसरह, पयपंकय पणमेवि । भणिसु रासु रेवंतगिरे, अंचिकदेवि सुमरेवि ॥ १ ॥

गामागर पुर वण वहेण, सरि सरवरि सुपणसु । देवमूमि त्रिसि पच्छिमह, मणहरु सोरठदेसु ॥ २ ॥

जिणु तहि मंडेल मंडणउ, मरगयमउडमहंतु । निम्मल सामल सिहरमरे, रेहेइ गिरि रेवंतु ॥ ३ ॥

तसु सिरि सामिउ सामलउ, सोहगसुंदर सारु । जाइवनिम्मलकुलतिलउ, निवसइ नेमिकुमारु ॥ ४ ॥

तसु सुइ दंसणु दसदिसि वि, देसदेसंतरु संप । आवइ भावरसालमणउ, हलि [हलि] रंगतरंग ॥ ५ ॥

पोरुयाडकुलमंडणउ, नंदणु आसाराय । वस्तुपाल वर मंति तहि, तेजपालु दुइ भाय ॥ ६ ॥

गुरजरधरधुरि धवलकि, वीरधवलदेवराजि । विहु वंधवि अवयारियउ, सु[स]मू दूसग गाशि ॥ ७ ॥

नायलगच्छह मंडणउ, विजयसेणसूरिराउ ।

उवपसिहि विहु नरपवरे, धम्मि धरिउ दिहु भाउ ॥ ८ ॥

तेजपालि गिरनारतले, तेजलपुरु नियनामि । कारिउ गढ-मढ-पवैपवरु, मणहरु धरि आरामि ॥ ९ ॥

तहि पुरि सोहिउ पासजिणु, आसारायविहारु ।

निम्मिउ नामिहि निजजणणि, कुमरसरोवरु फारु ॥ १० ॥

वहि नयरह पुरवदिसिहि, उग्गसेण गढदुग्गु । आदिजिणेसरपसुहजिणमंदिरि भरिउ समग्गु ॥ ११ ॥

धाहिरि गढ दाहिणदिसिहि, चउरियवेहिविसालु ।

लाडुकलहहियओरवीय, तडि पसु ठाइ कराल ॥ १२ ॥

तहि नयरह उत्तरदिसिहि, साल-धंभसंभार । मंडण महिमंडल....., मंडप दसइ उयार ॥ १३ ॥

जोइउ जोइउ भवियण, पैमि गिरिहि दुयारि । दामोदरु हरि पंचमउ, सुवन्नरेहनइ पारि ॥ १४ ॥

अगुण अंजण अंबिलीय, अंबाडय अंकुलु । अंबरु अंबरु आमलीय, अगरु असोय अहलु ॥ १५ ॥

करवर करपट करणतर, करवंदी करवीरा । कुडा कडाह कथंय कड, करव कदलि कंपीर ॥ १६ ॥

वेयउ वंजउ बउल वडो, वेडस वरण विडंग । वासंती वीरिणि विरह, वंसियालि वण चंग ॥ १७ ॥

सीममि सिबलि सिरसमि, सिंधुवारि सिरखंडा । सरल सार साहार सय, सागु सिगु सिणदंड ॥ १८ ॥

१ वडग=वरुणं ॥ २ मंडल=देश ॥ ३ राजने=स्तोत्रे छे ॥ ४ विरि=मस्त्रव=सिगर ॥ ५ प्रया=पत्नीनी पर ॥ ६ स्कार=प्रधान ॥

पद्म-कुङ्कुम-फलसिपि, रेहइ तहि वणराइ । तहि उज्जिलतलि घग्गियह, उल्लंठु अंगि न माइ ॥ १९ ॥
बोलावी संघह तणीय, कालमेघंत्तर पंथि । मेल्हकिय तहिं दिट्ट धणीय, वस्तुपाल बरमंति ॥ २० ॥

॥ प्रथमं कडवं ॥

दुविदि गुज्जरदेसे रिउरायविहंडणु, कुमरपालु मूपालु जिणसासनमंडणु ।
तेण संघाविओ सुरठदंडाहिवो, अंयओ सिरिसिरिमालकुलसंभवो ।
पौज सुविसाल तिणि नैठिय, अंतरे घवल पुणु पैंरव भराविय ॥ १ ॥
धनु सु घवलह याउ जिणि पाग पयासिय, वारविसोत्तरवरसे जसु जस दिसि वासिय ।
जिम जिम चडइं तडि कडणि गिरनारह, तिम तिम ऊडइं जण भवण संसारह ।
जिम जिम सेटें जलु अंगि पलोट्टए, तिम तिम कलिमलु सपलु ओहट्टए ॥ २ ॥
जिम जिम वायइ वाउ तहि निञ्जरसीयलु, तिम तिम भवदुहदाहो तवखाणि बुट्टइ निधलु ।
कोइलकलयलो मोरकेकारवो, मुग्मए महुरर महुरु गुंजारवो ।
पाज चढंतह सावयालोयणी, सापारासु दिसि दीसए दाहिणी ॥ ३ ॥
जलदजालववाले नीजरणि रमाउलु, रेहइ उज्जिलसिहरु अलि-कज्जलसामलु ।
बहलवुहु धातुरसभेउणी, जत्य उलदलइ सोवन्नमइ मेउणी ।
जत्य दिपंति दिबोसही सुंदरा, गुहिर वर गरुय गंभीर गिरिकंदरा ॥ ४ ॥
जाइ कुंदु विहसंतो जं कुमुमिहि संकलु, दीसइ दस दिसि दिवसो किरि तारामंडलु ।
मिलियनवलवल्लिदलकुमुमझलहालिया, ललियमुरमहिवलयचलणतलतालिया ।
गलिययलकमलमयरंदजलकोमला, विउल सिलवट्ट सोहंति तहिं संमैला ॥ ५ ॥
मणहरपणवणगहणे रसिर हसिय किंनरा, वेउ मुहुरु गायंतो सिरिनेमिज्जिणेसरा ।
जत्य सिरिनेमिज्जिणु अच्छए अच्छरा, अमुरमुरउरगकिंनरयज्जाहरा ।
मउडमणिकिरणपिज्जरिय गिरियसेहरा, हेरसि आबंति बहुमउभरनिभरा ॥ ६ ॥
सामियनेमिकुमारपयपंकयलंडिउ, धेर पूल वि जिण धन्न मन पूरइ बंडिउ ।
जो मयकोटाकोट्टि....., अलु सोवळु धणु दाणु जउ दिज्जए ।
सेवउ जडकम्मपणगंठि जउ विज्जए, तउ उज्जितसिहरु पाविज्जए । ॥ ७ ॥
जग्गणु जोव[णु] जाविय तमु तहिं कयत्थू, जे नर उज्जितसिहरु पेक्कमइ वरतित्थू ।
आसि गुरज्जरधरय जेण अमरेसरु, सिरिजयसिघदेउ पवरु पुहवीसरु ।
हणवि मोरलु तिणि राउ पंगारउ, उविउ साज्जणु दंडाहिवं सारउ ॥ ८ ॥

१ ऊल्लंठु=दुम भावना ॥ २ पय=पाराइ उरर चरवा मटे पगयोदी बधिलो ररतो ॥ ३ मिज्जिण=जैवर
कगणी ॥ ४ प्रा=पानीनी वरव ॥ ५ रेवेदवत्त=वारेसेको ॥ ६ मुग्मए=ध्वने=गंभयय दे ॥ ७ इय=पत्तन
पादी ॥ ८ हंवे=हरवे ॥ ९ श्रुवी अने पूठ पण ॥

अहिणवु नेमिजिण्ड तिणि भवणु कराविउ, निम्मल्ल चंदरु विवे नियेनाउं । लिहाविउ,
योरविकलं भवायं भरमाउलं, ललियपुचलियकलसकुलसंकुलं ।

मंडपु दंड पणुतुंगतरतोरणं, धवलिय वज्झि रुणझणिरिकिक्किणिघणं ।

इच्चारसयसहीउ पंचासीय, वच्छरि, नेमिभ्ययणु उद्धरिउ साजणि नरसेहरि

मालवमंडलुहमुहमंडणु, भावडसाहु दालिधुखंडणु ।

आमलसार सोववु तिणि कारिउ, किरि गयणंगण सुरु अवयारिउ ।

अवरसिहर वरकलस झलहलड मणोहर, नेमिभ्ययणि तिणि दिट्ठइ दुह गलइ निरंतर ॥ १० ॥

॥ द्वितीयं कडवं ॥

दिसि उच्चर कसमीरदेसु नेमिहि उम्माहिय । अजिउ रतन दुइ बंधं गरुय संघाहिव आविय ॥ १ ॥

हरसवसिण घणकलस भरिचि ति न्हवणु करंतह । गलिउ लेव सु नेमिचिच जलधार, पडंतह ॥ २ ॥

संघाहिवु संघेण सहिउ नियमणि संतविउ । हा हा ! धिगु धिगु ! मह विमलकुलगंजणु आविउ ॥ ३ ॥

सामियसौमलधीरचरण मह सरणि भवंतरि । इम परिहरि आहार नियमु ल्हउ संघधुरंधरि ॥ ४ ॥

एकवीसि उपवासि तामु अंचिकदेवि आविय । पमणइ सैपसन्न देवि जय जय सदाविय ॥ ५ ॥

उट्टेविणु सिरिनेमिचिउ तुलिउ तुरंतउ । पच्छल्ल ममं जो सुति वच्छ । तुं भवणि वलंतउ ॥ ६ ॥

णइवि, अंचि, कंचणं, धलाणइ । चिउ मणिमउ तहिं आणइ ॥ ७ ॥

पडमभवणि देहलिहि छुडि पुडि आरोविउ । संघाहिवि हरिसेण ताम दिसि पच्छल्ल जोइउ ॥ ८ ॥

ठिउ निचल्ल देहलिहि देवु सिरिनेमिकुमारो । कुसुमवुट्टि मिच्छेदेवि देवि किउ जइजइकारो ॥ ९ ॥

वइसाहीपुत्तिमह पुत्तवंतिण जिणु धप्पिउ । पच्छिमदिसि निम्मविउ भवणु भवदुहतरुकप्पिउ ॥ १० ॥

न्हवण-विलेवणत्तणीय बंड भवियणजण पूरिय । संघाहिव सिरिअजित-रतनु नियदेसि पैराइय ॥ ११ ॥

सयल चित्ति कलिकालि कालकल्लसे जाणवि छाहिउ ।

झलहलंति मणिचिचकंति अंचिकुरुं आइय ॥ १२ ॥

समुहविजय-सिवदेविपुतु जायवकुलमंडणु । जरासिंधदलमलणु मयणभइमाणविहंडणु ॥ १३ ॥

राइमईमणहरणु रमणु सिवरमणि मणोहरु । पुत्तवंत पणमंति नेमिजिणु सोहगुसुंदरु ॥ १४ ॥

वस्तपालि वर मंति भ्ययणु कारिउ रिमहेसरु । अट्टावय-सम्मेयसिहरवरमंडपु मणहरु ॥ १५ ॥

कठद्विजक्खु मरुदेवि दुह वि तुंगु पासाइउ । पम्मिय सिरु धुणंति देव वलिवि पलोइउ ॥ १६ ॥

तेजपालि निम्मविउ तत्थ तिहुयणजणरंजणु । कैल्याणउत्तउतुंगु भ्ययणु लंघिउ गयणंगणु ॥ १७ ॥

। १ मित्र नाम ॥ २ शरिद्रने दूर करनार ॥ ३ नेमिनाथना मंदिरने षागल्यारो ॥ ४ वग्गु=भारं ॥
५ सामियगामन=नेमिनाथ भगवान् ॥ ६ सुप्रसन्ना ॥ ७ नियेधायक अन्वय ॥ ८ बलानक=मंदिरने एक भाग ॥ ९ परागता म्पेणा आत्मा ॥ १० कस्यागकययतुं भवन्=नेमिनाथ भगवानना दीक्षा केवलज्ञान अने निर्वाण ए प्रण कस्यागकने लगतुं विशाल मंदिर ॥

दीसद् दिसि दिसि कुंडि कुंडि नीन्नरणउ मालो । इंद्रमंडपु देपालि मंत्रि उद्धरिउ विसालो ॥१८॥
 अइरावणगयरायपायमुदासम टंकिउ । दिट्ट गयंदमुकुंड विमलु निज्जरसमलंकिउ ॥१९॥
 गयणगंग जं समयलत्तित्थअत्रयारु भणिज्जइ । पक्खालिवि तहि अंगु दुक्ख जलजंजलि दिज्जइ ॥२०॥
 सिंदुवार-मंदार-कुरबक-कुंदिहि सुंदरु । जाइ-जूह-सयवचि-विचिफलेहि निरंतरु ॥२१॥
 दिट्ठय छत्रसिलकडणि अंबवणु सहसाराधु । नेमिजिणेसरदिक्ख-जाण-निवाणह ठायु ॥२२॥

॥ तृतीयं कडवं ॥

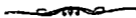
गिरिगरुया सिहरि चडेवि, अंबे-जंबाहि बंबालिउं ए ।
 सँमिणी ए अंबिकदेविदेउलु दीडु रँमाउले ए ॥ १ ॥
 वज्जइ ए ताल कंसाल, वज्जइ मद्दल गुहिरसर ।
 रंगिहि ए नच्चइ बाल, पेसिवि अंबिकमुहकमल ॥ २ ॥
 सुमकरु ए ठविउ उच्छंगि, विमकरो नंदणु पासिक ए ।
 सोहइ ए ऊर्जिलसिंगि, सामिणी सीहँसिंघासणी ए ॥ ३ ॥
 दावइ ए दुक्खहँ मंगु, पूरइ वंछिउ भवियजण ।
 रक्खइ ए चउविहु सधु, सामिणी सीहँसिंघासणी ए ॥ ४ ॥
 दस दिसि ए नेमिकुमारि, आरोही अवलोइउं ए ।
 दीजइ ए तहि गिरनारि, गयणंगणु अवलोणसिहरो ॥ ५ ॥
 पहिलइ ए सांघकुमारु, बीजइ सिहरि पजूञ्च पुण ।
 पणमइं ए पामइं पारु, भवियण भीसण भवभमण ॥ ६ ॥
 ठामि ठामि ए रगणसोवन्न, विव जिणेसर तहि ठविय ।
 पणमइ ए ते नर घञ्च, जे न कलिकालि मँलमयलिया ए ॥ ७ ॥
 वं फल्ल ए सिहरसंभेय, अट्टावय नंदीसरिहिं ।
 तं फल्ल ए भवि पामेइ, पेत्तेविणु रेवंतसिहरो ॥ ८ ॥
 गहगण ए माहि जिम भाणु, पडयमाहि जिम मेरुगिरि ए ।
 त्रिहु सुयणे ए तेम पहाणु, तित्थमाहि रेवंतगिरि ॥ ९ ॥
 घवल घय ए चमर भिंगार, आरचि मंगलपईव ।
 तिल्य मउह ए कुंडल हार, मेघाडंबर जावियं ए ॥ १० ॥

१ दशे दिशामी ॥ २ झरणनी माला ॥ ३ अंबा अने कानूनां झारोयी ॥ ४ स्वामिनी ॥ ५ रमणीय ॥ ६ बज्जदंशु ॥ ७-८ अंबिकदेवी ॥ ९ मलमरुतिनाममरुमेला ॥

दिर्घहि ए नर जो पवर, चंद्रोयं नेमिजिणेसरवरभ्रुपणि ।	
इहभवि ए मुंजवि भोय, सो तित्थेसरसिरि ल्हइ ए	॥ ११ ॥
चउविहु ए संघु करेइ, जो आवइ उज्जितगिरि ।	
दिविसैवहू ए रागु करेइ, सो मुंचइ चउगइगमणि	॥ १२ ॥
अट्टविह ए ज्ञय(ज्ञय) करंति, भाठई जो तहिं करइ ए ।	
अट्टविह ए करम हणंति, सो अट्टभवि सिज्जइ ए	॥ १३ ॥
अंबिल ए जो उपवास, एगासण नीवी करइ ए ।	
तसु मणि ए अठइं आस, इहभव परभव विविह परे	॥ १४ ॥
पेमिहि ए मुणिजण अन्नह, दाणु धम्मियवच्छल करइं ए ।	
तसु कही ए नही उपमाणु, परभाति सरण तिणउ	॥ १५ ॥
आवइ ए जे न उज्जिति, धरंधरइ धंधोलिया ए ।	
आविही ए हियइ न संति, निप्फलु जीविउ तासु तणउं	॥ १६ ॥
जीविउ ए सो जि परि धनु, तासु समच्छर निच्छणु ए ।	
सो परि ए मासु परि धनु, वलि हीजइ नहि वासर ए	॥ १७ ॥
जहिं जिणु ए उज्जिलठामि, सोहगमुंदरु सामल ए ।	
दीसइ ए तिहणसामि, नयणसल्लणउं नेमिजिणु	॥ १८ ॥
नीजर ए चमर ढलंति, मेपाडंवर सिरि धरीइं ।	
तित्थह ए सउ रेवंदि, सिंहासणि जयइ नेमिजिणु	॥ १९ ॥
रंमिहि ए रमइ जो रासु, सिरिविजयसेणि सुरि निम्मविउ ए ।	
नेमिजिणु ए तूसइ तासु, अंचिक पूरइ मणि रलीए	॥ २० ॥

॥ चतुर्थं कडवं ॥

॥ समसु रेवंतगिरिरासु ॥



१ आधे ॥ २ चद्रवो ॥ ३ देवागना ॥ ४ परआग्ने ॥ ५ धंधोलिया=धधामां रत्त्यापच्या रहनार,
अथवा धंधलीया=रात दिवस धमाल करनार ॥ ६ निर्ज=देव ॥ ७ रेवंगिरि ॥

पोडशं परिशिष्टम्

पाल्हण पुत्र कृत

आवृत्तास

- ६० ॥ पैणमेविणु सामिणि चाएसरि, अभिननु कवितु रेयं परमेसरि ।
 नंदीवरधनु जासु निवासो, पमणउ नेमिजिणंदह रासो ॥ १ ॥
- गूजरदेसह मज्झि पहाणं, चंद्रवती नयरि वक्खाणं ।
 वावि सरोवर सुरहि सुणीजइ, बहुचारामिहि ऊपम दीजइ ॥ २ ॥
- त्रिग चौचरि चँउहट विथारा, प(म)ठ मंदिर घवलहर पगारा ।
 छत्रिस राजकुली निवसेइ, धनु धनु धम्मिउ लोकु बसेइ ॥ ३ ॥
- राजु करइ नह(हि) सोमनरिंदो, निम्मल सोलकला जिम चंदो ।
 द्विव बन्नउ गिरि पुहवि प्रसिद्धं, बहुयहं लोयहं तणउ लु तीयो ॥ ४ ॥
- धण वणरायहं सज्जु सुटाउं, तहि गिरिवर पुणु आवू नौउं ।
 तसु सिरि वारह गाम निवासो (सी), राठी गूगलिया तहि तपसी ॥ ५ ॥
- तसु सिरि पहिल्लउ देउ सुणीजइ, अचलेसरु तसु ऊपसु दीजइ ।
 वहि छइ देवत बालकुमारी, सिरि मा सामिणि कहउ विचारी ॥ ६ ॥
- विमल्लिहिं उविषउ पावनिकंदो, तहि छइ सामिउ रिसहजिणंदो ।
 सानिनु सपह करइ संखेवी, तहि छइ सामिणि अंपाएवी ॥ ७ ॥
- पुरुष पच्छिम धम्मिय तहि आयहिं, उतर दक्खिन संपु जिणवरु न्हायहिं ।
 पंसहि मंदिरु रिसह म्भत्ता (रवत्ता !), नाचहि धम्मिय बहु गुणवत्ता(त्ता) ॥ ८ ॥
- धनु धनु विमल्लडि जेणि कराविउ, ससिमंडलि जिणि नाउ लिहाविउ ।
 विहुं सइ वरिसह अंतरु सुणीजइ, बीजउ नेमिहि भुवणु सुणीजइ ॥ ९ ॥

उवणि-

- नमिबि चिराणउ धु(पु ') णि नमिबि, बीजा मंदिरनिवेसु ।
 त पुदविदि माहि जो सल्लहिल्लण, ऊत्तम गूजर देसु ॥
 त सोल्लंकियकुलरंमिभितं, सूरउ जणि जसवाउ ।
 त गूजररातथुरासमुधरणु, राजउं दणपसाउ ॥ १० ॥
- परिवउ दाउ जो आउपण, जिणि पेलिउ सुरिताणु ।
 राउ करइ अत्तम तणओ, जासु णमंजिउ माणु ॥

१ प्रणय ॥ २ स्वर्णम ॥ ३ कर्ण ॥ ४ पीडा ॥ ५ नाम ॥ ६ श्रावणे ॥ ७ संनमिदंस्वमविदि
 लभंयः ॥ ८ गूजररातौ धुजे बदेकर ॥

लुणसापुत्रु लु विरघवले, राणउ अरडकमल्ल ।

त चोर-चराडिहि आगलओ, रिपुग्रायह उरि साउं

॥ ११ ॥

भास-

वस्तुपालु तसु तणइ महंतउ, सहुयर तेजपाल उदयंतउ ।

अभिणवु मंदिर जेण कराविय, ठांवि ठावि जिणवित्र भराविय

॥ १२ ॥

महिमंडलि किय जेणि उद्वारा, नीरनिवाणिहि सत्तूकारा ।

सेत्तुजसिहरि तलावु खणाविउ, अणपमसरु तसु नामु दियाविउ

॥ १३ ॥

निउ निउ सुरसंध पूजा कीजइ, छहि दरिसणि धरि दाणु वि दीजइ ।

संध पुरिस पुहविहि सलहीजइ, रीउ घघेला बहु मानिजइ

॥ १४ ॥

अन्न दिवसि निय मणि चितीजइ, महतइ तेजपालि पभणीजइ ।

आबू भणिजइ तीथहं ठाउं, जइ जिणमंदिरु तह नीपावउं

॥ १५ ॥

ठाकुरु ऊदल ताव हकारिउ, कहिय थात कौन्हइ चइसारिउ ।

आबू रिखमह मंदिरु आछइ, महतउ तेजपालु इम पूछइं

॥ १६ ॥

बीजउ नेमिहिं भुवणु करेसहं, जइ जिणमंदिर थौहर लहिसहं ।

पहिलउ सोमनरिंदु पूछीजइ, कटक माहि जाइवि विनवीजइ

॥ १७ ॥

ठवाणि-

महतिहिं जायवि भेटियओ धावलदेविमल्लारु ।

त कड(र) जोडेविणु वीनतओ, सोमनरिंद प्रमारु ॥

विनति अन्हहं तणीय, सामिय तुहु अवधारि ।

त मागउ थाहर मंदिरह, आधूयगिरिहि मझारि

॥ १८ ॥

त तूठउ धांवलदिवितणउ, आगइ कहियउ एहु ।

त विमलह मंदिर आससउं, विजउं करावहु देव ॥

अग्हि धुरि गोठिय आनुयह, आगे अठह निवाणु ।

त करिज मंदिरु तिजपाल ! तुहुं, हियइ म धरिजहु काणि

॥ १९ ॥

भासा-

दिस(य ?)इ आय(ए)सु तह सोमनरिंदो, वस्तुपालु तेजपालु आणंदो ।

जिण समिय मंदिरु वेगि निप्पजए, अइसु निरोपु दिव उदुलु दीजए

॥ २० ॥

अइसि ऊदल्लु चंद्रावती आवए, सयलु महाजनु धरि तेडावए ।

चालहु हिय आबुइ जाएसहं, जिणमंदिर थाहर भूमि जोएसहं

॥ २१ ॥

चलिउ ऊदल्लु महाजनि सहितउं, आयुय देवलवाढइ पहुतओ ।
 ठामि ठामि मंदिरभूमि जोयंतओ, मिलिउ मेलावओ आबुय लोमहं ॥ २२ ॥
 मंदिर थाहर नवि आपेसहं, प्राणिहिं भुवणु करण नवि देसहं ।
 आगए विमलमंदिर निप्पनओ, सिर मा भूमिहिं दीनउ दानु ॥ २३ ॥

ठवणि-

ऊदल्लु तिर्यु [त]पसीय वहु परि संतावइ ।
 राठी वर भूमिलिया वस्तइं पहिरावइ ॥ २४ ॥

भास-

अग्नि धुरि गोद्विय दिव निमिनाथ, जिणभूमि आपहु ते इमु बाहा ।
 विमल मंदिर ऊनर दिसि जाण, लदय भूमि तिल(ज)पालु वधाविउ ॥ २५ ॥
 महतइ तेजपाल पभणीजइ, सोमनदिउ सुतहारु तेहीवइ ।
 जाइज आबुइ तुहुं (सहुतु) कमठाए, वेगिहि जिणमंदिरु निप्पाए ॥ २६ ॥
 चालिउ पइठ करिउ सुतहारो, भूमि सुवण इक्कार अहारो ।
 सोमनदिउ विगि आबुइ भावइ, कमठा सुहुतु आरंसु करावइ ॥ २७ ॥

भास-

मूलग पायारघर, पूविउ कुरुम प्रवेशु ।
 भरिउ गहारउ तहि ज पुरे, सरसिल हुमउ निवेशु ॥
 आसंनी तहि ऊषदिय, पायरकेरिय स्वाणि ।
 निपनु गहारउ भूमिगओ, देउल्लु चडिउ प्रमाणि ॥ २८ ॥
 रूपा सरिसठ समतुल प, दसहि दिसावरि जाइ ।
 पाहणु तहि आरासणउं, आणिउ तहिं कमठाइ ॥
 सरवरु घाटु जो नीपजण, मंदिरु बहु विस्तारि ।
 त आतिसइ दीसइ रूवढउं, नेमिजिणिउ पयारु ॥ २९ ॥

ठवणि-

सोमनदेउ सुतहारो कमठाउ करावइ ।
 सइ तउ मंत्रि तिजपालो जिणविनु मरावइ ॥ ३० ॥

भाम-

खंभापति वर नयरि विनु निप्पजण, रयणमउ नेमिजिणु ऊपम दीजण ।
 दिगनि कंनि रयणकंनि सामल धीरा, बहु पंकति बहु मफति जाइ सरारा ॥ ३१ ॥

निवसए विन्दु जो साल्ह संठिओ, विजयसिणध्वरि गुरि पढम पतीठिओ ।	
निपनु परिपूरनु सामलदेउ, धणु तिजपाल जिणि आयुय नेओ	॥ ३२ ॥
धवलसुत सुरहि पुत ठविय तहि रहवरे, खडइ सुहडा सुमुहुआ आयुय गिरवरे ।	
नयरवर गामह भाहिहि आवए, सइत भवियहो जिण पहेरावए	॥ ३३ ॥
आयुय तलवटे रत्यु पहूतओ, तेणीय ऊवरणीय पाज चढंतओ ।	
धडऊयडइ रहु, पाज विसमी खरी, वेगि संपच अंबिक वर अच्छरी	॥ ३४ ॥
सानिधि अंचाइय रत्यु चढंतओ देवलवाडए दिणि छठइ पढतओ	॥ ३५ ॥

ठवणि-

आयुय सिहरि संपचु देउ पहु नेमिजिणेसरु ।	
वणसइ सवि विहसणहं लगग आइउ तित्येसरु	॥ ३६ ॥
उच्छंगिहि जुगादिजिणु जिणु पहिलउ ठविजइ ।	
तुहुं गरुयउ निमिनाथ विवु तिजपालिहिं कीजइ	॥ ३७ ॥
हकारहु वर जोइसिय पढठइ दिणु जोयहु ।	
तेडावहु चउविहहं संघु पुर-पाटण-नामहं	॥ ३८ ॥
वार संबच्छरि छियासियए (१२.८६) परमेसरु संठिउ ।	
चेत्रह तीजह किसिण पखि निमि सुवणिहि संठिउ	॥ ३९ ॥
बहुं आयरिहि पयट्ट किय बहु भाउ धरंता ।	
रागु न(त) वदइ भवियजणाहं निमित्तिर्यु नमंतह	॥ ४० ॥
आवे हंडावडा तणे जिणु पहिलउ न्हवियउ ।	
पाळइ न्हवियउ सयल सधि तुम्हि पणमहु भवियहु	॥ ४१ ॥
[.....] तसु कल्याणिकु कीजइ ।	
दसमि तिर्यु नेमि जात रेसि संघ पासि मंगीजइ	॥ ४२ ॥
संघु रहिउ जिणि जात करिवि नेमिधुवण विसाल ।	
पूरि मणोरह वस्तुपाल मंति तेजपाल	॥ ४३ ॥
भूरति र्थेपु असराज तणी कुमरादि विमाया ।	
काराविय नेमिधुवणुमाहि विहु निम्मलकाया	॥ ४४ ॥
काराविउ निमिधुवण फळ लयउ संसारे ।	
निमुणहु चरितु नदन्ते (ते ?) तिणि घंथुय प्रमारे	॥ ४५ ॥
रिपममंदिरु सासणि जाणुं थुंधुय दिखउ डकडवाणिउं गाउं ।	
तिणि सुमसीहि उजालिउ नाउं नेमिहि दिन्नु डवाणिउ गाउं	॥ ४६ ॥

[भास]

[.....]

- अनेक सपपति आबुइ आवहिं, कनक कपड निमिजिणु पहिरावहिं ॥ ४७ ॥
 पूजहि भाणिक मोतिय हूँले, किवि पूजहि सोगधिहि फूले ।
 केवि हु हियडय भावण भावहिं, केवि हु मंनीणइ आराहहिं ॥ ४८ ॥
 केवि चडावलि नेमि नमीजइ, रासु वयणु पाव्हण पुत्र कीजइ ।
 बार सवच्छरि नवमासीए(१२८९), वसंत मासु रंमाउल दीहे ॥ ४९ ॥
 प्ह राहु(सु !) विस्तारिहि जाए, रापइ समय संघ जंभाई ।
 राखइ जासु जु आछइ खेडइ, राखइ ब्रह्मसंति भूटेरइ ॥ ५० ॥

॥ आबूरासः समाप्तः ॥



परिशिष्टानि ।

सुकृतकीर्तिकलोलिनी-आदि वस्तुपालप्रशस्तिसंग्रह ।

पद्यानुक्रमणिका ।

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
अद्रावणगमयराय	१९	१०२	अन्वयेन विनयेन	४३	६२
अइसि ऋद्धु	२१	१०५	अन्न दिवसि	१५	१०५
अकारयन्नाकारं	४०	२६	अपास्य शौण्डीर्यमदं	१५	२५
अगण्यपुण्योदय	३०	२६	अपि चाप्यायिता	६	९८
अगुण अंजण	१५	९९	अप्राप्ततादृशगुणां	८४	७
अग्रे हर्मीरवीरश्	६०	५	अमृदनुपमा पत्नी	५९	६३
अचिन्त्यदातार	१७	४३	अन्यर्ष्य देवान्	३१	२६
अच्छिद्रो यदि तद्धृतः	९९	८	अन्विकामवने येन	८८	२८
अजनि रजनिजानि	३	७६-१	अंविष ए जो	१४	१०३
अजयदजयपाल	२७	३६	अम्भोजेषु मराल	८	५२
अट्टविहृ षज्जय	१३	१०३	अम्भोदभ्रममाजि	१२६	११
अणहिलपुरमस्ति	३	५९	अभिह घुरि	२५	१०६
अन्यदमुता सचिवपुङ्गव !	३०	२०	अयं हि राकामु	८	२४
अन्यदमुतैः कृत्यशतैः	१०२	२९	अयमनुदिनदानो	६०	८६
अत्रैव शत्रुजय	८२	२८	अरिवलदलनश्री	३	४९
अत्रैव शैले रचयाञ्चकार	७८	२८	अरुण्यतीव कान्ता	४०	८५
अनन्तप्रागन्म्यः	२२	३२	अर्कपालितकप्रामे	५९	३८
अनुजन्मना समेतस्	१९	६०	अर्चिपामयन	२६	८३
अनुजोऽस्यापि	८	७६-२	अणोराराजाङ्गजातं	३३	३६
अनुपमदेवी देवी	५३	६३	अर्थदानदलिता	६३	८७
अनुपमदेव्यां पल्यां	१३	७६-२	अर्थव्यर्थितदुस्थ	४२	४
अनुपमदेव्यास्तेन	८४	२८	अर्हस्तनोतु मुवना	१	७८
अनुसृतसज्जन	५१	६३	अर्हतन्निजगद्	२	९५
अन्तःकज्जलमञ्जुलश्रि	२०	१९	अवधयन्नाद्यु	२३	३५
अन्तःक्षारं रिपूणां	२	४०	असावाशाराजं	६	७६-२
अन्तर्यर्कात्तिकासारं	२८	३६	असौ कीर्त्तीः स्वका	१४१	१२
अन्तर्व्योम श्रवन्ती	८३	७	असौ भुवनपालख्य	६१	२७
अन्ये केचन	५२	३७	अस्ति प्रदास्ता	१	८१

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
अस्ति स्वस्तिनिकेतन	४९	६३	आस्य कस्य न	९	९२
अस्थापयत् स्थिरमति	६३	३८	आहडस्तदजनि	२०	२
अस्मद्रोत्रैकमित्र	१३२	१२	इन्दुर्विन्दुरपा	७	५७
अस्मिनामिभुव	१६६	१५	इतरगुणकथाया	६	४२
अस्मिन्नुजतवेस्म	१३	२	इतधौलक्यवीराणा	२५	६०
अस्य त्रिक्रमविक्रमस्य	५३	५	इत्थं श्रीवस्तुपाल	९	९३
अहकृत्तिलतायुध	२	९३	इत्यन्त रिमत	६९	३९
अहिण्वु नेमि	९	१०१	इत्युक्त्वा प्रीति	५१	३७
आकृष्टे कमलाकुलस्य	१३	५३	इत्युक्त्वा मम	६७	३९
आगो यदमुवारि	१७	३१	इद सदा सोदरयो	२१	६०
आजम्त्रासहेतु	६८	६	इन्दु पत्रावलम्ब	१५८	१४
आत्मगुणै किरणैरिव	६	५९	इन्दु पत्रावलम्बं	१७	१९
आत्मा त्व जगत	८	४९	इन्दुर्निन्दति	११	४०
आदिम प्रशम	४१	८५	इन्दुर्विन्दुरपा	१२८	११
आदेशं देव । यथेव	६८	३०	इमा समयवैषम्याद्	१५	२२
आयेनाऽप्यपवर्जनेन	६	५२	इमामवृत सद्गुरोर्	१७८	१६
आनन्दचन्द्राऽमरचन्द्र	१५३	१३	इयमनुपमदेवी	५४	६३
आन दाऽमरसूरी	१००	२९	इह तेजपाल	७	४७
आनदाय मुदर्शना	३	३४	इह वालिगसुत	१	४७
आपणे प्रसृति	३०	३६	इह वालिगसुत	१	५०
आवुय तल्वटे	३४	१०७	इहैवाष्टापदोद्धार	६५	२७
आवुय सिंहरि	३६	१०७	ईदृशूपगुरूपदेश	१६२	१४
आयाता कति	५	४७	उच्छ्रगिहि	३७	१०७
आयुर्वायुहृत्तोर्मिवत्	१६१	१४	उट्टेविणु सिरिनेमि	६	१०१
आवइ ए जे	१६	१०३	उत्कर्षगुणा	४५	३७
आराग्न्यो नवपुप्य	२६	१९	उत्फुल्लमल्ली	५४	८६
आरागराज इति	१०७	९	उत्सेकितोत्सूत्र	१७	८०
आशाराज शस्यधी	२१	२५	उदप्रतेज सुखैतैक	१०	२४
आशाराजस्य पितु	९७	२८	उदार शूरो वा	४	४९
आध्यै वसुरष्टिमि	१८	३१	उदधारानुजो यस्य	५२	२७
आसीद्दीनो दोम्नदा	१६	२	उदृत्य पद्मासर	३२	२६
आसीधडपर्मडिता	६९	६४	उन्मृत्य वैयनाथस्य	५८	२७
आपते तस्य मुपारहस्य	११६	१०	उन्नास्वद्विचविषा	४१	९०

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
उद्भूतप्रतिभा	१३०	११	कल्पद्रुप्रसवावतंस	६	४०
उद्भूतप्रतिभा	१३	१८	कल्पाविक्रणादितो	१९	८०
उपार्जि विमुता	९७	८	कवीन्द्रपदवीस्पृहा	५०	८५
उदल्लु तिल्यु	२४	१०६	कस्याऽपि कविता	४	५४
ऋग्वेदी च	११	८२	कान्तं यं वीक्ष्य	३९	४
ऋजुरोहित	२४	८३	कान्तस्वान्तसरो	१११	९
एकवीसि उपवासि	५	१०१	कान्ता जगन्त्रितय	१९	८९
एकाऽपि प्रमदां	१२	२	कान्ते कृष्णेऽभिभूते	४०	४
एकैकेन विमोह	१८	८०	काराविउ निमु	४५	१०७
एकोपत्तिनिमित्तौ	२३	६०	काले यत्स्वङ्गदण्डे	२१	२२
एतद्दर्मस्थानं	७२	६५	कान्येन नन्यपद	४९	८५
एतस्मादजनि	७	५९	किं च कारयता	५७	२७
एतस्मिन् भव	४	९१	किं चित्रं यदि	१६८	१५
एतस्मिन् वसुधा	१६	२२	किं वण्णो लवण	७८	७
एतस्मिन् वसुधा	७	५५	किञ्चितेन गुणैः	१४९	१३
एतस्य विकसद्धर्मा	१०६	९	किमिह कपाल	१	६७
एताः शमाभृतरसेन	११	९२	कीर्तिकम्पलित	४४	३७
एतेभ्यः प्रमुणा	३९	९७	कीर्तित्तोमसुधा	७	३४
एतेऽध्वराजपुत्रा	१८	६०	कीर्त्या सौरभसार	३८	९०
एह राहु	५०	१०८	कुण्डलप्रतिमित	९२	८
और्वाग्निनाऽपतत	३०	९०	कुदेशना च या	८	९५
औपधीशसखः- सत्यं	४	४०	कुन्दं मन्दप्रतापं	६	३०
कडडिजक्खु	१६	१०१	कुमारपालस्य	२९	८४
कथ्यन्ते न महीभृतः	६१	५	कुमारपुत्रेण	६७	८७
कमठधनभृताम्भो	१	७८	कुर्वन् परार्थगणिते	१६	८९
करवर करपट	१६	९९	कुर्वन् मुहुर्विभल	३३	९०
करसरसिरुहं ते	५	४१	कुशोपशोभितैर्	२३	८३
करसरसिरुहं ते	९	४२	कुप्पाण्डि ! मण्डन	३	९४
कराम्भोजं भेजे	३४	३	कुतं पद्विषयजीवानां	३	९५
कराम्भोजं भेजे	१०	१८	कृत्वाऽघः कच्छपं	६	३४
कर्णयास्तु नमो	२८	३३	कृष्णीकृत्ताखिदना	४	८८
कर्णे खलप्रलपितं	१०	५०	के निधाय वसुधातले	६	४९
कर्मसाक्षिभवताप	१५१	१३	केवि चडाबलि	४९	१०८

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
कोटीरैः कटका	१५	३१	गुरो[स्त]स्या[शि]पां	७१	६४
कोटीरैः कटका	२	५१	गूजरदेसह मन्त्रि	२	१०४
कोदण्डं स्वकरो	६४	६	गृहीतं कुप्यता	३७	८४
कोपाग्नि-वलिता	७७	७	गृह्णासि नाम परतोऽपि	४	४१
कोपाटोपपरैः परैश्	१३७	१२	गोप्रहप्रोञ्चिता	३५	२६
कोपाटोपपरैः परैश्	२	५६	गोमयरसानुल्लिखे	६४	८७
कान्तशक्रबलो	५४	५	गौरीवरश्चशुर	३०	६१
क्रामन्ति स्म यथा	१५	३५	ग्रामेऽर्कपालितक	६८	२७
क्रीडाकयामु सदसि	१३	८८	ग्रामे शासनदत्ते च	१७२	१५
कुन्ने युद्धेपु यस्मिन्	८७	७	घण वणरायहं	५	१०४
कोधेन ज्वलितो	८	९२	घोरारण्यविलङ्घने	७६	७
क्वचिदिह विहरतीर्	३१	६१	चंडप्र[सा]दसं[ज्ञः]	५	५९
क्षीगत्वं दाक्षिणात्या	६३	६	चक्रे कोपश्च	६	९५
क्षीणे चक्षुषि	५६	८६	चक्रे च यो धवलके	१७०	१५
क्षीराम्बिर्द्वैठति	१३५	१२	चञ्चत्पञ्चम	४	८१
संभायति वर	३१	१०६	चण्डप्रसाद इति	१००	८
खेलसङ्गापडंद्दि	३१	३	चण्डप्रसाद इति	५	८८
ख्यातं सद्ग्रामसिद्धो	१३९	१२	चण्डप्रसादपुण्ये	९०	२८
गयणरंगं जं	२०	१०२	चण्डांशोरपि चण्डता	२२	२३
गर्जन्निर्जरकुञ्जरे	१२९	११	चत्वारस्तनया	११२	९
गर्जन्निर्जरकुञ्जरे	१२	१८	चलियउ उन्दल्लु	२२	१०६
गर्वात् पूर्वे	१०	७९	चहुविहु ए संघु	१२	१०३
गहगण ए माहि	९	१०२	चान्द्रे कुले	१६	८०
गार्भर्षिं जलधिर्	१	७६-३	चालिउ पद्वि	२७	१०६
गाथास्ता' खड्ड	८	७८	चित्रं चित्रं समुद्रात्	३२	३३
गामागर पुर	२	९९	चित्र दिवन्गान्नि	१७	२५
गिरिगरुत्या सिंहरि	१	१०२	चिन्तातीतफल्प्रद'	१	१
गुणग्रामे रामे	८	४०	चिन्तातीतफल्प्रद'	३	७८
गुणपननिघान	५७	६३	चिन्कारैः शकटप्रजस्य	३७	३३
गुणौपहंसादि	१९	२५	बूडामणीरत	१०	८८
गुग्गरपरपुत्रि	७	९९	चेतः किं कट्टिकाल !	३	२१
गुरुः कुल्लेऽप्य	९९	२९	चेतः किं कट्टिकाल !	१	४७
गुरुः श्रीहरिमन्त्रेऽयं	८	७९	चेतः केनकगार्भ	२	१७

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
चौलुक्यः सुकृती	२८	६१	त एव स्तूयन्ते	६२	८६
चौलुक्य सितिपाल	५	४५	तजगत्यां च	६२	२७
चौलुक्यचन्द्र	४	९५	तजन्मा वस्तुपालः	२	९७
छर्मोत्सेकितनो	५	१	त तूठउ	१९	१०५
न फल ए	८	१०२	ततोऽभवत् क्रीर्ति	९	२४
नगद्वन्द्वगन्यः	६५	६	तत्कामश्रीरजनि	३८	४
नने हर्षपुरीय	१०४	२९	तत्कालं कलहे	२२	३५
ननन्यामोह	७	४२	तत् त्रैलोक्यनिभ	२०	३५
नम्बूदीपो जलधि		४३	तत्त्वोदिवर	२०	८०
नम्भयु जोष[ण]	८	१००	तत्पट्टे प्रथमः	६	७९
नयति विजयसेन	१५७	१४	तत्पदे विजयसेन	१०१	२९
नययसनसंयमः	१	९३	तत्पदे विजयसेन	१७	७६-३
नल्लनालत्रयाले	४	१००	तत्पदे विजयसेन	९	७९
नर्हि जियु ए	१८	१०३	तत्र प्राग्वाटान्वय	४	५९
नाइ कुंडु विहसंतो	५	१००	तत्र रैवतकाधीशः	७९	२८
नातः फरीन्द्रोदुर	१७	२	तत्र लोलाकृति	५४	२७
नाता कृष्णपदात्	१३३	१२	तत्राऽऽमरत्वामिनो	८१	२८
नाहू माऊ-साऊ	१७	६०	तत्रैकं राणक	६६	२७
नियु तर्हि मंडल	३	९९	तत्रैव वीरघवल	१७६	१६
निचा म्लेच्छपतेर्	३८	८४	तत्रैवाकारयद्	७६	२७
निम निम वायइ	३	१००	तसंभवखिमुवा	२१	८९
नीम्याद विजयसेनस्य	६	७८	तसत्त्वं कृतिमिर्	१०	३१
नीयामुः कवयो	८	१	तदन्तिके च नि.शेष	८६	२८
नीविउ ए सो	१७	१०३	तदन्वयाम्मोधि	३	२४
नुह्वन् पातरु	७०	३९	तदामज संयनि	६	२४
नैनं धर्मपुरीचकार	२५	३६	तदिमं मौल्यिु मौलि	११८	१०
नैदउ जोइउ	१४	९९	तदीये शिखरे नेमि	८९	२८
नान-दर्शन-चारित्रं	९	९५	तन्नन्दनः कुमुद	१६	२५
न्येष्टः श्रेष्ठनमः	२८	८३	तम.सर्वान्निने	१९	२२
नयुरु उदउ	१६	१०५	तमद्वतमहं यद्वा	६९	६
नमि टामि ए	७	१०२	तमेरुदा फरारोप	६४	३८
नियु निधउ	९	१०१	तयोः प्रथमपुत्रो	८	५९
न्यदि मनि	७	१०१	तव यत्र शनपत्रं	४७	८५

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
तमु मुह दंसगु	५	९९	तेज पाल पालित	१५	६०
तमु सिरि पहिलउ	६	१०४	तेज पाल सरुल	६५	६४
तमु सिरि सामिउ	४	९९	तेज पाल सचिरतिलफो	२७	२५
तस्मात् कुमार.	२१	८३	तेज पाल ! वृपालधुर्य !	६६	३९
तस्मादरुमल	८	३४	तेज पालयशो	७३	३९
तस्मादनतर	२६	६०	तेज पालस्य विष्णोश्च	९	५५
तस्मादभूदजयपाल	११	२४	तेज पालस्य विष्णोश्च	१६	६०
तस्मादमूद	१२	३५	तेज पालेन पुण्यार्थ	६०	६३
तस्मान्नेत्रमुधाञ्जन	३३	३	तेज स्फूर्जितदीप	२५	३
तस्माद् भस्मीकृत	३५	३	तेजपालि निम्नविउ	१७	१०१
तस्माद् विस्मारित	१६	३५	तेजपालि गिरनार	९	९९
तस्मिन् काञ्चनकोटिमि	२४	२३	तेजोवह्निहुताष्टदिग्	५१	५
तस्मै संयमिनामिनाय	५	८१	तेन भ्रातृयुगेन	६६	६४
तस्मै स्वरित चिर	५	७६-४	तेन मंत्रिद्वयेनाय	२९	६१
तस्य गर्भगृहोत्सङ्गे	४३	२६	तेषां भुगेध्वर	७	९४
तस्य जगत्यां	५६	२७	तैस्तैर्येन जनाय	१६	३१
तस्य प्रिया प्रणय	२५	८९	तैस्त्रिभिः प्रथम	४३	८५
तस्य प्रिया मुद	११०	९	त्यजामि पापमाहार	१०	९५
तस्याऽऽजया	१४	७९	त्यागाराधिनि शोधये	१०३	२९
तस्यानुज	३१	९०	त्रिग चाचरि	३	१०४
तस्यानुजन्मा	५	२४	त्रिजगति यशस्तते	३१	२०
तस्यानुजो विजयते	१३	६०	त्रिभुवनदेवी तस्य	५२	६३
तस्याऽभवजिर्मठ	२२	२५	त्वत्कीर्तिर्ज्योत्स्नया	११	४२
तस्याऽभूतनया	९	७६-२	दत्तालकेऽर्थिलेके	१०९	९
तस्यैनाऽऽधिमो	७४	२७	देते चेतसि सम्मद	७१	३९
तहि नयरह उत्तर	१३	९९	दग्नेऽस्य वीरधरु	६	४७
तहि पुरि सोहिउ	१०	९९	दन्तौ धर्ममतङ्गजस्य	१५४	१४
तहि नयरह पूरव	११	९९	दयिता छलितादेवी	९	४५
तादस्मभ्यन्यतिकर	३४	३६	दयिता छलितादेवी	४४	६२
ताददानपरस्पराभि	२६	३६	दर्श दर्शमसद्य	६२	६
तीर्थेणा प्रणतेन्द्र	१	५०	दस द्रिसि प	५	१०२
मुझेभनीम	४	७८	दानं दुर्गनवर्गसर्मा	२६	२५
तेज पाल इनि	६१	६३	दानानि तानि	१९	८३

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
दायादा कुमुदावलिर्	७	२१	देशोऽरण्यप्रदेशो	८०	७
दारिद्र्यदुर्दम	४	९४	दोषोऽनुष्णमुद्रितेऽपि	१६०	१४
दावद् ए दुक्खहं	४	१०२	द्वारे यत् किल	९८	२९
दास्यवर्त्तिन् इवाऽऽस्य	५९	५	घंयुक-ध्रुव-भटा	३४	६१
दिग्यात्रोत्सववीर	१२१	१०	घनमनवरत	५८	८६
दिग्यात्रोत्सववीर	११	१८	घनु घनु विमलडि	९	१०४
दिग्यात्रोत्सववीर	३	५६	घनु सु भवलह	२	१००
द्विद्वय छत्रसिल	२२	१०२	घन्यः स वीरधवल	२८	२५
दियहि ए नर	११	१०३	धर्मस्थानमना	१२	९२
दिस(य ई)द् आय(ए)सु	२०	१०५	धर्मविधाने सुवन	११	५९
दिसि उत्तर कसर्मार	१	१०१	धर्मस्थानमिदं	८३	२८
दीपः स्फूर्जति	२६	२३	धर्मस्थानांकितामुर्वी	२४	६०
दीपः स्फूर्जति	४	४७	धर्माचिन्ति रुचित	३४	९०
दीप्तद् दिसि दिसि	१८	१०२	धवल धय ए	१०	१०२
दुर्गाः स्वर्गगिरिः	४	२१	धवलसुत सुरहि	३३	१०७
दुर्गाः स्वर्गगिरिः	५	५४	घात्रीधुराण सुत्र	१५	२
दुविहि गुजरदेसे	१	१००	घान्नां धाम	७४	६
दुष्टारिकोटि	३४	८४	घाम्नि स्वर्धामशैलं	१२४	११
दुर् दुर्ललितेन	८२	७	घाराधंशपुरोधसा	२०	८३
दृश्यः कस्यापि	२३	१९	घाराधंशो विन्ध्यवर्म	३६	८४
दृश्यः कस्यापि	२	४१	घारावर्षमुतोऽयं	४०	६२
दृश्यते मागिमौक्तिक	१४	३१	धीराः सत्त्वमुगन्ति	१	७६-१
दृष्ट्या वपुश्च	११	९८	न किं स हरितुन्पता	८१	७
दृष्ट्या वपुश्च	११	५५	न कृतं सुदृढं	१	९५
देवः पङ्कजमूर्	३१	३३	नगरालये महास्थाने	४४	२६
देवः परं जिनयरो	१४	८९	नतारोभेदपि	७९	७
देवः स वः	२	७८	नमस्त्ये निर्दृष्टाः	२५	२३
देव ! स्वप्रतिपन्थि	७	४०	नमिषि चिरागड	१०	१०४
देव स्वनांय ! फटं	२७	३२	नन्नारीन्दुमुसी	२१	२
देव स्वनांय ! फटं	९	५२	न यस्य लक्ष्मीपति	११	३१
देवि ! त्वर्क्षित	८	९४	नरनारायणानन्दो	४०	९०
देवि ! प्रकाशयति	५	९४	न वदति परुषा	५७	८६
देवी सरोत्रासन	३९	६२	नागेन्द्रगच्छ	३२	९०

	श्लो०	श्लो०		श्लो०	श्लो०
नाभुवद् कति	१४	७६-२	परमपदपुराप्र	४	१
नाभेयं नेमिनाथं च	३९	२६	परमेस्तर त्रिभेसरह	१	९९
नाथलगाच्छह	८	९९	परिवल्ल दन्ल	११	१०४
नितु नितु सुरसंध	१४	१०५	पर्यैपीदिसौ	३	७६
नियं शत्रुजयाद्रौ	१०	९८	पल्लव-फुल्ल	१९	१००
नियोगिनागेपु	१३	५०	पहिल्लह सांव	६	१०२
निरिन्द्रप्रमे बोहास्य	४६	२६	पाण्डवः पास्तण्डिवेध	२६	३
निर्माप्याऽऽदिजिनेन्द्र	५	७६-२	पातालमूले पिहितानां	४३	३७
निवसथ विवु	३२	१०७	पाताले बलितान	३७	३७
नीजर ए चमर	१९	१०३	पापं पङ्कजयन्	२	१
नीना वरां विपम	१२३	१०	पीनश्रीर्मुञ्जयन्मगो	२२	२
नीरुनीरदकदन्वक्र	१२	६०	पीयूषस्य च	१	४६
शुक्लवा व्योमरक्षे	१७७	१६	पीयूषादपि पेशला	१	१७
नृणां यपद्रुभयोरु	१५६	१४	पीयूषैः प्रणता	६५	८७
नेराणामभृताजनं	२७	२०	पुण्यं प्रतार्पसिंहस्य	५९	२७
नेपच्यैरितिधीनवन्	८	९३	पुण्यश्रीर्भुवि	९	५७
नैवोत्तसम्पुट	८	८८	पुण्यस्य पापपटली	७	८८
नो चेद् यशांसि	१७	८९	पुण्यायाऽजयसिंहस्य	६४	२७
न्यग्यावस्यं गिरिसि	४४	४	पुण्यासामः सरुल	३३	३३
न्यास व्यातनुनां	३	५२	पुण्ये गिरीशशिरसि	१	९४
नृवन-त्रिडेवण	११	१०१	पुण्यैरुडेत्	६	१
पधानमेको न	२०	६०	पुरा कालमेध्रय	९४	२८
पद्य पौषशालाध	६३	२७	पुरा पादेन दैव्यारु	८	४५
पदम भवामि	८	१०१	पुरुन्व पच्छिम	८	१०४
पगमेवि सामिणि	१	१०४	पुरोत्तमे स्तम्भनका	३८	२६
पनी तरायाजाम्ना	४	७६-१	पुण्यदन्ताविमौ	१३	९८
पपुर्नदीनामिव	२०	२५	पुष्टूर्त्त गूर्त्त	१५	८९
पदं त्रिजयसम्पदा	६६	६	पूष्टि मागिक	४८	१०८
पद्मा पद्मपाश्व	४३	४	पूष्यमेव सन्धिवः स	९	५९
पद्मामिगामहृत्नेत्र	१४२	१२	टुटे कायनदिक्	१६९	१५
पद्मामिगामहृत्नेत्र	१८	१९	दंमिहिए मुनिवन	१५	१०३
पद्मा पद्मार्चनानां	१५२	१३	पौष्ठा धाम्य	७	४९
पद्मव्येष्टदमेपु	४	९५	पौष्ठाउत्पुत्र	६	९९

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
पौषशालाद्वितयं	३७	२६	वाहिरी गढ	१२	९९
प्रणमदमरप्रेङ्खन्	१	४८	त्रिद्वैजसि गते	४७	४
प्रतापतपनो यत्स्य	१०	२२	विभ्राणं परितो	३४	२६
प्रतापस्याद्वैतं	८	२२	वीजड नेमिर्हि	१७	१०५
प्रतिदिनमपि रौद्रेर्	८५	७	बोलावी संघट्ट	२०	१००
प्रतिष्ठाय च मन्त्रीशसु	१७१	१५	मग्नः शङ्ख इति	१४०	१२
प्रतीना नीतीना	१३६	१२	मर्त्ता मोगमृतां	१०	४०
प्रत्याकारच्छगुरुदारी	९०	८	मर्त्तुर्वपमयं विधाय	१३४	१२
प्रयादां प्रसरत्	३	९१	मर्त्तुर्वपमयं विधाय	९	१७
प्रथमं धनप्रवाहैर्	१५	५०	भवति हि विभवो	१६	४३
प्रथमादर्शे	१५	७९	भवदमुजमुजङ्गोऽसौ	३	४०
प्रद्युम्नशिखरे सोम	९१	२८	माग्यम्ः किमसावस्तु	१८	२२
प्रमूतमूतराजस्य	६०	२७	भास्वप्रभावमधुराय	३५	९०
प्रवर्त्तमानेऽत्र	६६	८७	भित्वा भानुं	४	४५
प्रसादाद्वादिनाथस्य	१७९	१६	भित्वा भानुं	१७	८२
प्राग्वाटगोरतिलकः	३	८८	म्वन्लमस्तदनु	१०	३५
प्राग्वाटवंदाव्यञ्ज	१८	२५	मूमारोद्धृतिपुर्ये	३५	३६
प्राग्वाटान्वयमंडनं	१	९७	मूमीमारमथो वमार	३१	३६
प्राग्वाटान्वयमंडने	५०	६३	मूर्यांस एव	१४	२५
प्राग्वाटान्वयवारिधौ	५३	८६	मूपा मूवोऽगहिल	११	२
प्रासादैर्गंगना	१	४९	मृगुनगरमौलि	४२	२६
प्रीतो वखापथमुषि	९५	२८	मेजे तेजोगगन	२७	३
प्रेस्थ्यास्थैर्यं प्रमुप्रीति	२९	२५	भैमीव नैयध	४८	३७
प्रेयस्यपि न्यायविदा	९	२२	भोगीन्द्रस्वदमुजेन	९	४०
वदः सिन्धुवसुन्धरा	२२	८३	भ्रमन्ती मृशामन्याय	१२	२२
वन्द्युः कनीयान्	१२	२४	धातः ! पातकिनां किमत्र	३	४५
वभूव गोत्रैकगुर्	१५०	१३	ध्राना वातायन इव	१०४	९
वलि-कर्ग-दूर्धाचि	१२	४०	भ्रूमद्विप्रतिविम्ब	९६	८
वहं धायरिर्हि	४०	१०७	मंदिर धाहर	२३	१०६
वाढे प्रौढयनि	९	३१	मज्जन्तीमयनी	१६३	१५
वाने गीर्वांगोष्ठी	३२	२०	मज्जन्तीमयनी	२१	१९
वार संवच्छरि	३९	१०७	मगहरपगवग	६	१००
वालः धीमूतराजोऽयम	२९	३६	मत्रिकृष्णश्या यस्य	४१	३७

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
मन्वोर्व्यधिनि	२५	८३	यः [क्ष]ांतिमा	२	५९
मन्दच्छदसि	५१	८५	यः प्रत्यर्थिक्षितिपति	१३८	१२
मन्येऽस्मिन्नमृता	७०	२७	यः शत्रुञ्जयशेखरं	५६	३८
मन्त्रदेव इति	११४	१०	यः शान्मदिशखरे	९२	२८
मन्त्रदेवसचिवस्य	५८	६३	यः शैशवे	४५	६२
मसृणुषुसृणुषुङ्कैर्	५	१७	यः शौचसयमपटुः	३२	८४
महतद् तेजपाल	२६	१०६	यः स्फुरन्नेदुरामोदे	५५	२७
महतिर्हि जायति	१८	१०५	यः स्वीयमातृ	३७	९०
महिर्मण्डलि किय	१३	१०५	यच्चाणक्याऽमरगुरु	४८	६२
माधुर्यधुर्यमधुलोम	१०२	९	यत्कीर्तिप्रसरेः	१२२	१०
मा मून्मदसुवनेऽपि	१४५	१३	यत्कीर्तेः स्वैर	१३१	११
मा मून्मदसुवनेऽपि	१९	१९	यत्कीर्तेः स्वैर	१४	१८
मालवमंडल	१०	१००	यत्खद्गक्षत	८८	८
मालिन्यं सुमुचे	१४४	१३	यत्खद्गदण्ड	७५	७
मुकुलितरुमलोदय	१२	४२	यत्खद्गवल्ली	९	३५
मुक्तामयं शरीरं	२२	६०	यत्पद्माम्बुजयुगं	९३	८
मुक्त्वा विप्रकरा	४१	६२	यत्प्रारिक्षमगोत्र	३६	४
मुष्णानि प्रसभं	१	५६	यथा प्रतिष्ठां	९	८२
मूर्ति वपु	४४	१०७	यद्दक्षपटनोत्सृष्टैः	१७	३५
मूर्धन्या विहितः	५	९५	यदाननसरोज्जन	३२	३६
मूर्त्तानामिह वृष्टत्रः	६४	६४	यदानप्रभय	९४	८
मूर्त्तैर्कांतिलताततेः	७०	६	यदानोदरुजात	१४	३५
मूलगा पापारपर	२८	१०६	यदिस्तुम्भि-मुल्यादि	१४६	१३
मूलभृद्भृत्किरि	१२७	११	यद् दूरीक्रियते रम	३०	३३
मेघैर्न रचिमाननोनि	३	९३	यदोर्मण्डल्युग्मडली	८९	८
मेघधेनुं परिभ्रम्यते	३०	३	यथाप्राप्तुं सुगन्ध	२०	२२
मोहो मोहयिष्या	७५	३९	यद्दस्त्रपुत्र	२	९४
मौनिकमुनि	४१	४	यद् वासन्त्य	७	९५
यं मातृमक्ति	२२	८९	यन्निर्मापिनदेय	६२	३८
यं निजुं वपुषः	२	४७	यद्यकार नवोकार	४१	२६
यं करोति रव	१२	८२	यत्नीधर्मानं प्रधर	१०८	९
यः कर्मानि च	३९	८४	यत्मादम्बुरथ	१५९	१४
यं कानरुधि	३६	९०	यन्निग्न दाननिदान	९५	८

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
यस्मिन् घर्म	२३	२३	येषां मूर्तिसौ	६	९३
यस्मिन्नुत्तर	५०	५	येषामशेषाधिपतिः	६	८१
यस्मिन् पश्यति	६७	६	यैर्नद्वाऽतिचला	१५	१८
यस्मिन् विश्वजनीन	१३	३१	रंगिहि ए रमइ	२०	१०३
यस्मै रदिमभरो	२	३४	रक्षादक्षो दिवि	४	३४
यस्य न्यत्रितचाप	८६	७	रक्ष्यां रक्षितुमक्षमे	४८	४
यस्य भूः किमसा	३	५४	रणे वितरणे चात्र	१४	२२
यस्य सन्ननि सद्रा	५८	५	रक्तः सद्रतिभावभाजि	११५	१०
यस्याग्रजो	३	९७	रक्तः सद्रनिभावभाजि	५०	५७
य(त)स्याममूः समभवद्	४	२४	रादमई मगहरण्य	१४	१०१
यस्याऽऽनं	२८	८९	राका ताण्डवितेन्दु	८	३०
यस्यानीकवधूमि	५	९३	राजा चासुण्डराजं	१९	२
यस्या मुने	२६	८९	राजा श्रीवनराज	९	२
यस्यादीःप्रनिपादितो	१६	८२	राजु करइ तह	४	१०४
यस्यासिरम्भोद्	३८	३७	राहौ गृहीतो गकरै	३१	८४
यस्योपदेश	११	७९	रिपुर्वनेग्रामो	७२	६
यस्योर्वीतिलकरय	७	३०	रिपुमर्मदिरु	४६	१०७
याचत्तणपगोत्र	७२	३९	रूपा सरिसड	२९	१०६
यात्रापर्वगि रैवत	१४८	१३	रोद कन्दररतिं	३५	६१
या प्रार्थना याचरु	२९	२०	रोदःक्षीगेदनीरैः	२९	३
या श्रीः स्वयं	१०	४२	लक्ष्मी घर्माङ्गयोगेन	१५	७६-३
युक्तः.....	२	७६	लक्ष्मीर्न्याचच्छ्रेत्र	८	५५
युद्धं वारिधिरप	२३	३२	लक्ष्यामाहृष्टि	१५	४२
युद्धपर्वगि कदाऽपि	९१	८	लक्ष्या मानुपजन्म	१	९१
युद्धपर्वगि कदाऽपि	६	१७	लभन्ते लोकनः	६१	८६
युद्धोद्गमरमण्डलाग्र	२८	३	लज्जितादेवीनाम्ना	१०	५५
येन व्यधान्यत	५८	३८	लज्जितादेव्याः पन्याः	७२	२७
येन स्तम्भनकाधि	१७४	१६	लवणप्रसादसुत्र	७	४५
येनाकारि तमोनिकारि	५५	३८	लान्त्यप्रवहूत	१२५	११
येनऽऽमनः स्वपन्यास	८७	२८	लान्त्यसिद्धस्तनय	५५	६३
येनाऽत्रैव नियधुम्भि	६९	२७	लान्त्याङ्ग इति	११३	९
येनाग्निगर्भित्गन्भाः	११	२२	लान्त्याङ्ग इति	४	५७
येनोद्भवन्तगिरि	६०	३८	लौक्यामदरुणं च	५	७८

	श्लो०	श्ल०		श्लो०	श्ल०
लंकासम्बरण च	७	१	विद्या यथापि वैद्विह्री	९	४९
दृग्गिगः प्रथमस्तेषु	२२	१६	विधेते ह्यधविधौ	५०	३७
वेदे सारत्पती	१	५९	विधिवद् वाजपेयं	१०	८२
वंनाश्रीमौलिम्भिच्छं	२४	२५	द्विवृधैः पयोधि	१४	५०
वृग्नीडयं प्रथिनोन्नति	९८	८	विमुता-विक्रम	२	५४
वंगो विघ्नितयविदितः	५	३४	विमुता विक्रम	५	९८
वद्मार्हा पुत्रिमह	१०	१०१	विमलिहं ठमियठ	७	१०४
वक्त्रं निर्वासनाजा	११	५३	विरमयानि वस्तुपाल	१४	६०
वक्त्राद् ए सतल	२	१०२	विल्लुत्ताया पाशं	४९	५
वदनं वस्तुपालस्य	३	७६-४	विज्ञेय्य दुष्कालवरोन	३३	८४
वद्रे ! कल्पवल्कि ।	९	९४	विरोपके रैवतकस्य	८५	२८
वर्षायान् परिट्टित	३३	२०	विश्वस्मिन्नपि वस्तुपाल !	१७	२२
वल्लभ्यां पुण्यत्रयध्री	७१	२७	विश्वस्योपवृत्तित	२१	३५
वसिष्ठानिच्छाया	४८	८५	विश्वानन्दकर सदा	१०५	९
वसुदेवस्येव सुत	४२	६२	विश्वानन्दकर सदा	१	७६
वस्त्रपात्रि वर	१५	१०१	विश्वेऽस्मिन् कस्य	७	५२
वस्त्रपात्रु वसु	१२	१०५	विश्वेऽस्मिन् क्रिञ्ज	३८	९७
वस्तुपाश्र्विन्शोरण	१	५८	वीर दक्षिणत	७५	२७
वडापये जगयां	९३	२८	वीरश्रीवीरभान्नि	५३	३८
वाग्देवतां यदि	२	८८	वेपथु वमडु	१७	९९
वाग्देवताचरण	४०	३७	वैदुष्यं विगताप्रये	५२	८६
वाग्देवतावदन	१९	७६-३	वैर विमूनि-भाग्यो	३	४७
वाग्देवतावम तस्य	४६	८५	व्यययन जयसिंह	१९	३५
वाग्देवतासाध	४२	३७	व्याजोन्म्य(पन्थ)	४५	२६
वाग्भोजिनवात्रि	४५	४	व्याजान् पीपथराळला	१७३	१५
वापं तस्य	३६	२६	व्यातन्व त्रसंरुद्र	१६७	१५
वात्सिल्य साधुवादेन	९	९८	व्योमो सद्गुरुषु	२९	३३
वात्सवं वस्तुपालस्य	४	५२	वागो भगवतावात्रानि	६७	६४
वात्सवं वस्तुपालस्य	४	३०	वागि कात्रि न	५	७९
वाट्टस्य मन्त्रेन	२	४६	वादे पदक्रितीपदि	१३	४०
वाट्टस्य मन्त्रेन	२	५५	वादे वाग्देवतां	३५	१९
वाट्टस्य मन्त्रेन	२	५८	वादे वाग्देवतां	१८	४३
विनीतो जय	३६	३६	वाङ्म वाग्देवतास्य	५२	५

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
शङ्खं शार्ङ्गधरस्य	७	१७	श्रीनेमेलिजगद्भर्तु	३	४७
शत्रुघ्नयन्मगोस्तुङ्गे	७३	२७	श्रीनेमेलिजगद्भर्तु	३	५५
शत्रुघ्नये भवपयोधि	१६५	१५	श्रीनेमेलिजगद्भर्तु	३	५८
शत्रुश्रेणीमाल	३६	६१	श्रीप्रागवाटकुलेऽत्र	२	२१
शास्त्रार्थवारिभर	६	८८	श्रीमन्त्रीधरवस्तुपाल	६३	६४
शिन्यस्तस्य च	१३	७९	श्रीमद्गुर्जरचक्रवर्ति	२	७६-१
श्रीनांशुप्रतिवीर	१२	७६-२	श्रीमन्त्रीधरवस्तुपाल	२५	३२
शुभांशुसुवि	३७	९६	श्रीमन्त्रीधरवस्तुपाल	१०	५२
शय्येषु द्विपतां पुरेषु	५	३०	श्रीमल्लदेव इति	४९	३७
शरो रणेषु	१३	४२	श्रीमल्लदेवः श्रित	१०	५९
शंभुदेवविधायिनीमपि	५	४०	श्रीमल्लदेवपौत्रो	१०	७६-२
शोभामिमूत	१	८८	श्रीमद्विजयसेनस्य	१२	७९
शोषः सैप जवाद्	४६	४	श्रीमांस्ततोऽजनि	१५५	१४
शौण्डीरोऽपि	२	३०	श्रीमालखेन्द्रमुमटेन	१७५	१६
शौर्यगोर्जरिचतां	८	९८	श्रीसुजनामा	१३	८२
श्रावे हंडावडा	४१	१०७	श्रीयुगादिप्रभोर्	३३	२६
श्रियं चौलुकयानां	१३	२५	श्रीरङ्गमूर्धश	९	८८
श्रिया प्रीतया	७	९८	श्रीरैवते निर्मित	७	७६-२
श्रीकुमारविहारेऽत्र	६७	२७	श्रीवर्धमानः शमिनां	२	७९
श्रीक्षेमराज इति	१८	२	श्रीवस्तुपाल ! कलिकाल	२२	१९
श्रीगर्वात्मि	७	९२	श्रीवस्तुपाल ! कलिकाल	३	४१
श्रीमधंड[प]संभवः	६२	६४	श्रीवस्तुपाल ! क्षिन्निपालमुद्रां	२८	२०
श्रीमैत्रशासनवनी	७०	६४	श्रीवस्तुपाल ! जितवाल	१४	४२
श्रीमित्रपालजनयस्य	५६	६३	श्रीवस्तुपाल ! तप	७६	३९
श्रीद-श्रीदयितेश्वर	२	४६	श्रीवस्तुपालपुत्रः	४६	६२
श्रीसुरराजः प्रथमं	३३	६१	श्रीवस्तुपाल ! भवना	१६	५०
श्रीनागेश्वरमुनीन्द्र	१६	७६-३	श्रीवस्तुपालमन्त्रीदोर्	३	१७
श्रीनागेश्वरकुले	४	७९	श्रीवस्तुपालव्यशसा	३५	३३
श्रीनामय ! मनोरथाः	२	९१	श्रीवस्तुपाल संप्रति	४	७६-४
श्रीनेमिर्नानीत	३	१	श्रीवस्तुपालसचिवस्य	२४	१९
श्रीनेमिरत्निकायाश्च	७४	६५	श्रीवस्तुपालसचिवस्य	३	३०
श्रीनेमिरत्नजगद्भर्तु	३	४६	श्रीवस्तुपालसचिवस्य	८	४२
श्रीनेमिर्भ्रजगद्भर्तु	१	५०	श्रीवस्तुपालसचिवस्य	११	७६-२

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
श्रीवस्तुपालस्य	८०	२८	स एष नि शेष	३६	३३
श्रीवस्तुपालस्य	५५	८६	सद्ग्राम क्रतुभूमि	२०	३२
श्रीवाससद्मकर	१८	८९	सद्ग्रामसिंहपृतना	१	४१
श्रीवासान्बुजमानन	१६	१८	सद्वस्याद्भुत	७	७८
श्रीवीरधवलमूर्तिर्	४९	२६	सद्दोऽधिरोहनिह	१४७	१३
श्रीवीरशासन	३	७९	सचिवप्रवर कश्चित्	३९	३७
श्रीवैद्यनाथगर्भ	५०	२६	सत्कर्मनिर्माणरते	२७	८३
श्रीवैद्यनाथवरवेमनि	४८	२६	सत्तीर्थस्य सुराश्रितेन	२	८१
श्रीगनुजयशुक्ल	५७	३८	स य ब्रुवे	५९	८६
श्रीशानुजयदौल	३९	९०	स याभिधस्तदनुजो	२९	८९
श्रीसद्वभर्तृसचिवे	१०	९३	सदा यदाशी	१८	८२
श्रीसुव्रतपदाम्भोज	७७	३९	सद्वशजातेन	१४	८२
श्रीसोमेश्वरदेवश्	७३	६५	सन्तापशान्ति	१५	८२
श्रीसोमेश्वरदेवस्य	३५	८५	सततन्तुप्रपञ्चेन	१८	३५
श्रीसोलशर्मा विमले	७	८१	ससलोकचरी	४७	३७
श्रुचेति मुदितहृदय	११९	१०	स मङ्गल वो	१	२४
श्रेय श्रीमुनिसुवत	१	३४	समजनि जिनसेवा	१०१	८
श्रेय श्रेष्ठशिष्ठ	३२	६१	ससुरविजय सिवदेवि	१३	१०१
श्राप्य स वीरधवल	२१	३२	समूलसु मूलयितु	२	२४
श्रभ्र सिन्धुरमुनया	३२	३	सम्पूर्णं भुवने	५४	३८
संघाद्विबु संघेण	३	१०१	सयल वित्ति	१२	१०१
संघु रहिउ	४३	१०७	सरस्वतीकेलिऋळा	२५	२५
संज्ञे नृपतिशतै	५६	५	सर्वत्र भ्रान्तिमती	११	५०
सताप य प्रतापस्य	७१	६	सर्वत्र धर्तता कीर्ति	६८	६४
सदिष्टं तव वस्तुपाल !	२	४९	स व श्रेय शानुजय	१	२१
समेतादिरि	१	५५	स वैशुण्ठ कुण्ठ	१३	२२
संयोजितन मग्निमण्डित	१४३	१३	स श्रीजिनाधिपति	५	२१
सर्ल नानामनुनटवन	७३	६	स श्रीजिनाधिपति	१	५४
संसारव्ययहारलो	५	९१	स श्रीमानुदयाचलो	१०३	९
संसारसर्वस्वमिदं	३	६७	स श्रीतेज पाल	६	४५
संसारार्तिनपो	४	९३	स श्रीनेत्र पाल	४७	६२
संसारे सुम्प्यु	१०	९२	सा कुत्रापि युगत्रयी	५	४९
संख्यमाचरित	२४	८९	साधारं ब्रह्म परं	१९	३१

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
साक्षात् ब्रह्म परं	१२	५३	सोऽयं प्रख्यातकीर्तिः	१२०	१०
सानिधि अंवाद्य	३५	१०७	सोऽयं मन्त्री	६	५४
सामंतासिंहसमिति	३८	६२	सोऽयं सूर्यदेवी	१२	९८
सामियनेमिहुमार	७	१००	सोलः सलील	८	८२
सामियसामल	४	१०१	स्तम्भतीर्थेऽत्र	१	४६
साम्राज्य चतुरर्णवी	७	९३	स्तम्भतीर्थेऽत्र	१	५३
सिंदुवार-मंदार	२१	१०२	स्तम्भतीर्थेऽत्र	१	५५
सिद्धक्षेत्रमिति	२	६७	स्तम्भतीर्थेऽत्र	१	५७
सिद्धान्तोपनिष	७	७९	स्तम्भतीर्थे नगोत्तुङ्गे	५३	२७
सौसमि सिबलि	१८	९९	स्तम्भनपुर-रैवतगिरि	१६४	१५
संताकुक्षिसरो	४६	३७	स्तोत्रव्यः खल	५	५२
सुतस्तस्मादासीद्	२७	६०	स्तोत्रं नामिनोरेन्द्र	७७	२८
सुमकर ए ठविउ	३	१०२	स्तोत्रं श्रोत्रसायनं	१०	९४
सुरखीगां नेत्रं	१३	३५	स्थाने स्थाने	३०	८४
सुनतक्रमनस्तुति	६५	३८	स्थापयन् सिंहलप्राग	४७	२६
सुनुस्तदीयोऽजनि	७	२४	सूर्जर्जर्जूर्जवेत्म	१४	२
सुनुस्तयोरजनि	२७	८९	स्वजुल्लुगु.....	१८	७६-३
सूरो रणेषु	४	१७	स्वक्रान्तसिन्धुपति	२४	३
सूर्याचन्द्रमसौ	१०	२	स्वच्छन्द हरिशङ्करः	६	२१
सेचं सेचं स खल	३४	३३	स्वस्ति श्रीबलये	१२	३१
सेनानीविदधे	३५	८४	स्वस्ति श्रीनलये	१	५१
सेयं पुरे धवलके	२१	८०	स्वस्ति श्रीबलिसालाय	१	३०
सेगलन्ति पयः समुद्रति	३७	४	स्वस्ति श्रीबस्तुपालाय	१	४०
सेवालन्ति पयः समुद्रति	८	१७	स्वस्ति श्रीव्योमदेशा	७४	३९
सैन्यप्रक्रमिनधरा	५७	५	स्वयं विनम्रेषु परेषु	११	३५
सोऽपि बले	१२	५०	स्वर्गं यद्गुह्यैय	६१	३८
सोमनदेउ सुतहारो	३०	१०६	स्ववंश्यमूर्तिभिः	९६	२८
सोमाभियस्तदनुजः	१२	८८	स्वविरोधिनीं शुचिर्	५१	२७
सोमेश्वरदेव इति	४२	८५	स्वलीयः श्रयति स्म	२३	२
सोमेश्वरदेवकवे	४४	८५	स्वामिन् ! मृषुहरे	६	९१
सोऽयं तस्य	६	५७	स्वैर भ्राम्यतु नाम	२४	३२
सोऽयं धानी	४०	९७	स्वैव प्रहर्तैर्	२४	३६
सोऽयं पुनर्दाशरथिः	३७	६१			

	श्लो०	श्ल०		श्लो०	श्ल०
हंहो रोहण ! रोहति	२६	३२	हरिमण्डप-नन्दीधर	२	५३
हकारहु वर	३८	१०७	हर्षादसौ हस्तु	२०	८९
हत्वाऽपि कान्तिलत्र	११	८८	हस्ताप्रत्यस्त	११७	१०
हन्तुं जनस्य दुरितं	६	९४	हस्ताप्रत्यस्त	८	५७
हरसवस्तिग	२	१०१	हुत्वा सदप्यरचितेषु	२३	८९
हरिमण्डप-नन्दीधर	२	५	हतनयनमुखैर्	३	८१
हरिमण्डप-नन्दीधर	२	४७	हृद्योऽभून्मुशालध्वज	५५	५

विशेषनामानुक्रमणिका ।

	४४		४४
अंबय (मंजो)	१००	अम्बिका भवन (देवतामन्दिर)	२८
अङ्ग (रूपविशेष)	५	अरसीह (ग्राम्यात् ज्ञा० महा० वीरदेवपुत्र)	६६
अचलेश्वर (शिवमन्दिर)	६७	अर्कपालित (ग्राम)	१५
अचलेश्वर (अचलेश्वर, शिवमन्दिर)	१०४	अर्कपालितक	२७, ३८
अजयपाल (चौलुक्यनृपति)	६, २४, ३६, ८४	अर्जुनमहो (स्थलविशेष)	६
अजयसिंह	२७	अर्णोराज (स्यादलक्षनृपति)	५, ३६
अजित (स्याधिपति)	१०१	अर्णोराज (चौलुक्यवर्तीय)	६, ७, २५, ३६, ६०
अजित (अजित, स्याधिपति)	१०१	अर्जुन्द (पर्वत)	६१, ६२, ६७
अहायय (अष्टापदपर्वत)	१०१, १०२	अर्जुन्दगिरि "	७६-१
अणपमसर (अनुपमा सरोवर)	१०५	अर्जुन्दाचल "	२६, ४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६, ६५, ६७, ६८, ७२, ७३, ७६-१
अणहिलपत्तन (अणहिलपुर, गूर्जर राजधानी)	७५	अचलोकनाशिश्वर (रत्नगिरि शिखरविशेष)	२८, ४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६
अणहिलपाटक (अणहिलपुर, गूर्जर राजधानी)	२, ६५, ८८, ९६	अचलयणसिंह (अचलोकनाशिश्वर)	१०२
अणहिलपुर (गूर्जर राजधानी)	४४, ४६, ४८, ५१, ५३, ५५, ५५, ५६, ५९, ६५, ७५, ७६-१, ७६-३	अश्वराज (आशाराज, मनी)	१० १८, २१, ३७, ५७, ५९, ६० ६४, ७६-२, ८६, ८९
अणहिलपुर (अणहिलपुर)	६८, ६९	अश्वघातारतीय	१५
अनुपमदेवी (तेजमालपत्नी)	२८, ६३, ६५, ७१, ७४, ७६-१, ७६-२	अष्टापदप्रसाद (स्थापन्यविशेष)	५८
अनुपम सरोवर	४७	अष्टापद महातीय (स्थलविशेष)	४४, ४६ ४९, ५१, ५४, ५६
अनुपमा (अनुपमदेवी, तेजमालपत्नी)	६३	अष्टापदशैल (पर्वत)	५१
अनुपमासर (सरोवर)	२८	अष्टापदोद्धार (जिनमन्दिर)	२७
अन्ध (रूपविशेष)	५	अन्धराज (अश्वराज)	१०७
अमयकुमार (साहु राहल्लुन)	६९	अह्मणदेवि (पूर्णसिंहपत्नी)	६३
अमरसूरि (नागेन्द्रगच्छीय)	२९, ४५, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६, ६४	आमिग (ग्राम्याद्वत्ता० महाजन)	६६
अमरचन्द्रसूरि "	१३, ६५, ७६-३, ७९, ९०	आंबुय (प्रा० ज्ञा० धे०)	६५
अमरेश्वर मण्डप (इन्द्रमण्डप, स्थापत्यविशेष)	१५	आखण्डलमण्डप (इन्द्रमण्डप)	२८
अम्बड (राणक)	२७	आखीग्राम	६८
" (महामन्त्री)	३८	आमिग (विद्वान्)	८३
" (मण्डलेश्वर)	३९	आणंदसूरि (नागेन्द्रगच्छीय आनन्दसूरि)	४५ ४८, ५१, ५४, ५६, ६५
अभ्याशिरार (रत्नगिरि शिखरविशेष)	४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६	आनंदसूरि (आणंदसूरि)	२७, ४६, ६४, ७६-३, ७९
		आनन्दचन्द्रसूरि "	१३

	पृष्ठ		पृष्ठ
आनक (कायस्थ)	४७,५०	इन्द्रमण्डप (स्वायम्भवीय)	१५,१९,३८,१०२
आयु (अनुद पर्वत)	१०५,१०६,१०८	उगसोणगढ (दुर्गाविशेष)	९९
आयुय "	१०५,१०६,१०७	उज्जयन्त (रवत पर्वत)	३८,४३,४५,४६,४८,
आयु " "	१०४,१०५	५१, ५३, ५४, ५६, ६८	
आयुय " "	१०५	उज्जित (उज्जयन्त पर्वत)	१००,१०३
आयुयप्राम	६७	उल्लिल (उज्जयन्त पर्वत)	१००
आमशर्मा (विद्वान्)	८२	उत्तरछप्राम	६७
आम्बदेव (ओदसवाल ज्ञा० श्रे०, नागदेवपुत्र)	६७	उचयन (मन्त्री)	३९
आम्बसिंह (प्राग्वाट ठकुर)	६५	उदयपाल (प्रा० ज्ञा० महा०, पाटहनपुत्र)	६६
आम्बा (प्राग्वाट ज्ञा० श्रे०, कोलपुत्र)	६६	उदयप्रमसुरि (नागेन्द्रगच्छीव)	१६, ४३ ५७,
आम्बुय (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०)	६६	६४, ६६-३, ७९	
आरासण (ग्राम)	१०६	उदयसेनसुरि (आचार्य)	७४
आल्हण (प्राग्वाट श्रेणी माणिसपुत्र)	६६	उदुल (ठकुर)	१०५
आल्हण (ओदसवालज्ञा० श्रे०, देल्हापुत्र)	६७	उदैयपाल (श्रेणी)	७६-३
आल्हण (माण्डानारिक)	७६-३	उपदेशमाळा (ग्रन्थ)	७९
आरणदेवि (पूर्णसिंहफनी)	७०, ७६, ७६-२	उमारदाय (ग्राम)	२७
आल्हा (प्राग्वाट ज्ञा० श्रे०, गोसलपुत्र)	६६	उयरणी (ग्राम)	६६
आल्हा (प्रा० ज्ञा० श्रे०, दिन्हापुत्र)	६७	ऊपसवाल (ज्ञाति)	६६
आलोचन (ओदसवाल ज्ञा० महा०)	६६	ऊजिल (उज्जयन्त पर्वत)	१०२
आशाराज { (मन्त्री, सोमपुत्र) ९, २५, २८		ऊदल (प्राग्वाट, ठकुर)	६५
{ (मन्त्री ठकुर) ४४, ४६, ४८, ५१, ५३,		ऊदल (ठकुर)	१०५
५४, ५५, ५६, ७५ ७६-२,		ऊवल (ठकुर)	१०५, १०६
७६-३ ७५-४, ७७, ९७		ऊवरणी (ग्राम)	१०७
आश्वेश्वर (प्रा० ज्ञा० श्रे०, सोहिमपुत्र)	६६	ओदसवाल (ज्ञाति)	६६, ६७
आसर्षद्र (षर्कट ज्ञा०, षडलिगपुत्र)	६६	ओरासा (ग्राम)	६७
आसदेव (ओदसवाल ज्ञा० श्रे०, देवकुयारपुत्र)	६६	काउडिजकख (कपर्दी यक्ष)	१०१
आसधर (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०)	६६	कदुकेश्वर (शिरमन्दिर)	८४
आसधर (प्रा० ज्ञा० श्रे०, रासलपुत्र)	६६	कडुया (प्रा० ज्ञा० श्रे०, लखमणपुत्र)	६६
आसपाल (श्रेणी)	७६-३	कनकप्रमसुरि (आचार्य)	८०
आसराज (आसराज)	६९, ७०, ७१ ७६-१	कपर्दी (यक्ष)	१६
आसराज (ठकुर, आमारज)	६५, ७२, ७३, ७४, ७५	कयडुरा (श्रीमाल ज्ञा०)	६६
आसल (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०)	६६	कर्णदेव (चौहानकृष्णपति)	४, २४, ३५, ८२
" (प्रा० ज्ञा० श्रे०)	६६	कर्णाट (रामविशेष)	३, ५
" (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०)	६६	कलिङ्ग (रामविशेष)	५
" (ओदस० ज्ञा० श्रे०, काटहनपुत्र)	६७	कदमीरायतार (स्वायम्भवीविशेष)	४४, ४६, ४८,
आसा (ठकुर मोदरानीय शास्त्रज्ञस्युत)	७४	५१, ६४, ५६	
आसाराय (आशाराज)	९९	कसमीर (देश)	१०१
आसारायविहार (जिनमन्दिर)	९९	कान्तीश्वर (रामविशेष)	३
आम् (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०, लखमणपुत्र)	६६	कान्भवकुब्जा (श्रीविशेष)	६
आहड (चापौकट नृप)	२	कान्धड (ठकुर, ललितादेवी पिता)	४५, ४६, ४८, ५१,
आहड (विद्वान्)	८३	५६, ५६, ७६-४	

	४४		४४
कान्दहदेव (रामप्रभार)	६७	राम्यसीह (प्रा० शा० धे०, देहणपुत्र)	६६
कान्दकि (नीतिदात्रप्रभार)	६३	खेडा (साहु, बरहुडिया)	६८
कायस्थ (वत्स) ४६, ४७, ५०, ५३, ५५, ५७, ७६-३, ९६		गउरदेवि (खणसीदमुता)	७२
कालमेघ (क्षीप्रपाल)	२८	गङ्गा (नदी)	८४
कालमेघतर (स्थानविशेष)	१००	गयंद (कुट)	१०२
कालिदास (कवि)	२०	गया (तीर्थ)	८४
काल्हण (ओइमवाल्ला० धे०)	६७	गागा (ग्रामाटनरीय)	६३
कासहद (ग्राम)	२७, ६६	.. (प्रा० शा० ट्ठुर)	६५
कांर (रूपविशेष)	३, ६	गाजण (श्रीमाल शा०)	६६
कांसरउली (ग्राम)	६६	गाणउलि (ग्राम)	७६-३
कुङ्कण (देश)	३६	गाणेभरदेव (शिवमदिर)	७६-३
कुमराद्विधि (कुमारदेवी आशाराजपत्नी)	१०७	गिरनार पर्वत)	९९, १००, १०२
कुमरपाल (कुमारपाल, राजा)	१००	गुज्जर (देश)	१००
कुमरविहार (जिनमदिर)	६८	गुणचंद्र (प्रा० शा० धे०, धीरणपुत्र)	६६
कुमरसरोवर	९९	.. (श्रीमाल शा० धे०)	६६
कुमरसिंह (घनधार)	७६-३	गुणपाल (भाण्डगाणिक)	७६-३
कुमार (कुमारधर्मा, विद्वान्)	८३, ८४, ८५, ८७	गुरजर (देश)	९९, १००
कुमार देवी { आशाराज पत्नी } २५, ३७		गुज्जर (देश)	७६-१, ८२, ८७
{ ट्ठुराणी, आशाराज पत्नी } ४४,		गुज्जेभरपुरोहित (सोमेश्वरदेव)	४५, ५०
४६, ४८, ५१, ५३, ५५, ५९,		गुलेचा गोत्रविशेष)	८१
६५, ७२, ७३, ७४, ७५,		गुगलिया { (ज्ञातिविशेष)	१०४, १०६
७६-२, ७६-३, ७६-४, ८९		गुज्जुर (देश)	१०४
कुमारपालदेव (चौउक्कचपति)	५, ६, २४, ३६,	गुज्जुरात (देश)	१०४
	६१, ८४	गुज्जेर (देश) २२, ३७, ६२, ८८, ८९, ९०, ९२, ९४	१५
कुमारविहार (जिनमन्दिर)	२७, ६९	गुज्जेरकणिका (गुज्जेर राजपानी)	१५
कुमारसिंह (घनधार)	४६, ५५, ५८	[गुज्जे] रत्ना (मडल)	६५
कुरु (रूपविशेष)	५६	गुज्जेरमडल	४४, ४६, ५१, ५४, ५६
कुलधर (श्रीमाल शा०, बयडुरापुत्र)	६६	गुज्जेरराजधानी (अणहिल पाटक)	२, ३७
कुण्णराज (परमार रूपति)	६२	गोगस्थान (ग्राम)	८४
केली (आशाराज भगिनी)	७६-२	गोसल (प्रा० शा० धे०)	६६
केल्हण (घनधार)	६५	.. (ओइस० शा० धे०)	६७
कोङ्कण (देश)	६१	.. (साहु बरहुडिया)	६८
कोला (ग्रामाट ज्ञा० धे०)	६६	गौड (रूपविशेष)	५
कोङ्कण (कुङ्कणपति रूप)	८४	चंडप (मत्री)	८, २१, २५, २८, ३७, ३९, ४०
कोङ्कणपति (रूपविशेष)	६	चंडप (मत्री, ट्ठुर)	४४, ५२, ६४, ६५, ६९, ७०,
कोङ्कणी (स्त्रीविशेष)	६	७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६-१,	
कोटिल्य (चाणक्य)	७६-४	७६-३, ७६-४, ८६, ८८, ९७	
क्षेमराज (चाणक्य रूप)	२	चंडपाल (चटप)	४६, ४८, ५१, ५३, ५५
खंभायति (नगरी)	१०६	चंडपसाद (मत्री, चंडपुत्र)	८, २१, २५, २८, ३७
खांरपण (प्रा० शा० धे०, जेजापुत्र)	६६		
खीन्वसिंह (प्रा० शा० ट्ठुर)	६५		

	पृष्ठ		पृष्ठ
चंद्रप्रसाद (मन्त्री, ठङ्कुर)	५४, ५६, ५८, ५९, ५३, ५६, ५९, ६४, ६५, ६९ ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७६-१, ७६-३, ७६ ४, ८६, ८८, ९७	जयसिंहदेव (चौलुक्यवृषति)	४, २४, ३५
चंडेश (चञ्च)	७५	जयसिंहसूरि (वनि, जैनाचार्य)	३८, ३९
चण्डेश्वर (सुनवार)	६५	जयदिव्य (रूपविशेष)	७६-४
चंद्रावती (पुर, पुरी, नगरी)	७, ६३, ६५, ६७, १०४, १०५	जसकर (प्रा० ज्ञा० श्रे०)	६७
चंडावलि (चन्द्रावती नगरी)	१०८	जसहय (प्रा० ज्ञा० श्रे०)	६६
चाणन्य (कौटिल्य)	६२, ६३	जसदेव (ओइसवाल ज्ञा० श्रे०)	६७
चान्द्र कुल (गच्छ)	८०	जसरा (ध्रीमाल ज्ञा० श्रे०, आम्बुयपुत्र)	६६
चापलदेवी (मह, चञ्चपत्नी)	७४	जसवीर (श्राम्वाट ज्ञा० श्रे०)	६६
चापोत्कट (राजवश)	२	जाङ्गल (देस)	५, ६
चामुण्डराज (चापोत्कट रूप)	२	जाङ्गली (स्त्रीविशेष)	६
चामुण्डराज (चौलुक्यवृषति)	३, २४, ३४, ८२	जाला (ध्रीमाल ज्ञा० श्रे०, जिणदेवपुत्र)	६६
चारोप (ग्राम)	६९	जालू (वस्तुपाल तेजपालभगिनी)	६०
चाहिणि (साहू जिणचंद्रभार्या)	६९	जावडि (श्राम्वाटवस्तीय)	१५
चौलुक्य (चौलुक्य, राजवश)	२४, ३६, ५९, ६०, ६५, ७६-४, ८३, ८४, ९३	जावालिपुर	६८ ६९
चौड (रूपविशेष)	५	जिणचंद्र (साहू राहवपुत्र)	६९
चौलुक्य (राजवश)	२ ६ २५ ३४, ४४, ४५, ४६, ४८ ५१, ५३, ५६, ६० ६१, ६४, ६५, ८२, ८३ ९७	जिणदेव (ध्रीमाल ज्ञा० श्रे०)	६६
चौलुक्यपुर (अणहिलपुर)	२६	„ (प्रा० ज्ञा० श्रे०, पाहुणपुत्र)	६७
जगदेव (ध्रीमाल ज्ञा० श्रे०, आसलपुत्र)	६३	जिणदेवसूरि (आचार्य)	९६
जगसीह (श्राम्वाट, ठङ्कुर)	६५	जीदा (श्राम्वाट श्रेणी)	६६
„ (ओइस० ज्ञा० महा०, आतोपनपुत्र)	६६	जिगण (प्रा० ज्ञा० श्रे०, जसहयपुत्र)	६६
जग, (श्राम्वाट, ज्ञा० श्रे०, जसवीरपुत्र)	६६	जेजा (प्रा० ज्ञा० श्रे०)	६६
जङ्गल (रूपविशेष)	६	जेप्रदेवी (वीरभवलपत्नी)	१६
जयंतसिंह (वस्तुपालपुत्र)	४५, ४६, ४७, ५१, ५३, ५६, ६२	जैत्रसिंह (जयतंसिंह, वस्तुपालपुत्र)	५५, ५७, ६२, ६४, ७६-२, ९८
„ (कायस्थ)	९६	„ (धुव, कायस्थ)	४६, ५३, ५५, ५७, ७६-३
जयतलदेवी (वीरभवलपत्नी)	२६	जोगा (मह, ओइसवाल ज्ञा० श्रे०, मलपणपुत्र)	६६
„ (जयतंसिंहभार्या)	७२, ७४	झालहणदेवी (वस्तुपाल-तेजपालभगिनी)	७२
जयतंसिंह (मह, वस्तुपालपुत्र)	४४ ५५, ७४, ७६-३	झाल्दण्य (ठङ्कुर, फोल्कतीय)	७४
„ (रामपुरीय, धुव)	४७ ५०	झकाउवाणि (ग्राम)	१०७
जयतसीह (मह, वस्तुपालपुत्र)	६९, ७०	डवाणि (ग्राम)	१०७
जयदेव (साहू, वरदुधिया)	६८	डवाणी (ग्राम)	६६, ६७
जयथी (चञ्चप्रगारपत्नी)	८, ७६-१, ८८	तारंगक (पर्वत)	७५
जयसिंघ (चौलुक्यवृषति)	१००	तारणगढ	६८
		तिजपाल (तेजपाल)	१०५, १०६, १०७
		तिहुणदेवि (ठङ्कुराणी, धरणिगभार्या)	६५
		नुरष्क (रूपविशेष)	३
		नुरुष्क (रूपविशेष)	६
		तेज.पाल (मन्त्री, आशारावपुत्र)	१०, १३ १४ २१, २५, २८, ३१, ३३, ३७, ३८, ३९

	घृष्ट		
तेजःपाल (महं) ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५१, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ६०, ६२, ६३, ६४, ६५, ६७, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७६-१, ७६-२, ७६-३, ८६, ९०, ९६, ९७		घणदेव (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०, सुमिगपुर)	घृष्ट
तेजपाल (महामात्य, मह) ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ९६, ९९, १०१, १०५, १०७		घणदेवी (वस्तुपाल-तेजपालभगिनी)	६६
तेजलपुर (ग्राम)	९९	घनदेवी	७२
त्रिपुरप्रसाद (शिवमंदिर)	२	घणपाल (ओइस० ज्ञा० श्रे०, महारापुर)	६०
त्रिभुवनदेवी (ग्रामाट, धरणिगपत्नी)	६३	घणिया (प्रा० ज्ञा० श्रे०, जमकरपुर)	६७
त्रिभुवनपाल (अश्वराजभ्राता)	७६-२	घणेश्वर (साहु राहुवसुत)	६७
धिरदेव (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०)	६६	घरणिग (ग्रामाट, गागासुत)	६२
दक्षिण (रूपविशेष)	६	," (प्रा० ज्ञा०, ठरु)	६३
दर्मवती (नगरी) १६, २६, ४४, ४६, ४८, ५४, ५१, ५६		घर्कट (ज्ञाति)	६५
दाक्षिणात्या (स्त्रीविशेष)	६	घर्मदासगणी (आचार्य)	६६
दामोदरहृद (स्थानविशेष)	०९	घर्माभ्युदय (महाकाव्य)	७८
दुर्लभ (चौलुक्यरूपति)	३, २४, ३५, ८२	घवल (चौलुक्यवशीय)	७९, ९६
दूगसरण (प्रा० ज्ञा०)	६६	," (मनी)	६७
देउलवाडा (ग्राम)	६५, ६७	घवलक (नगर)	१००
देवा (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०)	६६	घवलक "	१५, ८०, ९९
देपाल (मनी)	१०२	घवलकक "	२६
देव्हण (प्रा० ज्ञा० श्रे०)	६६, ६७	घांघल (सुधार)	४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६
," (ओइस० ज्ञा० श्रे०, सीलपुर)	६७	घांघा (रूपस० ज्ञा० महा०)	६५
देव्ह्या (ओइस० ज्ञा० श्रे०)	६७	घांघलदिवि (घावलदेवी, सोमनरेन्द्रमाला)	६६
देव्हुय (प्रा० ज्ञा० श्रे०, सातुरपुर)	६६	घावलदेवि	१०५
देवहृयार (ओइस० ज्ञा० श्रे०)	६६	घारा (भाण्डागारिक)	"
देवकुमार (साहु जयदेवपुर)	६९	," (नगरी)	७६-३
देवचंद्र (साहु जिगचंद्रपुर)	६९	घारावर्य (परमार रूपति)	८३, ८४
देवधर (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०, गुणचंद्रपुर)	६६	घीरण (प्रा० ज्ञा० श्रे०)	६१, ६३
देवप्रभसूरि (हर्षपुरगन्धीय आचार्य)	२९	ध्रुवभट (परमारवशीय रूपति)	६६
देवयोध (विद्वान्)	७९	धूमराज (परमारवशीय रूपति)	६१
देवलवाट (ग्राम)	१०६, १०७	नदीश्वर } (स्थापत्यविशेष)	६१, ६५
देवानन्दसूरि (आचार्य, हर्षपुरगन्धीय)	२९, ८०	नंदीसर } "	२८, ४७
देसल (प्रा० ज्ञा० श्रे०)	६७	नगर (रुद्रनगर, स्थानविशेष)	६८
देसीनाममाला (ग्रन्थ)	९६	नगरवर (महास्थान)	८१
धंधुक (परमारवशीय रूपति)	६१	नगरारय "	७६-४
धंधुय "	१०७	नयचन्द्रसूरि (कृष्णार्जुनगन्धीय)	२६
धंधुय "	१०७	नरचन्द्रसूरि (हर्षपुरगन्धीय)	६७
धडलिंग (धर्कट ज्ञा०)	६६	," (मलपारी)	२९
धडली (ग्राम)	६६	नरनारायणानन्द (काव्य)	४७, ५५
धणचंद्र (ग्रामाट ज्ञा० श्रे०)	६६	नरेन्द्रसूरि } (मलपारी)	९०
		नरेन्द्रप्रभसूरि }	५३
		नागादेव (ओइस० ज्ञा० श्रे०)	२४
		नागापुर	६७
			६८

नागेन्द्रगच्छ	१३, २९, ४१, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६, ५७, ६४, ६५, ६९, ७२, ७५, ७६, ७९, ९०	पृष्ठ	
नायलगच्छ (नागेन्द्रगच्छ)			
निरिन्द्रग्राम	९९		
नृपविक्रम संवत्	६९, ७०, ७१, ७३, ७६-१		
नेमड (साहु, बरहुडिया)			
नेहा (घकंट श्रेणी)	६८		
पञ्ज (प्रद्युम्नशिखर)	६६		
पञ्चासर (जिनमदिर)	१०२		
पत्तन (अणहिलपुर)	२, १५, २६		
पद्मला (वस्तुपाल-तेजपालमगिनी)	६९, ७४, ७५, ७६, ७६-४		
पद्मसिंह (प्रा० ज्ञा० श्रे०, बालपुत्र)	७३		
परमलदेवी (वस्तुपाल तेलपालमगिनी)	६७		
परमार (राजवध)	६०		
प्रतापदेवी (मालदेववत्नी)	६१		
प्रतापमहल (राजपुर)	७४		
प्रतापसिंह (जयतसिंहपुत्र, वस्तुपालपौत्र)	८४		
प्रतीहार (राजवध)	७७		
प्रद्युम्नशिखर (रैवतगिरि शिखरविशेष)	२८, ४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६		
प्रद्युम्नसूरी (आचार्य)	८०		
प्रमार (राजवध)	६७, १०५		
प्रयाग (तीर्थस्थान)	८१, ८४		
प्रह्लादन (परमार नृपति)	६२		
" (पण्डित, कुमारशर्मगुरु)	८६		
प्रह्लादनपुर (पालणपुर)	६८		
पाण्ड्य (नृपविशेष)	३		
पाद् (मालदेवभार्या)	७०		
पादलितनगरी	३८		
पालहण (प्रा० ज्ञा० श्रे०, जीदापुत्र)	६६		
" (कृष्ण० ज्ञा० श्रे०, सोहिपुत्र)	"		
" (प्रा० ज्ञा० महा०)	"		
" (कवि)	"		
पादविहार (जिनमदिर)	१०८		
पादहा (प्रा० ज्ञा० श्रे०, धीरणपुत्र)	६८		
पासचंद्र (प्राग्वाट ज्ञा० श्रे०)	६६		
पासदेव (धीमाल ज्ञा० महा०, कीसलपुत्र)	६६		
पासधर (प्रा० ज्ञा० श्रे०, साजणपुत्र)	६६		
पासिल (प्रा० ज्ञा०)	६६		
पासु (परंत श्रेणी)	६६		
पाटुय (प्रा० ज्ञा० श्रे०)	६६		
प्राग्वाट, कुल, वस)	८, १५, २१, २५, ३७, ३८, ४४, ४५, ४६, ४८, ५१, ५३, ५४, ५५, ५६, ५९, ६३, ६५, ६६, ६७, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७५, ७६, ७६-१, ७६-३, ७६-४, ८६, ८८, ९७		
पुंडरीक (पर्वत, शतृजय)	६७		
पुनसीह	७०		
पुण्यसिंह	५७, ७६-२		
पुनसीह (मलदेवसुत)	७१, ७६		
पूर्णसिंह	६३		
पुरुपोत्तम (सुनधार)	४७, ५०, ५३		
पूनचंद्र (प्राग्वाट ज्ञा० श्रे०, पासचंद्रपुत्र)	६६		
पूनड (प्राग्वाट ज्ञा० महाजनी, आमिगपुत्र)	६६		
पूनदेव (प्रा० ज्ञा० श्रे०, बोसरपुत्र)	६७		
पूनदेवी (मह, वस्तुपाल तेजपालमातुलभार्या)	७३		
पूनपाल (मह, वस्तुपाल तेजपालमातुल)	७३		
पूना (प्राग्वाट ज्ञा०)	६६		
" (धीमाल ज्ञा०)	६६		
" (प्रा० ज्ञा० श्रे० बोहडिपुत्र)	६६		
" (श्रेणी)	७६-३		
पुनिग (ओडिस० ज्ञा० श्रे०)	६७		
पुनुय (प्रा० ज्ञा०, पासिलपुत्र)	६६		
पृथ्वीसिंह (पूर्णसिंहपुत्र)	७३-२		
पेथड	६३, ७१, ७६		
पोरयाड (वस)	९९		
फौलिणी (ग्राम)	६६		
बकुलस्वामी (सुनधार)	४७, ५०, ५३		
बदरकूप (ग्राम)	२७		
बनर (देश्य)	५		
बलदेवि (तेजपालपुत्री)	७१		
" बघोलाल (मालवचरपति)	६१		
" ब्रह्मदेव (प्राग्वाट ज्ञा०)	६६		
ब्रह्मसंति (ब्रह्मज्ञानि यक्ष)	१०८		
ब्रह्मसरणु (प्रा० ज्ञा० श्रे०, देसलपुत्र)	६७		
ब्रह्माण (ग्राम)	६६		
बाण (कवि)	२०		
बोहडि (प्रा० ज्ञा० श्रे०, भावुपुत्र)	६७		
भद्रबाहु (आचार्य)	७९		
भाडा (ग्राम)	६७		
भामा (तेजपालमातुलपुत्र)	७३		

	पृष्ठ		पृष्ठ
मालि (ग्राम)	६७	मालवपति (रूपविशेष)	२४
मावड (साधु)	१०१	मालवभूप (रूपविशेष)	३
मास (कवि)	५२	मालवी (जीविशेष)	६
भीम (चौलुक्यरूपति, प्रथम)	३, २४, ३५, ८२	मालवेन्द्र (रूपविशेष)	३
" (" , द्वितीय)	६२४, ३६, ३७, ६५, ८५, ९०	" (गुप्त रूप)	१६
भीम (पद्मीपति)	६	मुंज (रूपति, धाराधीन)	४१
भीमसिंह (मुराष्ट्रापतिरूपति)	१३	" (विद्वान्)	८२, ८३, ८५
भीमेश्वर (शिवमन्दिर)	२७	मुंडस्थल (ग्राम, महातीय)	६६
भुवनपाल (रूपविशेष)	२७	मुनीन्द्रप्रभु (मुनिचन्द्रवरि, हर्षपुरगच्छाद्य)	२९
भूतेशवेदम (शिवमन्दिर)	२७	मुमाकीय (ज्जूर ?)	७१
भूमट (चापोत्कटरूप)	२	मुरल (रूपविशेष)	५
भृगुकच्छ (भृगुनगर, भृगुपुर)	२७, ९६	मूढेर (ग्राम)	१०८
भृगुनगर (भृगुकच्छ, भृगुपुर)	२६	मूलराज (चौलुक्यरूपति, प्रथम)	२, २४, ३५, ८२
भृगुपुर (भृगुकच्छ, भृगुनगर)	३८, ४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६	" (चौलुक्यरूपति, द्वितीय)	६, २४, ३६, ८४
भोज (रूपति, धाराधीन)	३५, ४५	मेदपाट (रूपविशेष)	५
भोला (ग्राम ज्ञान श्रेण, साजनपुत्र)	६६	" (देश)	५
[म]डाहट (ग्राम)	६७	मोड (ज्ञाति)	७
मयघर (श्रेणी)	७६-३	यशोधवल (परमारवंशीय रूपति)	८२
मय (रूपविशेष)	५	यशोराज (रूपविशेष)	६१
मलघारि (गच्छ)	४७, ५३, ५५	योगराज (चापोत्कटरूप)	३३
मल्लदेव (आशाराजपुत्र) १०, १६, २१, २५, २६, २७, २८, ३७, ५७, ५९, ६०, ६३, ६४		रतन (संघाविपति)	३
" (मह. आशाराजपुत्र) ६५, ७६-२, ८६, ८९, ९७		रत्नसिंह (ग्रामवाट, टकुर)	१०१
महधरा (ओहस-ज्ञान श्रेण)	६७	रत्नदित्य (चापोत्कटरूप)	६५
महाक (सं-पेयडमुत)	७६	रत्नादेवी (जयादित्यदेवपत्नी)	३
महादेव (विद्वान्, सोमेश्वरपुरोहित भ्राता)	८५	रथणादेवि (लूणसीहभार्ता)	७३
महेन्द्रप्रभसूरि (नागेन्द्रगच्छीय)	२९	राजदेव (श्रेणी)	७१
महेन्द्रप्रभु " ७६-३, ७९		राजपाल (तेजपालमातुलमुत)	४६-३
महेन्द्रसूरि " १३, ६४, ६५		राज्य (ग्राम ज्ञान श्रेण)	७३
" (भट्टारक) ४५, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६		राठी (ज्ञातिविशेष)	६६
माड } (वस्तुपाल-तेजपालमगिनी) ७२, ६०		राणभट्टारक	१०४, १०६
माळ	२०	रागिण (ग्राम ज्ञान, मह)	६६
माघ (कवि)	६६	राणु (टकुराणी, कलितादेवी माता)	६५
माणिमद्र (ग्रामवाट श्रेणी)	३८	रामचंद्र (ग्रामवाट ज्ञान श्रेण, कवचपुत्र)	४१, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६, ७६, ७७
मारव (रूपविशेष)	३८	रामदेव (परमारवंशीय रूपति)	६३
मालदेव (मह) ४४, ४६, ४८, ५१, ५३, ५५, ६९, ७०,		रावडा (ग्रामवाट ज्ञान, मद्रदेवपुत्र)	६३
" (ज्जूर) ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६-१, ७६-३		राष्ट्रकूट (राजवट)	६६
मालव (देश) ६१, ८३, ८४, १०१		रासल (ग्रामवाट श्रेणी)	८१
मालवन्त (रूपतिविशेष)	३५	राहड (साहु, नेमडपुत्र)	६६
		" (साहु)	६८, ६९

	पृष्ठ		पृष्ठ
रूपादेवि (अथर्वसिंहभार्या)	७०	रूपव्यसहिका (जिनमदिर)	७६-१
" (लावण्यासिंहभार्या)	७५	रूपसिंह (लावण्यासिंह, वैजपालपुत्र)	६३, ६५
रेवत (रेवत पर्वत)	९९, १०२	रूपसींह (")	७१, ७२, ७६, १, ९६
रेवद (")	१०३	रूपसिंहव्यसहिका (जिनमदिर)	६५
रेवत (पर्वत)	१५, ७६-२, ७७	रूपसींहव्यसहिका (")	६७, ७२, ७३
रेवतक (")	२८, ६७, ९०	रूपसींह (मह, लोलासुत)	६६
रेवताग्रि (")	१३	रूपदेवी (सुनिगपत्नी)	७४
रोहडी (श्राम)	२७	रूपिग (लावण्याग, आशाराजपुत्र)	२१, २५, ५९
रक्ष्मी (सुमारवर्ध-पत्नी)	८५		६४, ७५, ७६, ७६-३, ८९
रक्ष्मीधर	२७	रूपिगदेव (")	७४
रक्षमण (श्रीमाल ज्ञा० धे०)	६६	रूपेला राजवरा	१०५
" (श्रा० ज्ञा० धे०)	६६	रुद्र (रूपविशेष)	५
रुद्रितसर (सरोवर)	२७	रुद्रसावित्रीसदन (देवतामन्दिर)	२७
रुद्रितादेवी (वस्तुपालपत्नी)	२७	रुद्रराज (चाणोक्त)	२, २६
" (मह, वस्तुपालपत्नी)	४४, ४५, ४६, ४८	रुद्रजुका (वस्तुपाल-वैजपालमणिली)	६०, ७३
	५१, ५३, ५४, ५५, ५६, ५८, ६२,	रुद्रदेव (सुप्रमाल ज्ञा० महा०, साटापुत्र)	६६
	६९, ७४, ७६, २, ७६, ४, ९८	रुद्रहृदिया (चौरविशेष)	६८
रुद्रचर्म (विद्वान्)	८२	रुद्रभी (नगरी)	२७
रुद्रव्यप्रसाद (चौलुक्यवर्धिय)	६, ७, २५, ६०	रुद्रालदेवि (पूनसीहयुता)	७१
" (महाराजाधिराज)	४४, ४५, ४६, ४८,	रुद्रभ्राज (चौलुक्यव्यपति)	३, २४, ३५
	५१, ५३, ५६	रुद्रिष्ट (ऋषि)	८१
" (महामण्डलेपर, राजक)	६५	रुद्रिष्टकुंड (भर्तृदेवित कुंड)	६१
रुद्रव्यसिंह (लावण्यासिंह, सुर्णवह, वैजपालपुत्र)	४५	रुद्रिष्ट (स्थानविशेष)	६७
रुद्रव्यसिंह (सुर्णसींहभार्या)	७१	" (ऋषि)	८२
रुद्राक्षण (ओदसवाल ज्ञा० धे०, बोहियपुत्र)	६७	रुद्रिष्ट, छत्रकुंड (भर्तृदेवित कुंड)	६५
रुद्राट (रूपविशेष)	५	रुद्रसन्तपाल (वस्तुपाल)	९०
रुद्राटापडी (श्राम)	६८, ६९	रुद्रसन्तपाल (वस्तुपाल)	१०१, १०५
रुद्रव्यप्रसाद (सुमारवर्ध, चौलुक्यवर्धिय)	३६	रुद्रसन्तपाल (मन्त्री, वाशाराजपुत्र)	१०, १२, १४, १५,
रुद्रव्यसिंह (सुर्णसिंह, वैजपालपुत्र)	५७, ६३, ६४,		१६, १७, १८, १९, २०, २१, २२,
	७५, ७६, २		२२, २३, २५, २६, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५,
रुद्रव्यप्याग (सुनिग, आशाराजपुत्र)	७, ५७		३६, ४०, ४१, ४२, ४३
रुद्रापराम (स्थानविशेष)	१००	" (महामात्र)	४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०,
रुद्राहड (साहु राहवपुत्र)	६९		५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७,
रुद्राला (प्रागव्यवशातीय मह)	२५		५८, ६०, ६२, ६३, ६४
रुद्रालादेवी (मालदेवभार्या)	७४	" (मह)	६५, ६८, ६९, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६,
रुद्रालुका "	६३		७६-१, ७६-२, ७६-३, ७६-४, ७७, ७८,
रुद्रालू "	७०, ७६-२		८६, ८७, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४,
रुद्रिग (रुद्र, लावण्याग)	४४, ४६, ४८, ५१, ५३, ५५		९६, ९७, ९९, १००, १०५, १०७
रुद्रासा (रुद्रव्यप्रसाद, चौलुक्य)	१०५	रुद्रसन्तपाल (सरोवर)	२७
रुद्रव्यप्रसाद (रुद्रव्यप्रसाद, चौलुक्य)	१०४		
रुद्रव्यप्रसाद (रुद्रव्यप्रसाद, चौलुक्य)	९७		

	पृष्ठ		पृष्ठ
बलापय (स्थानविशेष)	१३, २८	बीजापुर	६८
महडा (ओइसवाल ज्ञा० धे० गोसलपुत्र)	६७	वीर (वीरधवलराजा)	८०
बहुदा (ओइसवाल ज्ञा. धे०, सीलणपुत्र)	६७	वीरदेव (प्राग्वाट ज्ञा० महा०)	६६
बहुदेव (भर्कट थेष्टो)	६६	वीरदेव (साहु, जयदेवपुत्र)	६८
बाग्भट (महामंत्री)	१५	वीरय्य (श्रीमाल ज्ञा० धे० धिरदेवपुत्र)	६६
भावा (ओइसवाल ज्ञा० धे०, पुनिगपुत्र)	६७	वीरय्य (प्रा० ज्ञा० धे०)	६७
वाजड (कायस्थ)	४६, ४७, ५२, ५३, ५५, ५७	वीसल (श्रीमाल ज्ञा० महा०)	६६
वापल (श्रीमाल ज्ञा०)	६६	" (श्रीमाल ज्ञा० धे० देरापुत्र)	६६
धामलदेवी (मह, चंडप्रसादपत्नी)	७३	वीसलदेव (रूपति)	९६
घालण (जएणवाल ज्ञा० धे०, सलखणपुत्र)	६६	वेजलदेवी (वस्तुपालपत्नी)	७३
घाला (प्रा० ज्ञा० धे०)	६७	वेला (व्यवहारी)	७६-३
घालिग (कायस्थ)	४७, ५०	धैयनाथ (शिवमंदिर)	१६, २६, २७
वालीनाथ (यक्षविशेष)	२६	वेरिसिंह (चापोकटरूप)	२
वाहड (सूत्रधार)	४६, ५५, ५८	घेरिसिंह	२७
" (ओइसवाल ज्ञा० धे०, जसदेवपुत्र)	६७	चोडार्य्य (वालीनाथयक्ष)	२६
विक्रम संघत्	४३, ४६, ४८, ५३, ५५, ५८, ६५, ७५	घोसरि (प्रा० ज्ञा० धे०)	६७
विक्रमनृप संघत्	७२	घोडडि (प्रा० ज्ञा० धे०)	६६
विक्रमार्क संघत्	५१	वोहिय (ओइसवाल ज्ञा० धे०)	६७
विजय (सोमेश्वरपुरोहित भ्राता)	८५	व्यास (कवि)	२०, ५२
विजयसिणसूरि (विजयसेनसूरि)	१०७	व्याघ्ररोलि (ग्राम)	२६
विजयसेण (विजयसेनसूरि)	९९, १०३	शकुनीविहार (जिनमंदिर)	३८
विजयसेनसूरि (नागेन्द्रगच्छीय)	१४, १६, २९, ४५, ४७, ४९, ५१, ५४, ५६, ६४, ६५, ६९, ७२, ७७, ७९, ७६-३, ७८, ७९, ९०	शङ्ख (संप्रामर्सिह रूपति)	१२
विन्ध्यवर्मा (धाराधीन रूप)	८४	शङ्खजय (पर्वत)	१५, २१, २७, ३८, ७७, ९२
विमल (मन्त्री)	१०४, १०५	" (पर्वत, महातीर्थ)	४४, ४७, ४८, ५१, ५३, ५४, ५६, ६८
विमल (शत्रुजय पर्वत)	९०	" (पर्वत, तीर्थ)	७६
विमलउ (मन्त्री)	१०४	" (धवलकस्थित जिनमंदिर)	२६
विमलमंदिर (जिनमंदिर)	१०६	शङ्खजयशैल	९०, ९१
विमलान्नल (शत्रुजयपर्वत)	४६	शङ्खजयमहातीर्थायतार (स्थापत्यविशेष)	४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६
विमलाद्रि (शत्रुजयपर्वत)	१५, ७७, ९२	शङ्खजयव्याद्री	९८
विच्छवल (वीरधवल)	१०५	शङ्खजयावतार (स्थापत्यविशेष)	५८
वीरधवल (नीलुक्त्यवंगीय, मूपति) ७, ८, १०, १३, १६, १८, २५, २६, २८, ३२, ३६, ३७, ३८, ६०, ६१, ६४, ९१, ९९		शांतिसूरि (नागेन्द्रगच्छीय)	१३, २९, ४५, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६, ६४, ६५, ७६-३, ७९
" (महाराज)	४४, ४६, ४७, ४८, ५१, ५४, ५६	शाम्भुशिसर (रैवतगिरिशिखरविशेष)	२८, ४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६
" (राणक, महामण्डलेश्वर)	६५	शालिग (प्राग्वाटज्ञातीय, ठरुर)	६५
श्रीकल (व्यवहारी)	७६-३	शालिगमिनालय	२७
श्रीजा (थेप्ली)	७६-३	शर (सर, चंडप्रसाद ज्येष्ठपुत्र)	८८

	पृष्ठ		पृष्ठ
शैलादित्य (रुप)	१५	साजण (साधु)	६८-
श्रीधांधलेभरदेवीयकोटडी (स्थानविशेष)	६७	, (दहाधिर)	१००, १०१
श्रीपाल (प्रभवाटथेष्ठी, सावळपुत्र)	६६	साजन (प्रा० ज्ञा० थे०)	६६
श्रीमाल (शक्ति)	६६	साटा (ऊएसवाल ज्ञा० महा०)	६६
श्रीमातामहबुग्राम	६७	सादा (धर्कटथेष्ठी, पाशुपुत्र)	६६
प(पं)गार (सोरठपति)	१००	, (प्रा० ज्ञा० थे० आसलपुत्र)	६६
संभ्रामसिंह (बास, सिन्धुराज)	१२, ४१	सामंतसिंह (रुप)	६२
संतोपा (ठकुराज्ञी, मोढ ज्ञा० ठकुर आसा-पत्नी)	७३, ७४	सालग्राम	६७
संमेतमहातीर्थ (महानीर्थ)	४८	साब्हा (धर्कटथेष्ठी, नेहापुत्र)	६६
संमेतमहातीर्थावतारप्रासाद् (स्थापत्यविशेष)	४५, ५४	, (प्रा० ज्ञा०, पूनापुत्र)	६६
		, (श्रीमाल ज्ञा०, पूनापुत्र)	६६
संमेतमहातीर्थावतारप्रधानप्रासाद् (स्थापत्यविशेष)	४७	सावड (प्रभवाटथेष्ठी)	६६
संमेतशिखरप्रासाद् (स्थापत्यविशेष)	५८	सावदेव (प्रभवाटशाहीय, ठकुर)	६५
संमेतावतार (स्थापत्यविशेष)	५१	सावदेव (प्रा० ज्ञा० थे०, राजुबपुत्र)	६६
संमेतावतारमहातीर्थप्रासाद् (स्थापत्यविशेष)	५६	साहणीय (प्रा० ज्ञा०, दूगसरणपुत्र)	६६
संमेष (समेतशिवर पर्वत)	१०१, १०२	साहिलवाडा (ग्राम)	६७
सत्यपुर (नगर)	१५, २७, ६८	सिंहण (यदुवशयिचण)	३८
सत्यपुरावतार (स्थापत्यविशेष)	४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६	सिंहराज (सधपति, सरवणपुत्र)	६८
सदमल (मालदेवसुता)	७०	सिंहुलग्राम	२६
सपादलक्ष (देश)	८३	सिद्ध (सिद्धराज)	७६
सरवण (सधपति)	६८	सिद्धसुप (,)	८३
सर्वदेव (निदान)	८३, ८४	सिद्धराज (चौलक्यरुपति)	९, ३७, ८९
सलराज (ऊएत० ज्ञा० थे०)	६६	सिद्धपि (आचार्य)	७८
, (ओइस० ज्ञा० थे०)	६६	सिद्धाधिप (सिद्धराज)	४
सलखणदेवी (सुहदवीहपत्नी)	७५	सिद्धेश (सिद्धराज)	३७
सहजल (मालदेवसुता)	७०	सिद्धेशिता (सिद्धराज)	७९
सहजिग (कायस्थ)	४७, ५०	सिन्धु (देश)	८३
सहदेव (साहु, बरहुडिया)	६८	सिन्धुराज (बास, सम्रासिंह)	१२
सहसा (सधपति)	६८	, (बच्छपति)	३४
सहसाराज (स्थापत्यविशेष)	१०२	सिरिमाल (श्रीमालकुल)	१००
संतुध (प्रभवाट ज्ञा० थे०)	६६	सिंहराम	६७
सांयकुमार (शाम्बशिवर)	१०२	सीता (सोमपत्नी)	९, ७६, ७६-२, ८९
साइदे (सं सहसापत्नी)	६८	सीतादेवी (मह, सोमपत्नी)	७४
साउदेवी (वस्तुपाल वेजगाल भगिनी)	७२	सीलण (ओदसवाल ज्ञा० थे०)	६७
साऊ (,)	६०	सुकुतकीर्तिकल्लोलिनी (कृतिविशेष)	१६
सागर (प्रभवाटशाहीय, ठकुर)	६५	सुनथय (सं सहसापुत्री)	६८
सागर (ऊएसवाल ज्ञा० महा० थांपपुत्र)	६६	सुभट (कति)	८५
साजण (प्रभवाट ज्ञा० थे०)	६६	सुभटयमां (रुप)	२६
		सुमतीह (सोमतिह)	१०७
		सुरठ (देश)	१००
		सुराप्पूपति (श्रीमसिंहनूपति)	१३

	पृष्ठ		पृष्ठ
सुरिताण (मुल्तान)	१०४	सोलंकि (राजवध)	१०४
सुवम्भरेह (नदी)	९९	सोल (सोलशर्मा)	८२
सुद्वडतीह	७५	सोलशर्मा (विद्वान्)	८१
सुद्वडादेवी (मह वेजपाल द्वितीयभार्या)	७३, ७४	सोहगा (बरतुपाल-वेजपाल-भगिनी)	६०, ७३
„ (सुद्वडसीह पत्नी)	७५	सोहि (ऊएसवाल ज्ञा० श्रे०)	६६
सुमिग (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०)	६६	सोहिय (प्रा० ज्ञा० श्रे०)	६६
सुर (मन्त्री, चण्डप्रसाद ज्येष्ठपुत्र)	९७६ १	सौवर्णगिरि (पर्वत)	६९
सुहवदेवि (जयतामिहभार्या)	७०, ९८	स्तम्भतीर्थ (पुर नगर, स्थान)	१२, २७ २८, ४४, ४६, ५१, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ७६ ३, ९६
सेचुज (शत्रुजय)	१०५	स्तम्भनक (ग्राम)	१६, २६
सोखु (मह बरतुपाल द्वितीयभार्या)	५८	स्तम्भनकतीर्थ (स्तम्भतीर्थ)	४८
सोखुका („ „)	४६, ४८, ५०, ५१, ५८ ६९	स्तम्भनकपुर (ग्राम)	४४, ४६, ४८, ५१, ५४ ५६
सोभनदिउ (सोभनदेव, दूनघार)	१०६	स्तम्भनपुर (स्थानविशेष)	१५
सोभनदेउ („ „)	१०६	स्तम्भपुरीय ध्रुव (जयतामिह)	४७, ५०
सोमा (माण्ड्यागारिक)	७६-३	स्त्राजण (प्रा० ज्ञा० श्रे०, वीर्यपुत्र)	६७
सोम (मन्त्री नण्डप्रसाद-द्वितीयपुत्र)	९, २१, २५ २८, ३७	हंडाउद्र (ग्राम)	६६
„ (मन्त्री, ठकुर)	४४, ४६, ४८, ५१, ५३, ५४, ५५, ५६, ५९, ६४	हंडावडा (ग्राम)	१०७
„ (मह)	६५, ६९ ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७६ १, ७६ २, ७६-३, ७६ ४, ८६, ८८	इथीयावापी	६८
सोम (धकैटश्रेष्ठी बहुदेवपुत्र)	६६	हम्मीर (नृपविशेष)	५, ६
सोम (नरेंद्र)	१०४ १०५	हरिभद्रसूरि (नागेश्वरगच्छीय)	१४, २९, ३७, ६४, ६५, ७६-२, ७६-३, ७९, ८९, ९०
सोमदेव (दूनघार)	४७, ५०, ५३	„ (महारक)	४५, ४७, ४८, ५१, ५४, ५६
सोमशर्मा (विद्वान्)	८२	हरिमण्डप (स्थापत्यविशेष)	४७
सोमशर्मा (सोमेश्वरदेव, पुरोहित)	८५ ९०	हरिया (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०)	६६
सोमसिंह (नृपति, धरावर्षसुत)	६२	हरिहर (कवि)	८५ ९०
सोमसिंहदेव (महामण्डलेश्वर)	६५, ६७	हर्षपुरीयगच्छ	२९
सोमेश्वरदेव (ठकुर, गृजरेश्वर पुरोहित)	४५, ५०, ६५, ८५	हान्दय (साहु जयदेवपुत्र)	६९
सोरठ (दैत)	९९, १००	हृणी (ज्ञीविशेष)	६
		हेटउंजीग्राम	६७
		हेमचन्द्र (आचार्य)	८६
		हेमा (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०, हरियाणुन)	६६